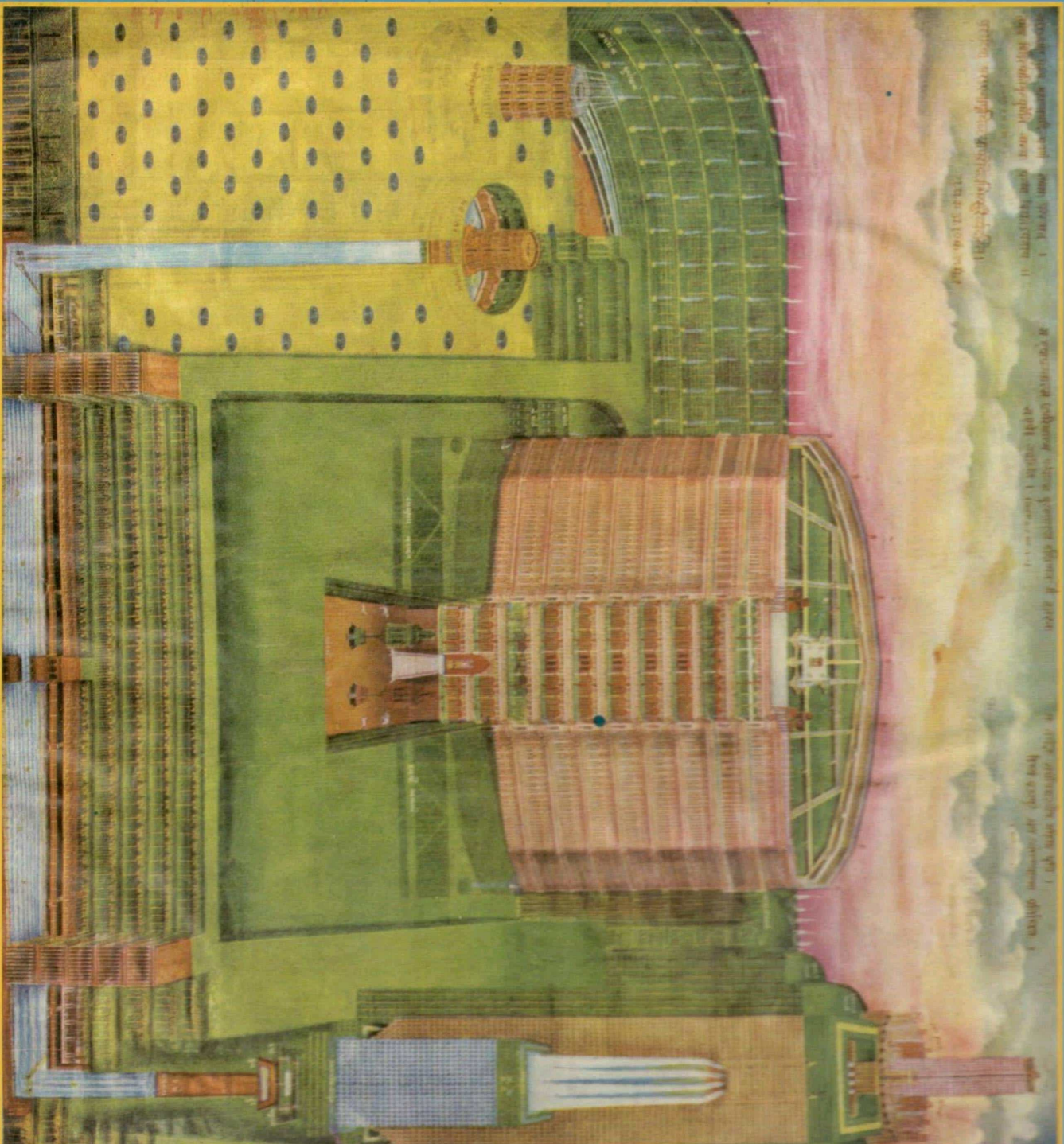


॥ श्रीकृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥

श्री परमधाम पटदर्शि

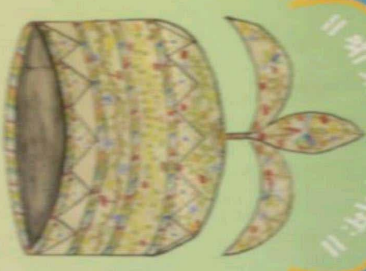


पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥
पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥

पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥
पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥

पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥
पुस्तक के लेखक श्री कृष्ण सात्विकवाक्षसलीलाप्रभातमे नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



यह मूल मुकट पं. श्री जवाहरलाल जी
श्री मुखवाणी विशारद चर्चनी तीर्थ को
समर्पण रमण । ले. मंगल दास का प्रणाम ।

रचयिता :



ब्रह्ममुनि संतशिरोमणि परमहंस
श्री जवाहरदास जी महाराज
गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट
करनाल धाम

प्रकाशक
सुरेश परनामी

परात्पर अक्षरगीत श्रीकृष्णपरमात्मा का अनादि परमधाम

॥ श्री प्राणनाथाय नमः ॥

श्री परमधाम पट-दर्शन

रचयिता

ब्रह्मभुनि संत शिरोमणि ब्रह्मतीन श्री १०८ जवाहर दास जी महाशय

गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल धाम

प्रकाशक

सुरेश कटारिया

श्री प्राणनाथ जयंती, 8 जुलाई, 1999, जयपुर

समर्पण

मंगलाचरण

निजानंद स्वामी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज के हृदय में विराजित
रक्षरातीत श्री राजजी की आनंद अंग श्री श्यामाजी ने असीम मेहेर बरसाकर खेल में
हूँ अपनी सखियों को जागृत करने के लिए अपने निज घर श्री परमधाम को इस धरा
र प्रकट कर दिया। माया के इस संसार को अनमोल धन से धन्य-धन्य कर दिया। उनके
गी चरणों का ध्यान हर मनोरथ को पूर्ण करने वाला है। उनके श्री चरणों का ध्यान करके
नकी सखी की यह कृति उनको सादर समर्पित है।

प्रणाम !

विनीत

सुरेश परमानंद कटारिया

संख्या

1000 प्रतियां

सर्वाधिकार

श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल

नवींछावर

120 रु. + 120 रु. = 240 रु.

इन विष साधनी जगिए, बताए देऊं ऐ जीवन् ।
स्वयाम स्वयामाजी साधनी, जित बैठे चौक वतन् ॥
प्रथम लागूं दोऊ चरन् कहे, धनी ए न छोड़इयो खिन् ।
लांक तली लात एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन् ॥
मेरी रूढ़ नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन ।
तिन् नैनों में राखूं मासूक कहे, ज्यों मेरी रूढ़ पावे सुख चैन ।
इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दित पर ।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आए भर भर ॥
महासत कहे अयली रूढ़को, और अर्स रूढ़न् ।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अयले वतन् ॥

पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन ।

अक्षरातीत धाम धनी श्रीराज जी की आनंद अंग श्री श्यामाजी जी ने निजानंद स्वामी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी स्वरूप में प्रकट होकर स्वत में भूली अपनी सखियों को जागृत करने के लिए अपने निज घर श्री परमधाम के चप्पे-चप्पे का वर्णन विस्तार पूर्वक कर साक्षात् परमधाम को प्रत्यक्ष कर दिया ।

श्रीराज श्री ठठुरानी जी प्रथम भौम में विराजमान भए, तहां कंचन रंग को सिंहासन ।

जब श्री सद्गुरु साहेब ने श्री जमुना जी का चित्र बनाया तब जमुनाजी साक्षात् प्रकट हो गई, जिनके दर्शन करके हम आज भी धन्य-धन्य हो जाते हैं ।

विजयाभिर्नंद बुध निष्कलंक कलकी अवतार महामति प्राणनाथ जी के हृदय में श्री श्यामाजी आ विराजे और परमधाम के जर्ने-जर्ने का वर्णन श्री मुख से प्रस्फुटित हो गया ।

ब्रह्म सूष्टी लीजिये, हारे सैया ए है अपना जीवन ।

सरखी मेरे जो है मूल वतन, ब्रह्म सूष्टी लीजिये ॥

ए देखत ही बनत है, केहेनी में आवत बाहीं । जब धाम धनी उदयपुर पधारे उसी समय उनकी मेहेर से परमधाम के पट चित्रांकन के कार्य का शुभारम्भ हुआ एवं धाम धनी जब तृतीय ब्रह्माण्ड जागनी रास के मूल भिलावा श्री परना जी में आकर विराजे उसी समय से नियमित रूप से पट दर्शन की यह परम्परा श्री सुन्दरसाध जी में प्रारम्भ हुई । श्री तारतम वाणी को आत्मसात् करने के लिए श्री बीतक साहेब का श्रवण, सेवा-पूजा प्रकृति का अनुसरण एवं परमधाम पट के दर्शन, चितवनी एवं मनन आवश्यक है ।

निस दिन रंग मोहोलन में, साध स्वामजी स्वाम ।

याद करो सुख सबों अंगों, जो करते अगारों जाम ॥

पट दर्शन की इसी परम्परा में स्वामी तालदास जी ने परमधाम की वृत्त लिखी । पुजारी युगलदास जी ने इस परम्परा को और समृद्ध किया । बड़ी वृत्त और छोटी वृत्त का सृजन किया । स्वयं महाराज जी की लिखी वृत्त उपलब्ध है ।

अखण्ड सुख सबन करे, होसी चौरै तबक ।

सरे बरकत ब्रह्मसूष्ट करे, पावे दीदार सब हक ॥

‘श्रीजी’ साहेब जी के समय से शुरू हुई इस परम्परा को पन्ना धाम के प्रिय धामी भाईयों ने 300 वर्षों से अनवरत जारी रखा हुआ है । धामधनी की मेहेर दृष्टि तले रहकर उनके ही हुकुम से परमहंस महाराज श्री मेहेर दास जी के पावन सान्निध्य में संत शिरोमणि परमहंस श्री जवाहरदास जी महाराज ने श्री परमधाम के रंगीन चित्रों का सृजन किया ।

ब्रह्मसूष्टि की रेहेनी को स्वयं में सहेज कर अनमोल निधि पाने वाले ब्रह्मगुनि श्री जवाहरदास जी महाराज, गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, कन्नाल का यह अनमोल खजाना लाडले सुन्दरदासजी एवं पूरे विश्व की धरोहर है ।

आनंद बतनी आइयो, लीजो उमंग कर ।

हंसते स्वेतते चलिऐ, देखिए अपनारों घर ॥

महामत कहे ब्रह्मसूष्ट को, सरखी जीवन हमारा ए । इसका नित्य दर्शन महामंगलकारी है । श्री तारतम सागर पढ़ते चले एवं पट दर्शन से परमधाम की गह्राइयों में उतरते चले ।

खोज सोहालन न थके, जोत्यों पार के पारै पर ।

लित खोजे चरनी चढ़े, नए-नए करे विचार ॥

सोहालन तोलों खोजहीं, जोतो पाइये पिउ वतन ।

पिउ वतन पाए बितन, विरहा न जाए निस दिन ॥

पटदर्शन का अनुभव आप इल्मी सुन्दरसाध जी से करें एवं विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त करें । चौपाई की शुद्धता एवं प्रमाणिकता के लिए कृपया श्री सरूप साहेब को देखें ।

परमधामवासी श्री १०८ कृष्णानंद जी महाराज गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, कन्नाल के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे सेवा का यह अवसर देकर धन्य-धन्य कर दिया ।

लागत से आधी न्यौछावर राशि में आपको परमधाम का यह अनमोल खजाना उपलब्ध करवाने का विनम्र प्रयास है । श्रीजी कृपा से ही घर-घर में रंगीन चित्रों का प्रकाश फैलेगा ।

परमधाम के इन मूल चित्रों को 73% सार्जिन में प्रकाशित किया है । बुज, रास, जागनी एवं परमधाम की लीलाओं में दिन-रात रमण करने वाले प्रेम में भीने प्यारे सुन्दरसाध जी प्रकाशन में रही समस्त ग्राहकों के लिए कृपया क्षमा करेंगे एवं समृद्धि के इस अनमोल उपहार को शिरोधार्य कर लेंगे ।

संप्रेम प्रणाम ।

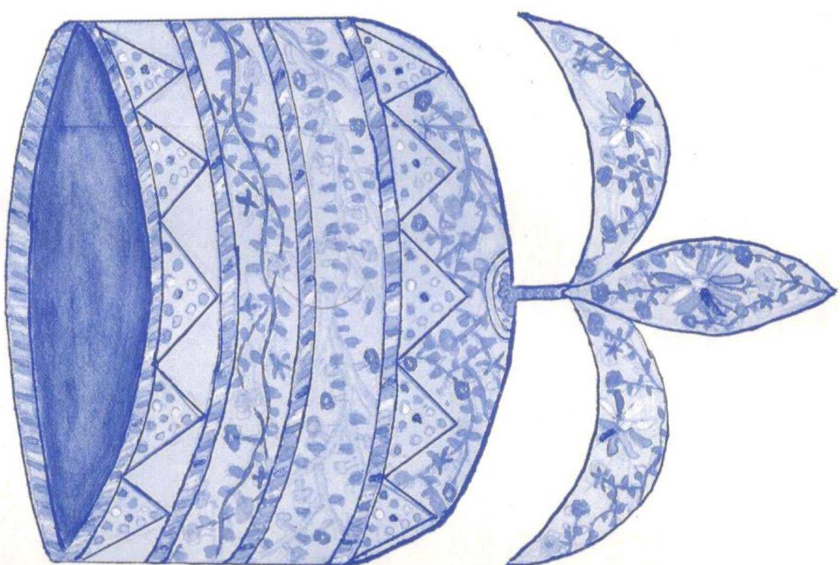
विनित

सोई सोहाजिन धाम में, जो करसी इत रोसन ।

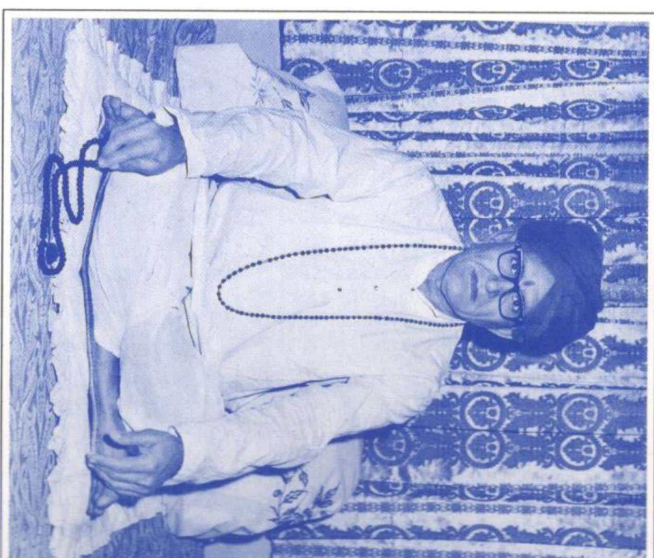
तोल मोल विल माकक, देसी सुख सबन ॥

सुरेश परमानंद कटारिया

गुरुगवाही श्री महाराज चरणदास जी साहेब, शक्तितनगर, दिल्ली



यह मूल मुकट पं. श्री जवाहरलाल जी
श्री मुखवाणी विशारद चर्चनी तीर्थ को
सप्रेम स्मरण । ले. मंगल दास का प्रणाम ।



ब्रह्ममुनि संतशिरोमणि परमहंस
श्री जवाहरदास जी महाराज
गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट
करनाल धाम

वतन आयने, बहसुष्ट को देऊं बताए ।
धाम की सुध में सब देऊं, ज्यों अंतस्करन में आए ॥

अनुक्रम

इस्क जिन विध उपजे, में सोई देऊं जिनस ।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाज्यो रस ॥

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	पांच स्वरूप (प्राचीन चित्र पर आधारित) सुन्दर स्वरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी । इन दोऊ स्वरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी ॥	00
2.	श्री रंग भवन जिस दिन रंग मोहोतन में, साथ स्यामाजी स्याम । याद करो सुख सब अणों, जो करते आठो जाम ॥	00
3.	श्री रंग भवन चबूतरा अब सुजियो साथ सुजाऊं, पीछे जिज नैनों देख देखाऊं । जोत जेवर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए ॥	00
4.	श्री रंग भवन का मध्य का हांस, 28 शंभ का चौक, चाँदनी चौक, श्री जमुना जी बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अंदर । बड़ी बैठक इत लियोह की, आणूं रसोई के मंदिर ॥	04-05
5.	श्री रंग भवन - एक मंदिर हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए । आए लज्जा बन दियाले, देत मीठी खुसबोए ॥	06
6.	मंदिर की बगानी दिवाल बेवरा अजली भोम का, मेहराव और झरोखे । खूबी क्यो कहुं दियाल की, सोभा लेत इत ए ॥	07
7.	श्री रसोई की हवेली तथा तीन चोरस हवेली राज स्यामाजी बैठत, बन धं फिरती बखत । इन ठौर आरोज के, चौथी भोम निरत ॥	08-9
8.	पांचवा चौक श्री मूल भिलावा गोल हवेली ए मूल भिलावा अपन, नजर दीजे इत । पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत ॥	10-11

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
9.	चार हवेली पंच मोहलात की महामत कहे ऐ मोमिनो, ए सुख आयने अरस के । एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आएको जे ॥	12
10.	कूसरी भोम की भूलावनी इन ठोर खेत रूहन के, बोहोत भई भुलवन । होत हांसी इत खेतले, रंग रस बढ़त रूहन ।	13
11.	कूसरी भोम का कस मंदिर का हांस इन्हू बीच चबूतरा, हक हादी मय बैठत आए । ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए ॥	14
12.	तीसरी भोम का कस मंदिर का हांस दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस । एक हांस तिनकी बड़ी, ए भी सोभा एक रस ॥	15
13.	चौथी भोम जिरत होत चौथी भोम में, जित मोहोत बन्यो विसाल । चौक मध्य अति सुन्दर, क्यो कहुं मंदिर द्वार ॥	16
14.	पांचवी भोम : मध्य चौक की चार हवेली सुख बड़ी भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार । बीच मोहोत स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार ॥	17
15.	पांचवी भोम : मध्य नाव चौक भोम पांचमी मय की, जित पौढ़त हैं रात । स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात ॥	18
16.	छठी भोम : तखत तरवा श्री रंग भवन की छठी भोम घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपात । बने बिराजे मोहोत में, जित बड़ी पइसात ॥	19
17.	सातवी भोम कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार । रूहें आए मन चाहते, अरस आराम नहीं पार ॥	20

क्रम सं. चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
18. आठवीं भोम	21
इस्ती भांत भोम आठमी, चार चार खटछपर । चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहुं कयों कर ॥	
19. नवमी भोम	22
छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार । बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार ॥	
20. दसवीं चान्दनी पर कहलाने	23
दसमी भोमे चांदनी, ए सोभा है अतंत । कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा तेत तरखत ॥	
21. दसमी चान्दनी की कहलानों पर गुमटियाँ	24
ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीचे एक अगले सौ दोए। बारे हजार गुमटियां, सोभा तेत अति सोए ॥	
22. दसमी चान्दनी पर बाग बगीचे	25
चारो तरफो वेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर । जल गिरत फुहारे मोतियों, चारो चांदनी अंदर ॥	
23. श्री जमुना जी का पूरा दिखाव	26
दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साथ । चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर होज मिली आए आध ॥	
24. अमृत वन का एक बगीचा	27
घाट घाट जल ऊपर, अमृत बत हैं जाहें । इन बत की सोभा कयों कहुं, मेरो सब्द न पोहोंचे ताहें ॥	
25. तीन घाट अनार अमृत जान्बू	28
झीलन स्यामा सयं राज सों, साधें किए जल केति । इन समें के खिलास की, कयों कहुं रंज रेलि ॥	
26. चहैबट्टा 16 हांस का	29
धाम छोड़ आगे चलया, तरफ वेहेबच्चे पास । इन बत की सोभा कयों कहुं, जित जित होत विलास ॥	
27. कक्षिण तरफ बट पीपल की चौकी	30
राज स्यामाजी सरिखां, जब इत आए हींचत । इन समें बत हिंडोले, सोभा कयों कर कहुं सिफत ॥	

क्रम सं. चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
28. (पश्चिमी तरफ के 100 बगीचे फूल बाग के) फूल बाग	31
कै बत कहुं फूलन के, इन बत को न आवे सुमार ॥ कै रंज पातों के जुगतें, कै कांजरियां किनार ॥	
29. फूल बाग के छोटे बगीचे	32
बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दियात । हक आवात हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसात ॥	
30. फूल बाग का एक बगीचा बड़ी नहर का दिखाव	33
छलकत ओले वेहेबच्चे, नेहेरे चलत जल नूर । सो खिचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर ॥	
31. नूर बाग के एक बगीचे का सोहलवां हिस्सा	34
जित तले दस खिड़कियां, इतयें रूहें उतरत । फिरत सैर इन बत को, जब कबूं आवें इत ॥	
32. नूर बाग का एक बगीचा	35
कै बत कहुं फूलन के, इन बत को ना आवे सुमार । कै रंज पातों के जुगतें, कै कांजरियां किनार ॥	
33. नूर बाग का अंन बन कूब कुलीचा	36-37
बत बिजोर की जो जिमी, जान्यों जरी दूलीचे बिछाए । ए दूब जोत आसमान लो, यही नूरै नूर भराए ॥	
34. लाल चबूतरा	38
बैठे सयं स्यामाजी, ऊपर दोऊ के छत्र । आगे जावे याणी बड़ विधसों, और बजावें बाजंत्र ॥	
35. ताड़बन	39
फेर कहुं तले बतकी, जो बत बड़ा विस्तार । भर चबूतरे आगे चलया, जाए पोहोंव्या केत पार ॥	
36. ताड़बन का एक बगीचा	40
जो बत आया वेहेबच्चे, सोभा अति रोसन । छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफ बत ॥	
37. खड़ी कली ताड़बन में	41
ऊपर झरोखे मोहोतके, जल पर बने जो आए । इत वेहेबच्चे की सिफत, मुख दें कही न जाए ॥	

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
38.	बड़ो बग मधू वन, महावन पुष्कराज बी घाटी आदि महामत कहे बल धाम का, विध विध दिया बताए। जो होसी ब्रह्म सृष्ट कए, ए बाल फूट निकसे ताए ॥	42-43
39.	श्री पुष्कराज तथा बंगले की तरहटी के बीच का चहबत्ता तथा महावन मधुवन के वृक्ष इन मोहोलीं इन बंगलों, इन चेहेबच्चे बगीचों। ए सुख छाया बल की, कब देओगे हमको ॥	44
40.	श्री पुष्कराज जी के उजानार (बक्षिण तरफ) चहबत्ता, नहरे तथा तरहटी के हांस की बिवाल माहों के नेहेरें चरें, सब पहाड़ में फिरत। कै फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत ॥	45
41.	श्री पुष्कराज की तरहटी, तरहटी का एक मोहोल एक बगीचा, महाबन के चार वृक्ष, नहरे, रोंस पुल बल मोहोली नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए। ए उरस जवेर देख्या चाहे, सो ए बल देखो आए ॥	46-47
42.	पुष्कराज की तरहटी, बंगलों की तरहटी, अधबीच का कुण्ड सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान। ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान ॥	48-49
43.	अध बीच का कुंड - ढपो चबूतरा तरहटी, मूल कुण्ड की तरहटी, आधी जमुनाजी ढपी, आधी जमुनाजी खुली, मयोर स्वाकर दक्षिण तरफ चली।	
44.	श्री पुष्कराज चबूतरा बंगले का दृश्य तथा बेहलान विराजे बंगले, एजो मोहोली तले तास। बारे हजार बड़ी रूढ़ ले, हकसों खेलेत माहें हाल ॥	52-53
45.	अधबीच कुंड, ढपो चबूतरा, मूल कुंड एवं जमुना जी कुंड आगे ढाँपी चली, अदभूत ऊपर मोहोलीत। अंदर बैठके क्यो कहूँ, दोऊ किनार लिए चली जात ॥	54-55
46.	बंगले तथा चहबत्ते : एक बंगले तथा एक चहबत्ते का आधा दृश्य स्वास् मोहोली कुंड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल। सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ खिलत ऊंचे जल ॥	56-57

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
47.	पुष्कराज चौकहे मेहराबे तथा बंगले की चांदनी पर पुष्कराजी ताल का मूल तथा खास मोहोल के ताल का मूल तथा बगीचों की चांदनी पर मोहोल वृक्ष आदि	58-59
48.	हजार हांस की मोहोलात - पुष्कराजी ताल खास मोहोल - ढपो चबूतरा - मूल कुण्ड हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत। मोहोली माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत ॥	60
49.	हजार हांस की मोहोलात	62
50.	हजार हांस की मोहोलात की चांदनी गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर। कै कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर ॥	63
51.	पश्चिम तरफ की घाटी जोहांसों की हवेली महामत कहे ऐ मोमनो, ए सुख अयले अरस के। एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आएको जे ॥	64
52.	पश्चिम तरफ की घाटी तथा एक हांस में एक दरवाजा चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन। जिमख एक न छोड़िए, कर मन वाचा करमन ॥	65
53.	आकासी मोहोल की हवेली इन मोहोलीं बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कहा न जाए। ए खूबी सव्यातीत की, लीजो रूढ़ के दिल लगाए ॥	66
54.	आकासी मोहोल की हवेली जिसमें बी बड़ी हवेली कोटक कचेरी बनी, फिरती फिरती गुदवाए। ए सुंदरता इन जुबां, मोये कही न जाए ॥	67
55.	आकासी मोहोल के मध्य की एक हवेली बड़ी कै अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे। खुसबोए फूल मेवे कै, माहें बैठक कै बगीचे ॥	68
56.	आकासी मोहोल की चांदनी का बिखाव एक सौ अठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसल। कंगुरे कलस ऊपर कै, देख होत खुसात मोमन ॥	69

क्रम सं. चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
57. पुष्कराजी पहाड़	70-71
सुख लीजो भोमिन, पहाड़ मोहोलेके अगलम। अरस अजीमके कावम, निस दिन एही ताम ॥	
58. श्री हौज कौसर तालाब 1. पाल की मोहोलात शंभ 2. बीच का ताल	72
अब कहूं मैं ताल की, अंदर उगाए सको सो अगओ। जो होवे रूह अरस की, फेर ऐसा न पावे दाओ।	
59. श्री हौज कौसर, चार घाट, पाल देहुरी	73
सोभा पाल तलाव की, कही न जाए जुबां इत। वन देहुरी जल मोहोले की, रोसल रोसल में रोसल ॥	
60. श्री हौज कौसर, ताल, टापू मोहोले	74
महामत कहे भोमल के, जेहेरा जंभीर जल देख। ए टापू बन्यो बीच हौजके, सोभित अति विसेख ॥	
61. टापू मोहोले की चांदनी	75
ऊपर चांदनी कटेड़, बीच जोड़ सिंघासल। राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन ॥	
62. चौबीस हांस का मोहोले	76
और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर। देत खूबी बीच आकास के, भया अवकास सबे जूर ॥	
63. 1. चौबीस हांस की चांदनी 2. बाहर की मोहोले ताल	77
ए सुख हमारे कहा गए, ए जो खेत होत दिन रात। हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात ॥	
64. चौबीस हांस के बाहर के मोहोले ताल तीन हांसों के	78
ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बल। न सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न ॥	
65. चौबीस हांस का खड़ा मोहोले	79
और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक। ए कोट जुबां न केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥	
66. जवेरों की नहरें नव फिदाव	80
फेर-फेर सरूप जो लिरियाए, नैना हों नही दृष्टि। भोमिन दित अर्स कहा, लिखी ताले ए निसबत ॥	

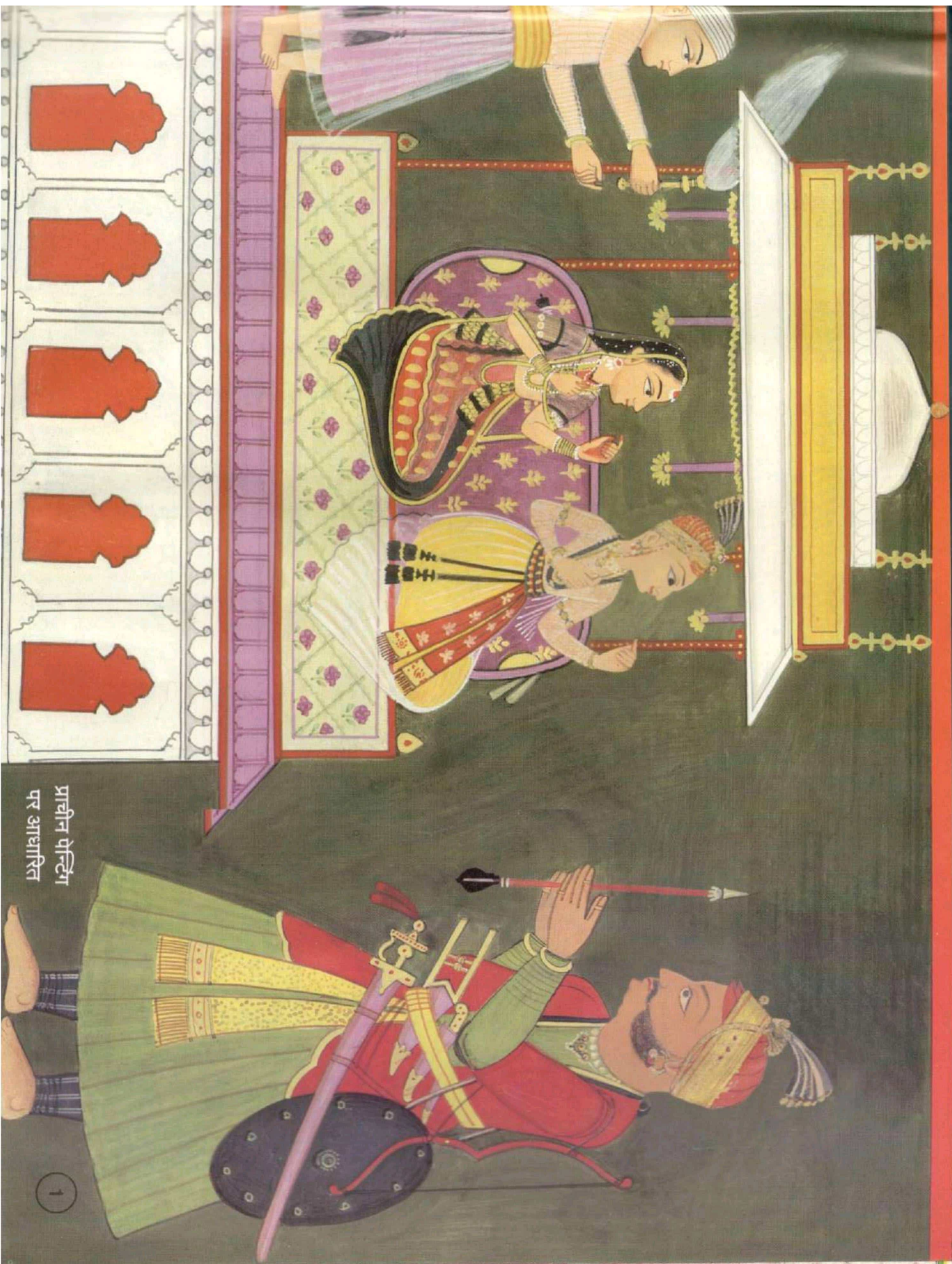
क्रम सं. चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
67. जवेरों की नहरों का एक मोहोले	81
68. जवेरों की नहरें चार हांस, हवेरों की नहरें आठ हांस, जवेरों की नहरें सोलह हांस	82-83
69. जवेरों की नहरें 32 हांस, जवेरों की नहरें 64 हांस, आठ हांस मोहोले की चांदनी	84-85
70. जवेरों की नहरों का खड़ा निशान	86-87
71. माणक पहाड़-पांच हांस का निशान, माणक पहाड़ का माणक मोहोले - भीतर का निशान	88-89
72. माणक पहाड़ का पूरा निशान	90
73. माणक पहाड़ की एक हवेली का खड़ा निशान	91
74. माणक पहाड़ एक चौरस हवेली	92
75. माणक पहाड़ की एक हवेली का एक मोहोले	93
76. माणक पहाड़ के एक मोहोले में एक मंकिर	94
77. माणक पहाड़ की एक हवेली में एक मोहोले	95
78. माणक पहाड़ - चांदनी नीचे के ताल-नाले, बगीचे-महानख	96
79. माणक पहाड़ की चांदनी की एक नहर	97
80. माणक पहाड़ की चांदनी पर टापू मोहोले तथा बहेलाने	98
81. माणक पहाड़ - टापू मोहोले की चांदनी	99
82. माणक पहाड़ का खड़ा निशान	100-101
83. माणक पहाड़ की बाहर जिमी पर ताल मोहोले नेहरें - बगीचे	102
84. माणक पहाड़ बाहर जिमीन पर ताल-नहरे बगीचे की चांदनी	103
85. बड़ोवन मधुवन महावन वन की नहरों का खड़ा निशान	104
86. बड़ोवन मधुवन महावन तथा वन की नहरों का एक-एक हार का दिखाव है	105

क्रम सं. चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
87. वन की नहरें, चार हार हवेली तथा सागर की हवेली तक	106-107
88. चार हार हवेली के एक चबूतरे पर सागर की हवेली तक	108
89. चार हार हवेली के एक हवेली के मोहोल	109
90. चार हार हवेली के एक हवेली के एक मंकिर का निसान	110
91. बड़ी रांग के महा बिलंक हवेली के सामने तथा बारे बारी गोलगुरज तथा सामने दो नहरों का क्रिख राव तथा चार हार हवेली की चौथी हवेली की आधी क्रिखाव	111
92. महा बिलंक हवेलियों की एक हवेली	112
93. रांग की एक हवेली का एक मोहोल	113
94. बड़ी रांग की एक हवेली के एक मंकिर के बगीचे आदि	114
95. बड़ी रांग की महा बिलंक हवेली त्रिपोलिया के मध्य एक हवेली	115
96. रांग का एक समुद्र तथा बाहर भीतर पाल पर हवेलियां	116-117
97. समुद्र के टापुओं में एक टापु	118
98. टापु मोहोल की चांकनी तथा चारों तरफों समुद्र	119
99. एक सागर के चारों तरफ बगीचा तथा पाल पर आठ महाबिलंक हवेलियों का क्रिखाव	120
100. बड़ी रांग की एक जिमी	121
101. महा बिलंक की हवेली की चांकनी पर ताल बगीचे गुमट	122
102. महा बिलंक पर हवेली की चांकनी पर बगीचों में एक बगीचा	123
103. महा बिलंक की चांकनी पर एक बगीचे में कई बगीचे	124
104. सागरों को घेर कर वन की चांकनी तथा रांग की चांकनी	125
105. रांग की महा बिलंक हवेली पर की चांकनी पर टापु मोहोल, ताल केहलाने	126
106. रांग मोहोल की टापु पर - टापु में एक हवेली	127
107. महा बिलंक की हवेली की चांकनी पर टापु के मोहोल, हवेली में मोहोल	128
108. महा बिलंक की हवेली, टापु मोहोल की चांकनी	129

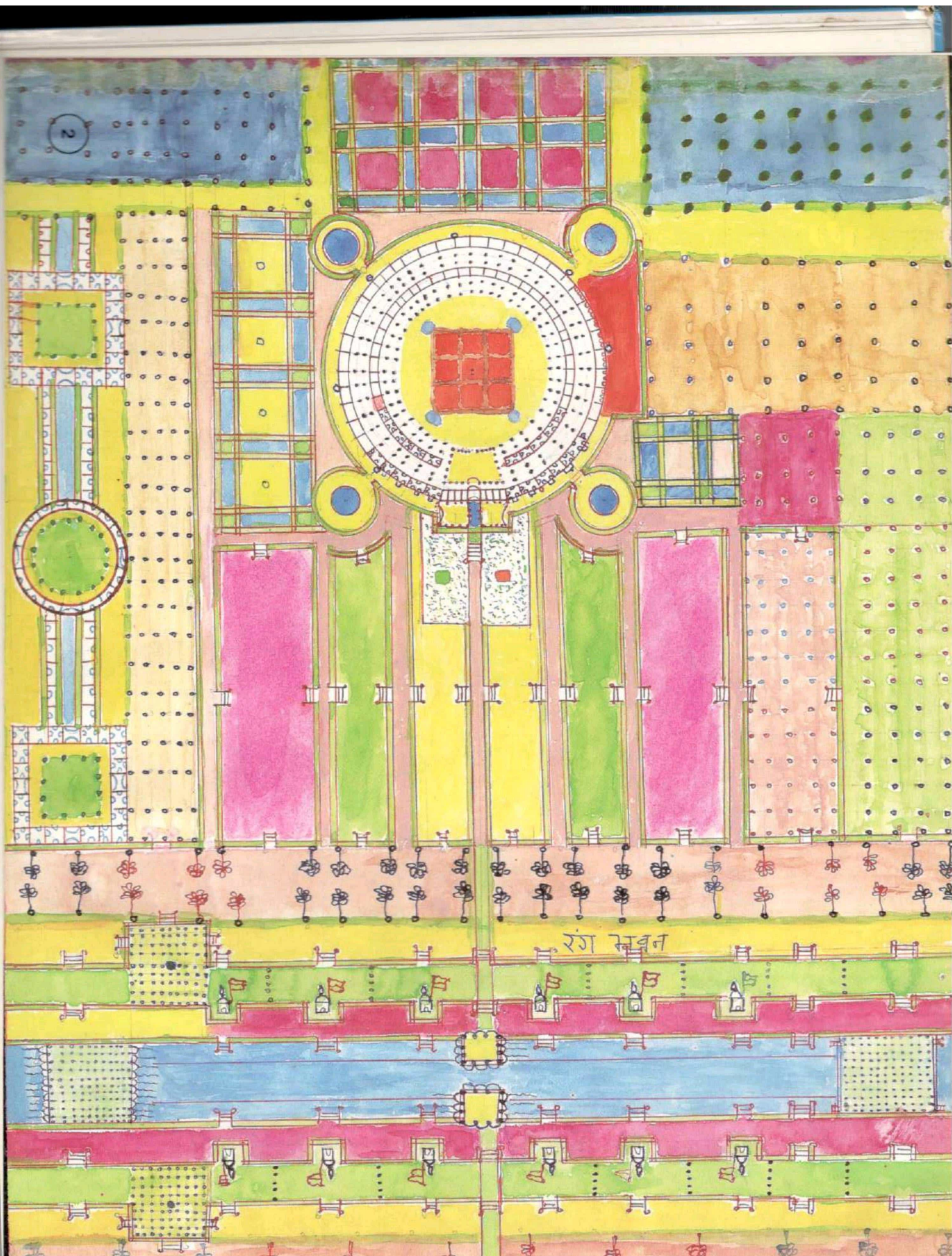
क्रम सं. चित्र का नाम	पृ
109. रांग की जमीन की वन की चांकनी तथा चार महाबिलंक हवेलियों की चांकनी	पृ
110. आठ सागर आठ जिमीन तथा सबकी चांकनी	
111. अव्याकृत : वेराट का 14 लोक अष्ट आवरण	13
112. महक अव्याकृत के कारण शरीर से लेकर सबलिक ब्रह्म का परआतम शरीर	13
113. परम धाम के पत्नीस पक्ष	

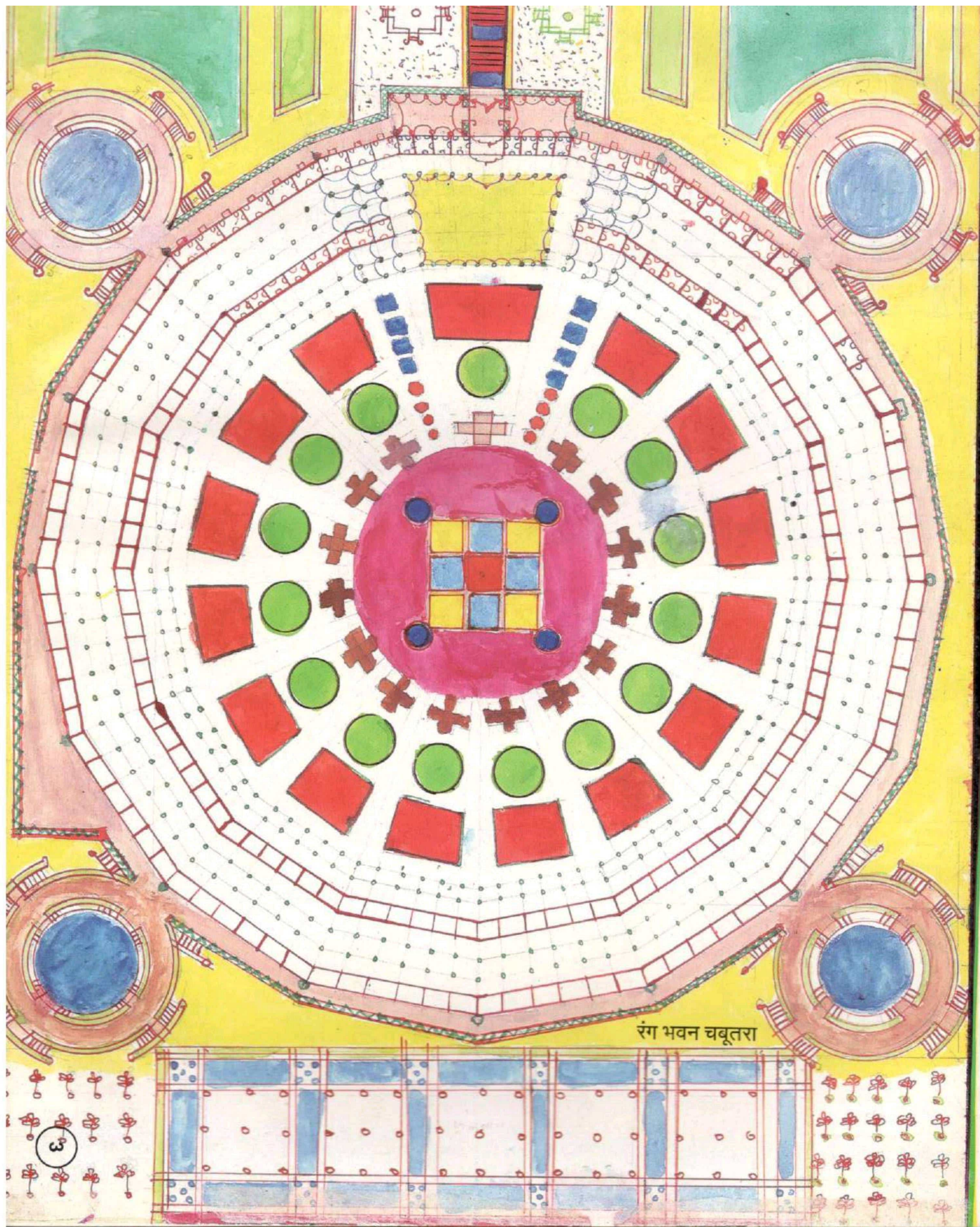
* झीलना *

भाया वालाजी चलो जमुना जल झीलिया ॥ टिक ॥ पाट घाट
की देहरी में जहां रात्रत कीजे राज।
रतन जड़ित के मोहोल में, कीजे रंग विलास ॥ १ ॥
आप अकेले हूजिए, संग स्यामा जी साथ।
हम रुहें बारे हजार मिलके, झीलें तुम्हारे पास ॥ २ ॥
कुंज भवन की रेत में, पिया चलो दौड़िये जाए।
जो जाको छुई लेत है, सो ताके हाथ विकए ॥ ३ ॥
पीताम्बर कटि काछनी काछे, सीस मुकुट लटकये।
हेम कसद की ओढ़नी ओढ़ें, झांझरी धुंधरी घमकाये ॥ ४ ॥
फूल बाण और नूरबाण में, चलो पिया बैठिये जाए।
लेहरे आवे सुगंध की, दास रही महकाय ॥ ५ ॥
बड़ावल और लाल चबूतरा, जहाँ बैठा साथ भराय ॥
पशु पक्षी गुजरे को आवें, गए गए खेल दिखाय ॥ ६ ॥
रसिक राज स्यामा जी के आने, सखियां निहत कराय।
जापर चितवत है त सों, देखत नयन सिराय ॥ ७ ॥
हंसिके राज खुशी भए, पहिराय बलमाल।
सखी साकुंडल अरज कहत हैं, बलि बलि राजकुमार ॥ ८ ॥



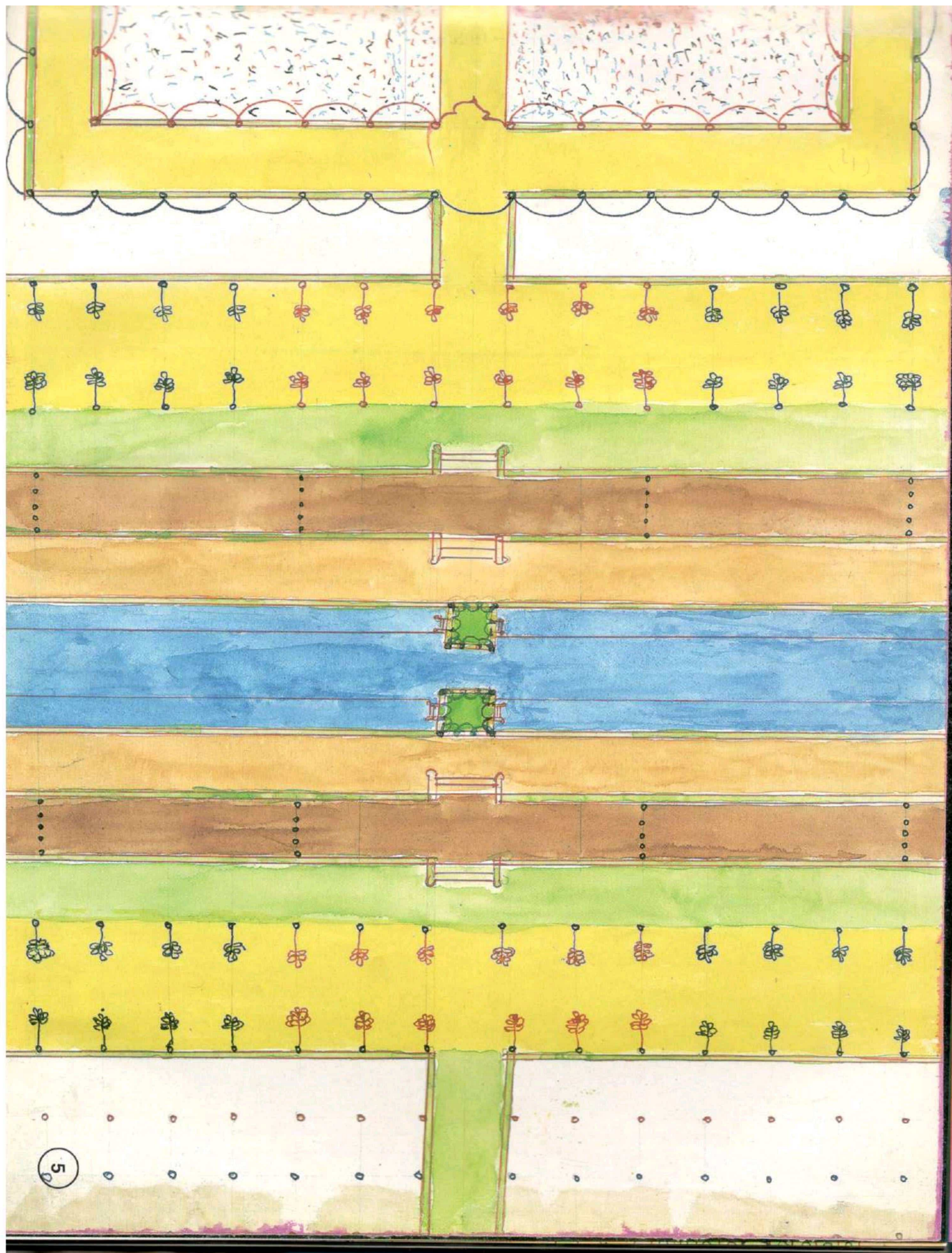
प्राचीन पेन्टिंग
पर आधारित

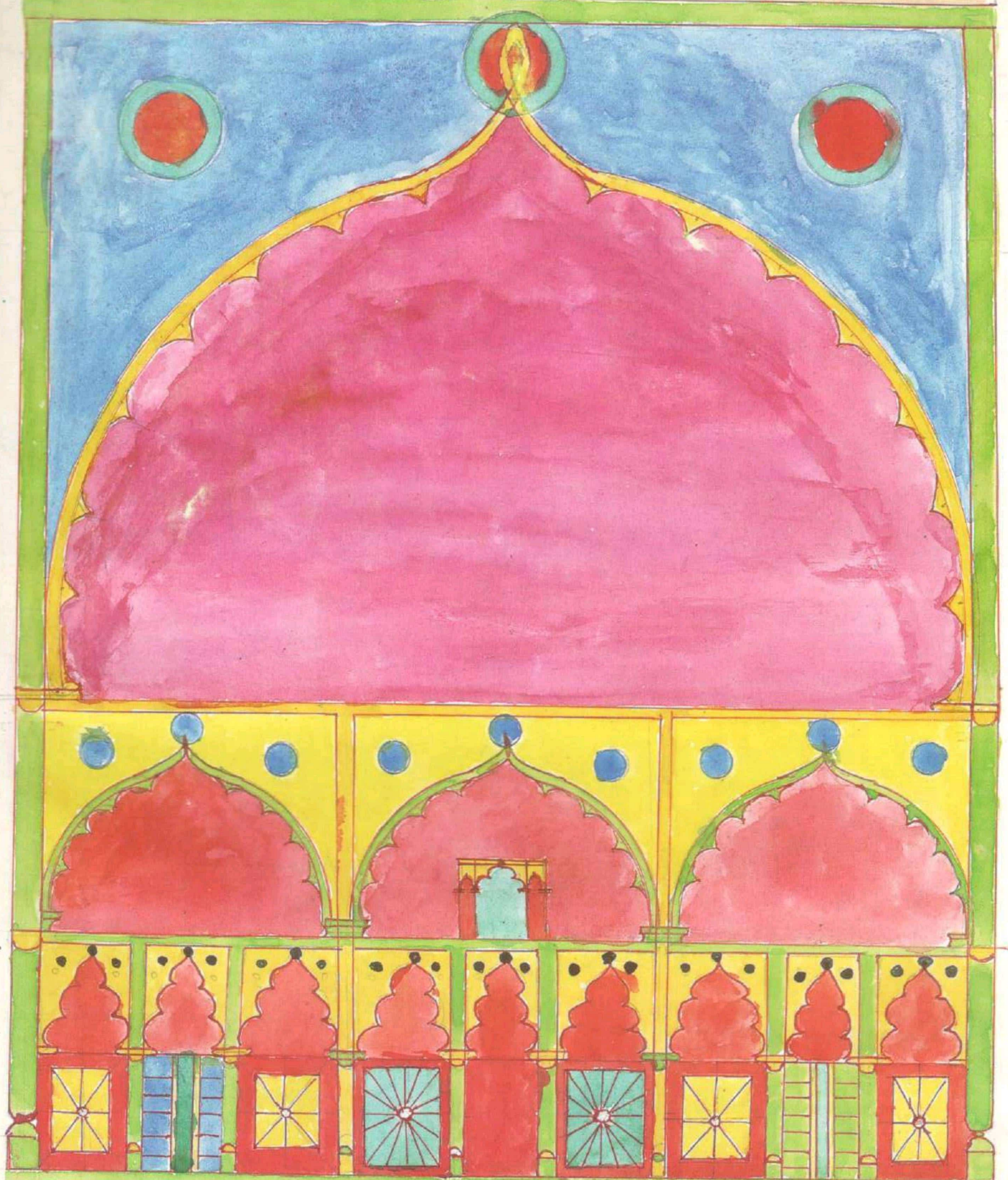


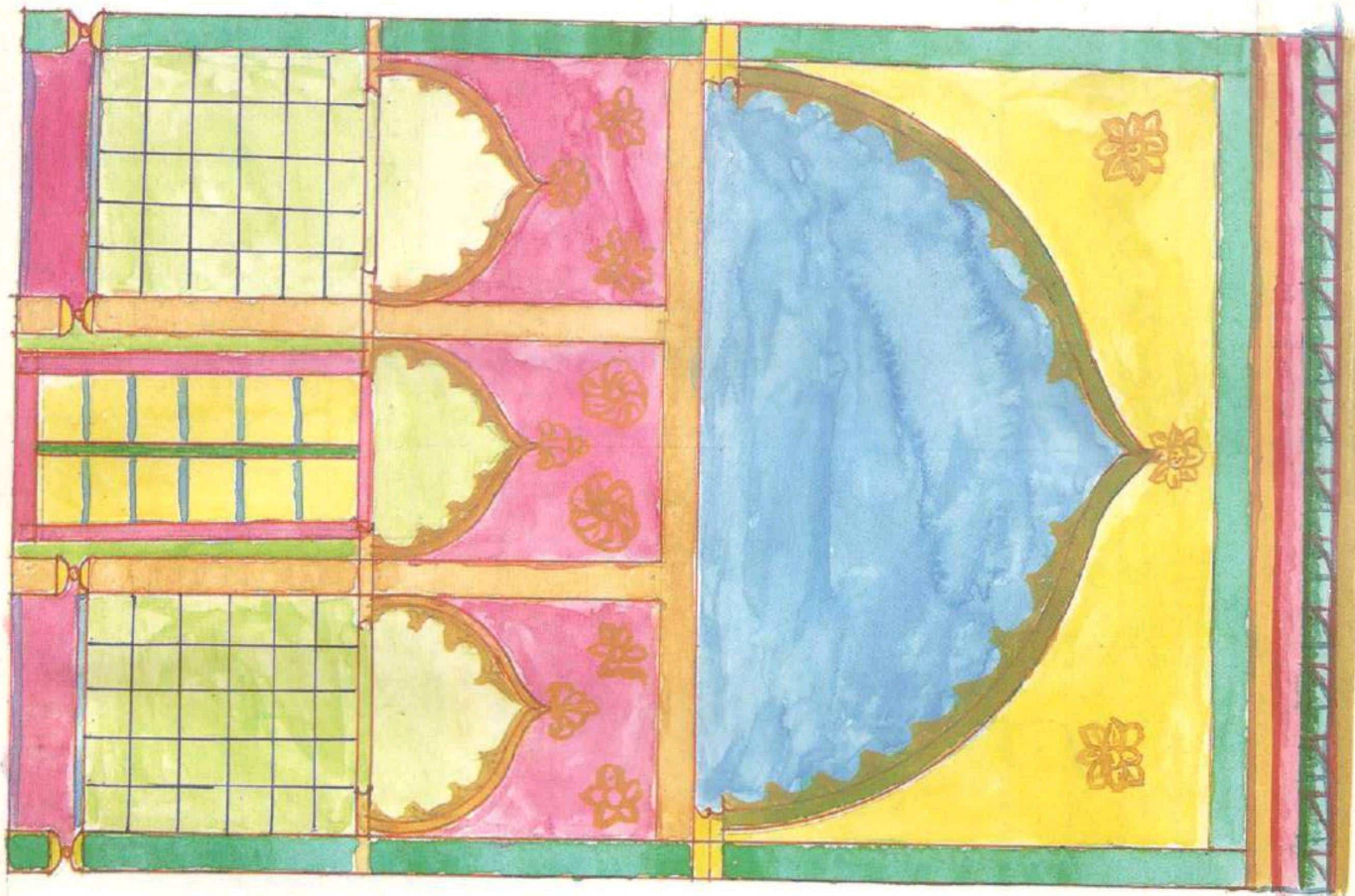


रंग भवन मध्य का हांस, 28 थंभ चौक

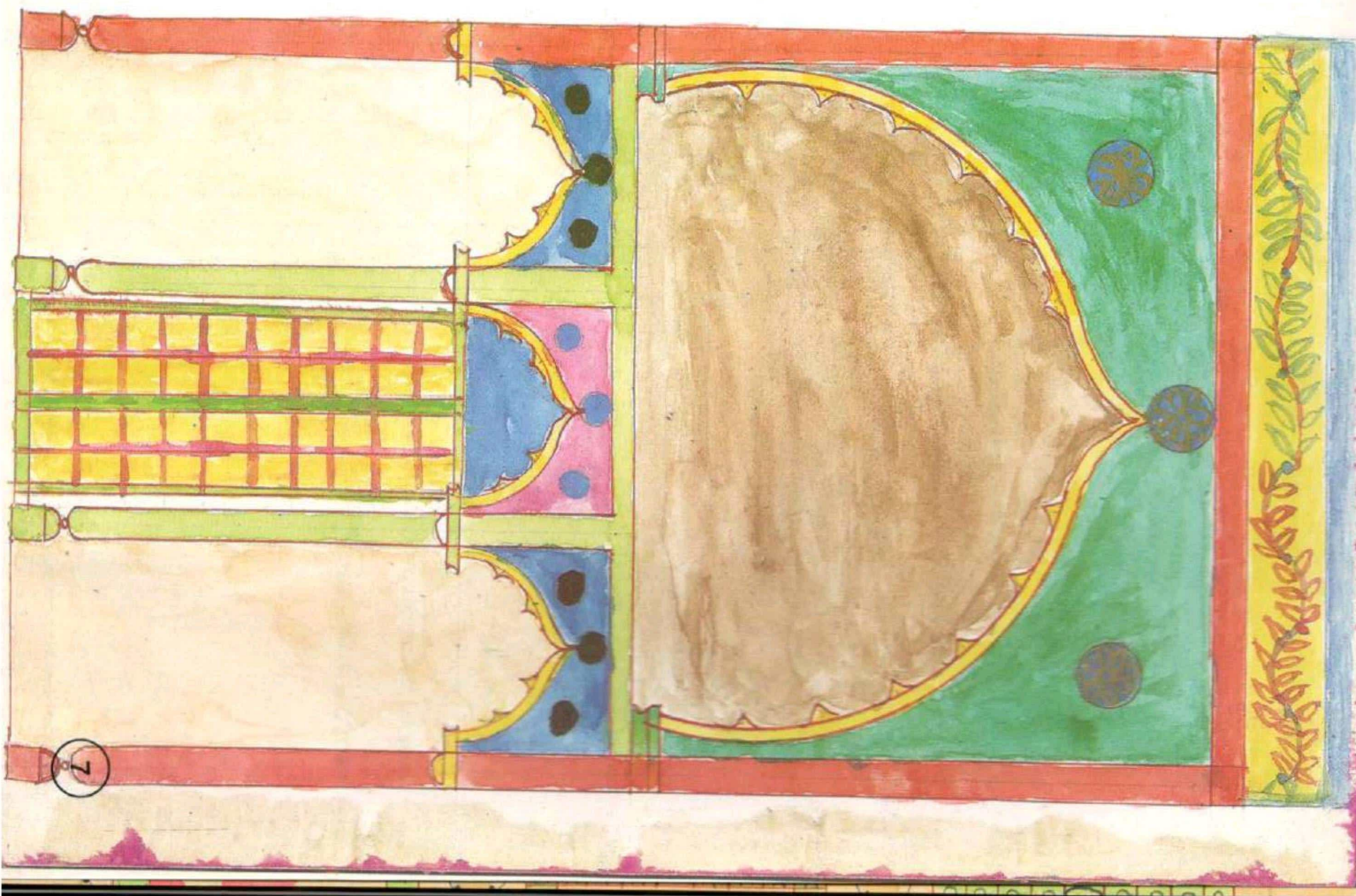


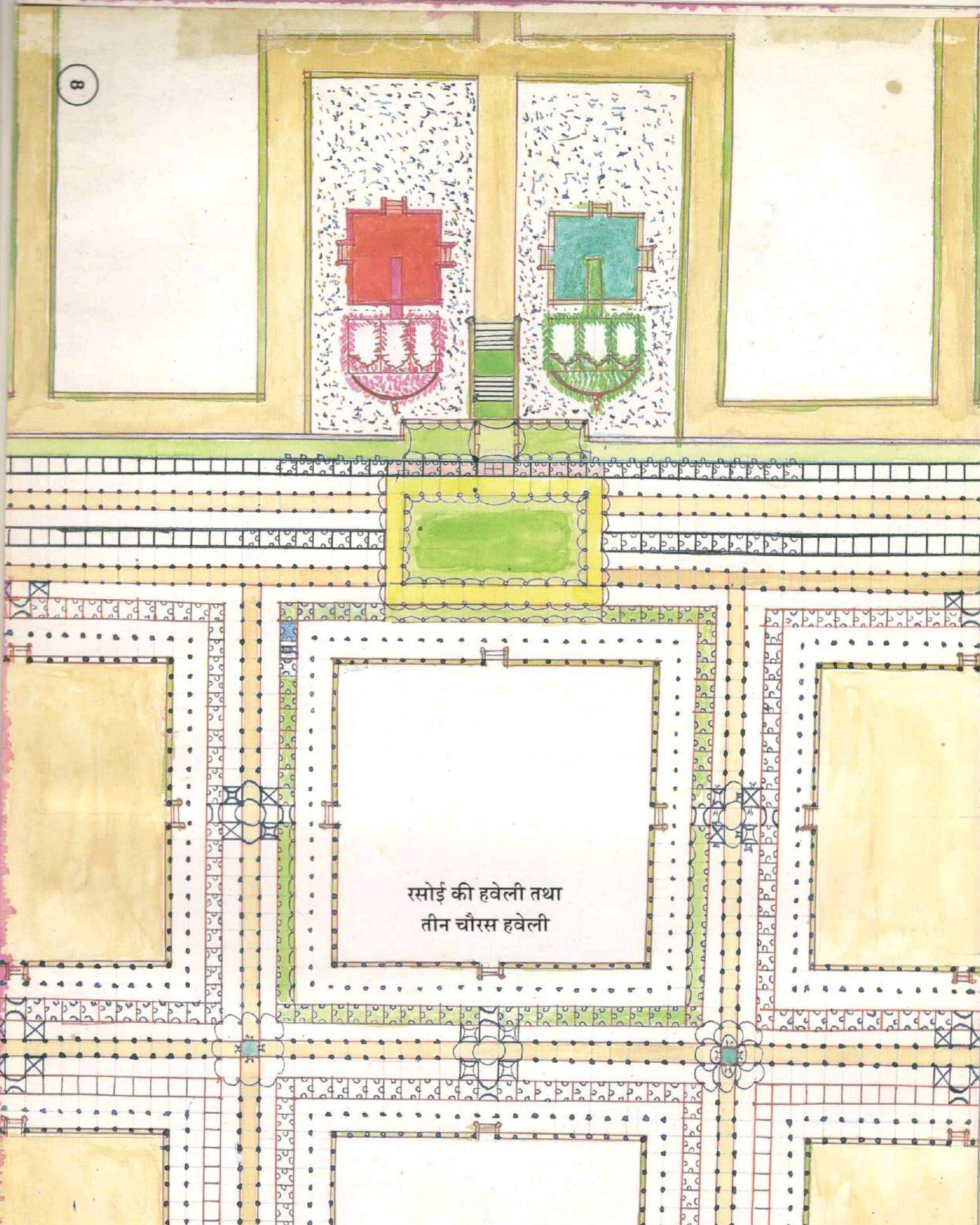


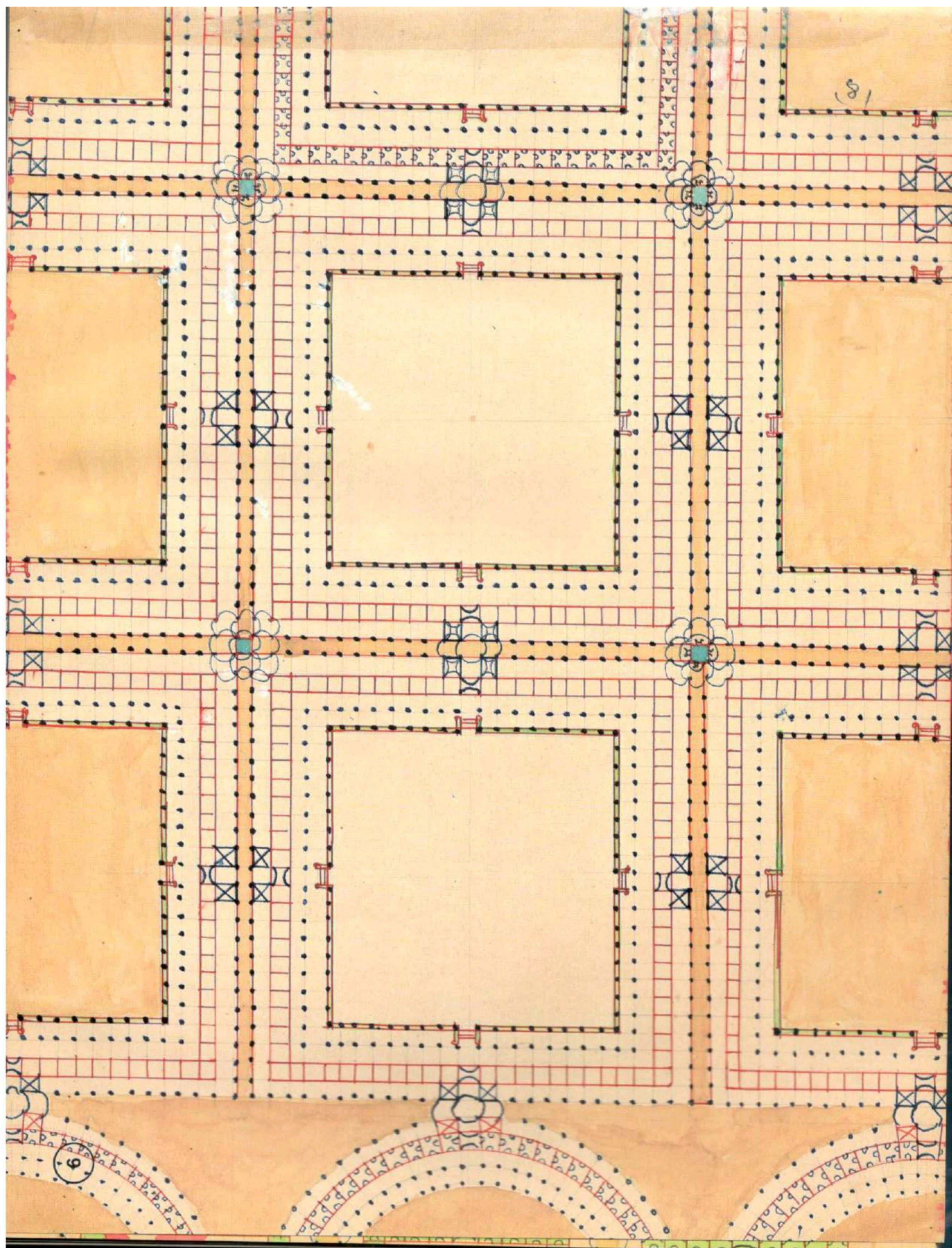




मन्दिर की बगली दिवाल

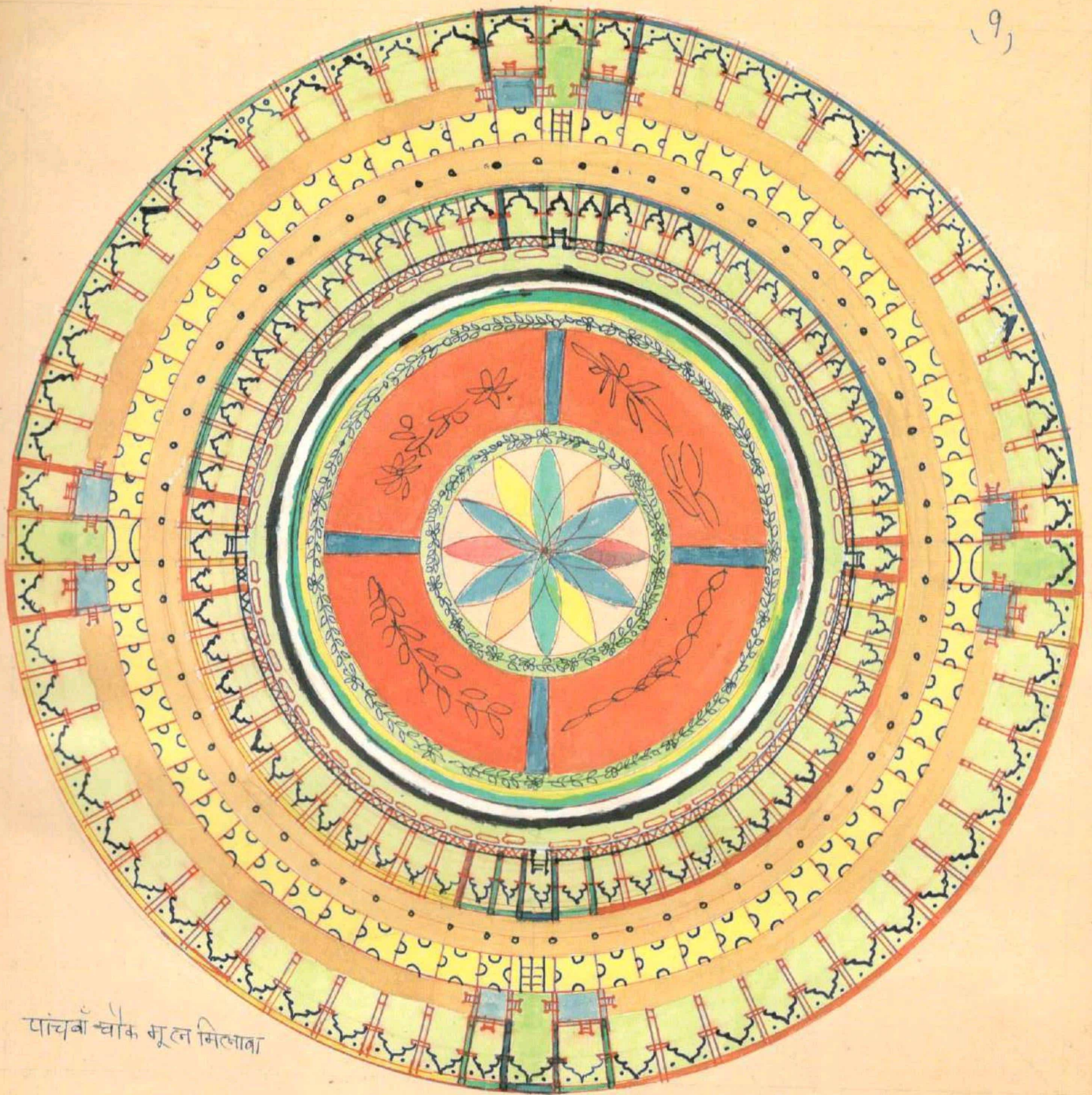




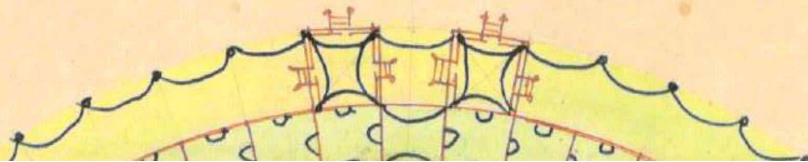


10

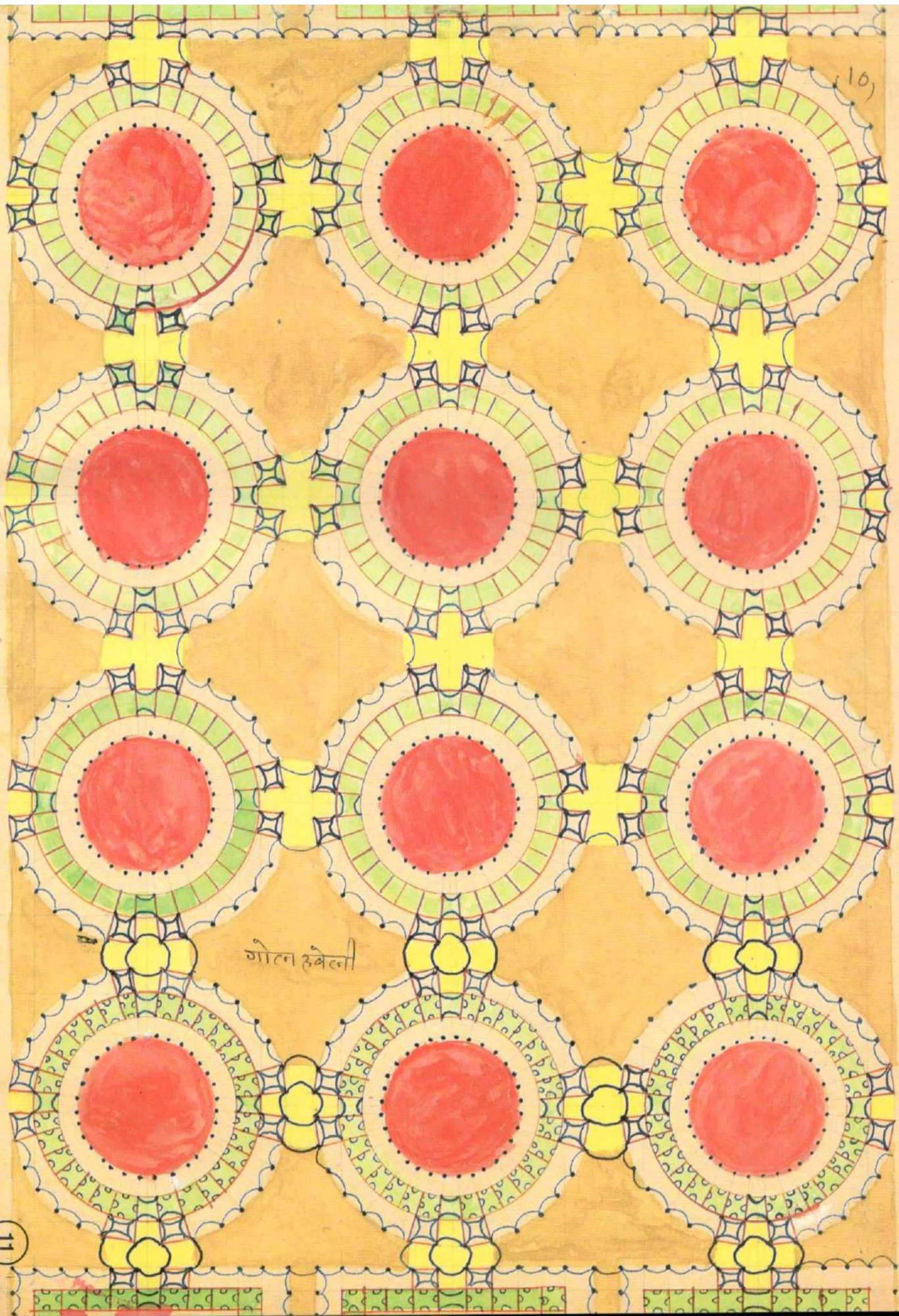
9,



पांचवां चौक मूल मिलावा

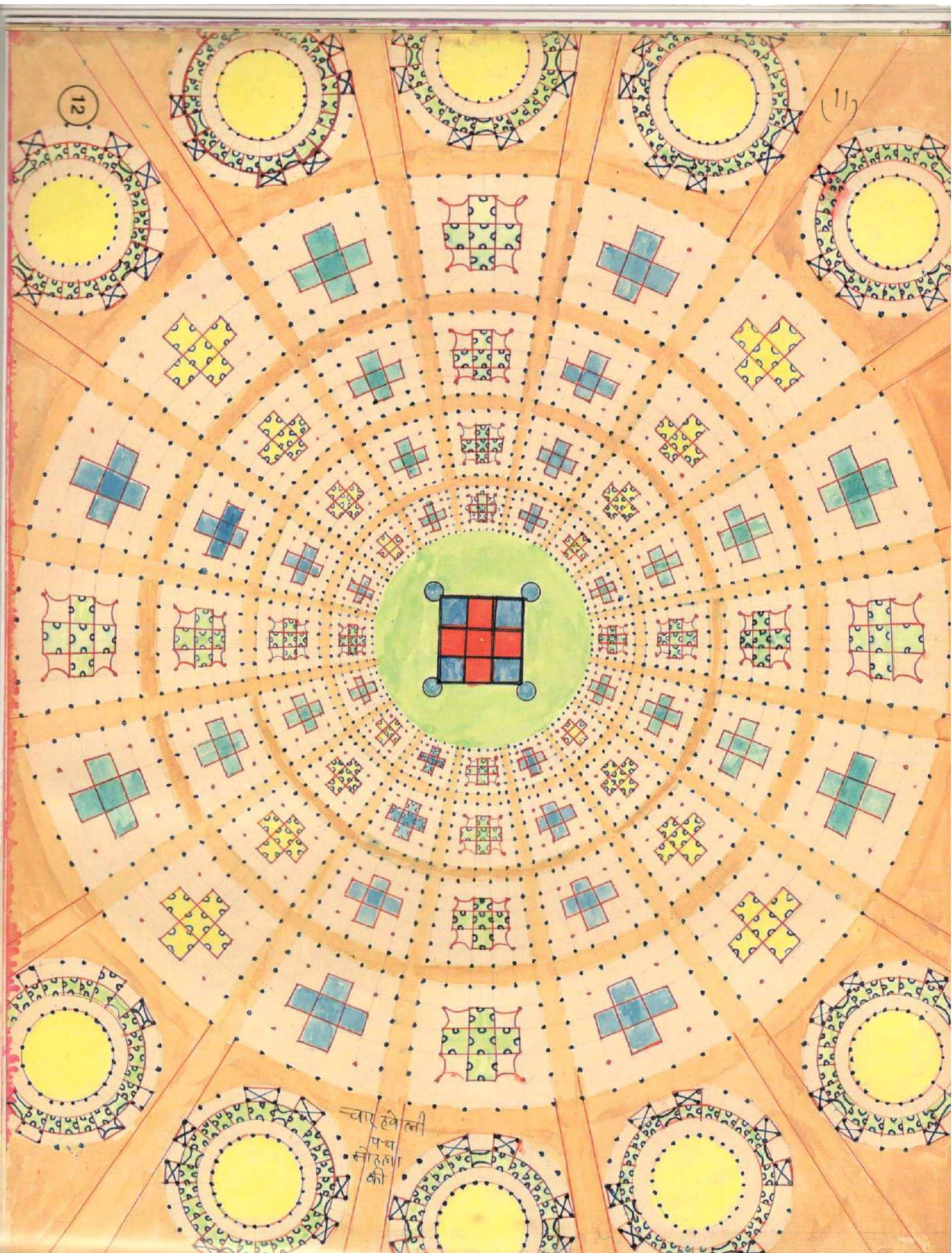


10)



गोल्न हबेली

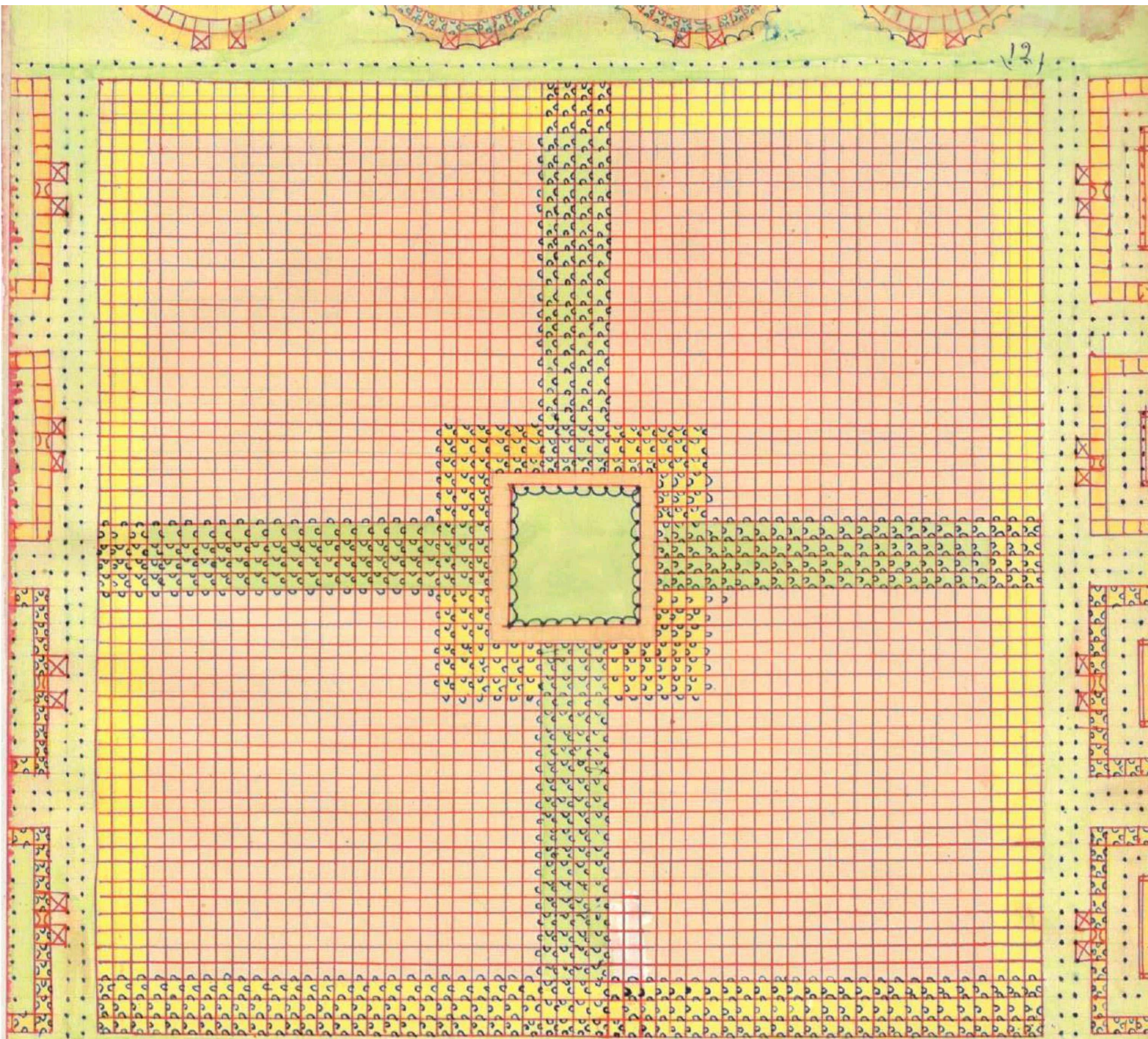
11



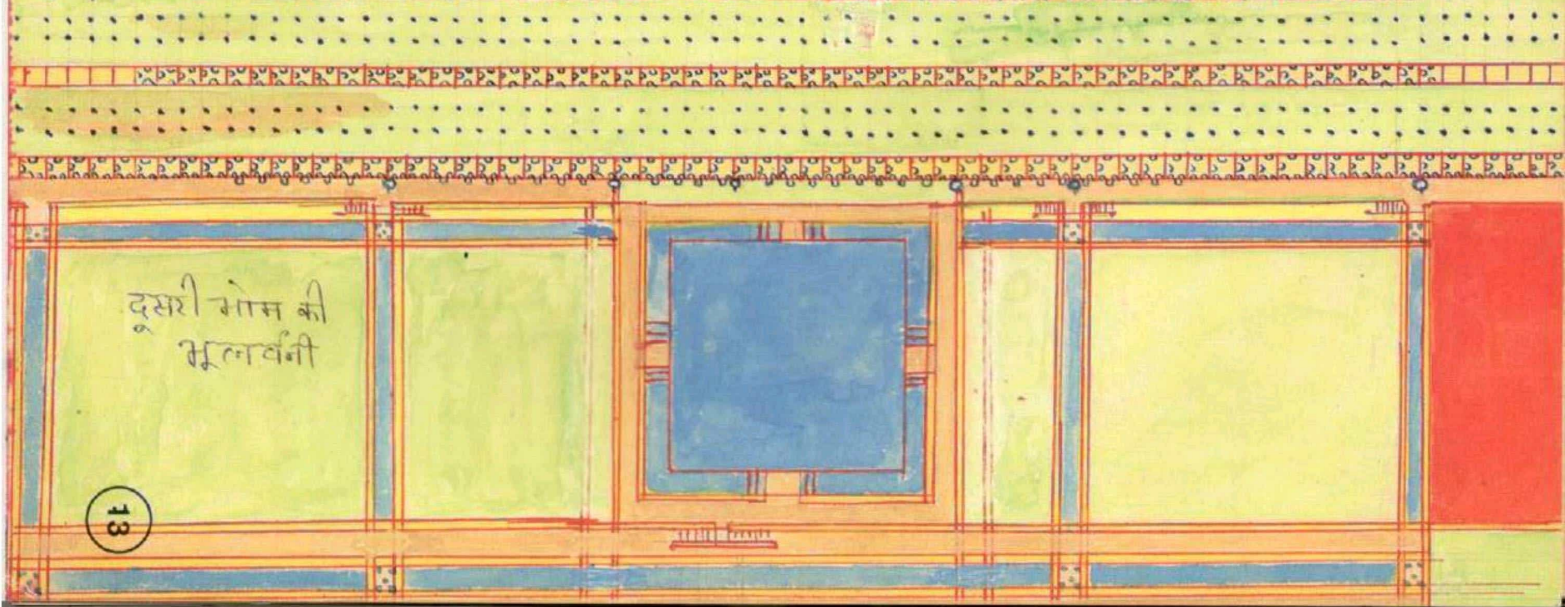
12

11

चार हवे की
पंच
मोहला
की



दूसरी गोम की
भूलवर्नी

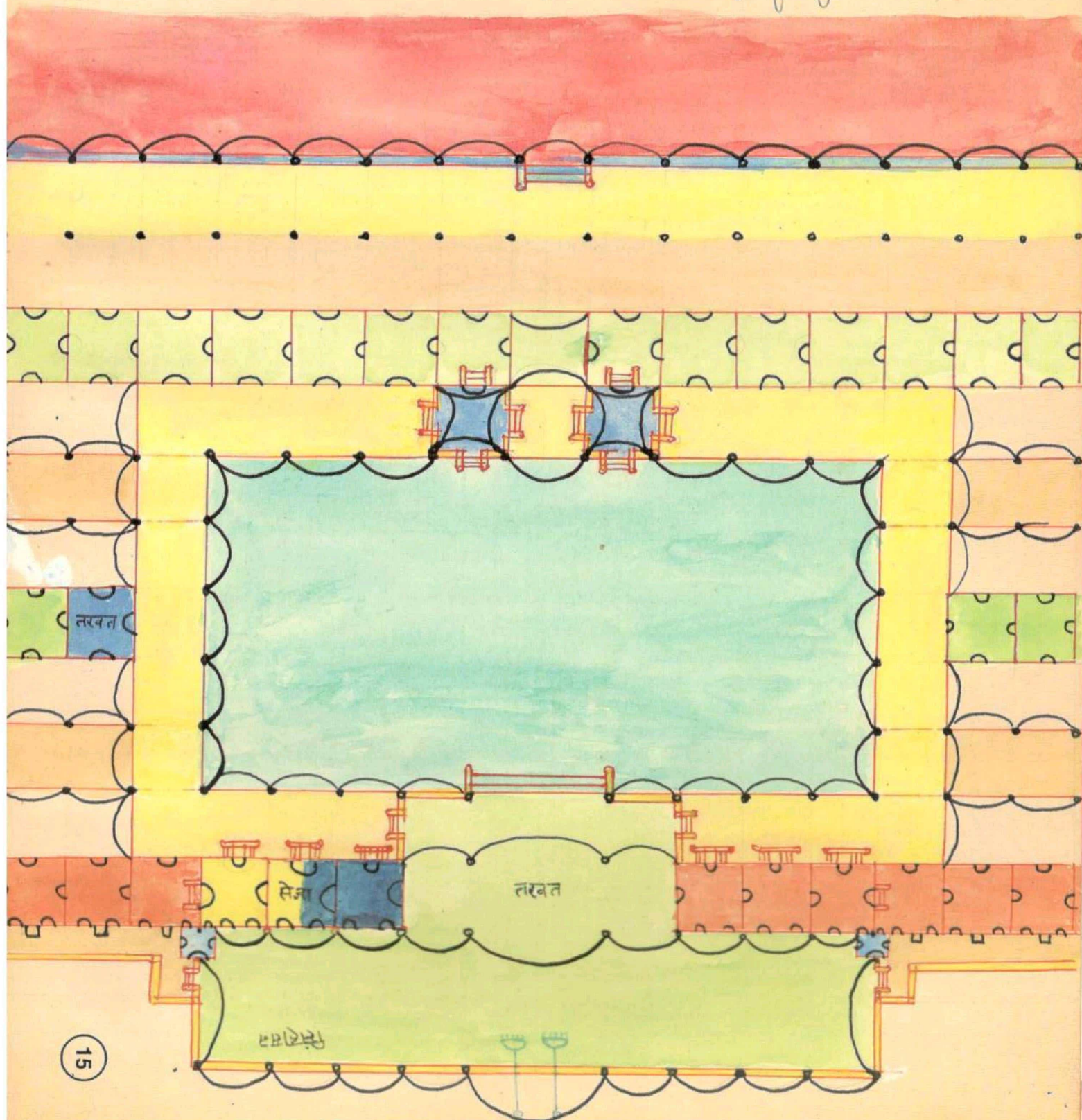


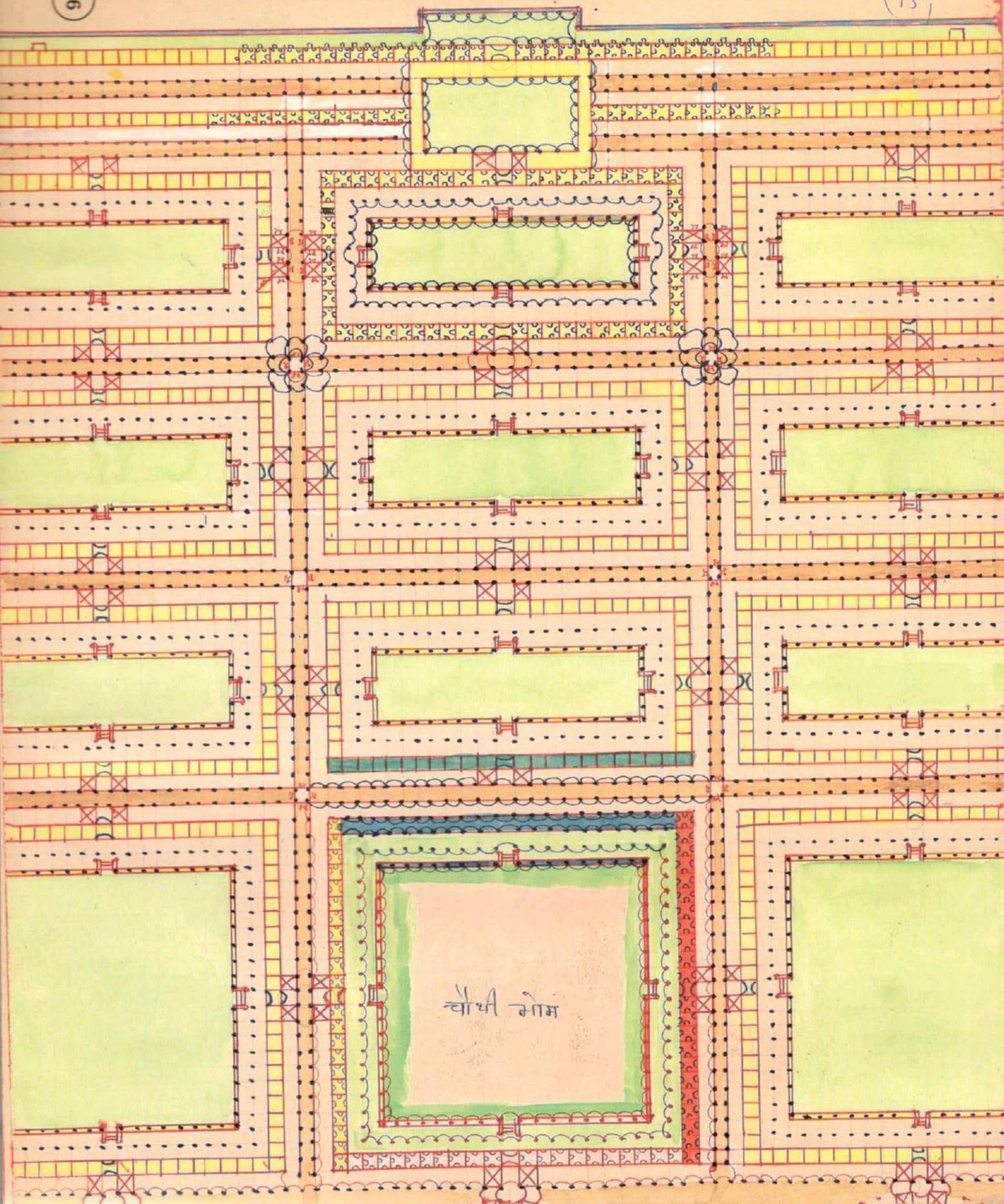
(13)

दूसरी भौम का वस मन्दिर का हांस

14

১২৫ ১৫০
 ১২৫ ১৫০ ১৫০ ১৫০



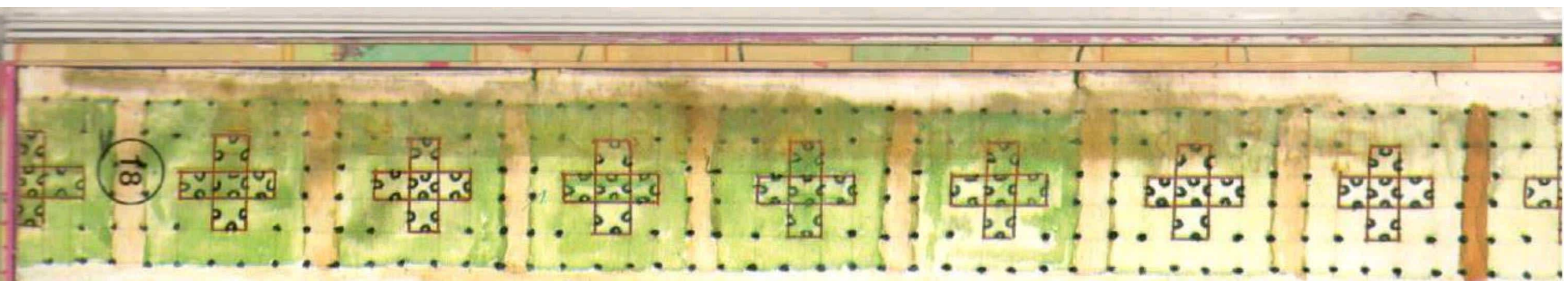


(16)

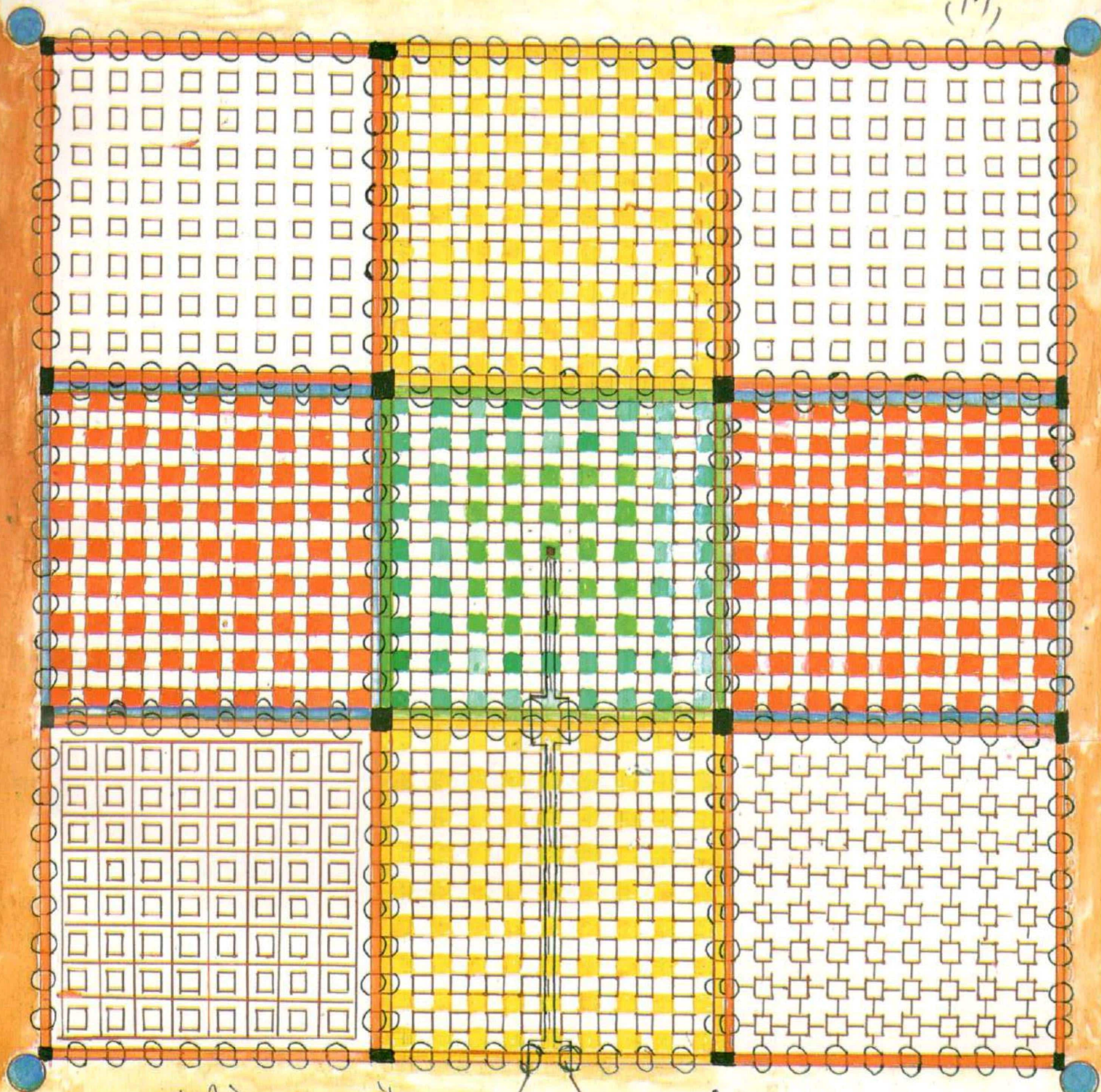
५५५५५५

पांचवी भोग
सथप चौक
की
चार हबेली

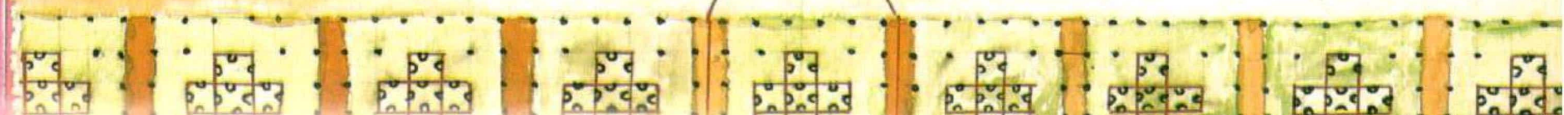
५५

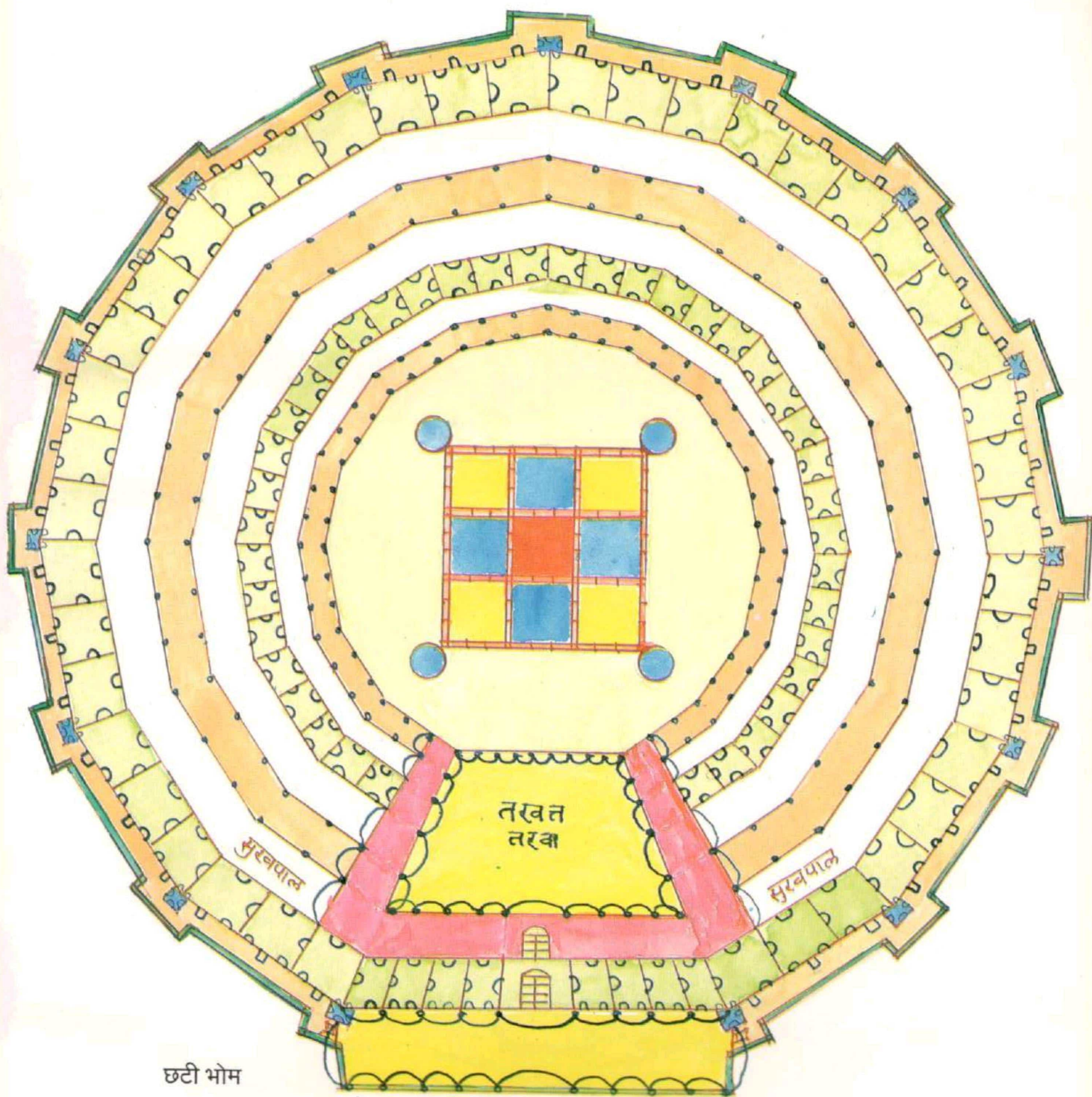


(17)

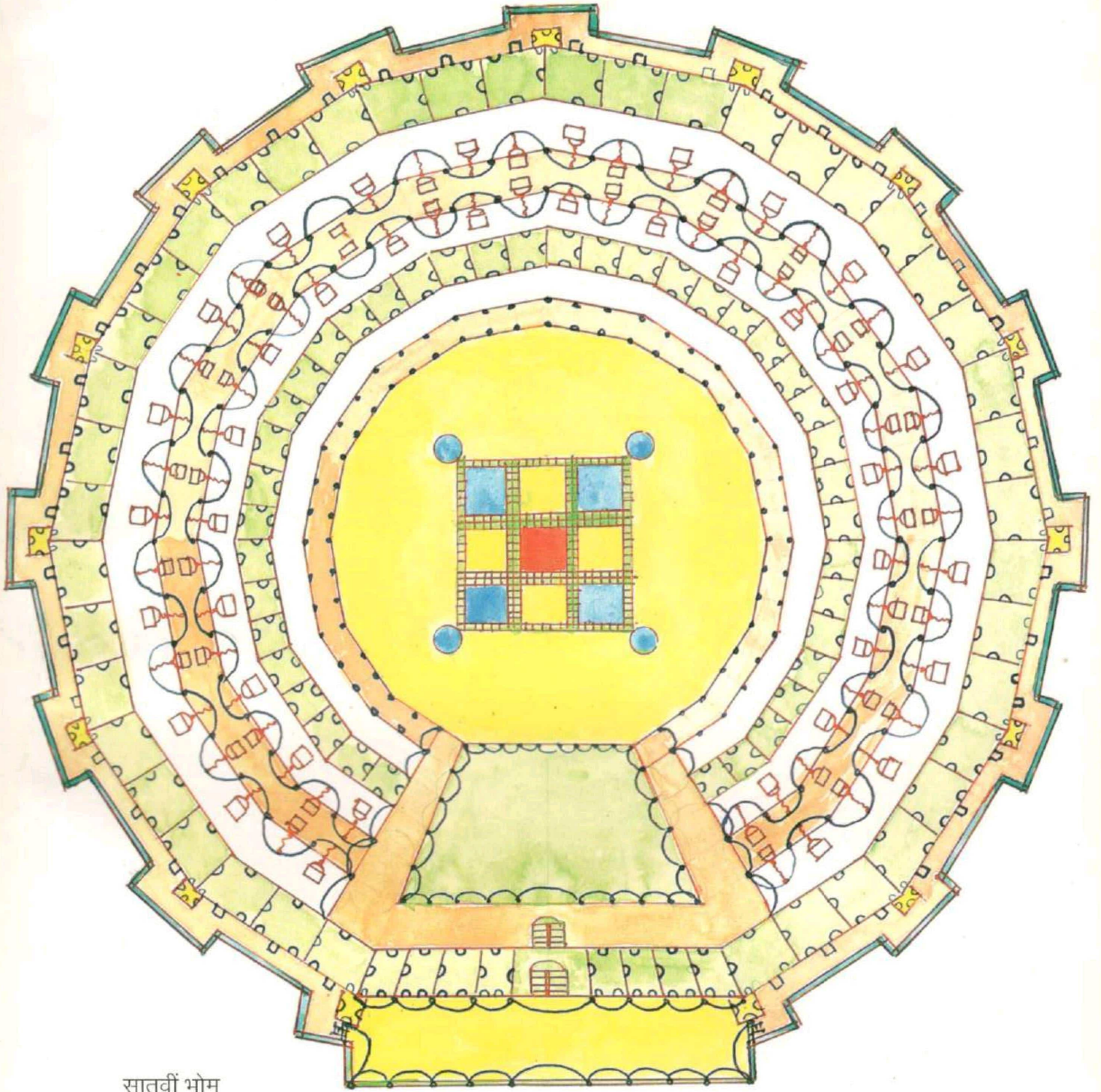


पांचवी सोम सव्य नव चौक

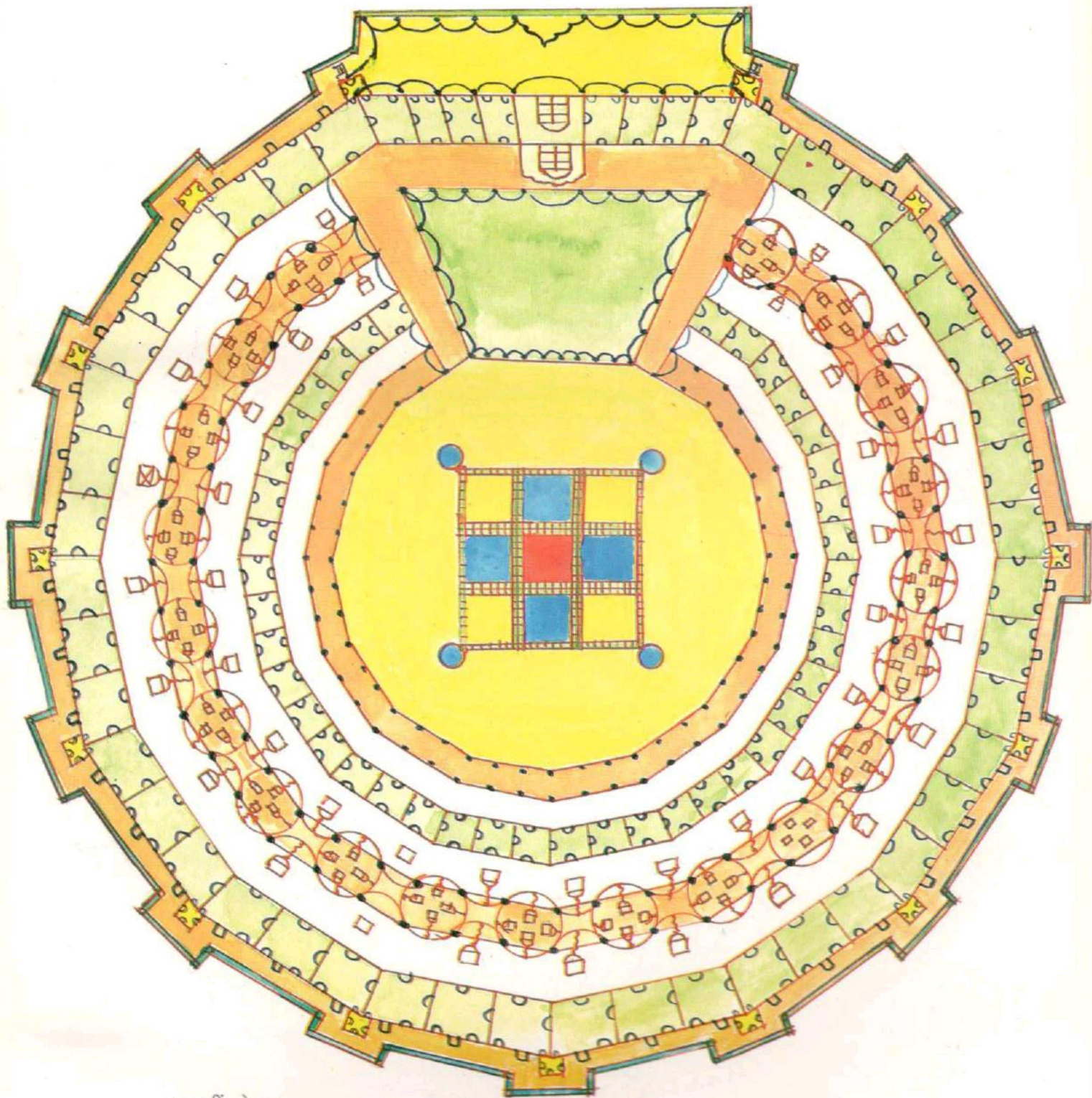




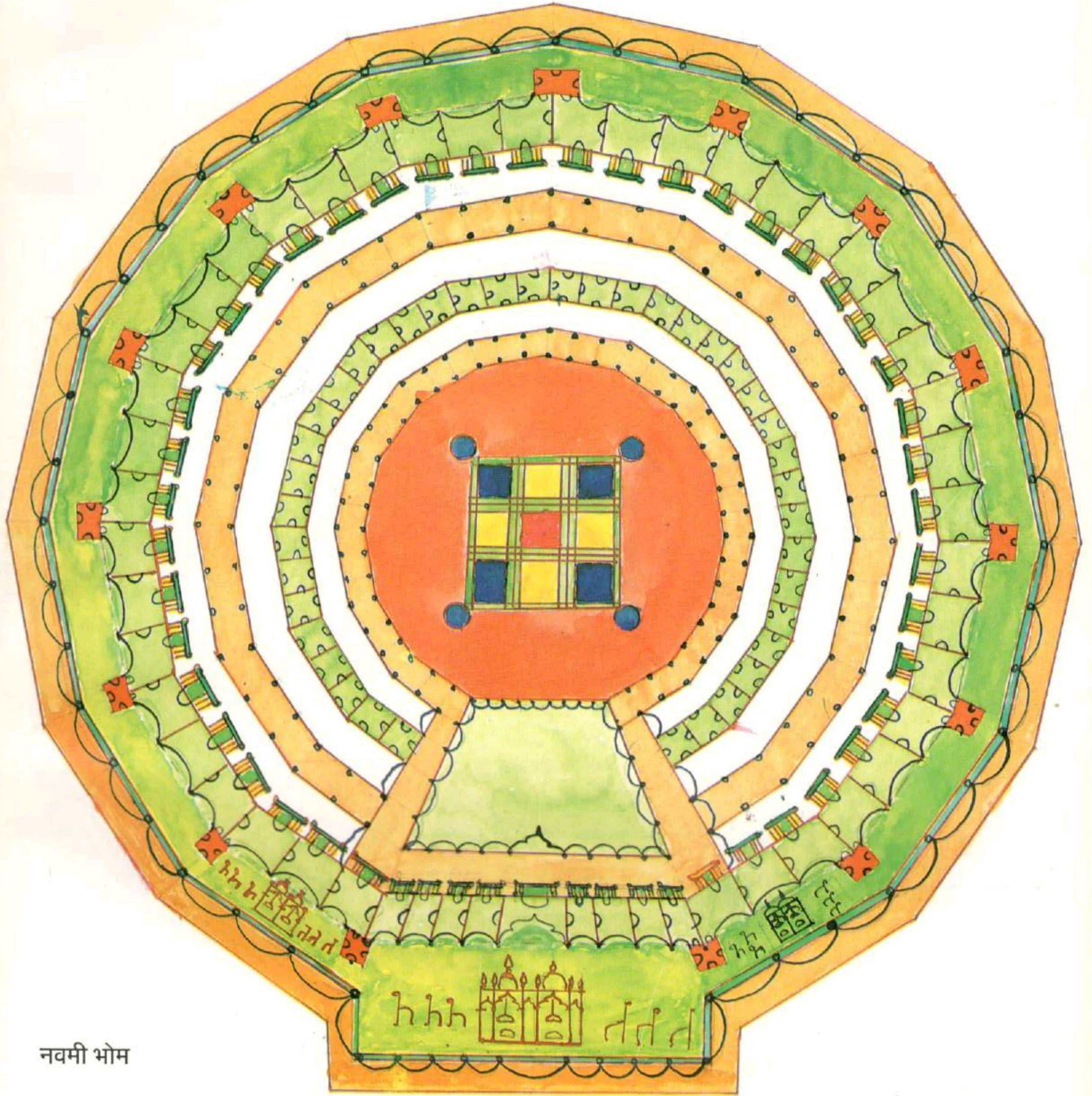
छटी भोम



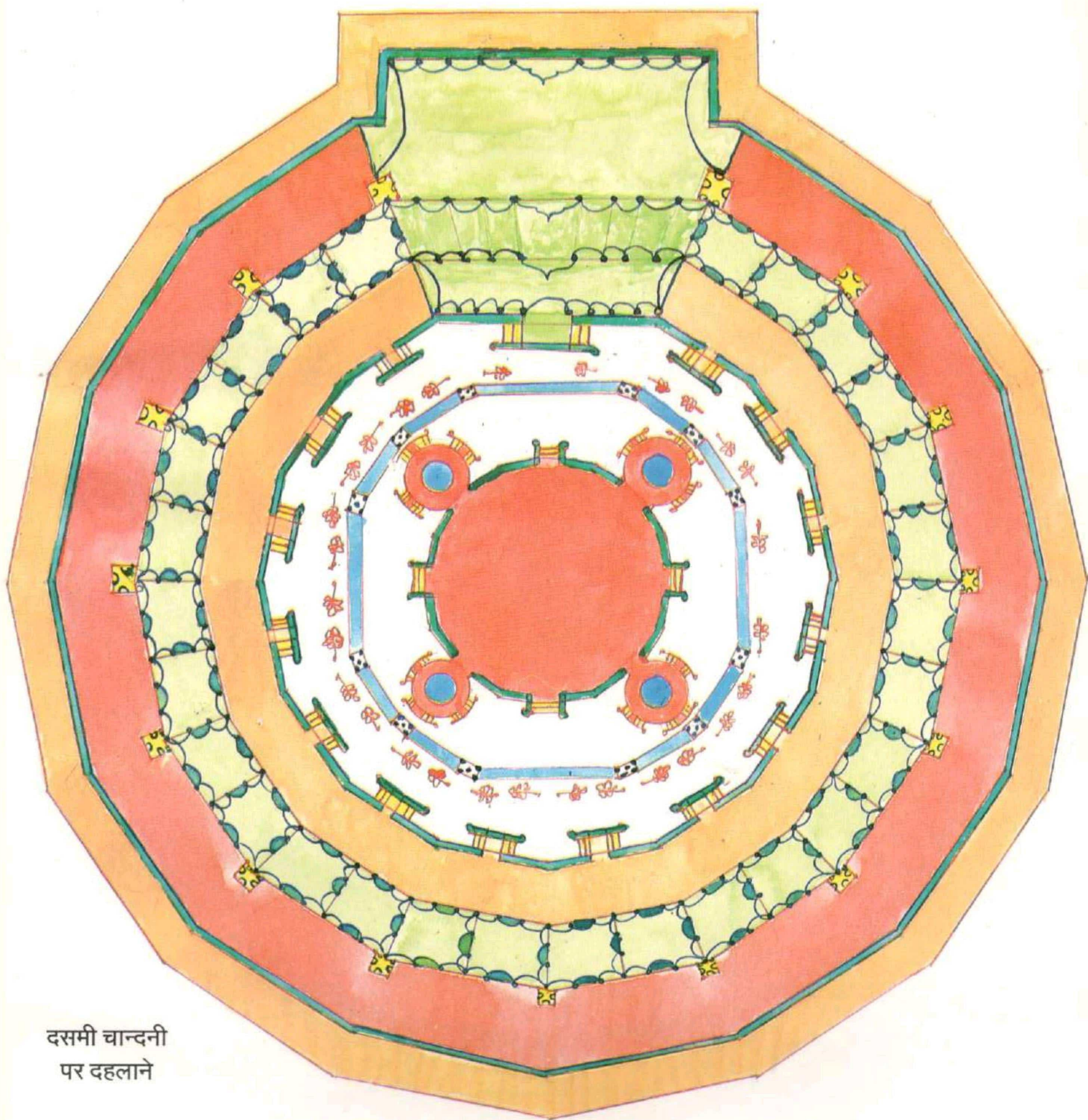
सातवीं भोम



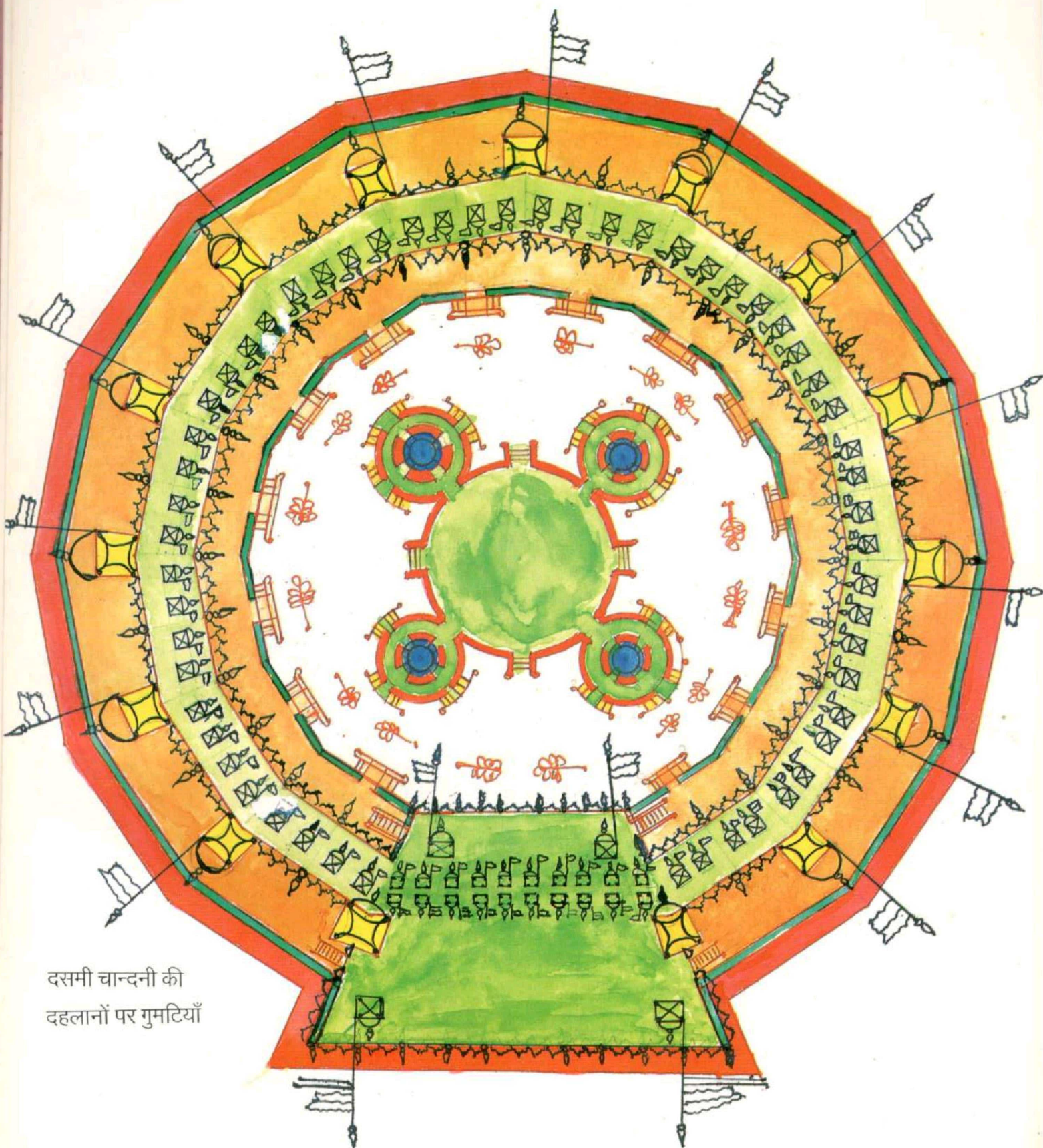
आठवीं भोम



नवमी भोम

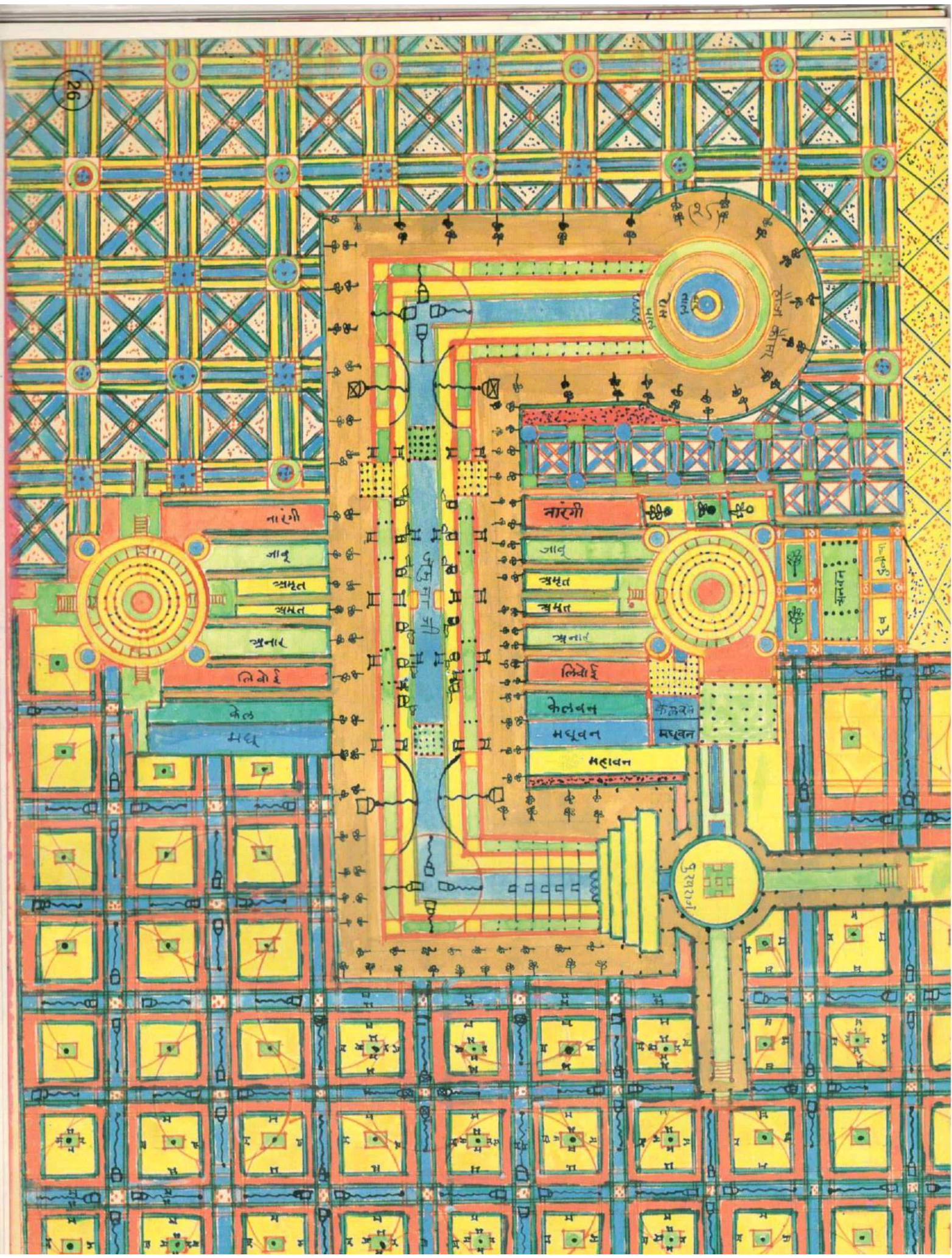


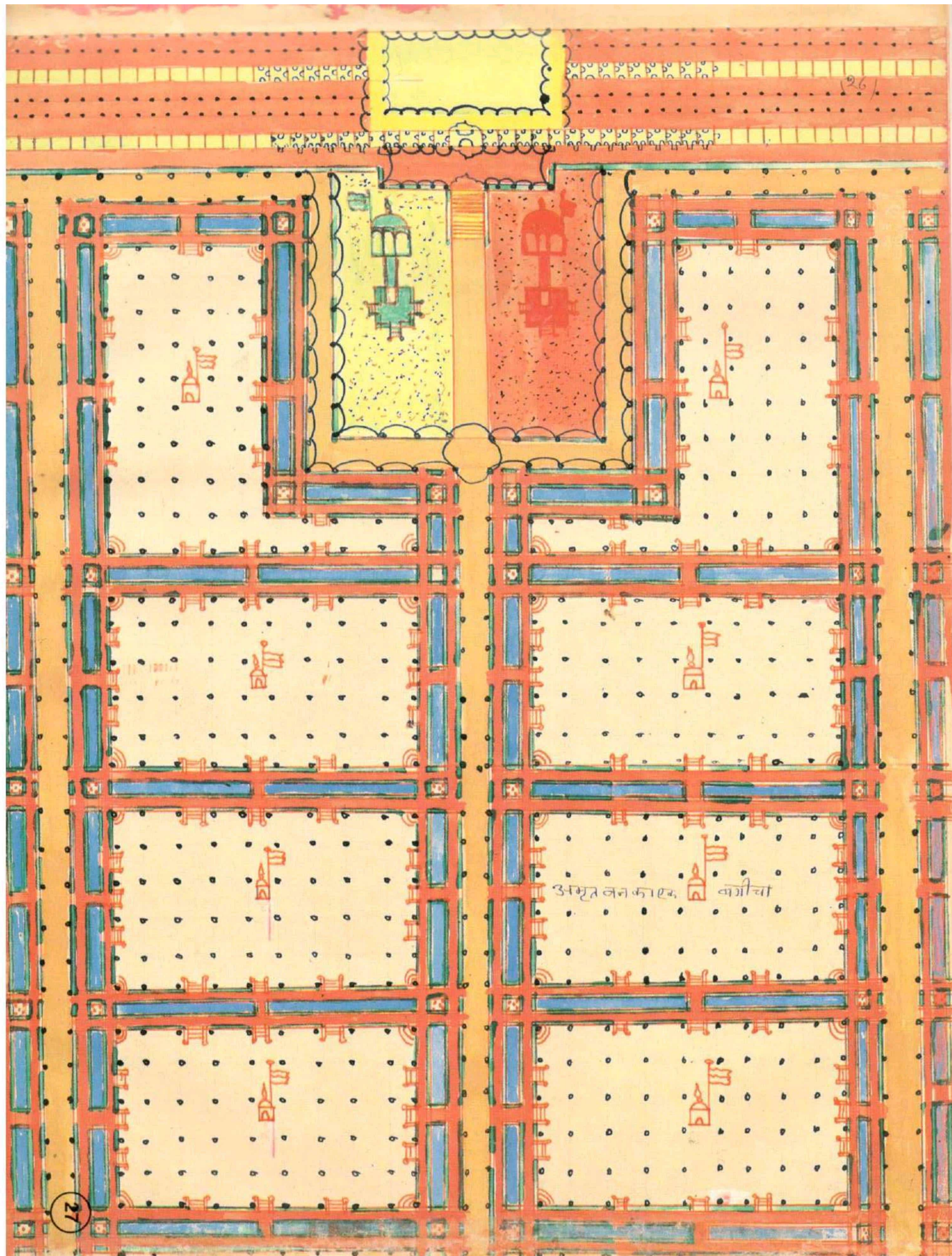
दसमी चान्दनी
पर दहलाने



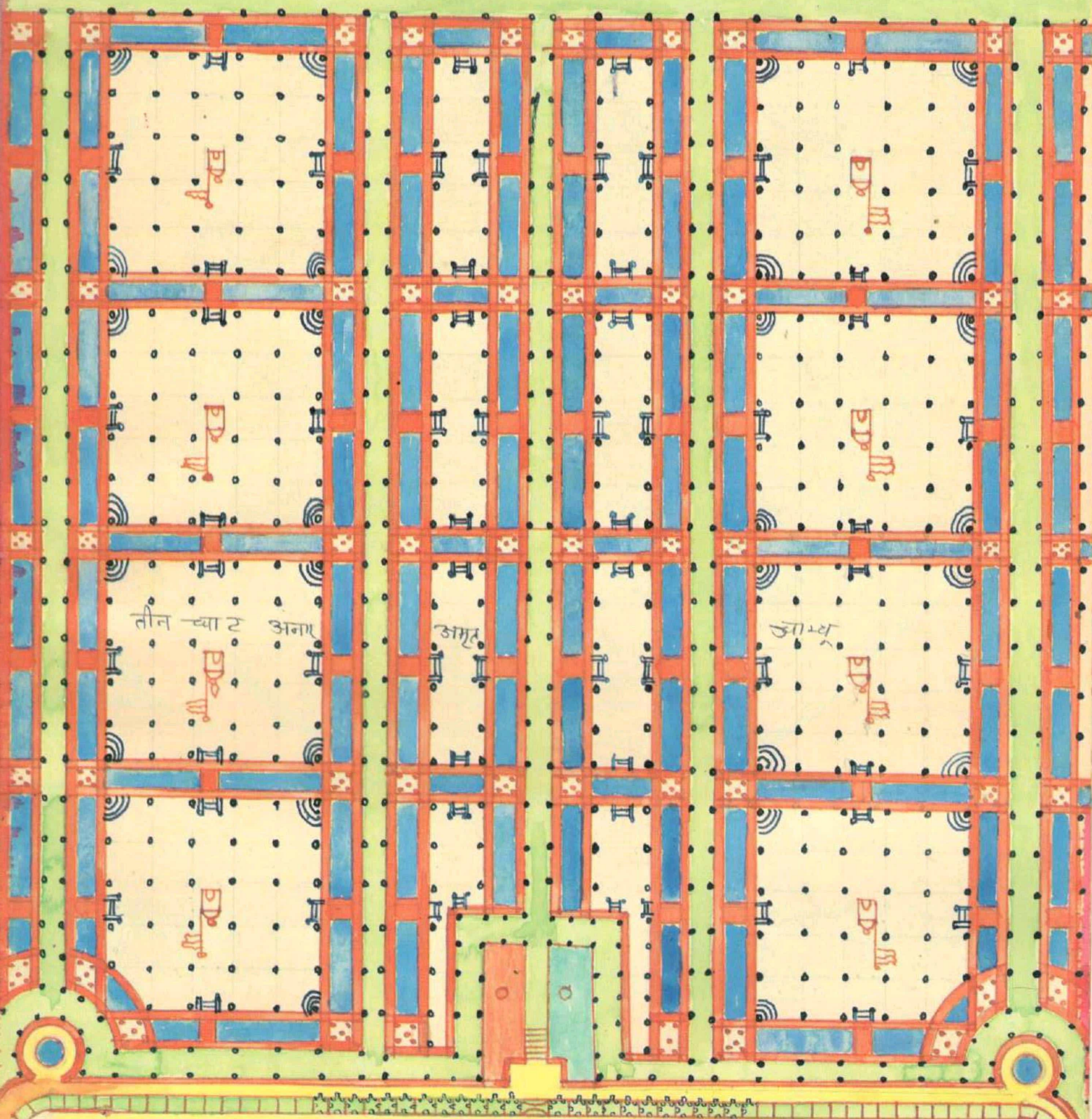
24,

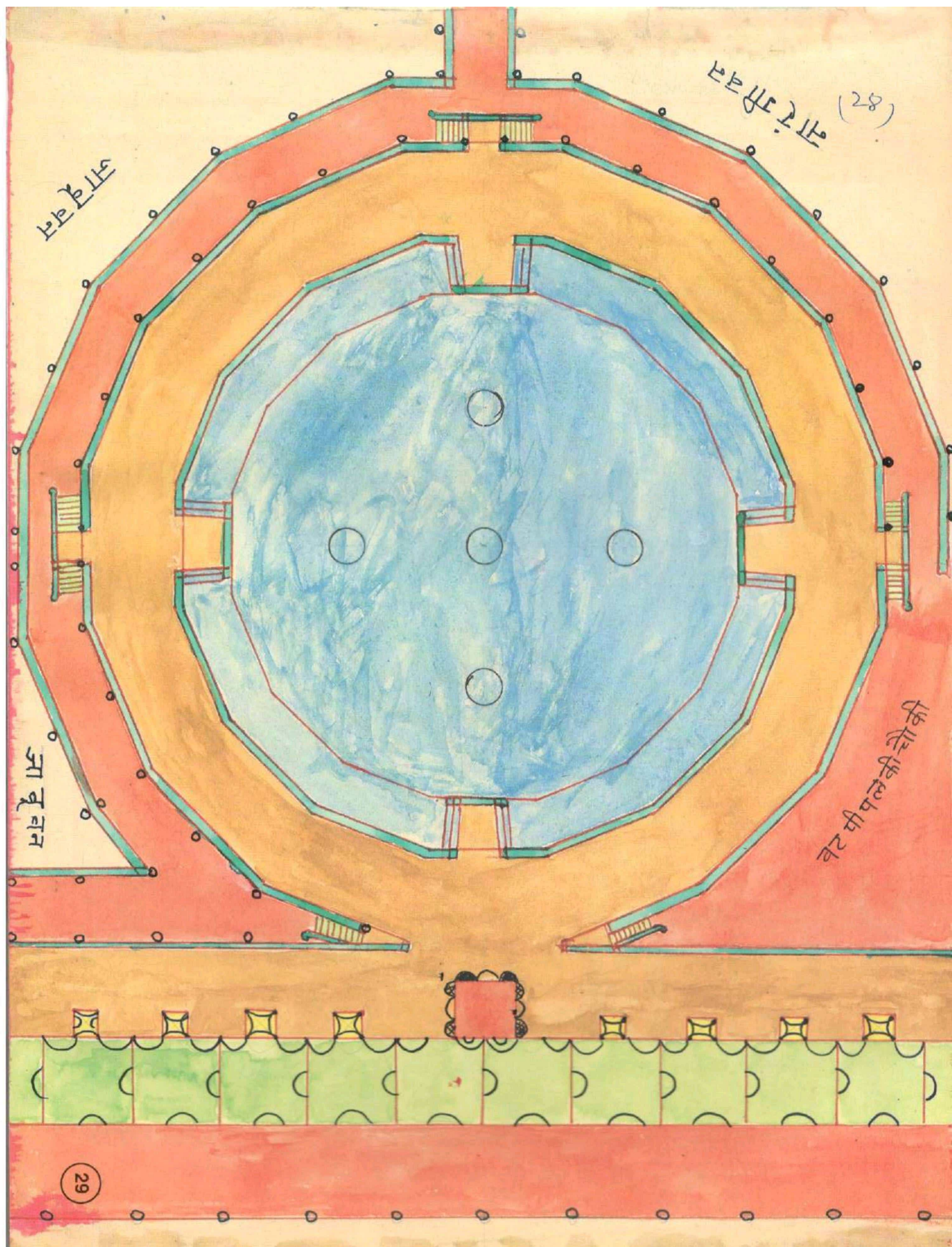
25





अभूत जन का एक वागीचा





जो बर वन (28)

जो बर वन

बेट पी पले की चौकी

जो बर वन

Handwritten musical notation in Devanagari script, organized into 10 horizontal staves. Each staff contains a series of notes and rests, with some staves featuring a red background and others a blue background. The notation is a form of musical shorthand used in traditional Indian manuscripts.

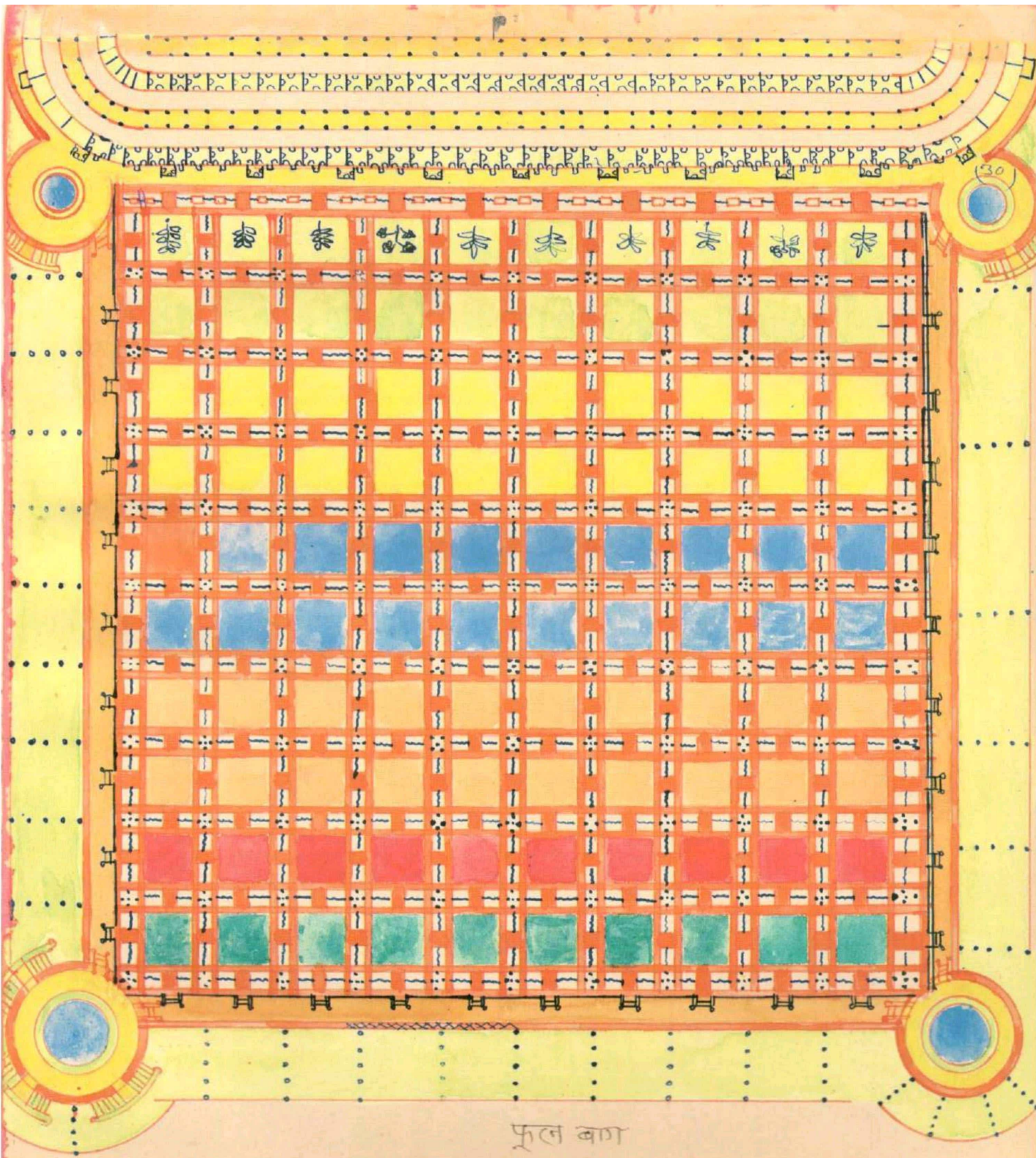
जर पीपल की चौकी

॥ पाचपड वजे वन के कंजवन में तो कर मार रहे हैं ॥

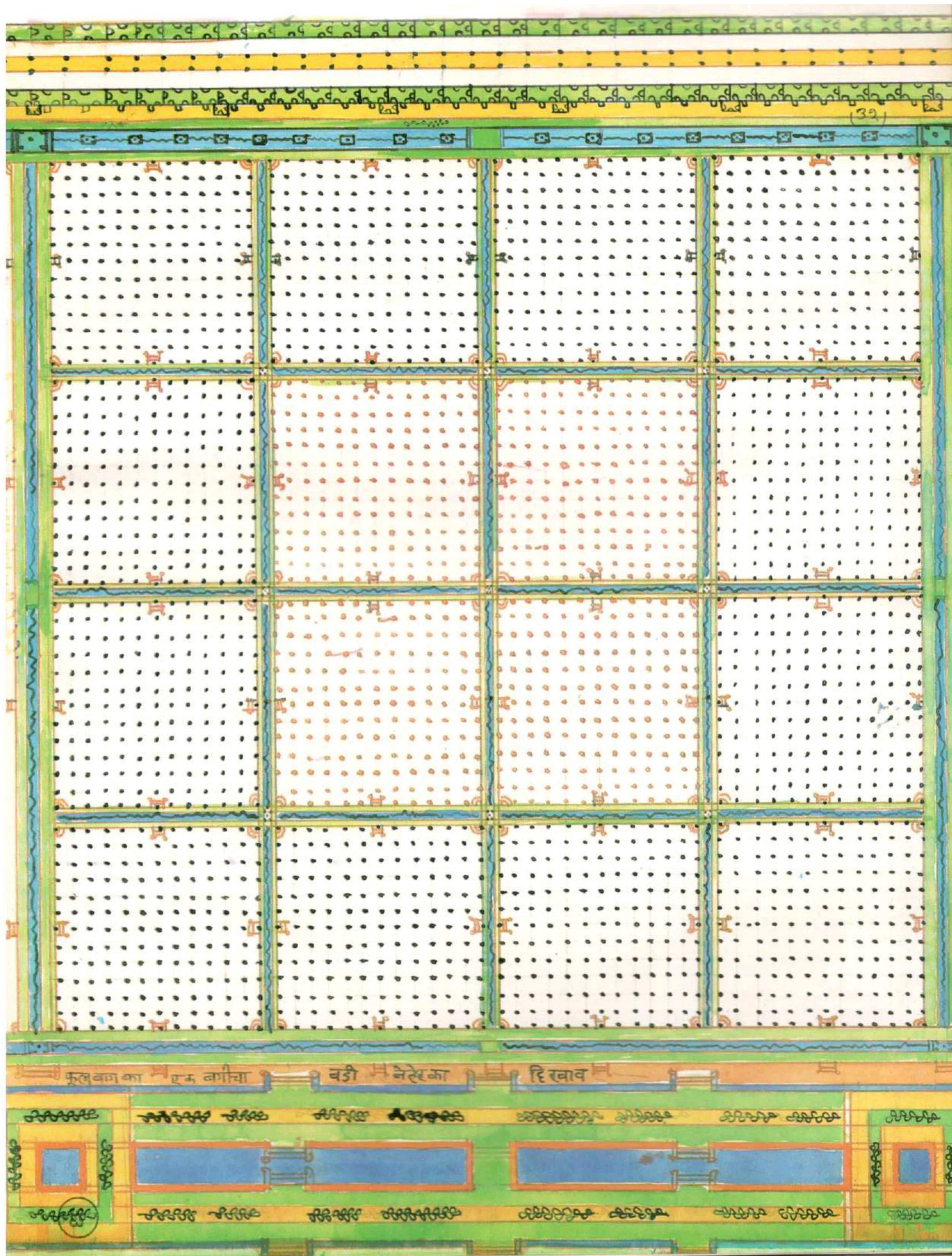
A large, colorful geometric pattern, likely a rangoli or decorative border. It features a grid of yellow squares with blue borders, overlaid with a series of black circles and lines. The pattern is highly symmetrical and intricate.

Decorative border at the bottom of the page, featuring a repeating pattern of small, stylized figures or motifs. The border is colorful and ornate, typical of traditional Indian bookbinding.

सांगी वगीना

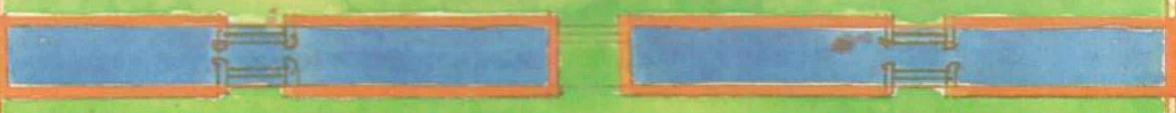


फल बाग

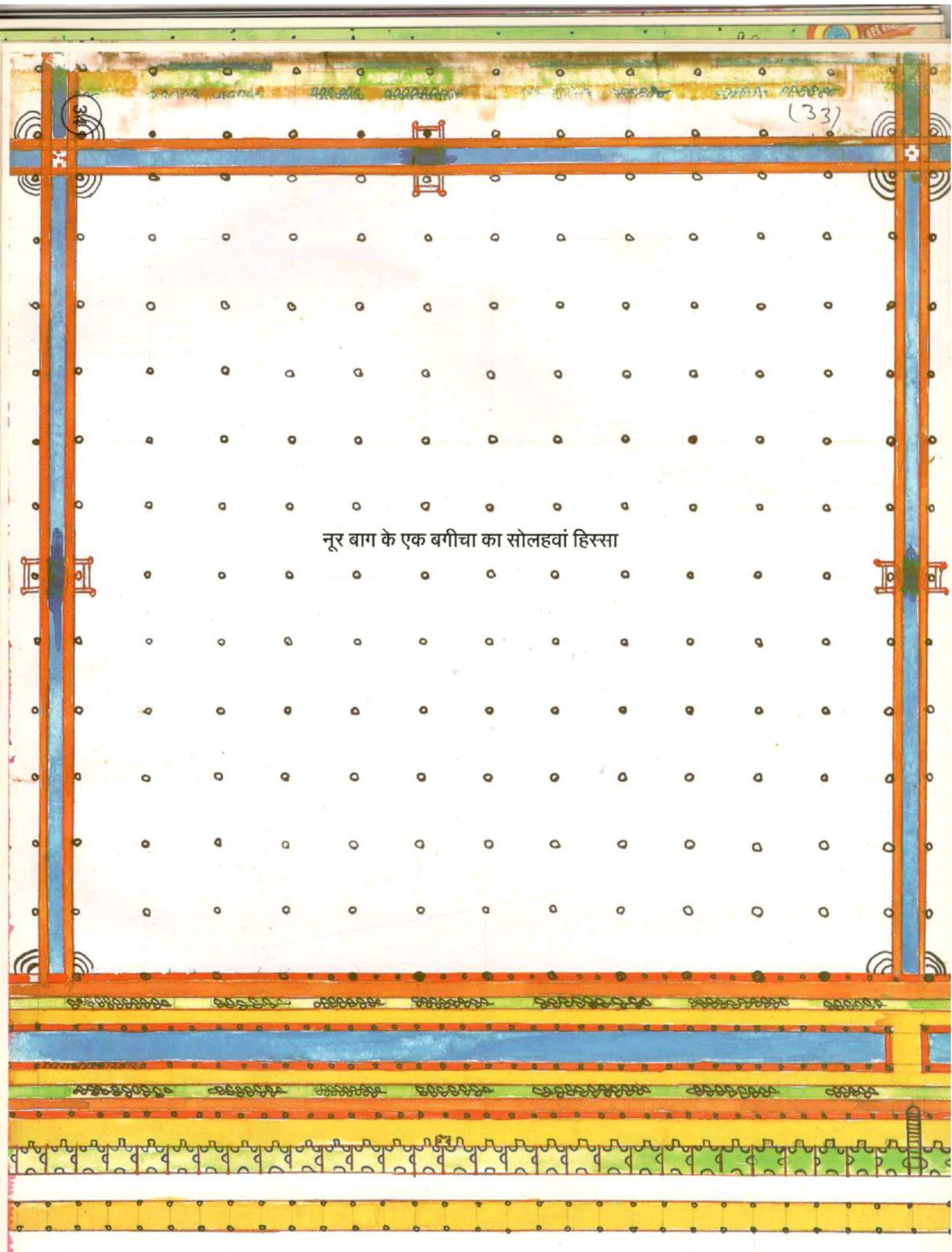


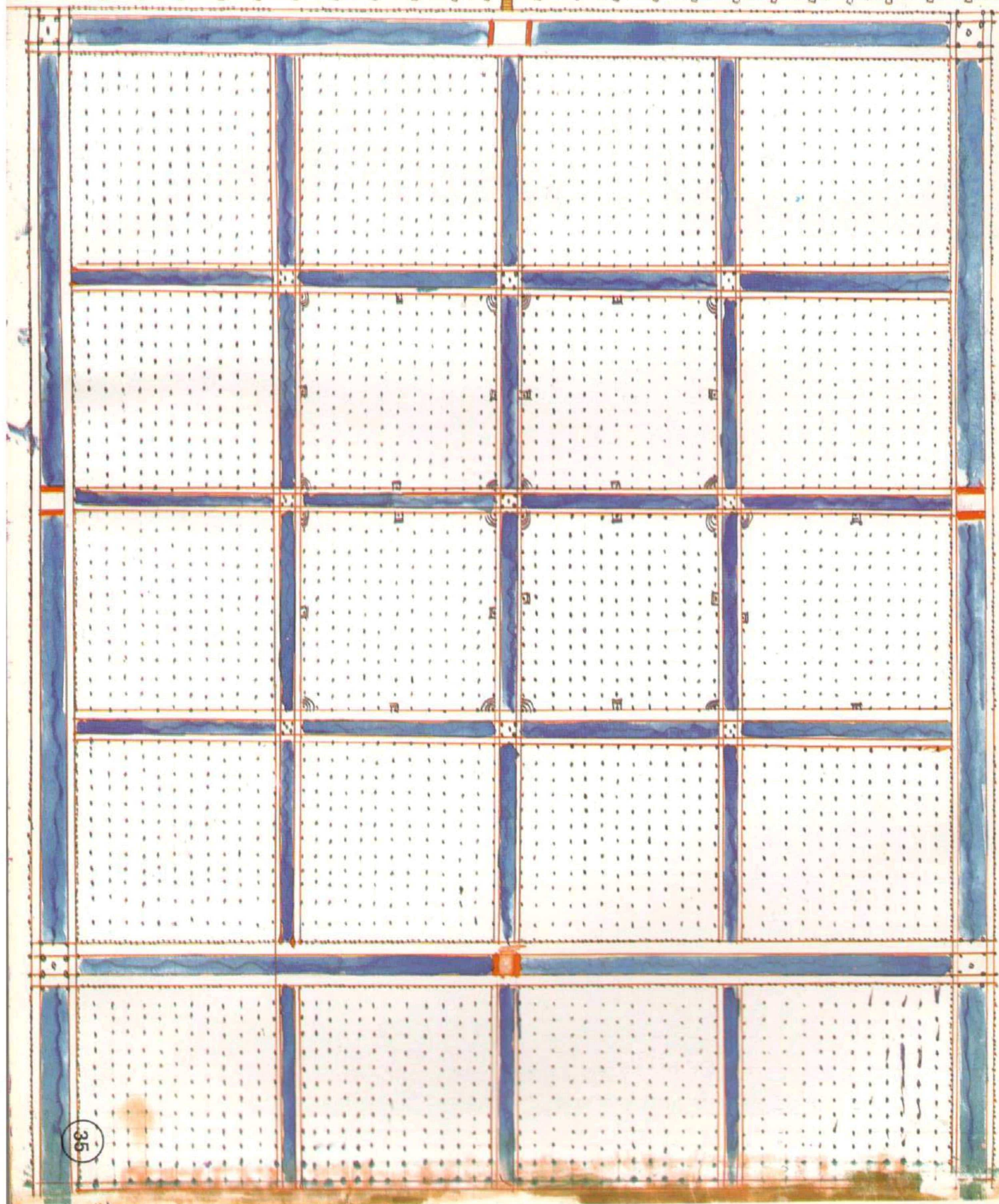
(39)

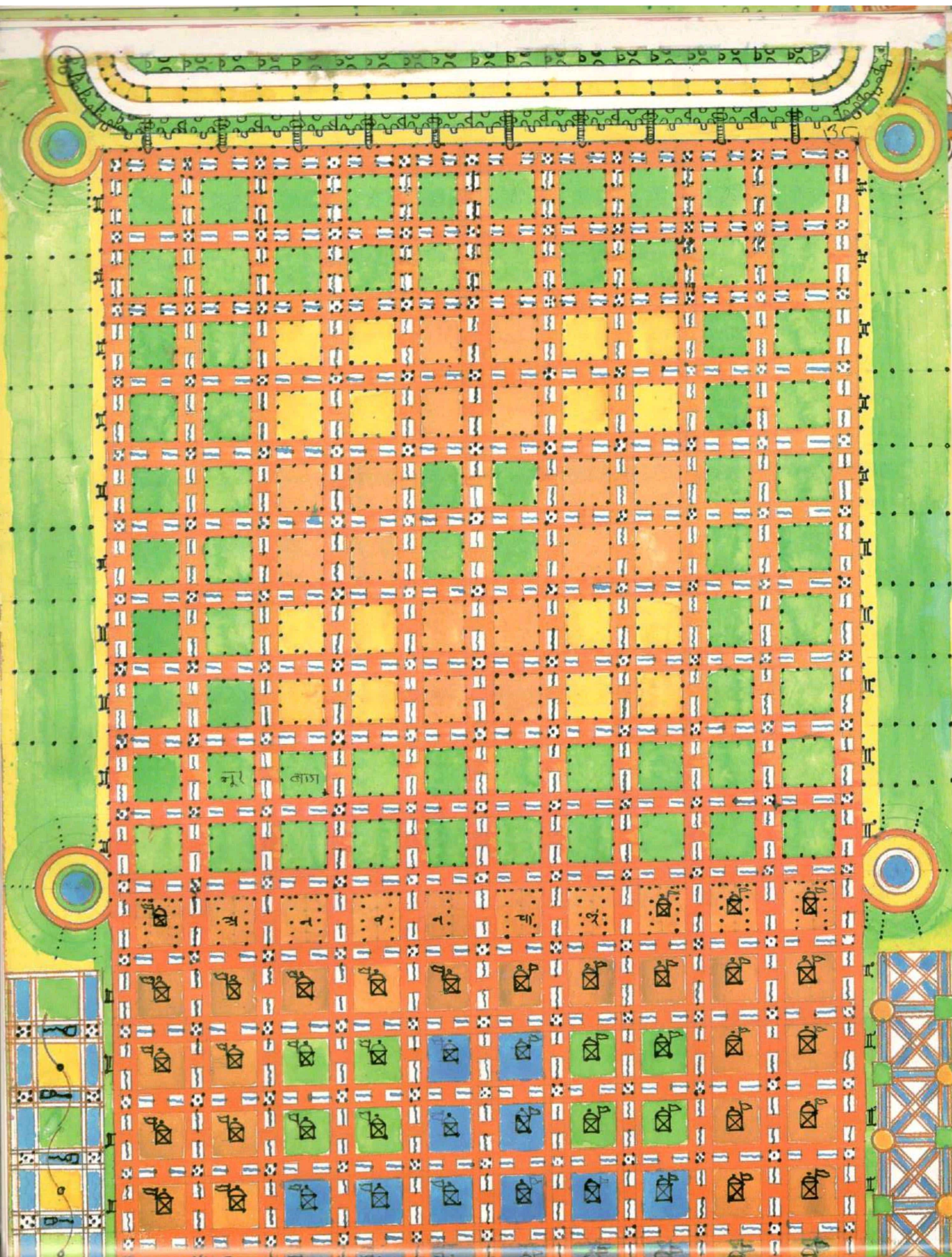
फुलबाग का एक नमूना वडी नेहेरका दिरवाव

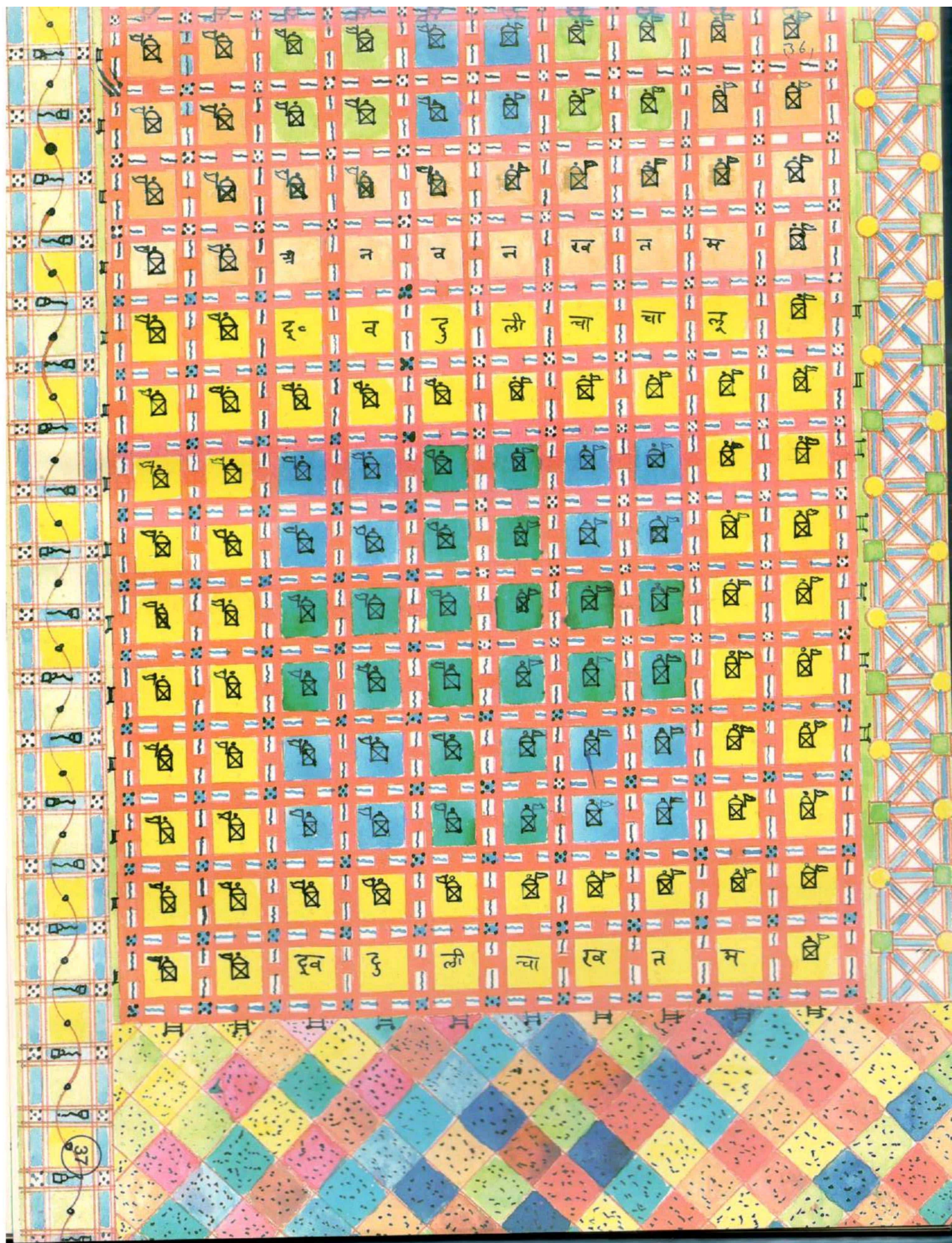


नूर बाग के एक बगीचा का सोलहवां हिस्सा

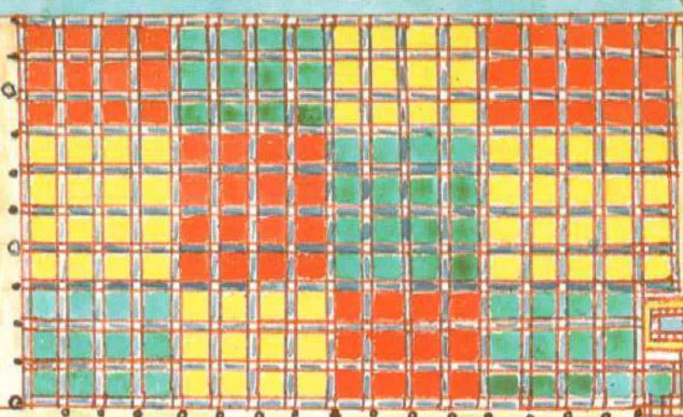




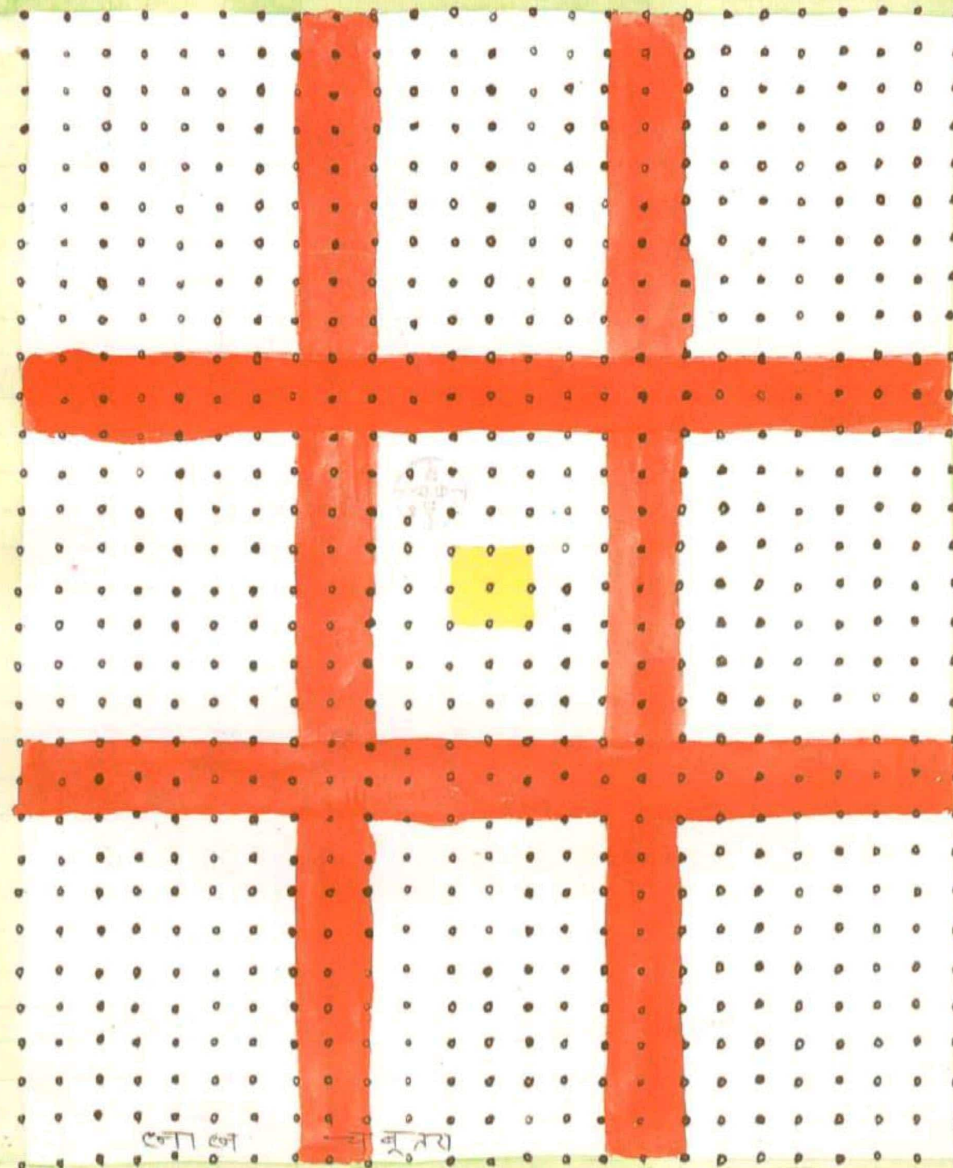




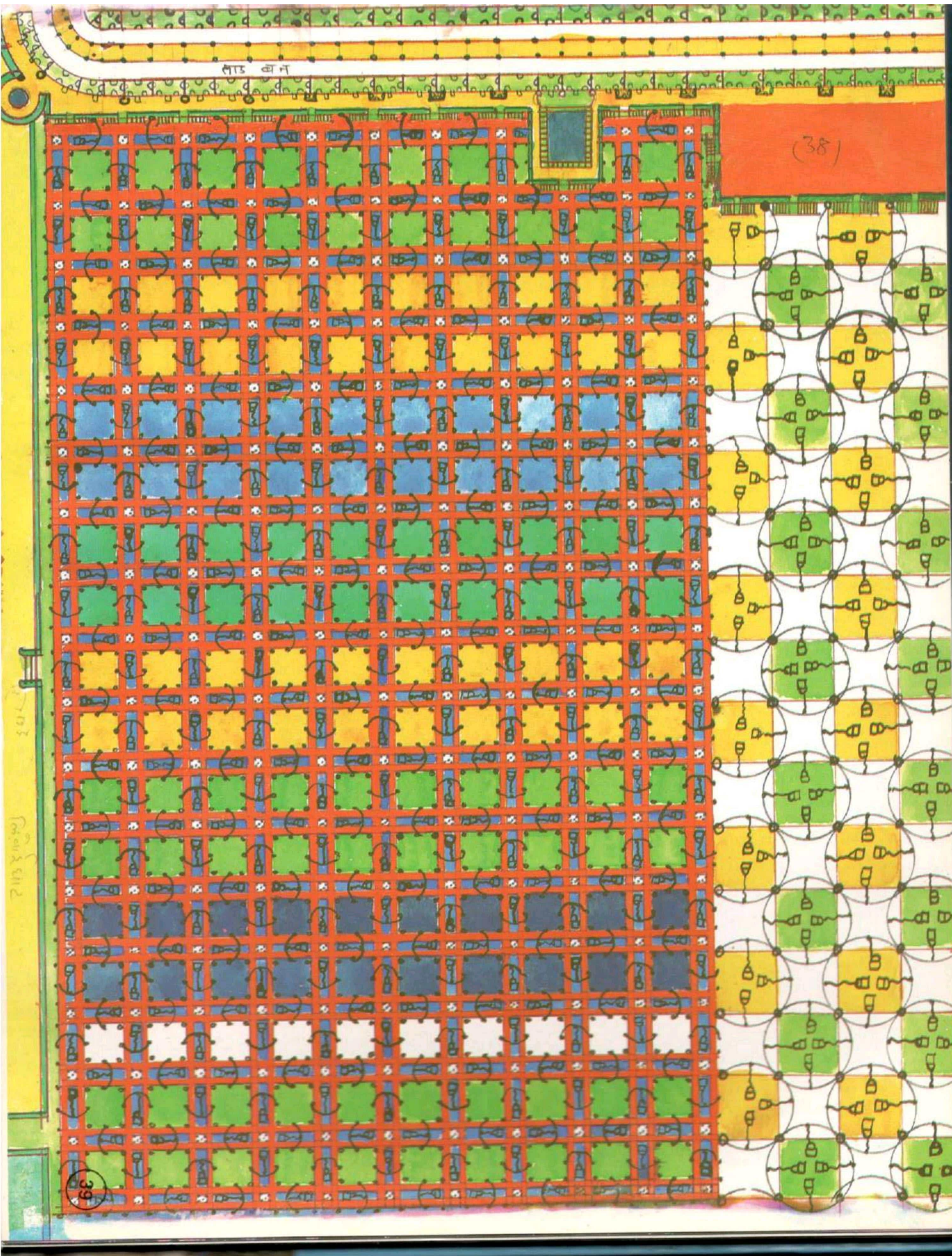
Handwritten text in Devanagari script, likely a commentary or a list of items, running vertically along the right margin of the page.



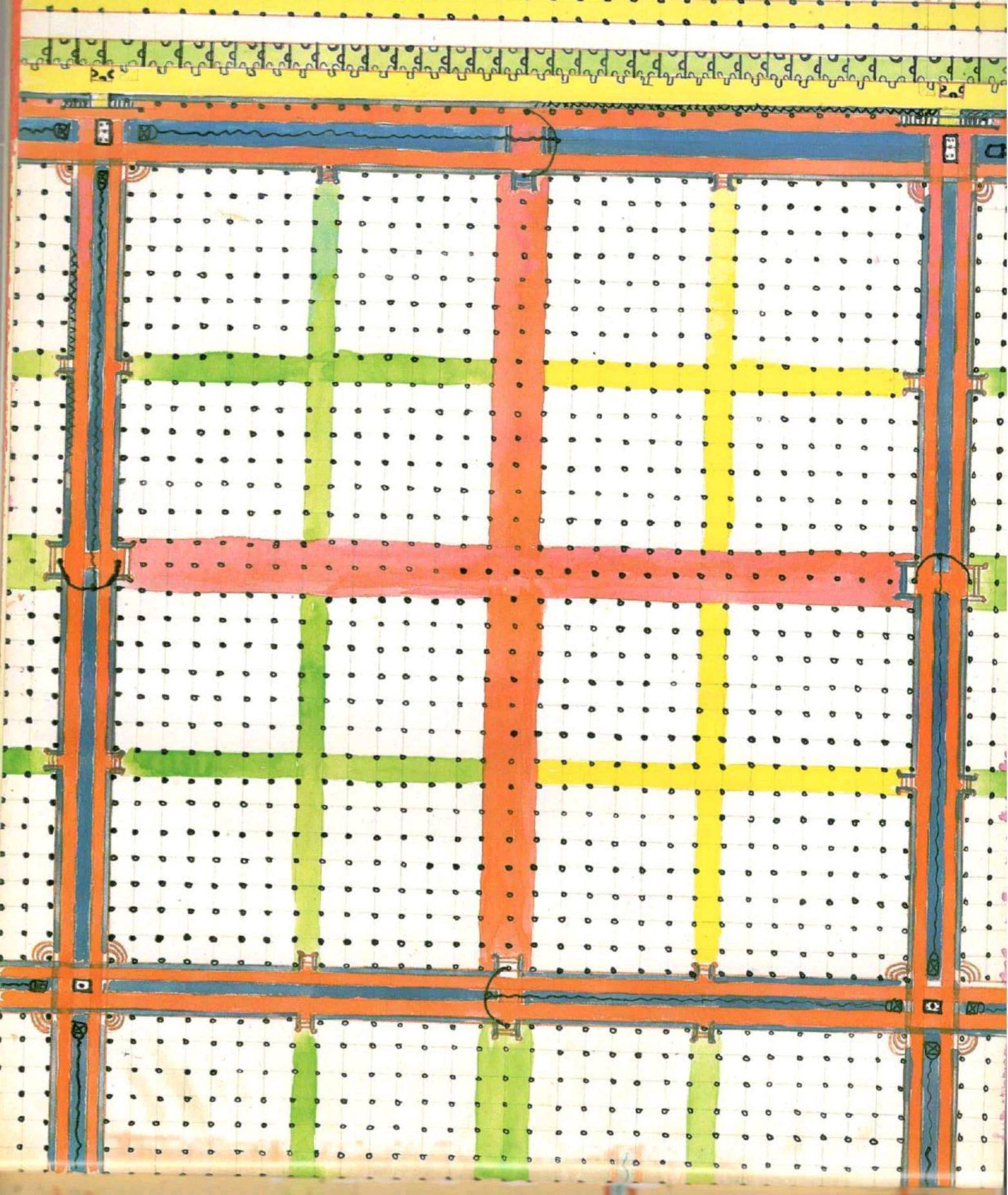
Handwritten text in Devanagari script, likely a title or a section header, located at the top left of the page.



Handwritten text in Devanagari script, located at the bottom center of the page, below the large red cross.

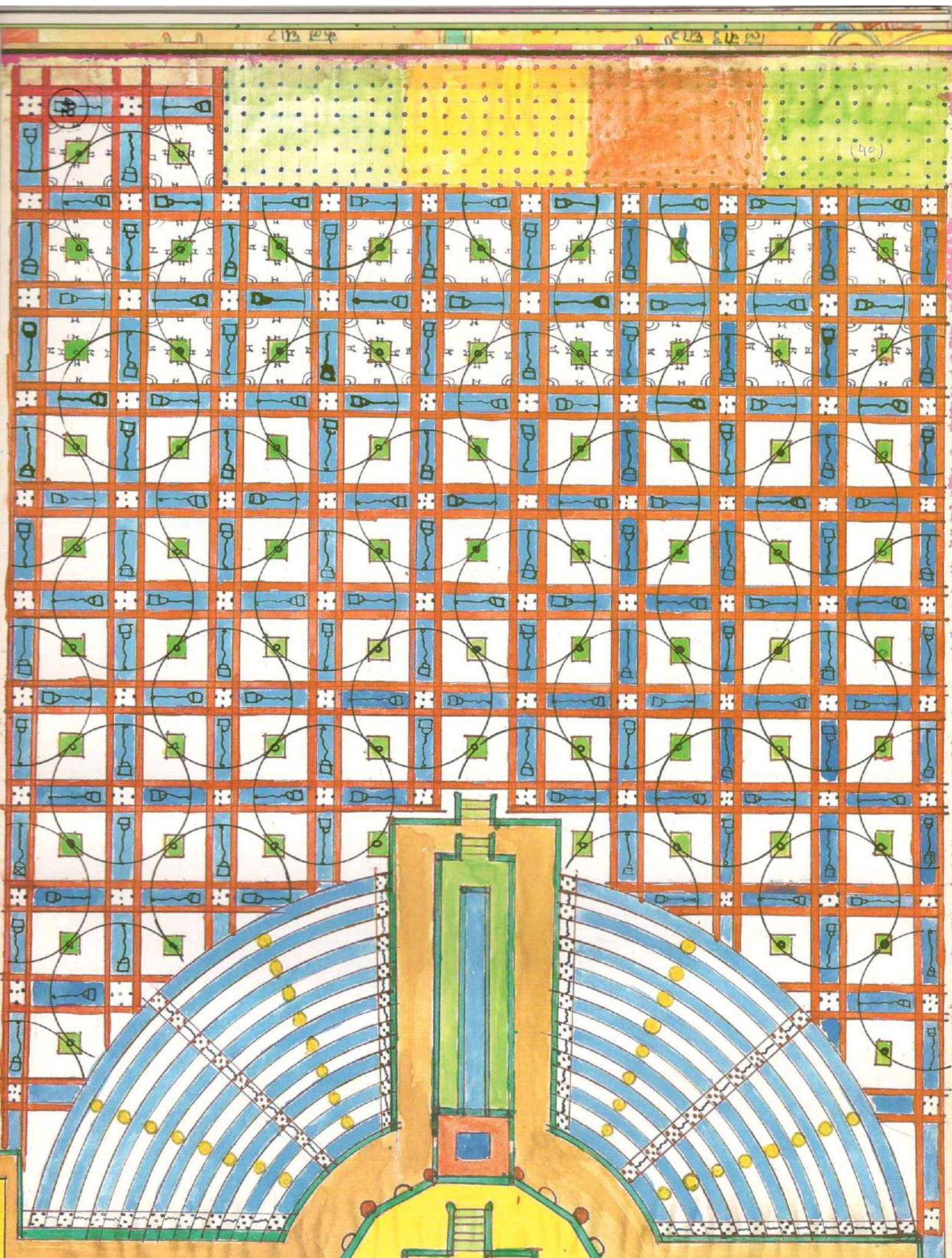


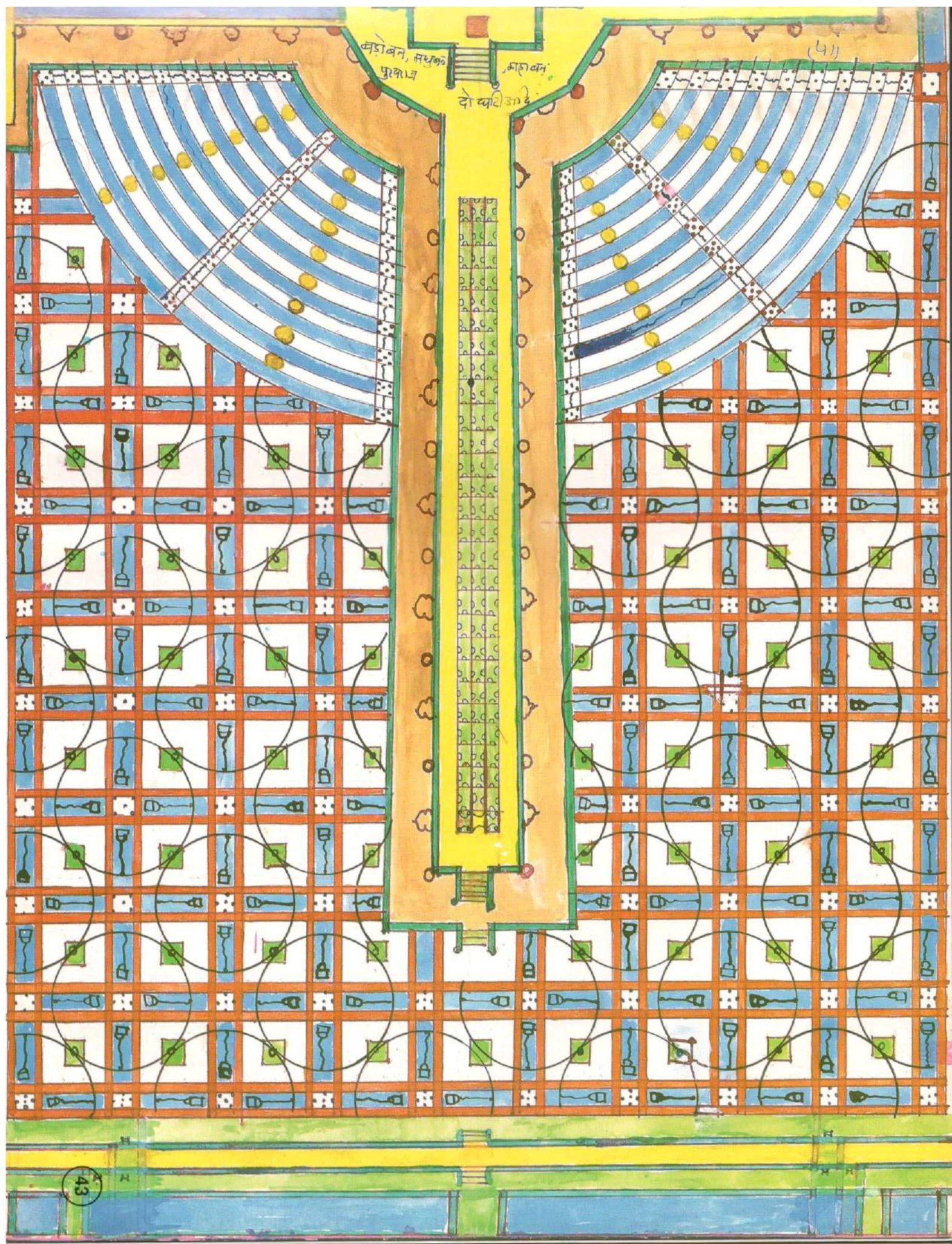
ताड़बन का एक बगीचा

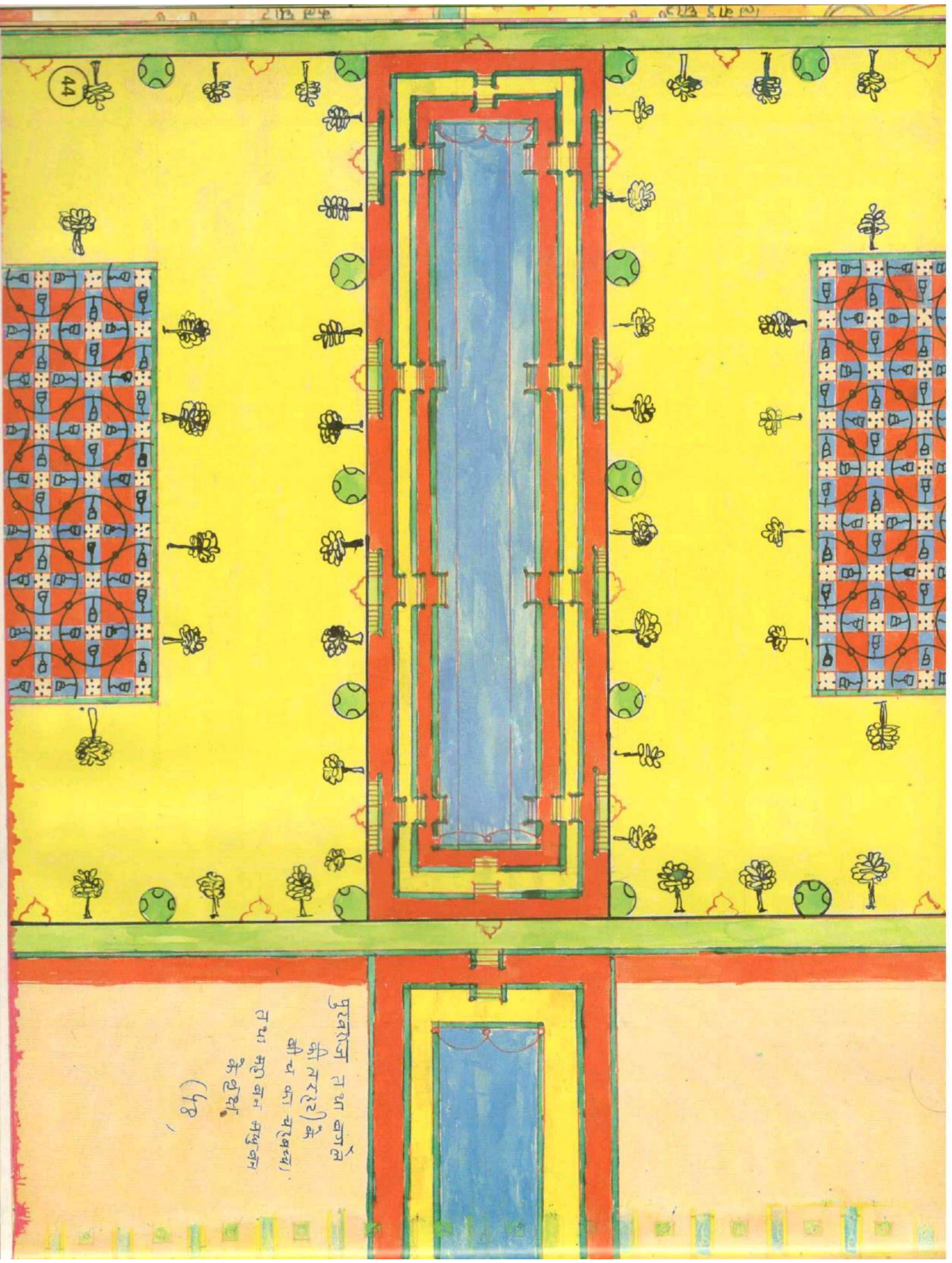




श्री ३० त्वा ताडे, लंग म



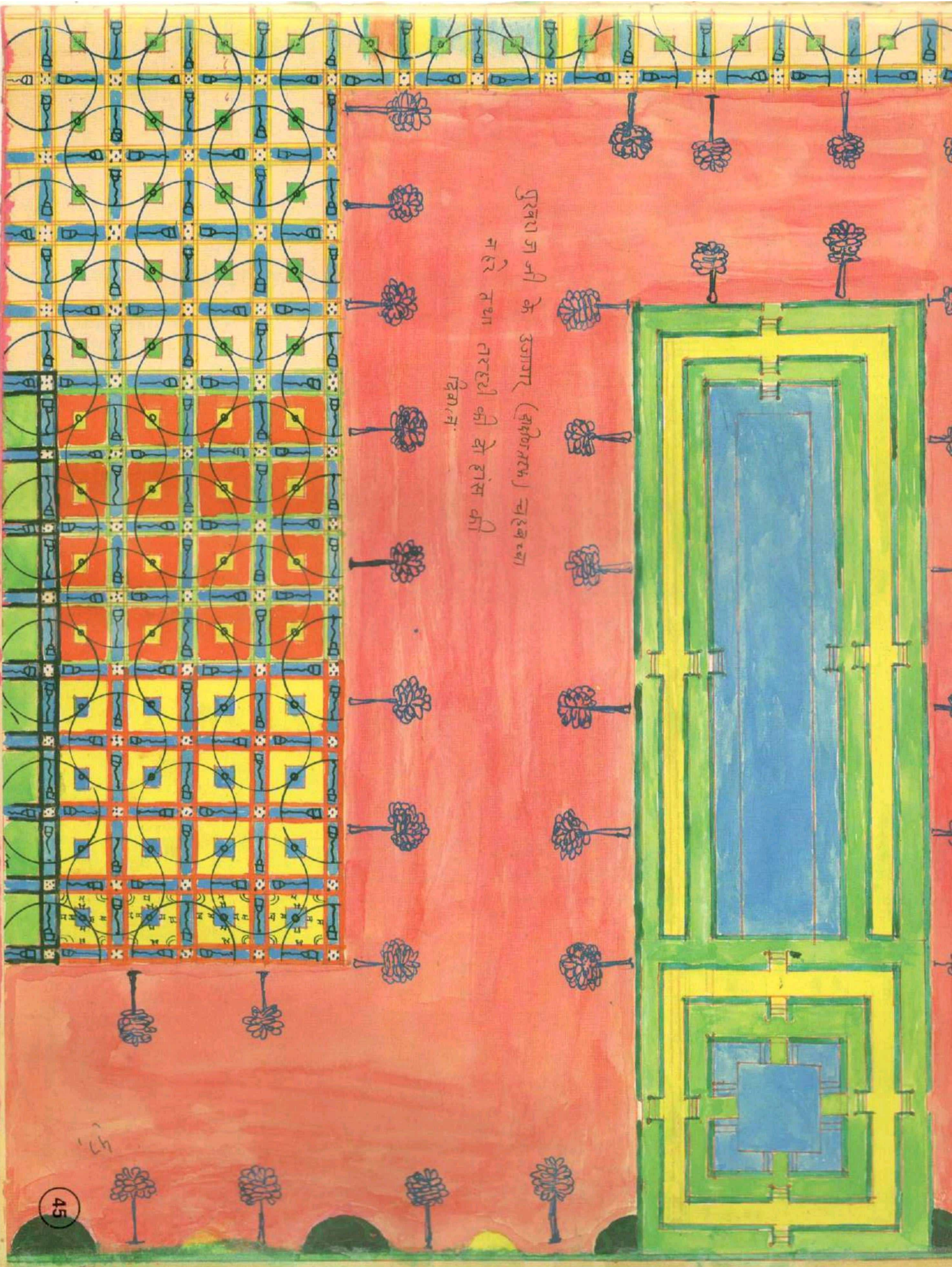




पुराजा तथा जाले
 की तरहे के
 चीन् या चिन्हा
 तथा मणि वान मयुवन
 के हेतु

(48)

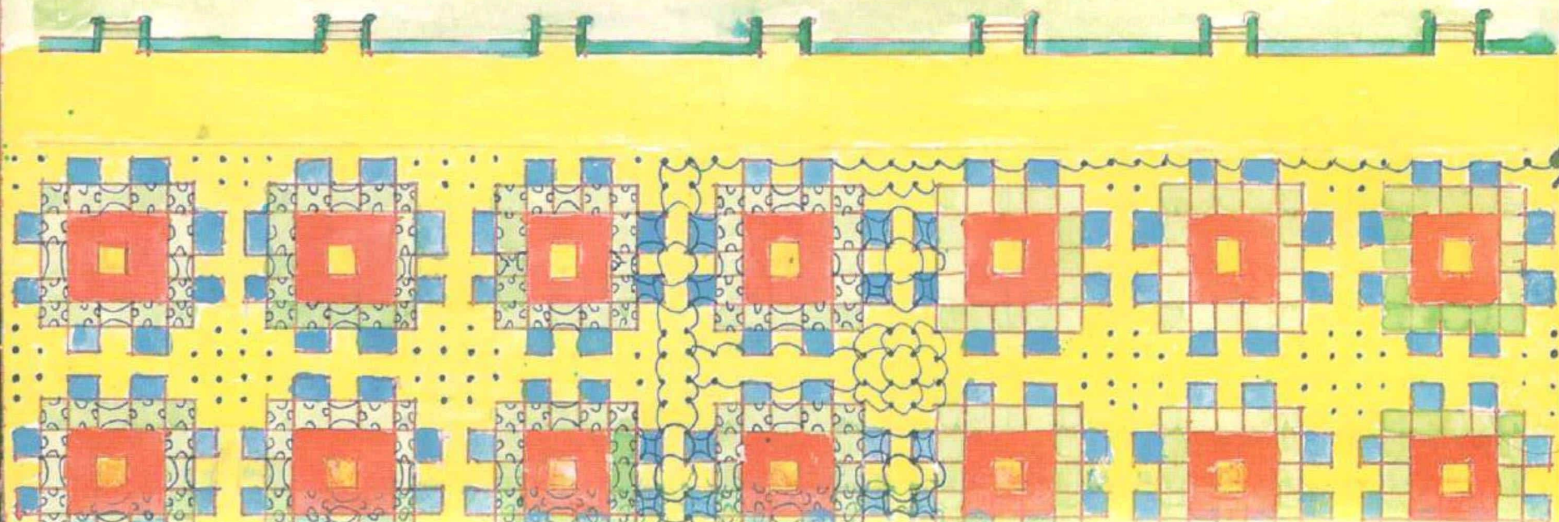
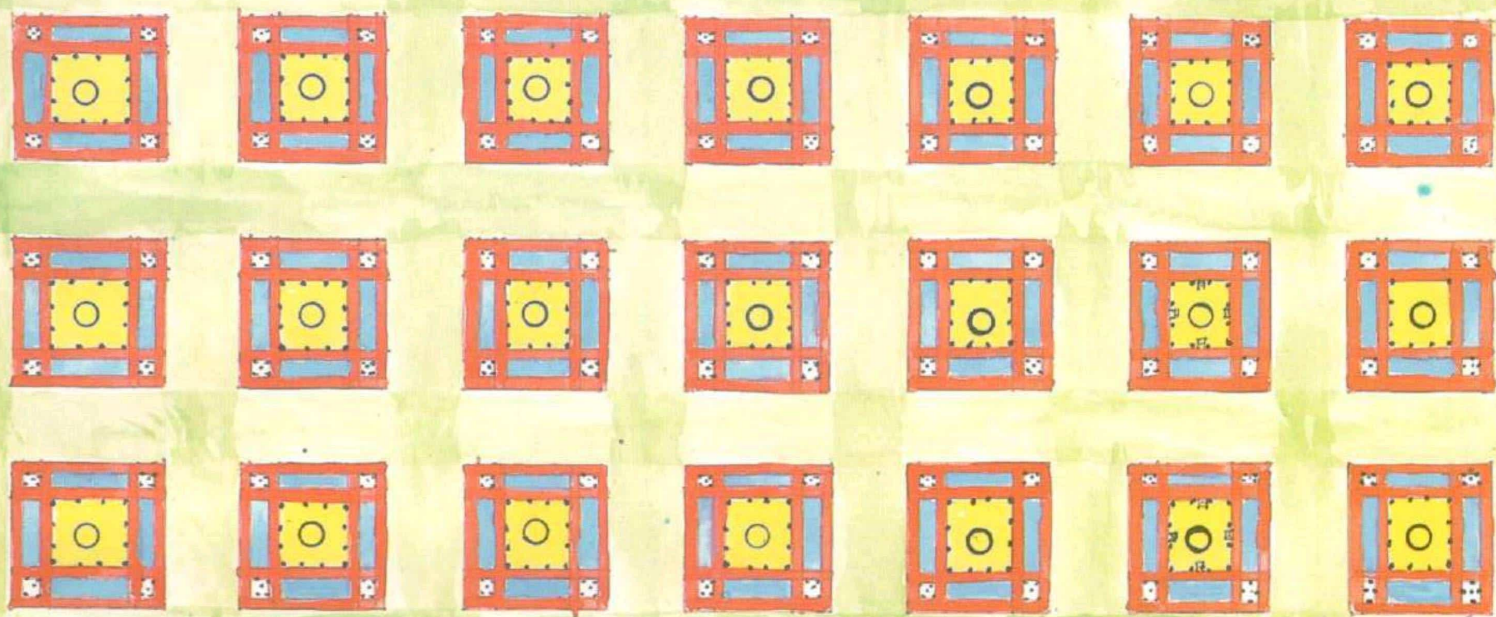
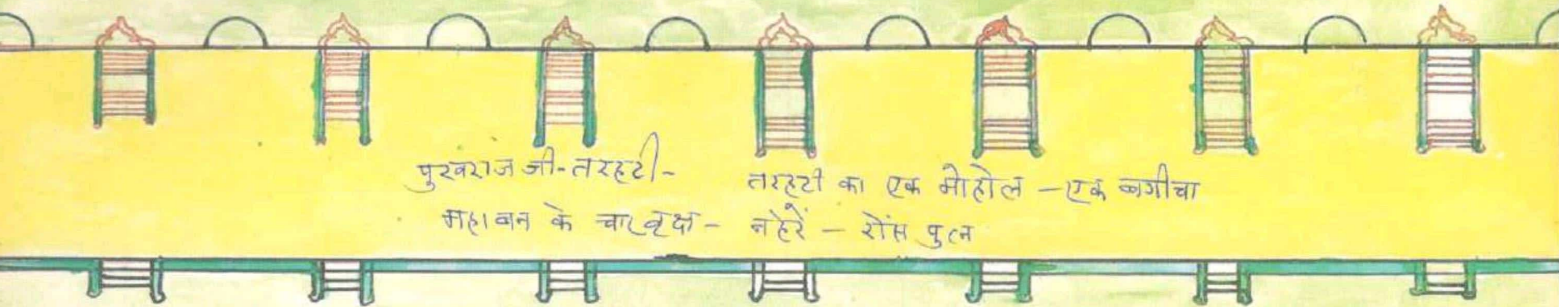
पुरन्या जी के उगावार् (श्रीशिवसरक) चहनेवा
 न हरे तथा नरहरी की दो हांस की
 दिवा, न.

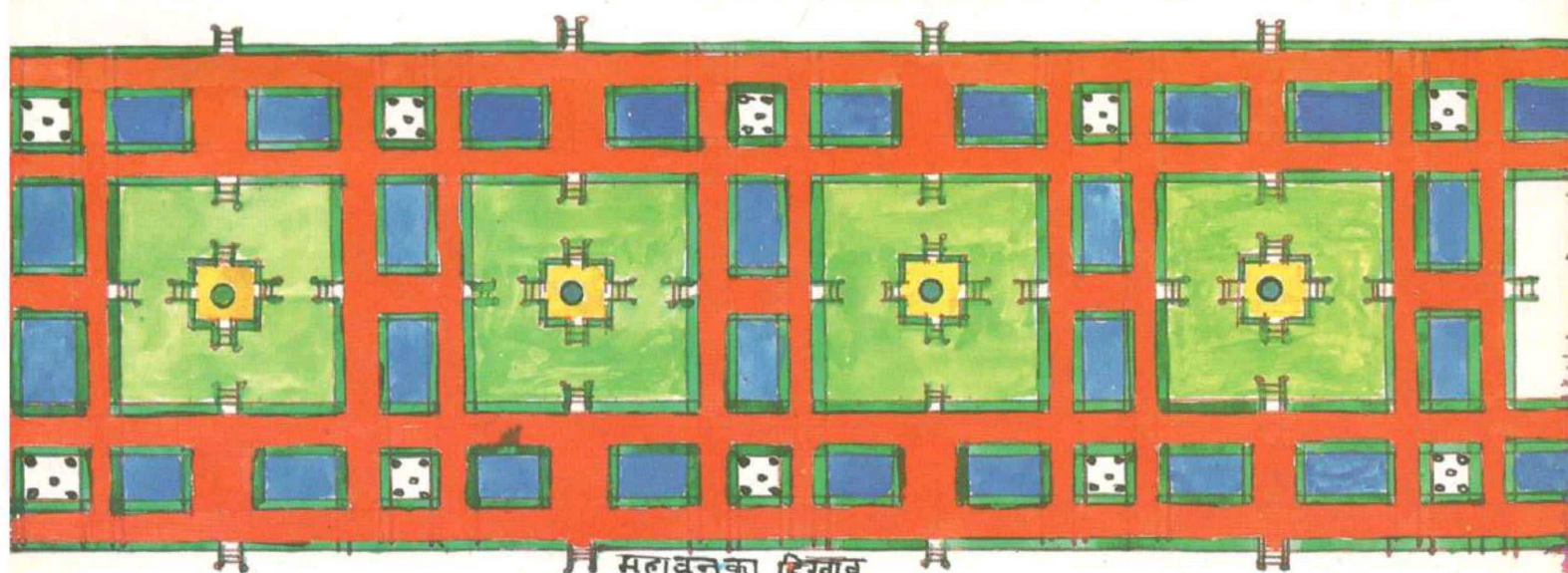
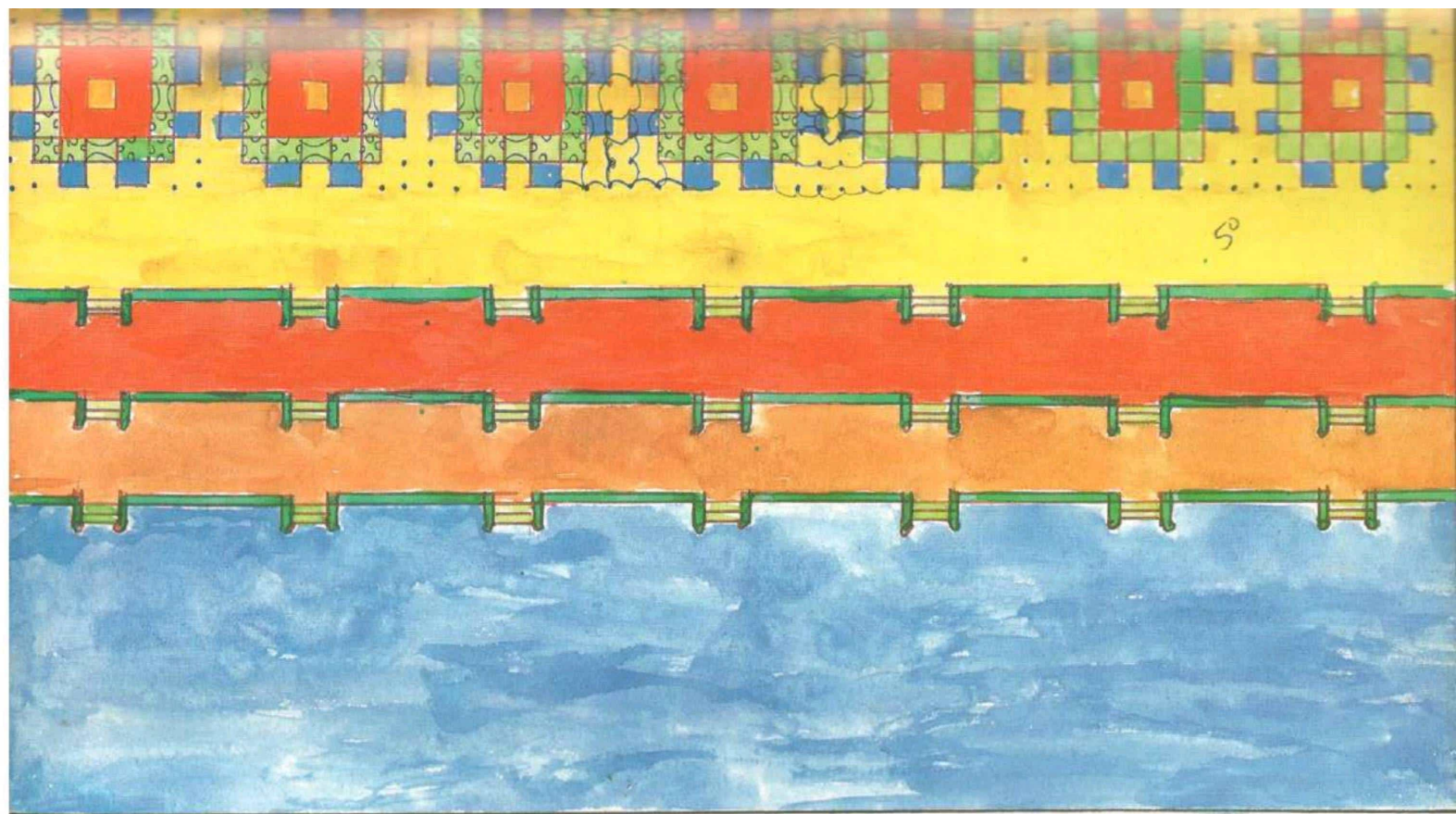




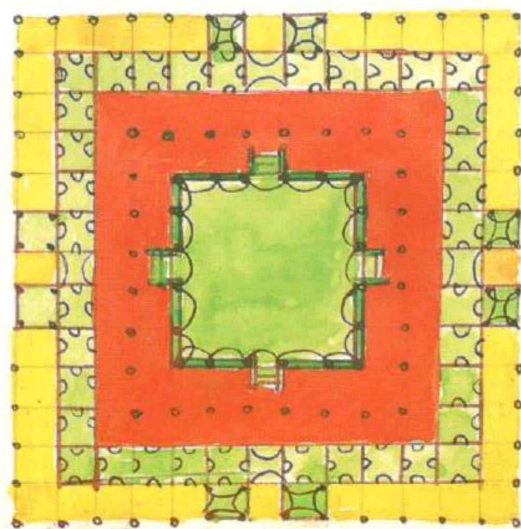
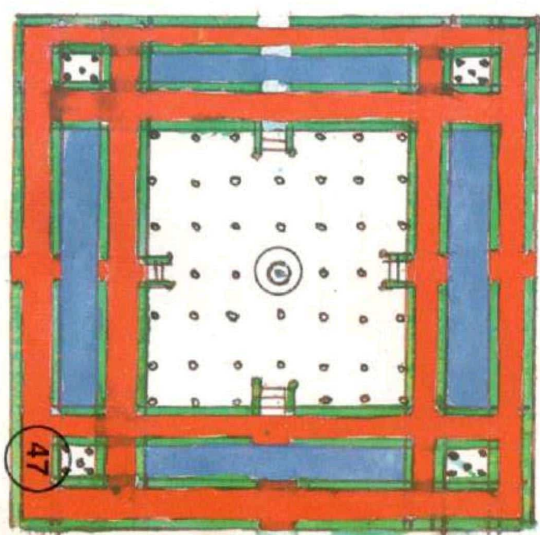
49

पुरनराज जी-तरहटी- तरहटी का एक भीहोल - एक जगीचा
सहावन के चावुका - नहेरें - रोस पुल



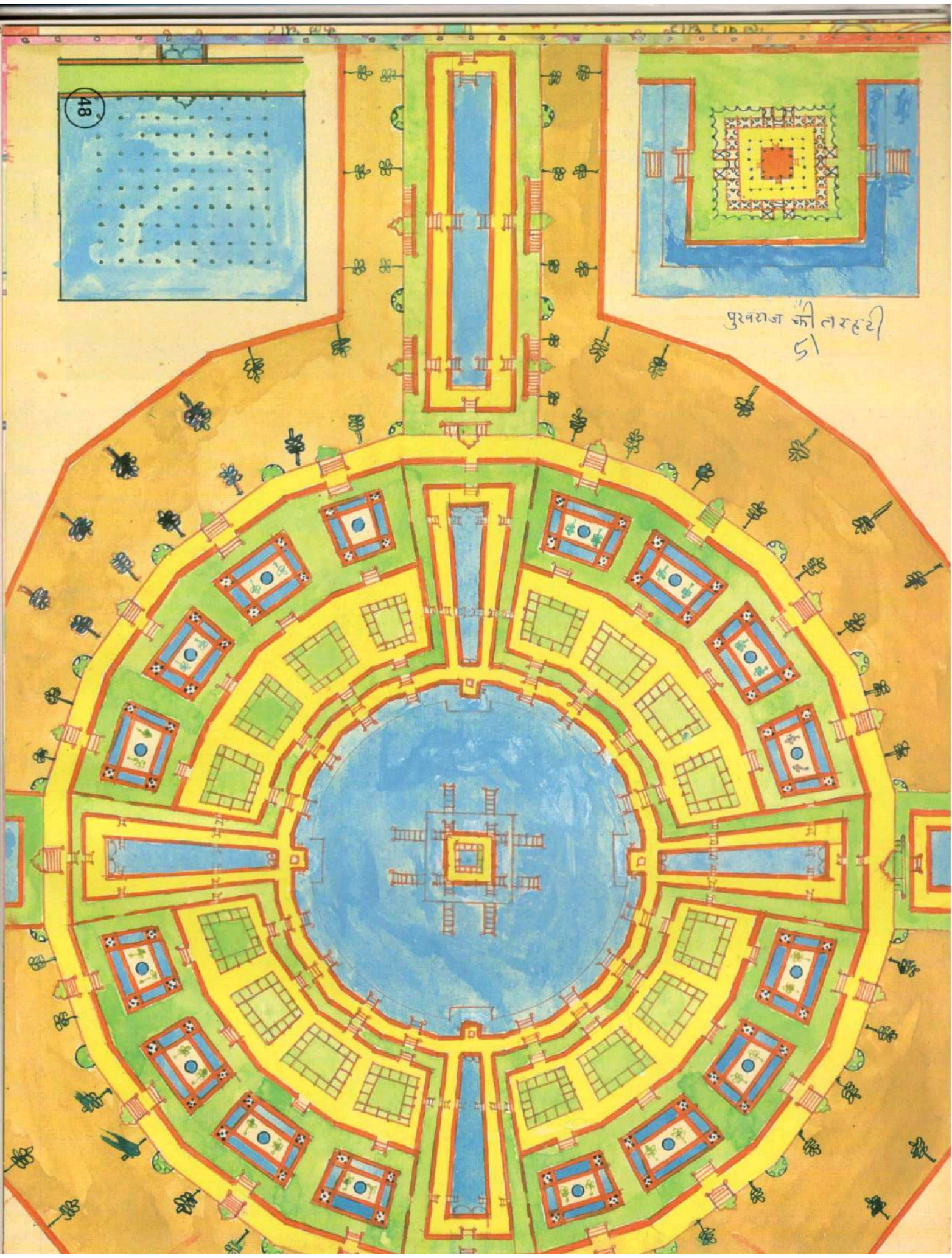


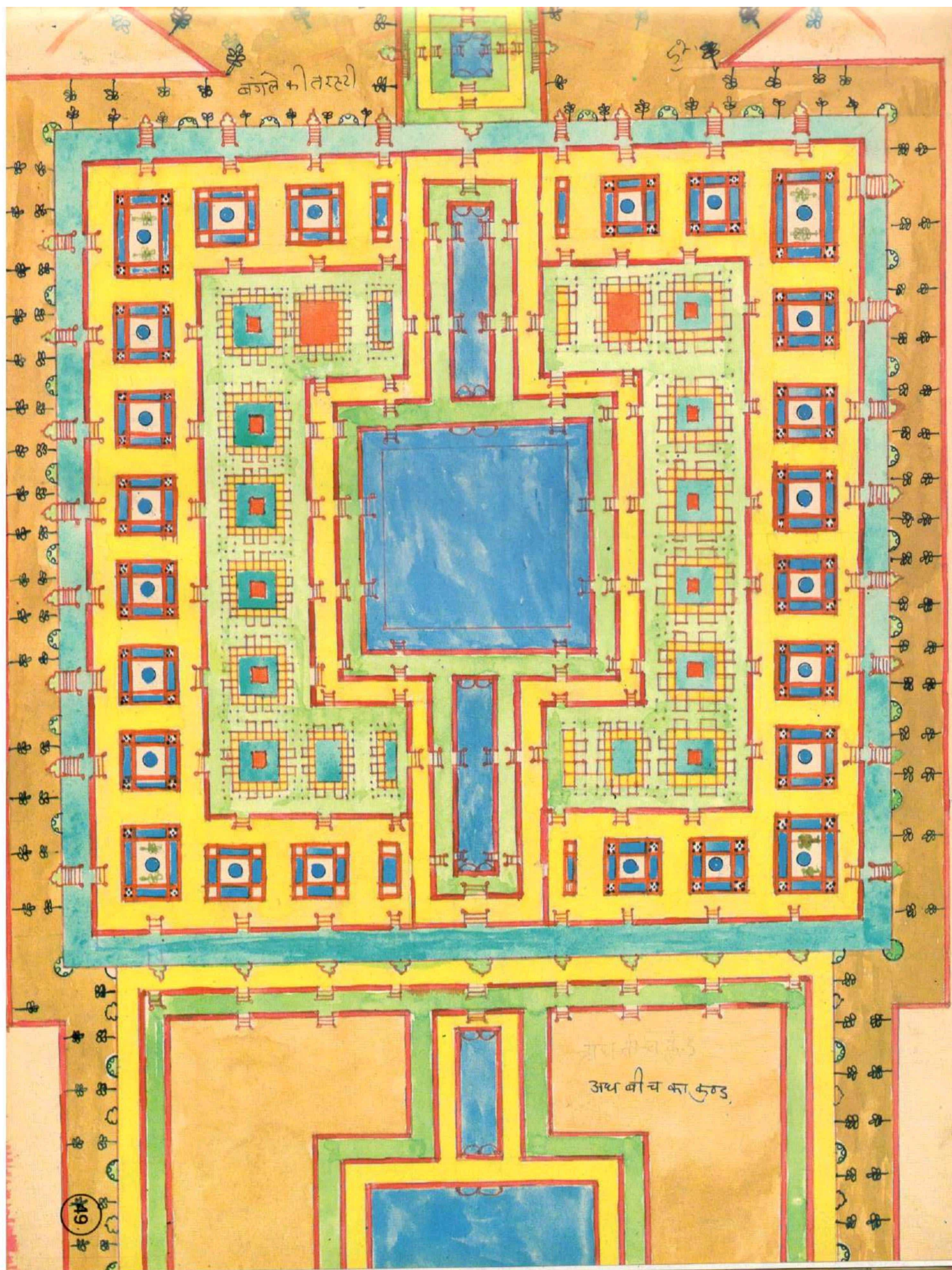
महावनका दिखव

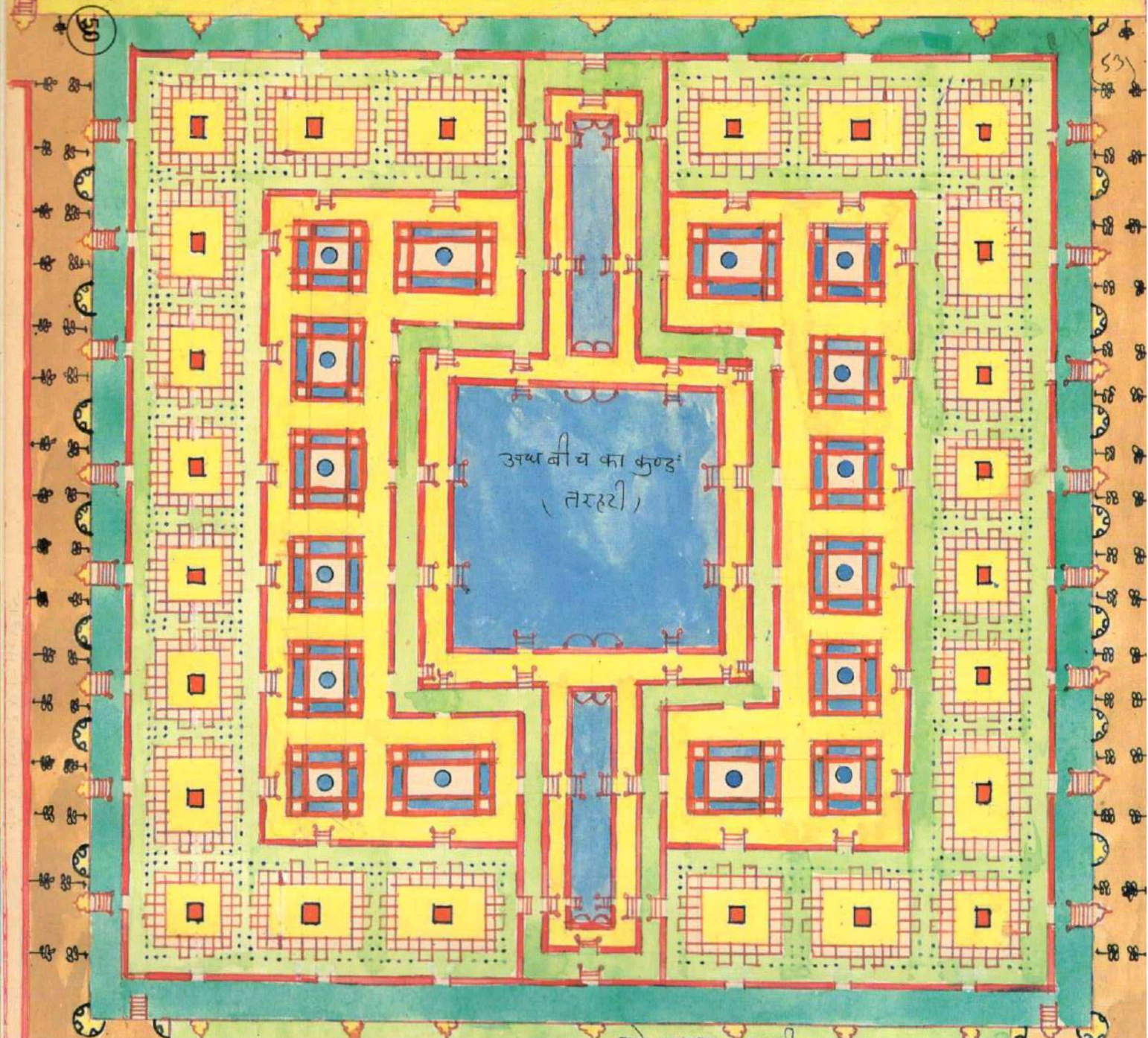


पुरवराज की तरह
51

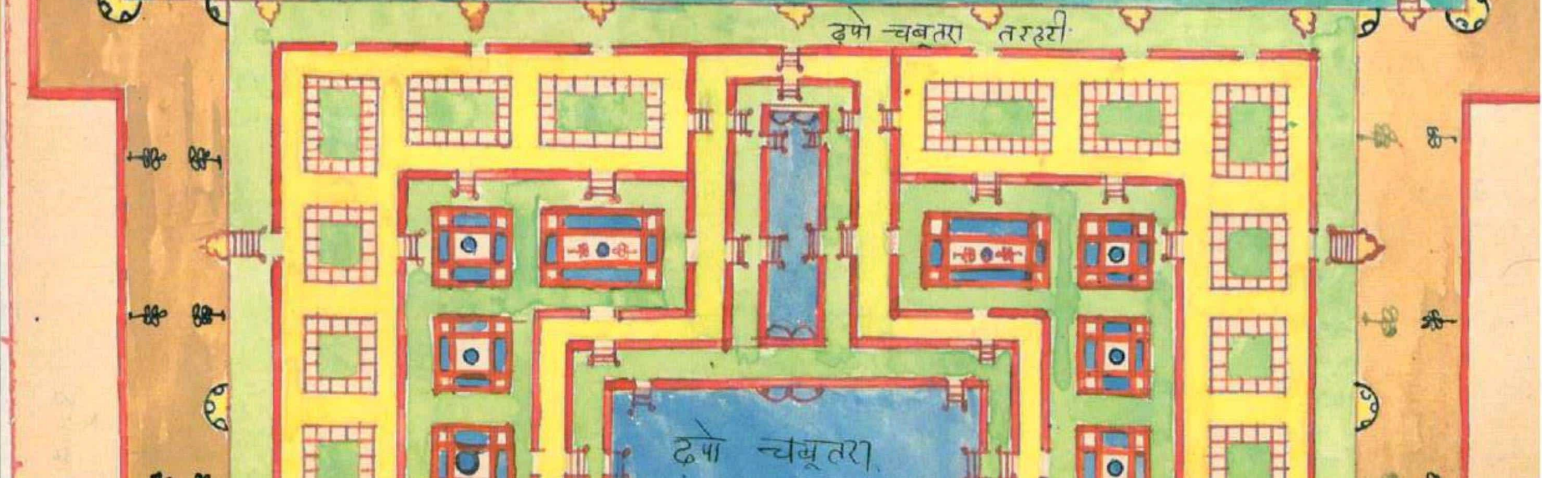
48

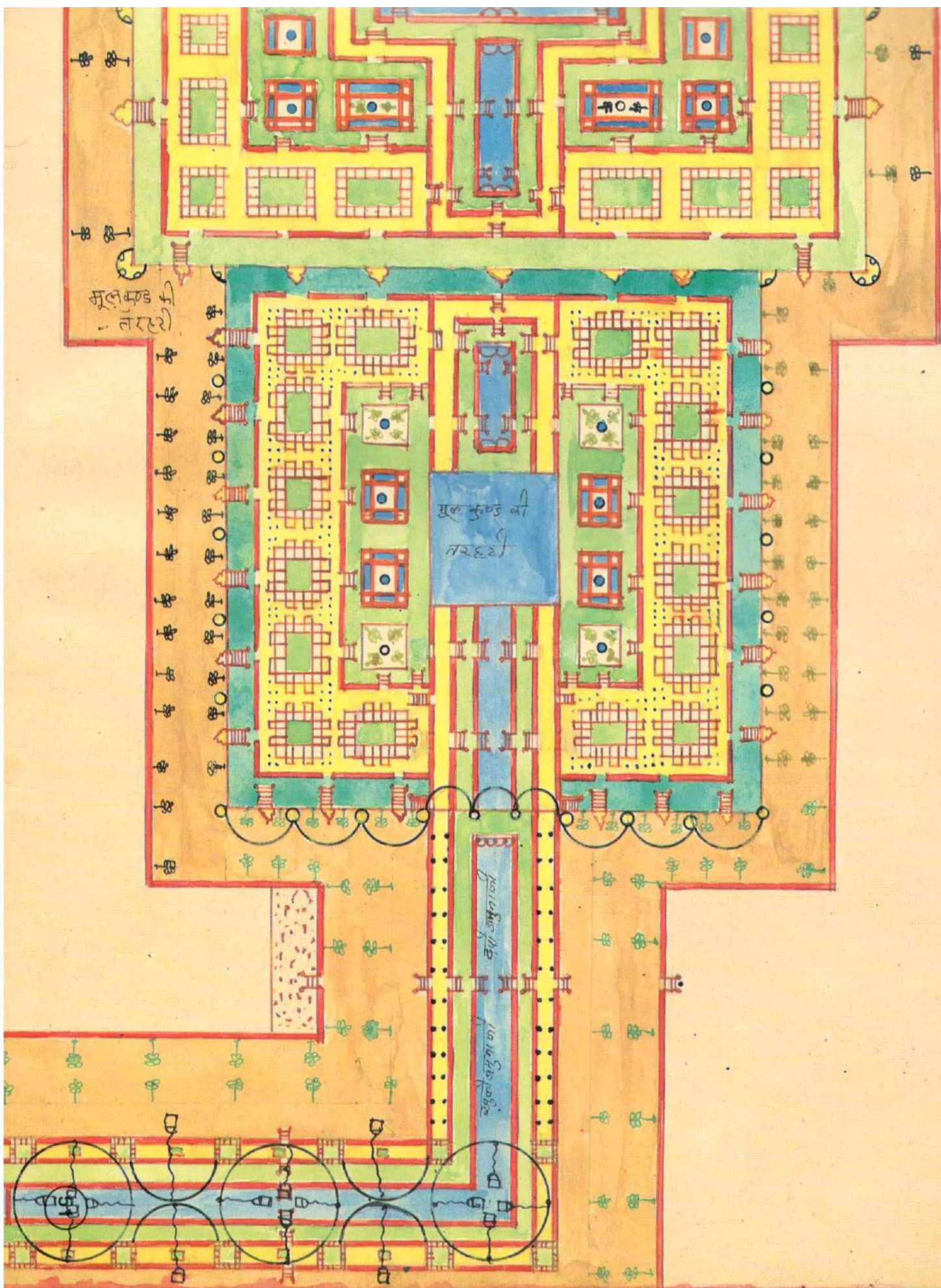




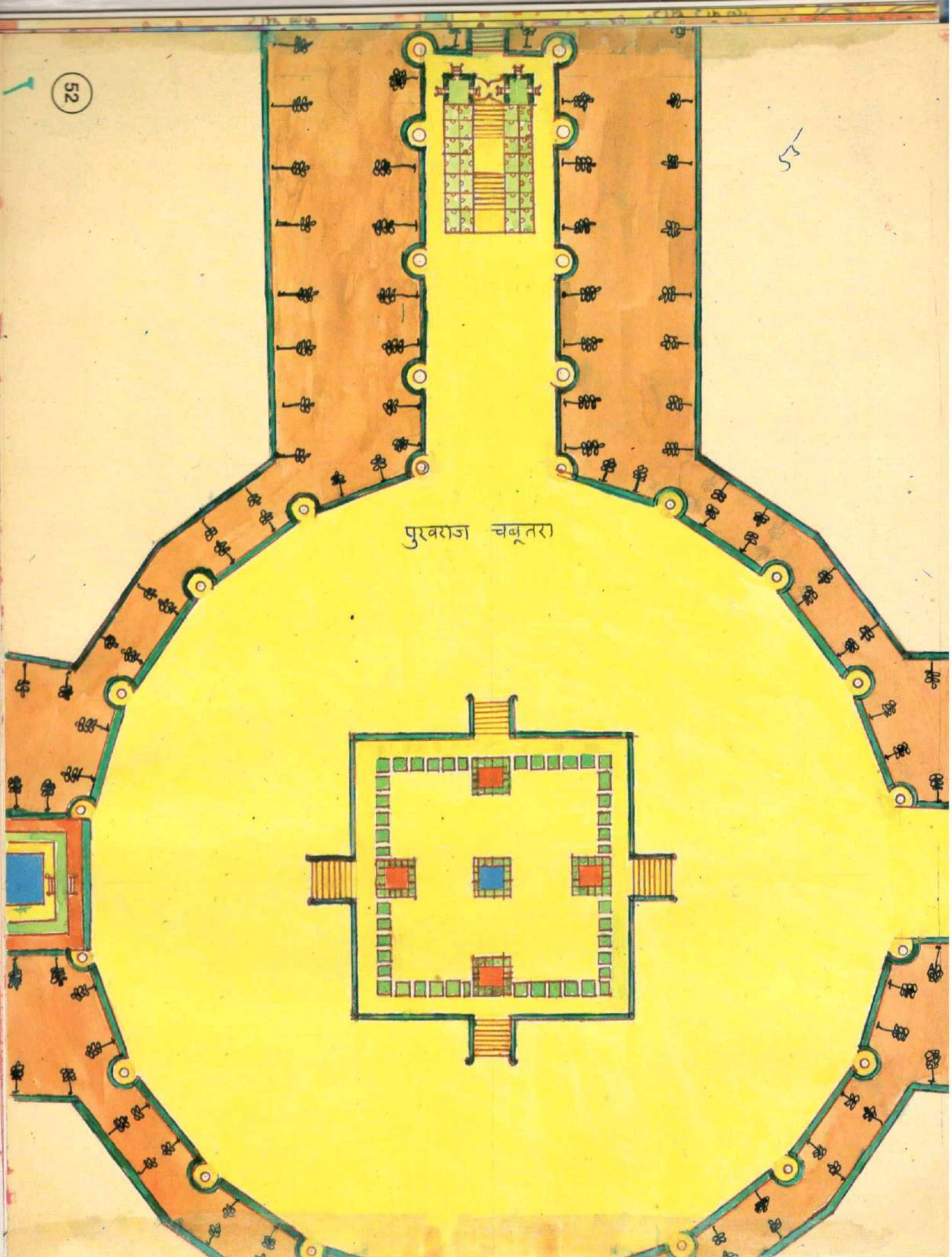


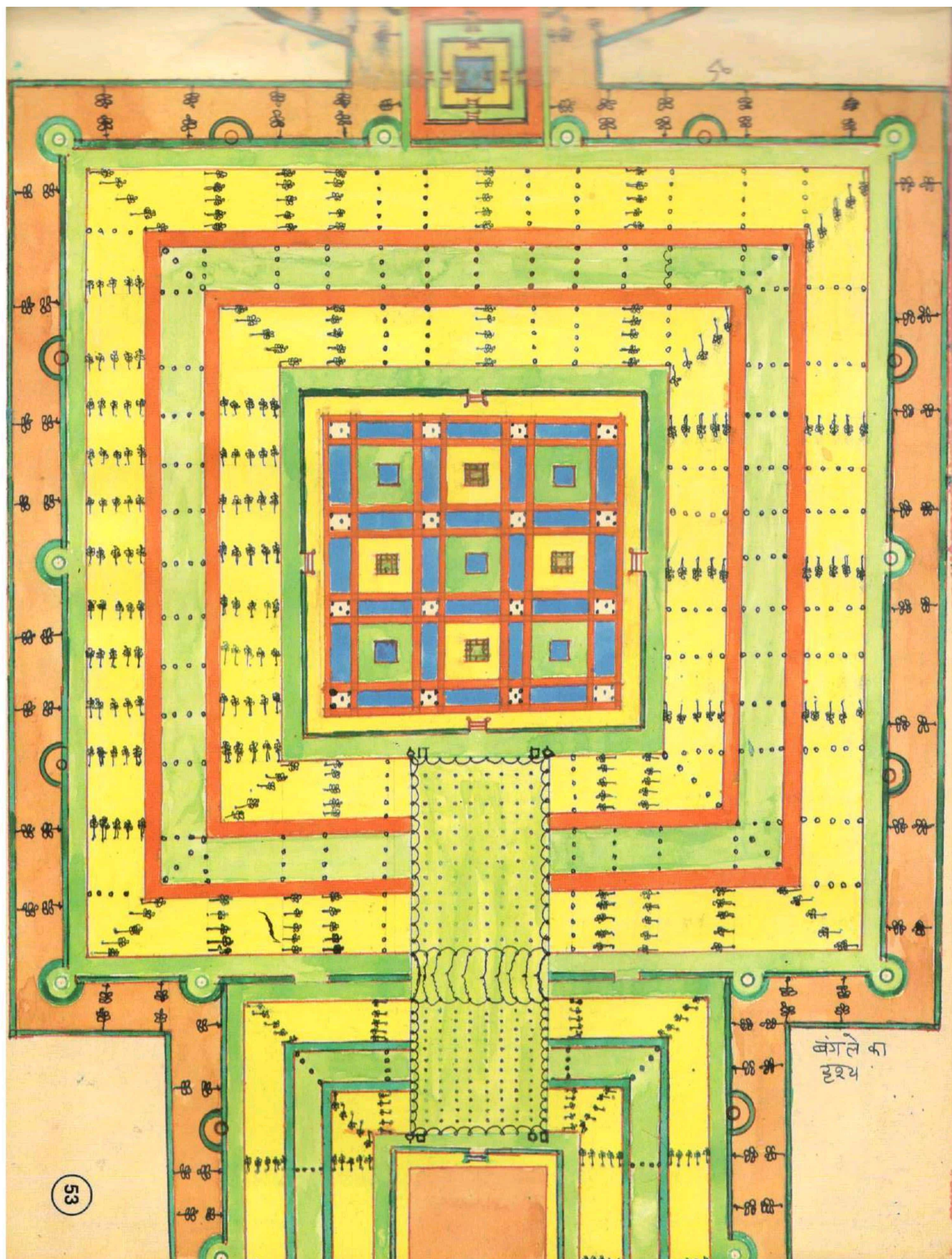
दो चबूतरा तरहरी



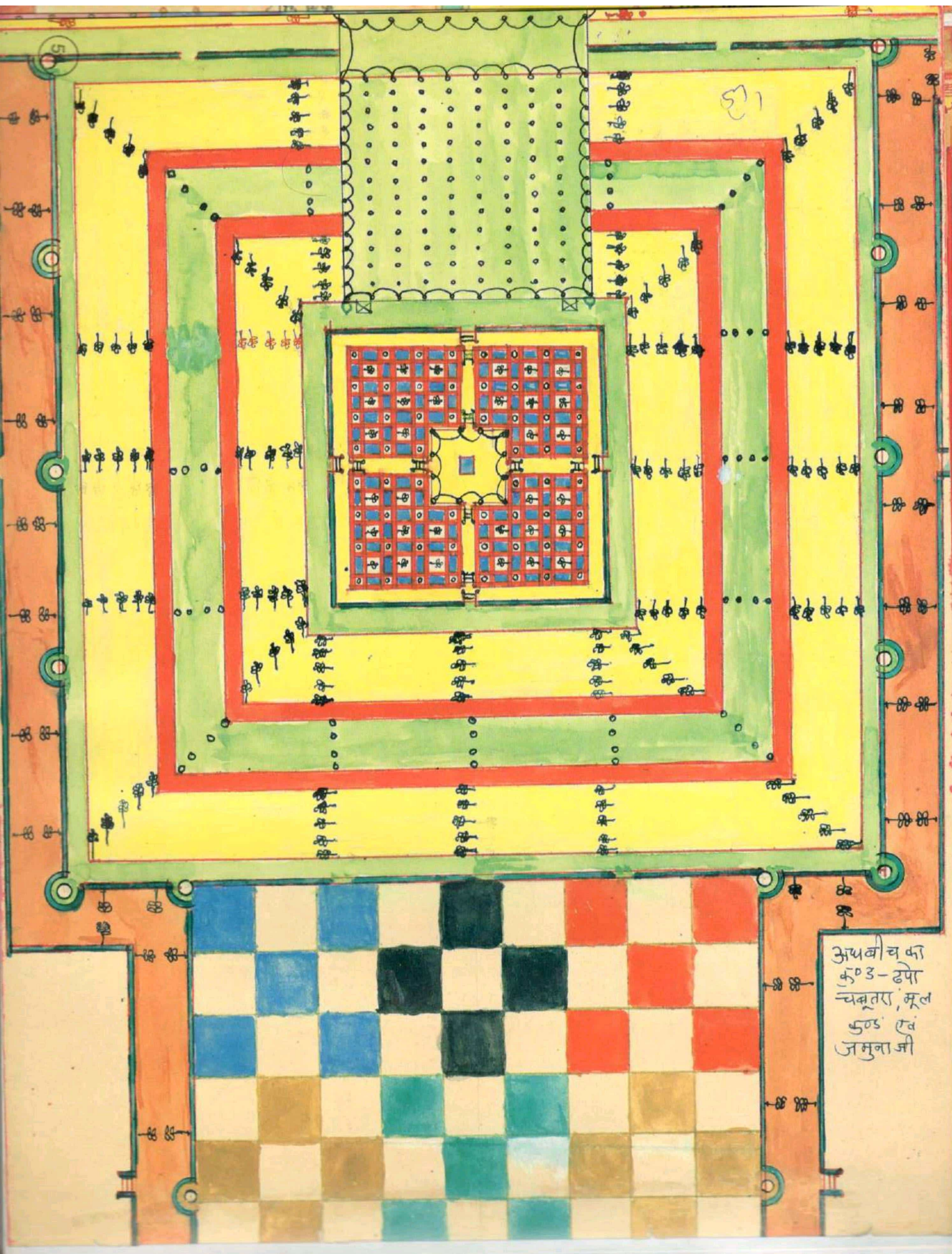


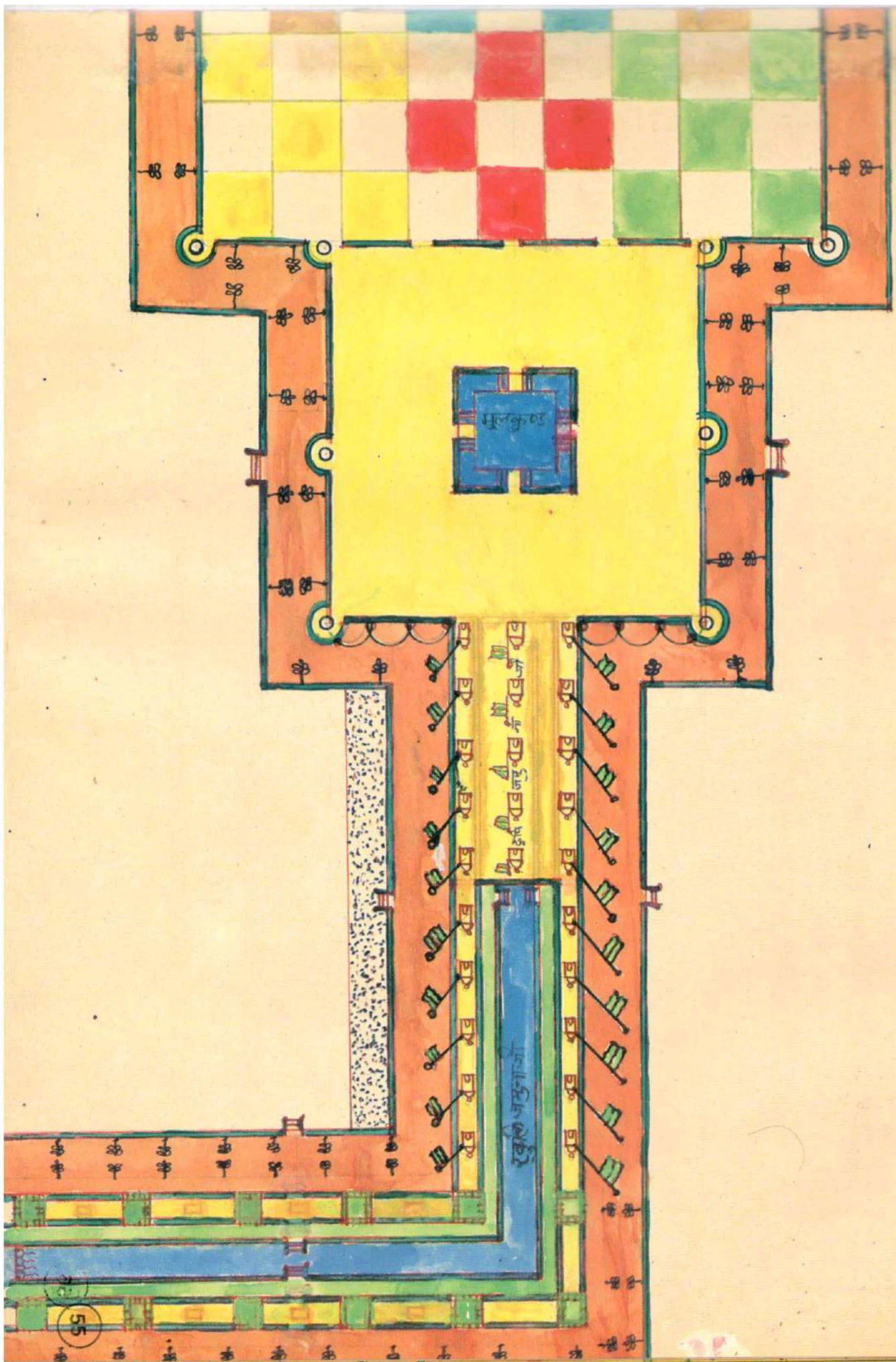
पुरवराज चबूतरा

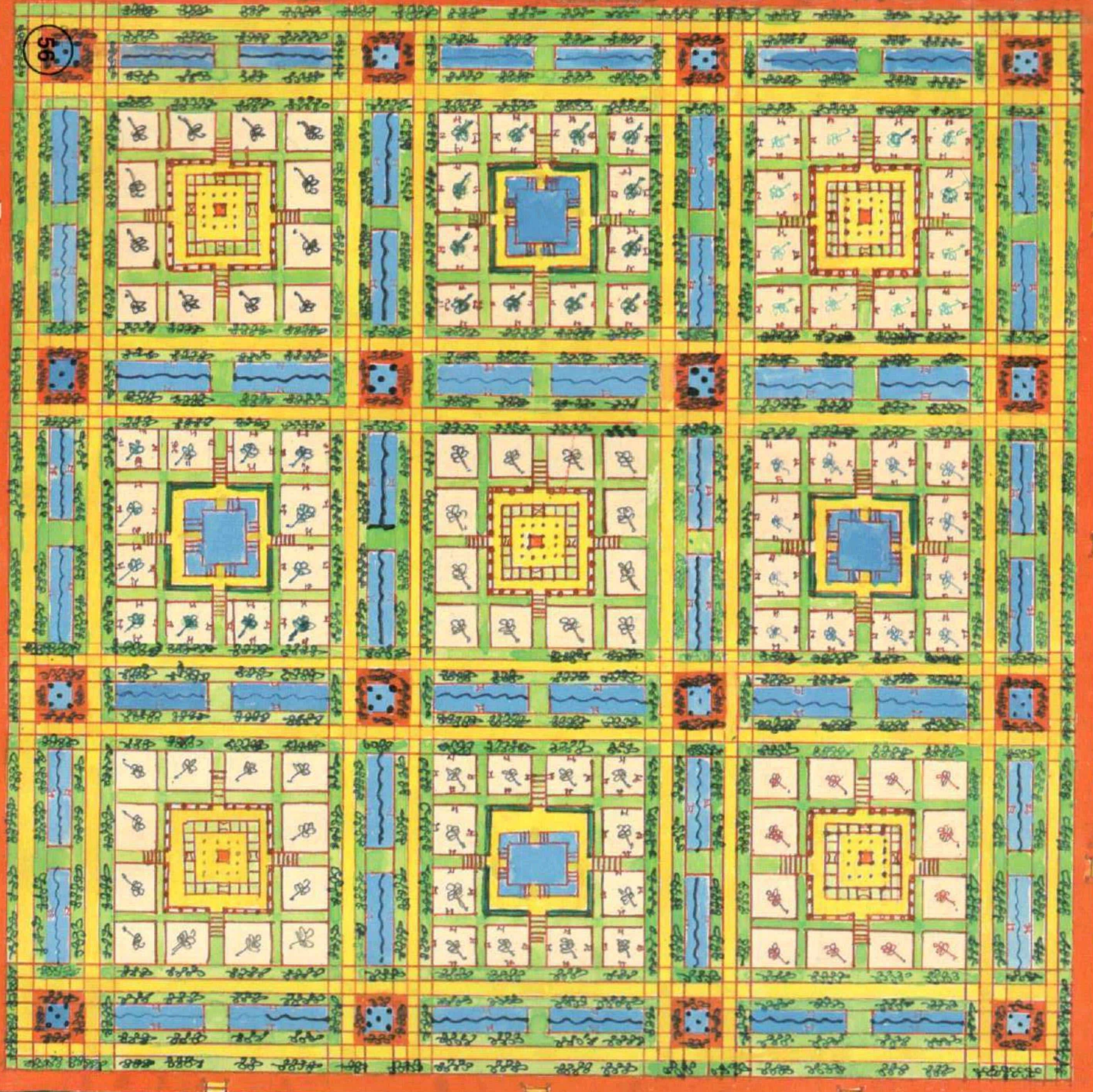




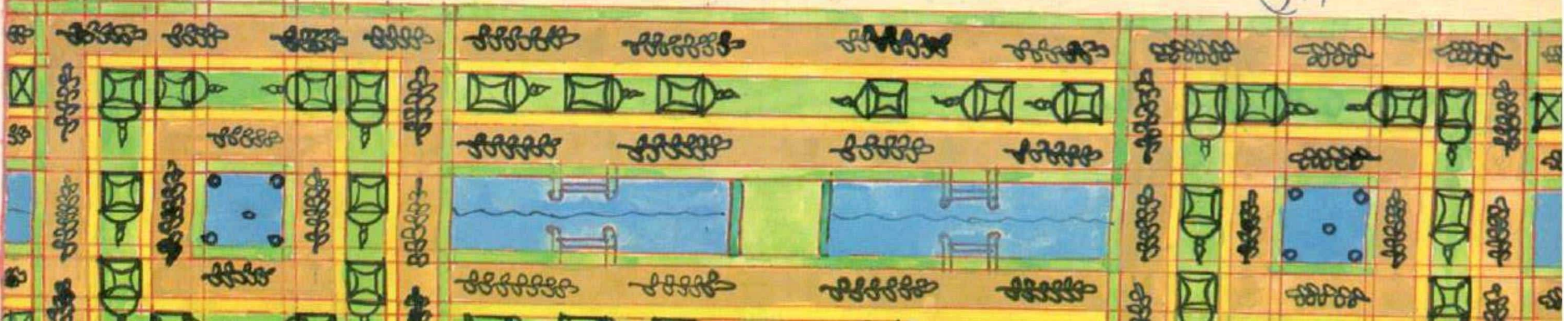
मंगल ५
दृश्य

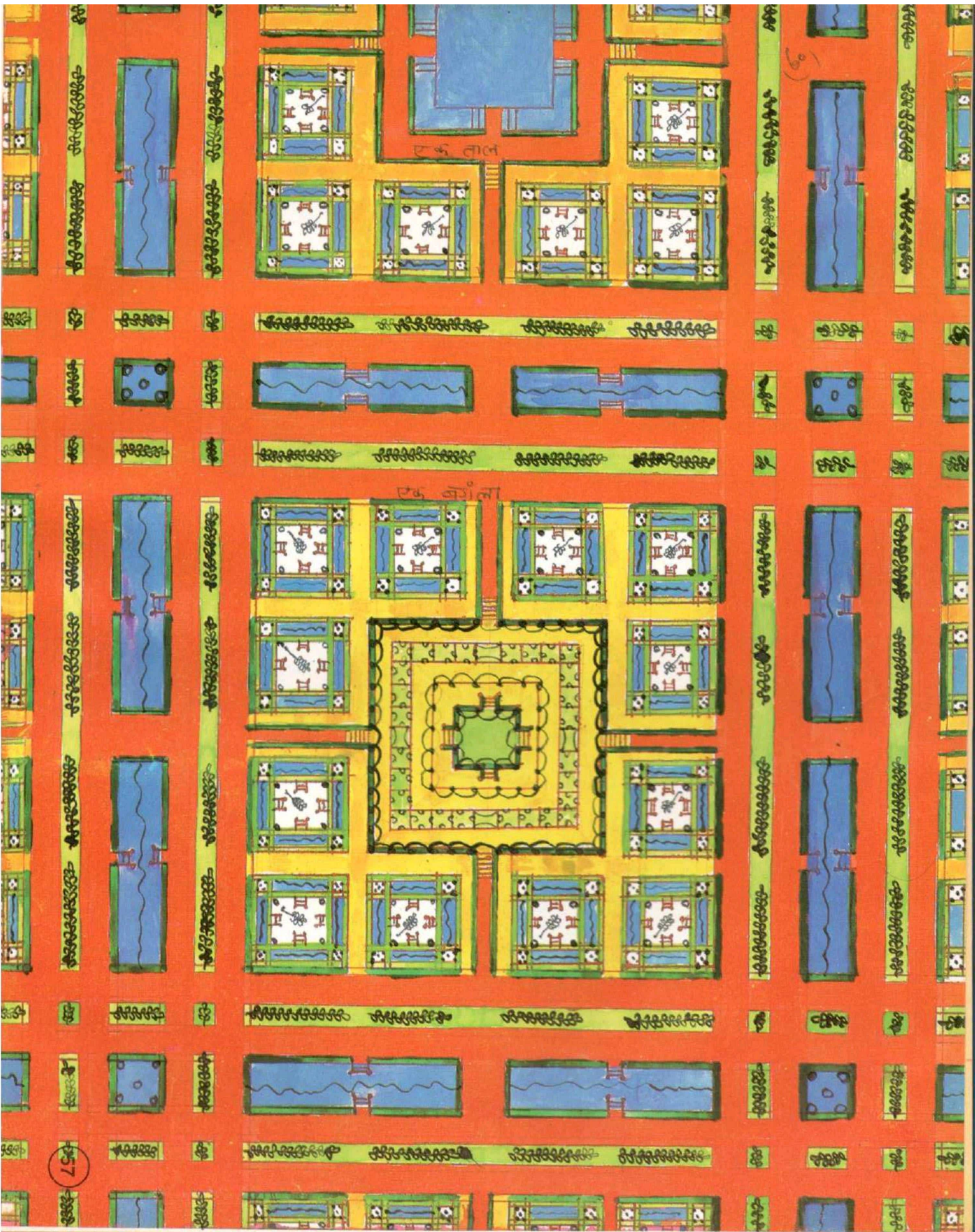


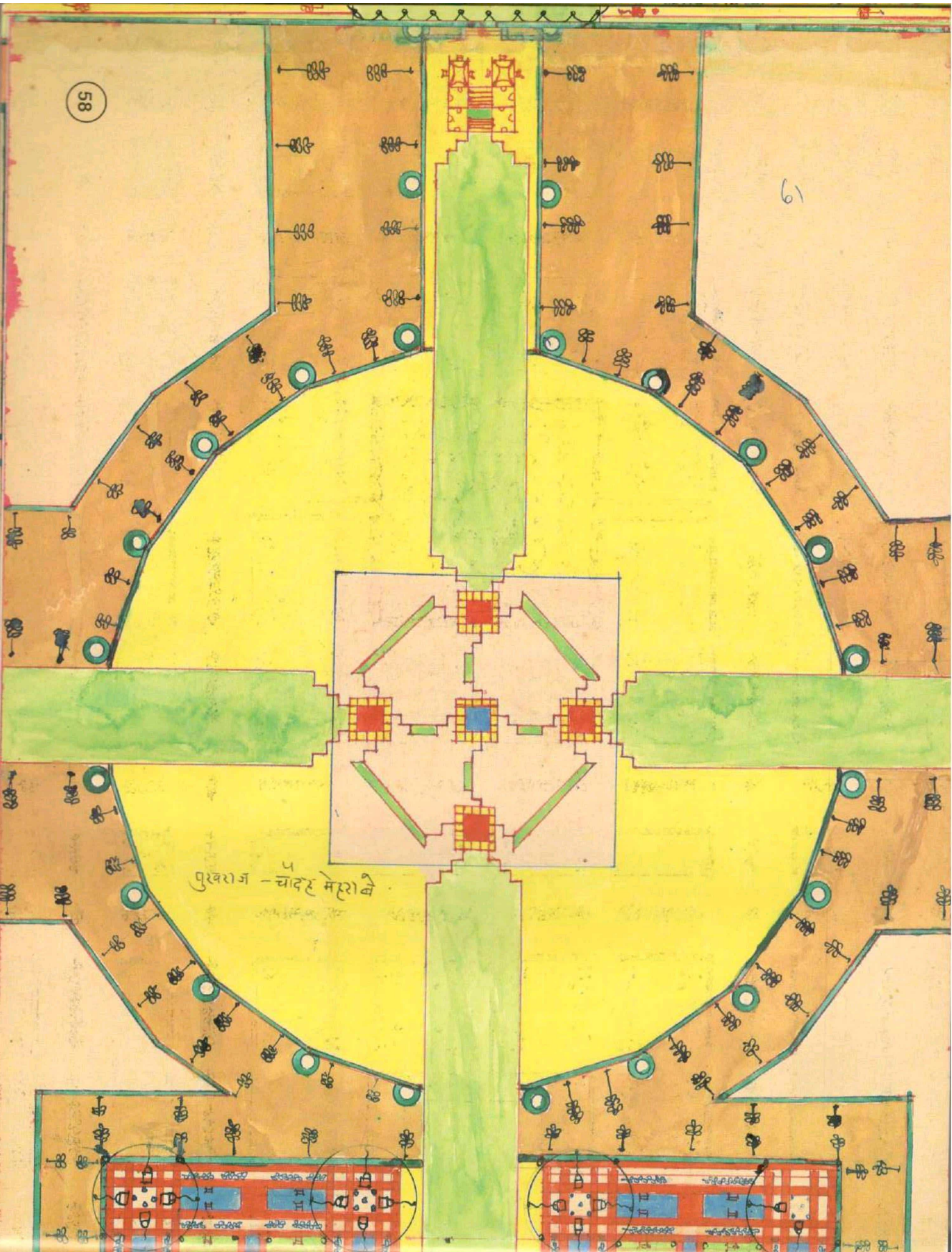




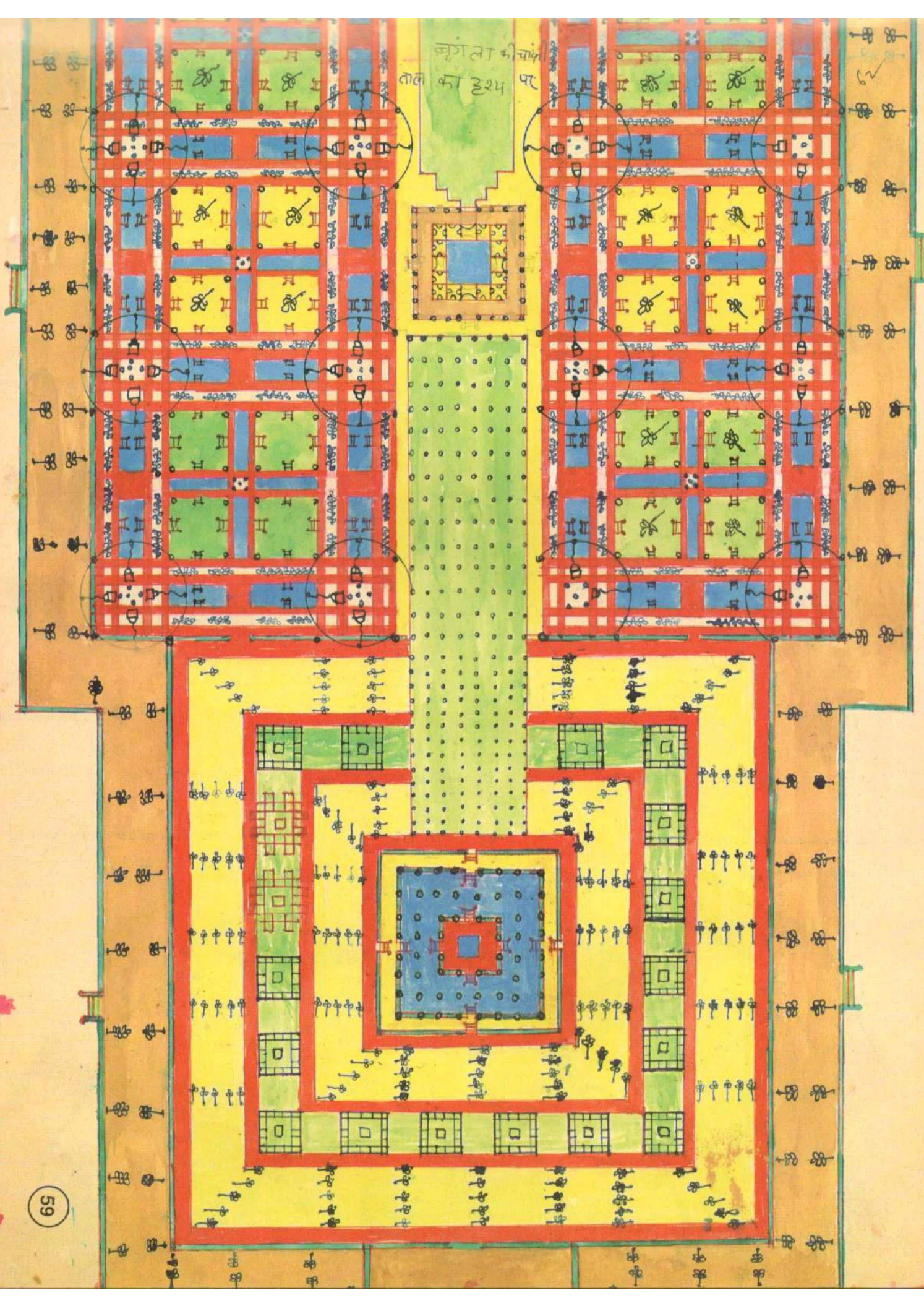
जंगले - तथा चहबचे

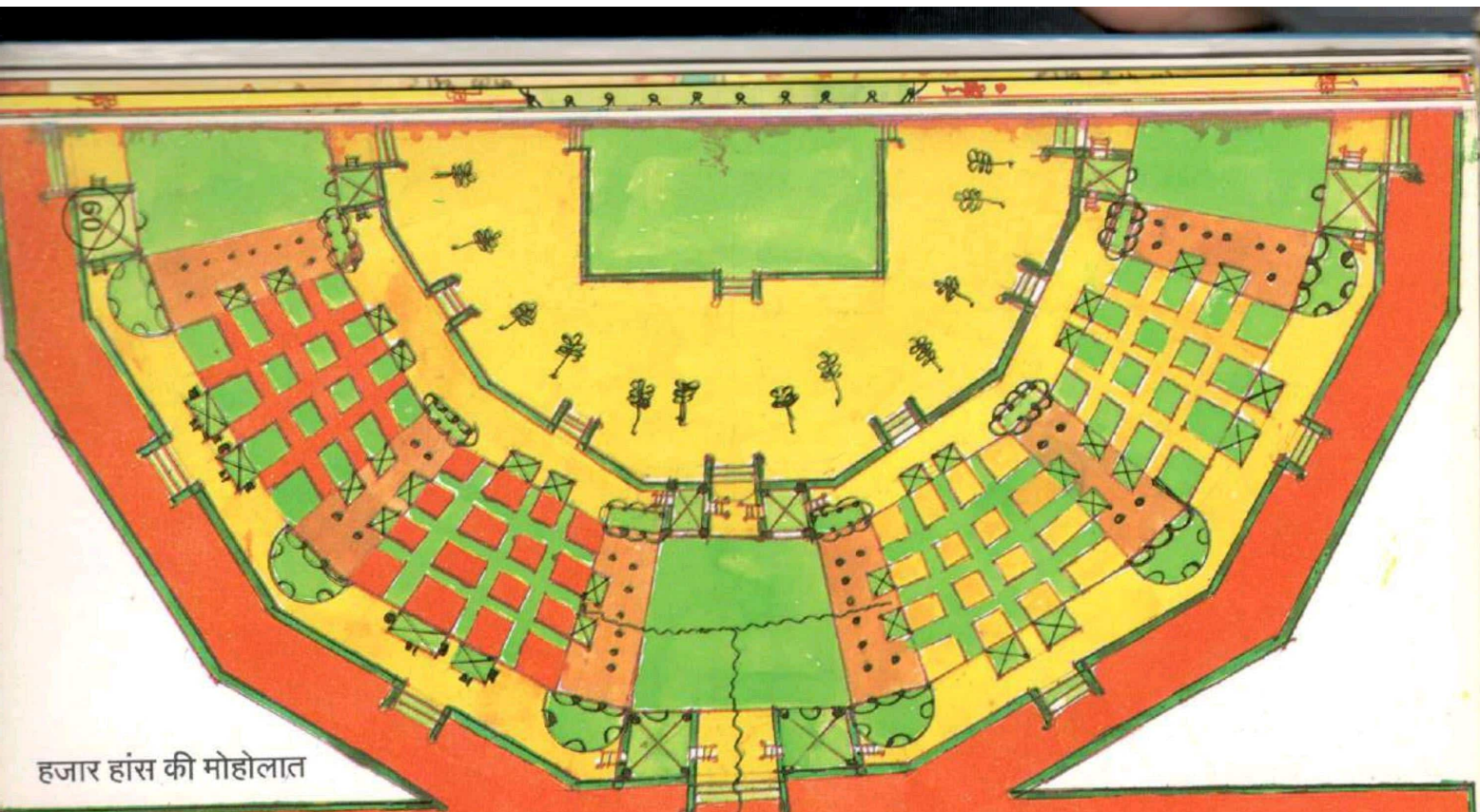






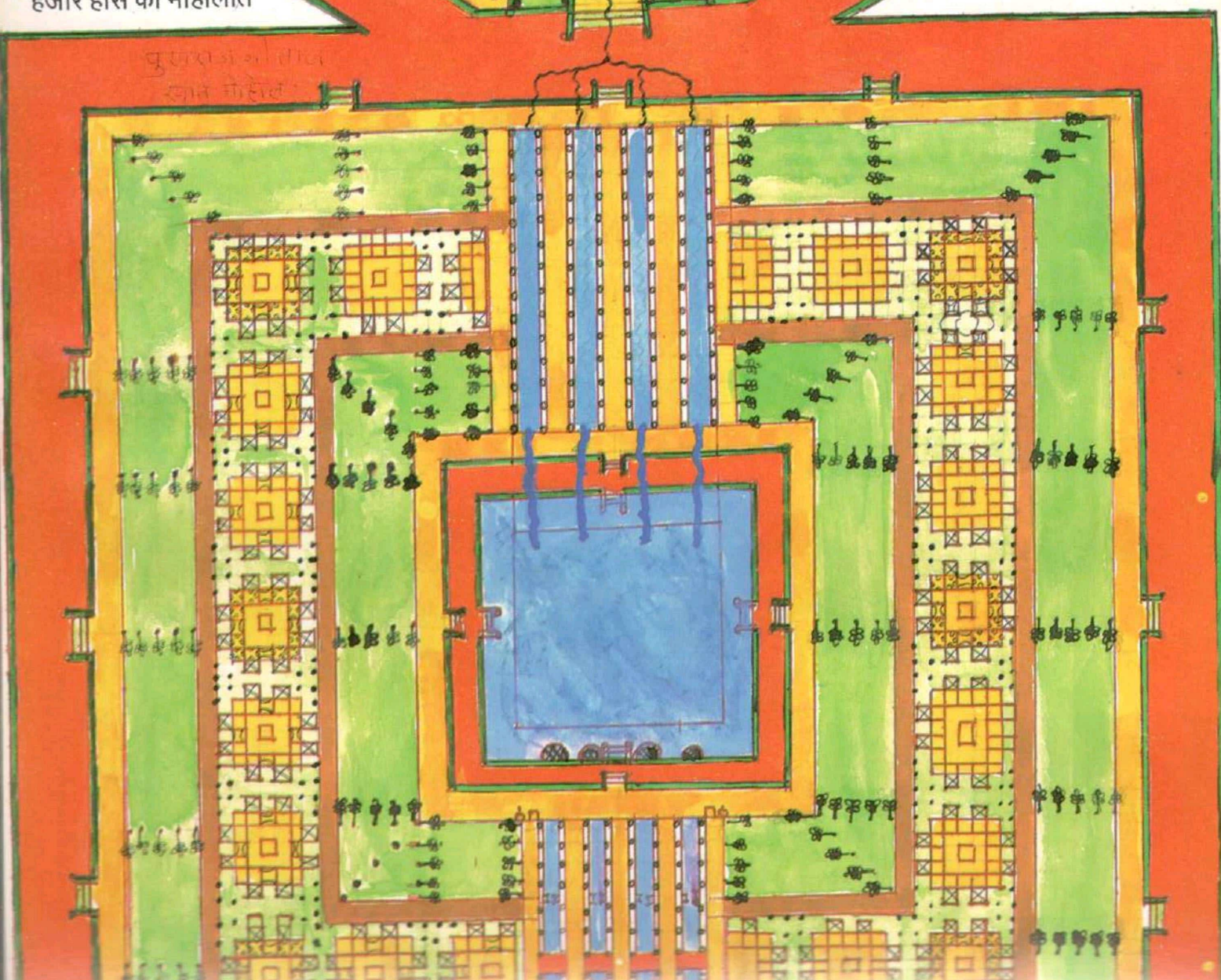
मंगल की चानि
मल का दृश्य

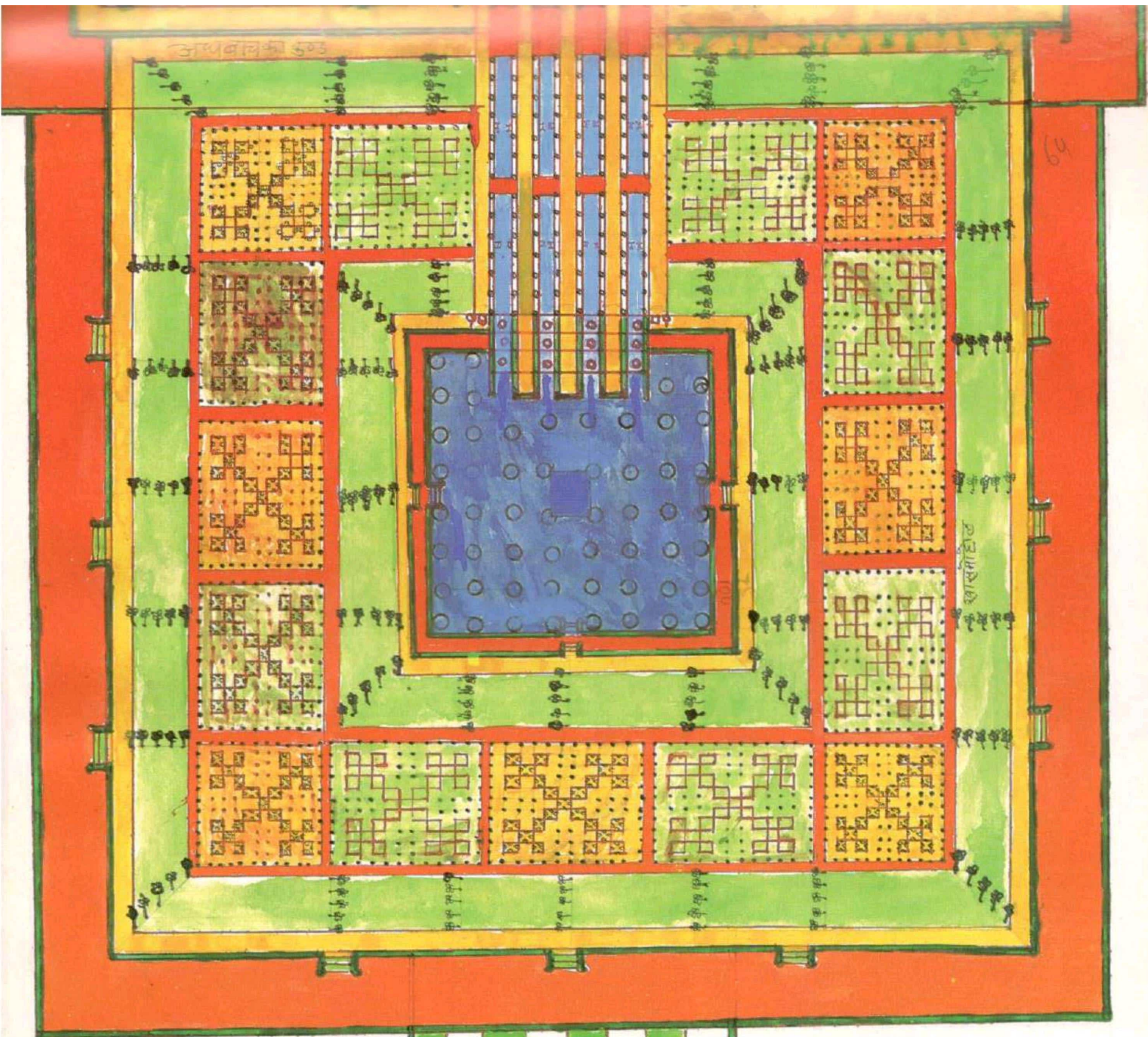




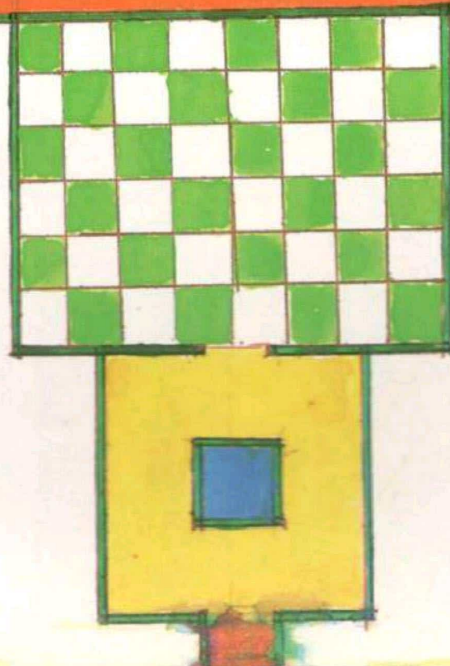
हजार हांस की मोहोलात

पुष्पराज की मोहोलात
रक्त मोहोलात



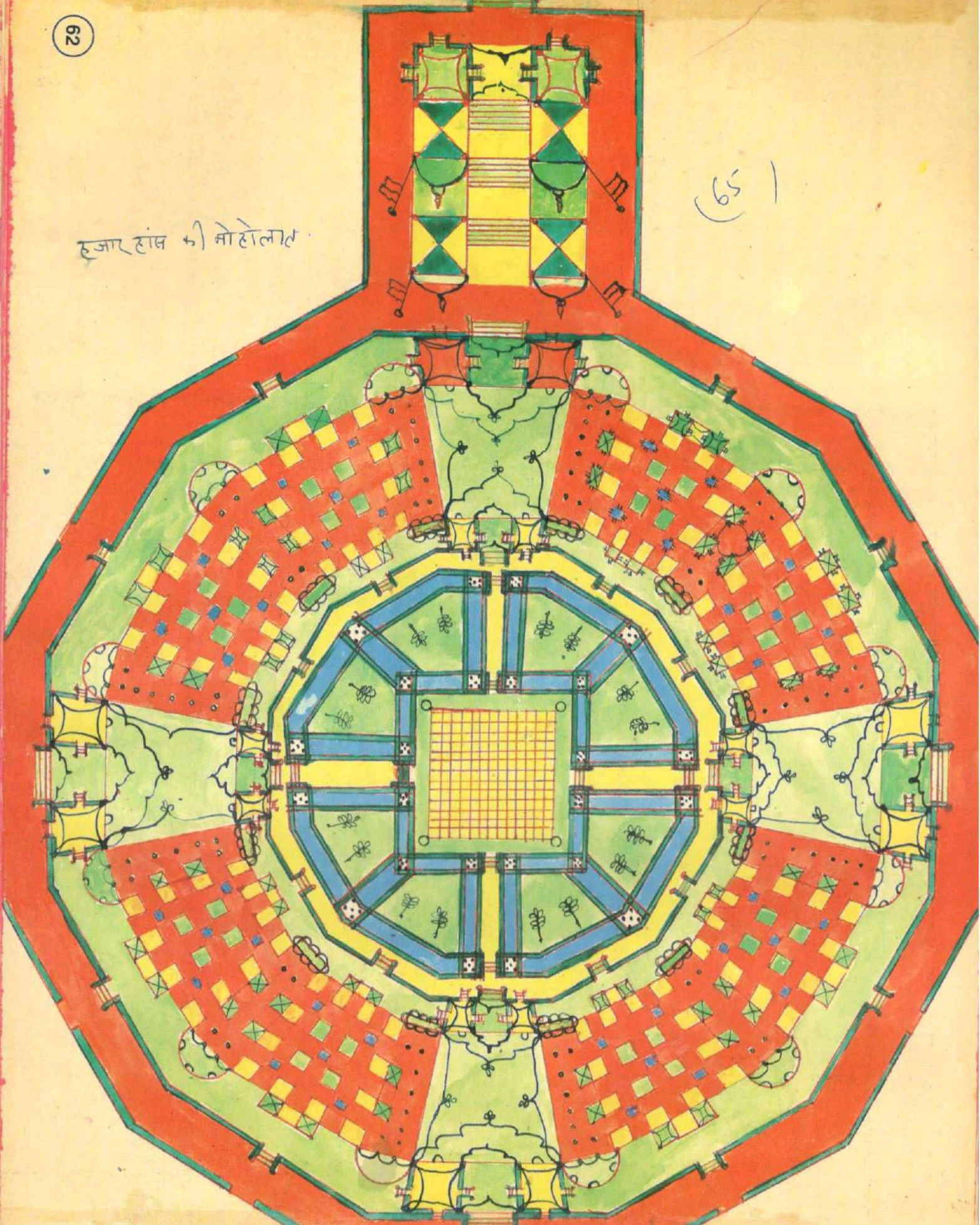


मूल कूण्ड - ढपो चबूतरा

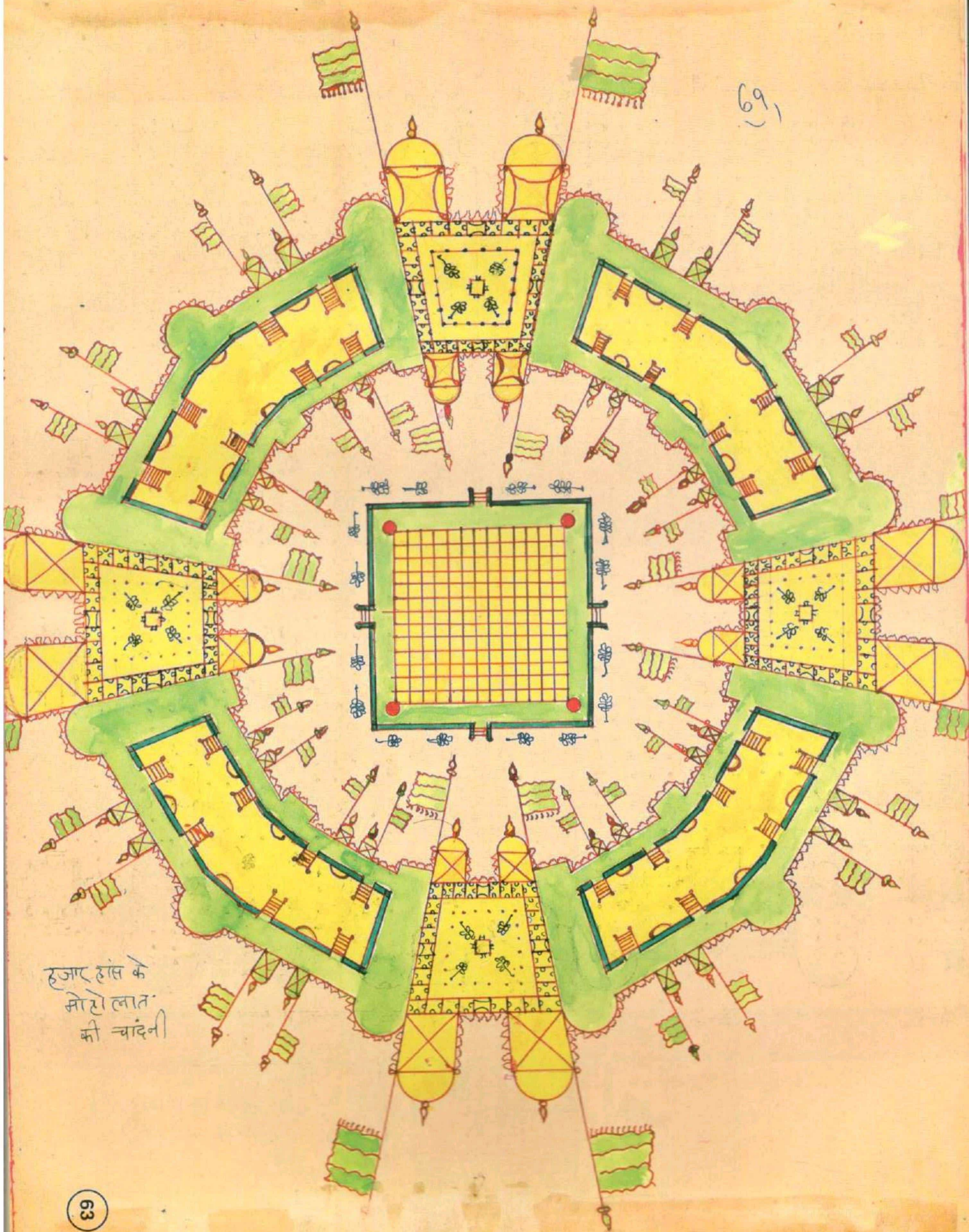


हजार हांस की मोहोला

(65)

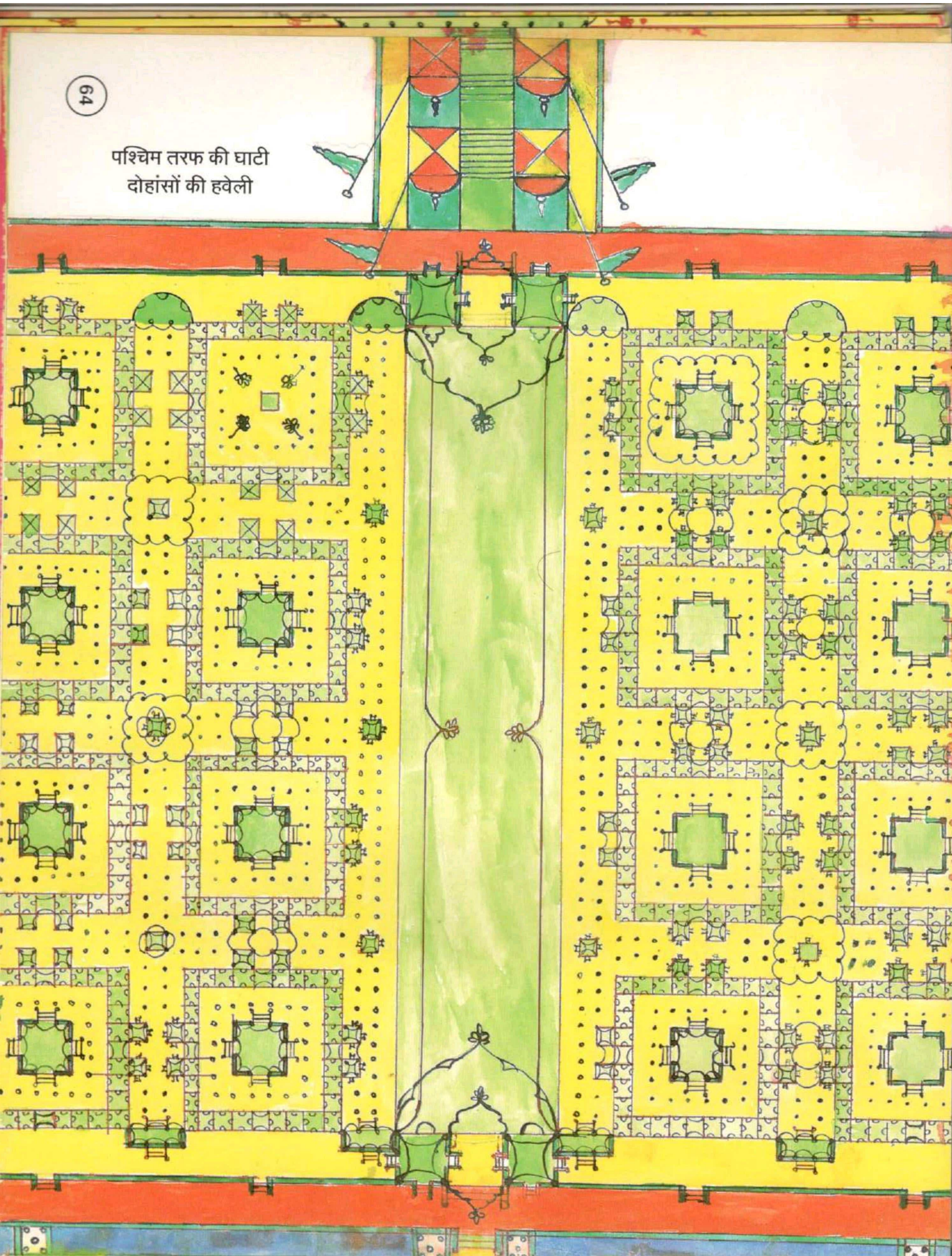


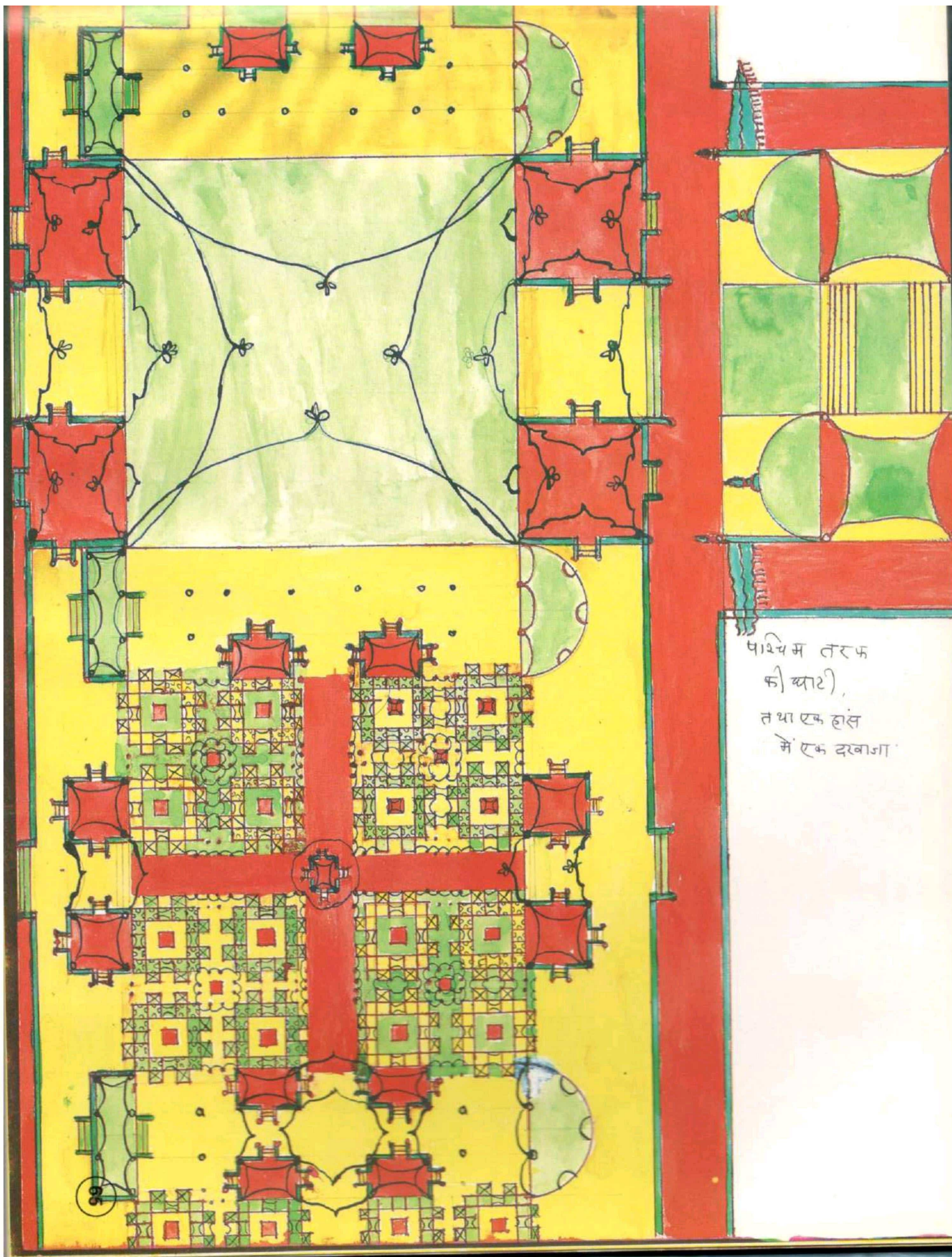
69,



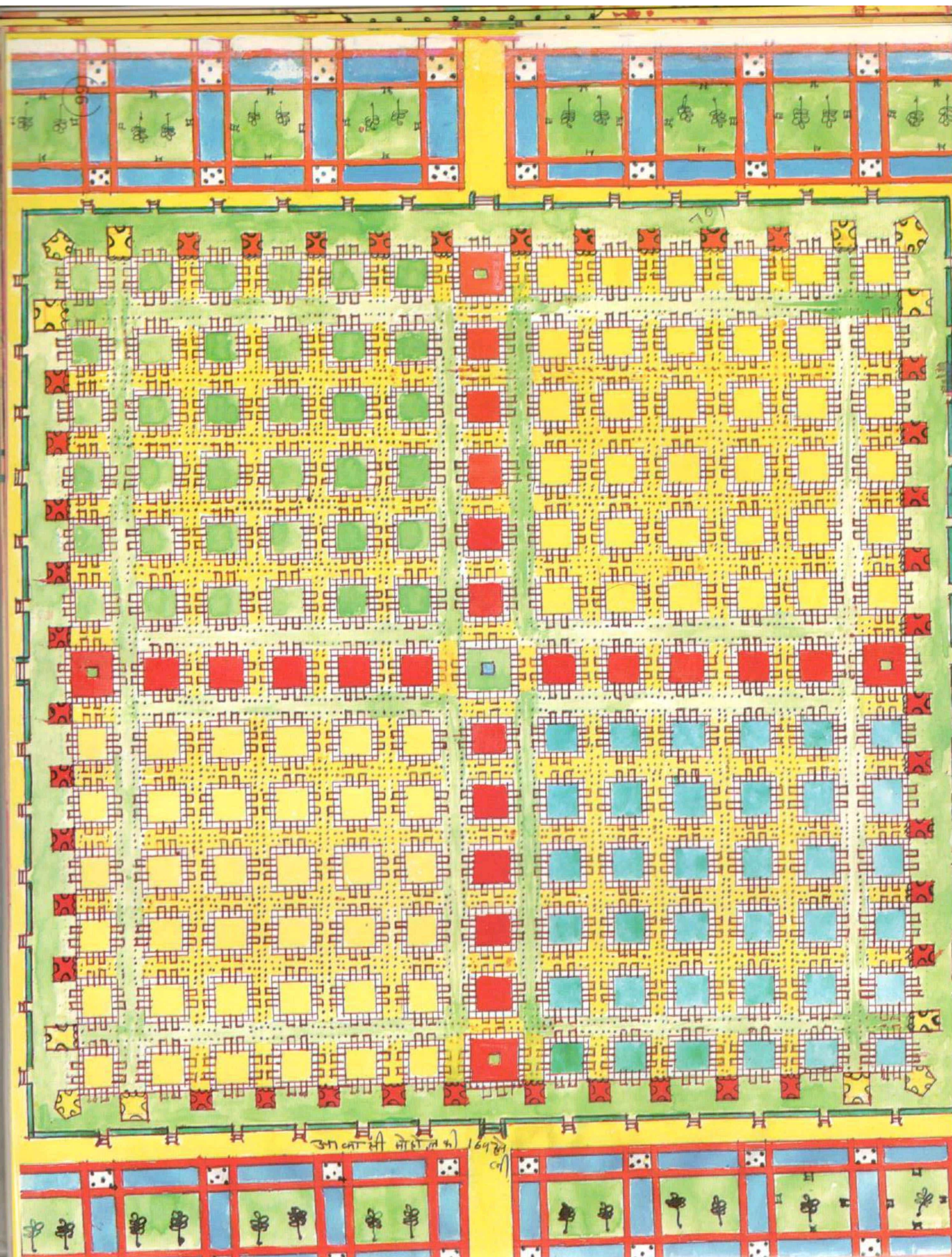
हजार हांस के
मोरो लात
की चांदनी

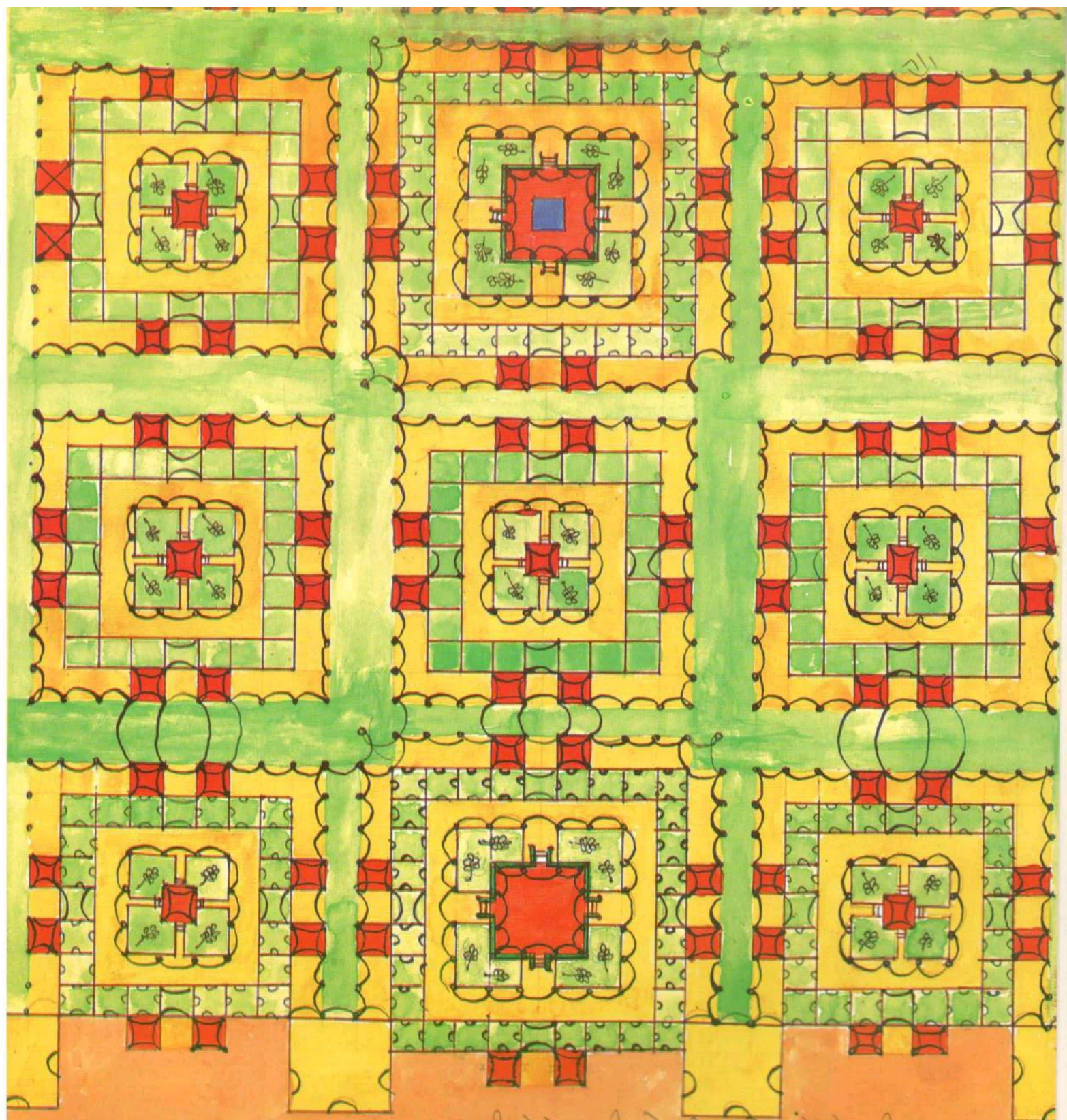
पश्चिम तरफ की घाटी
दोहांसों की हवेली



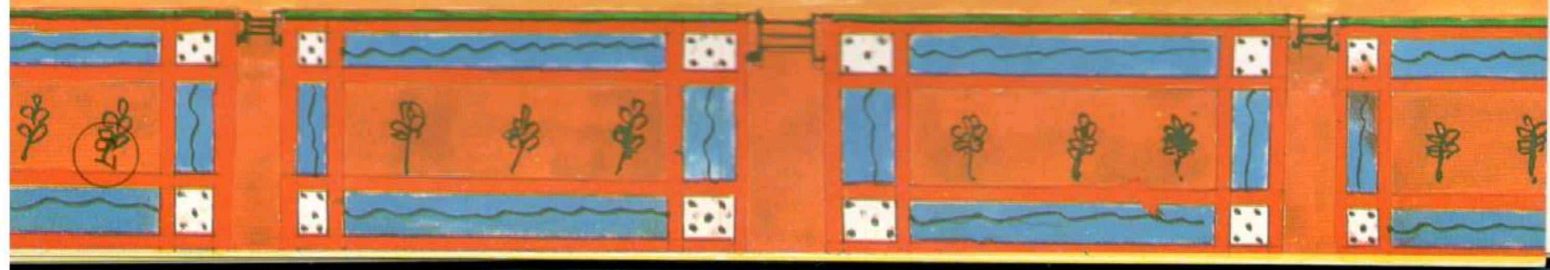


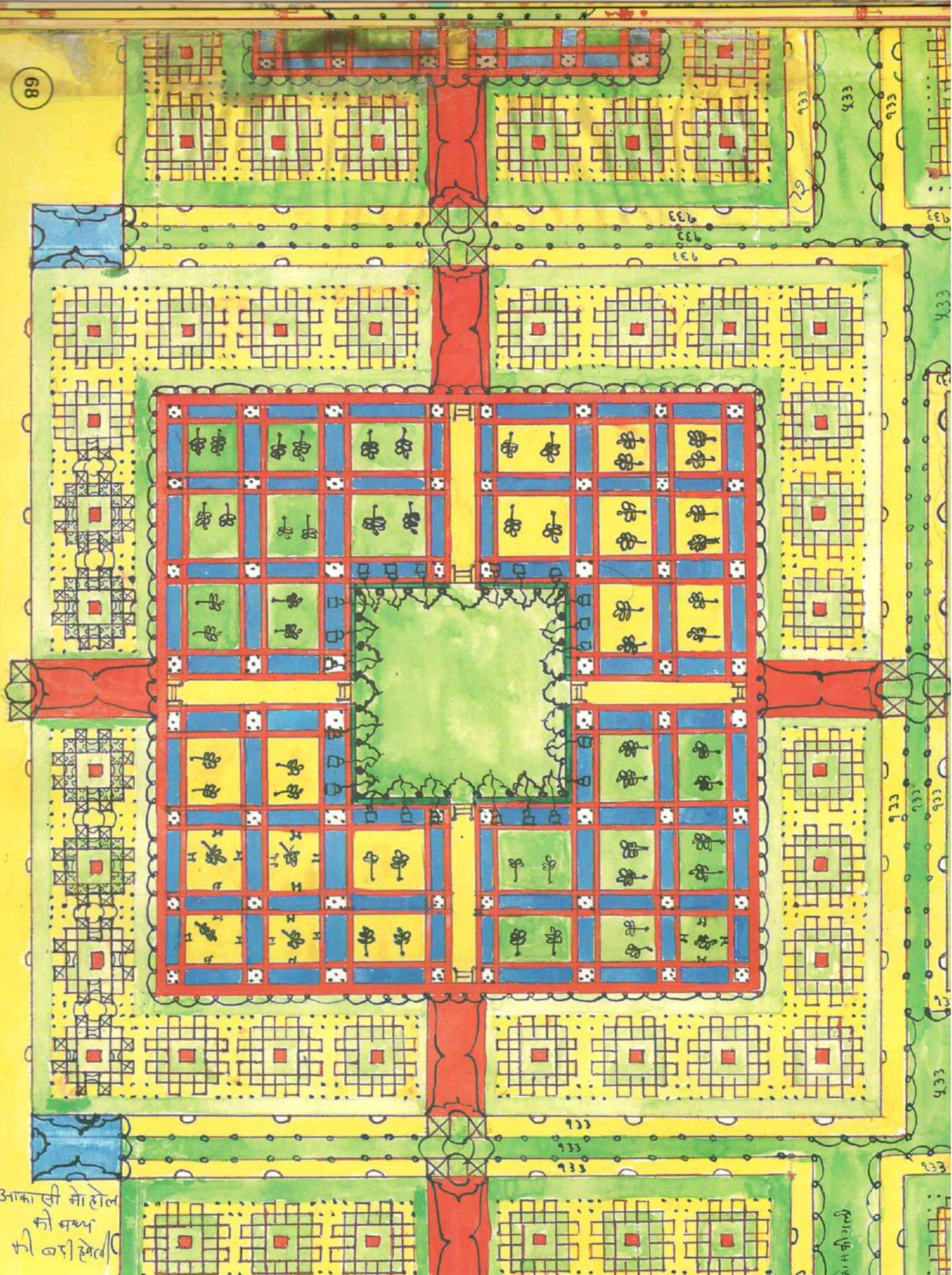
पश्चिम तरफ
की घाटी,
तथा एक हांस
में एक दरवाजा





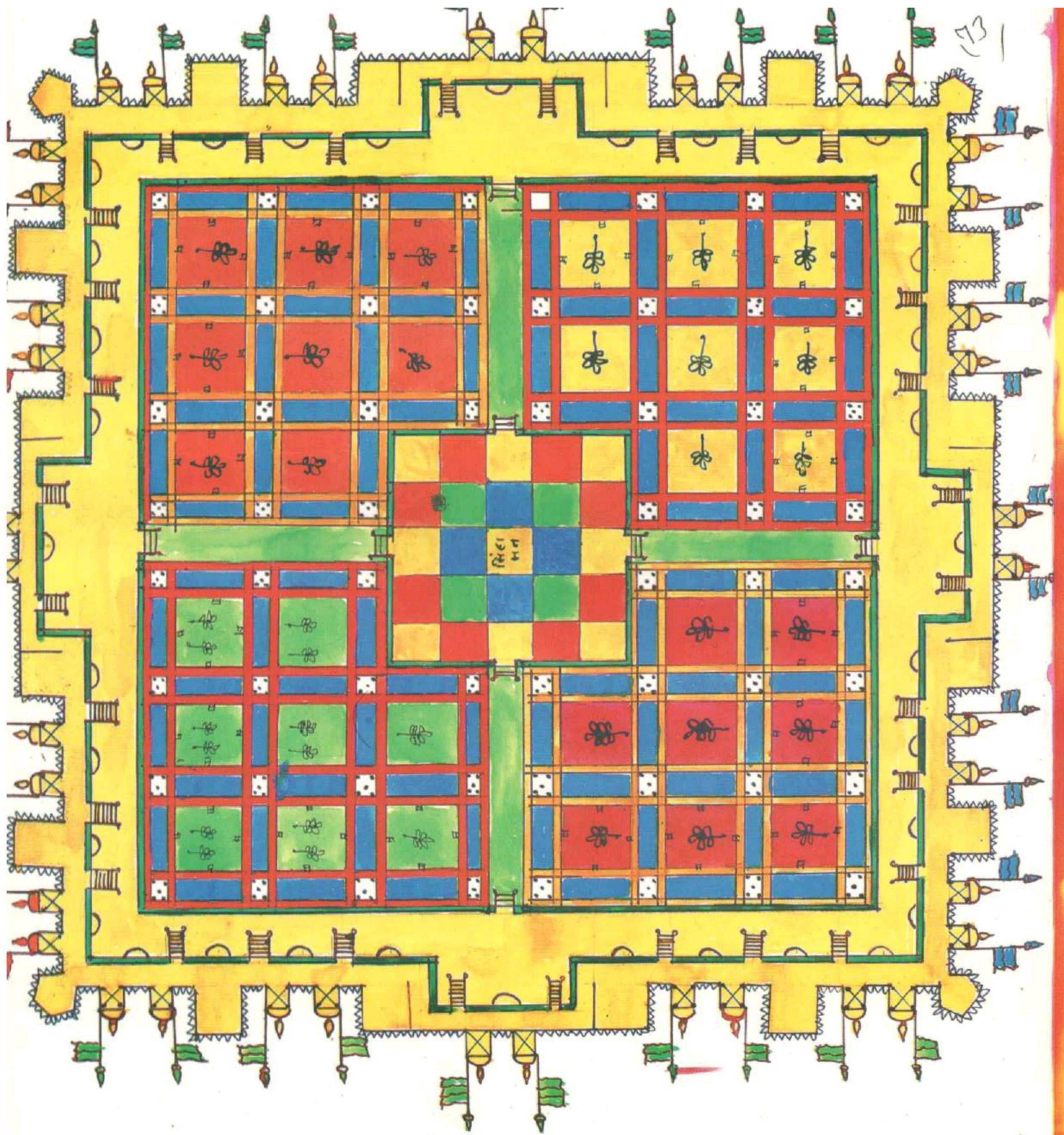
आकासी मोहोत की हवेली जिसमें दो बड़ी हवेली





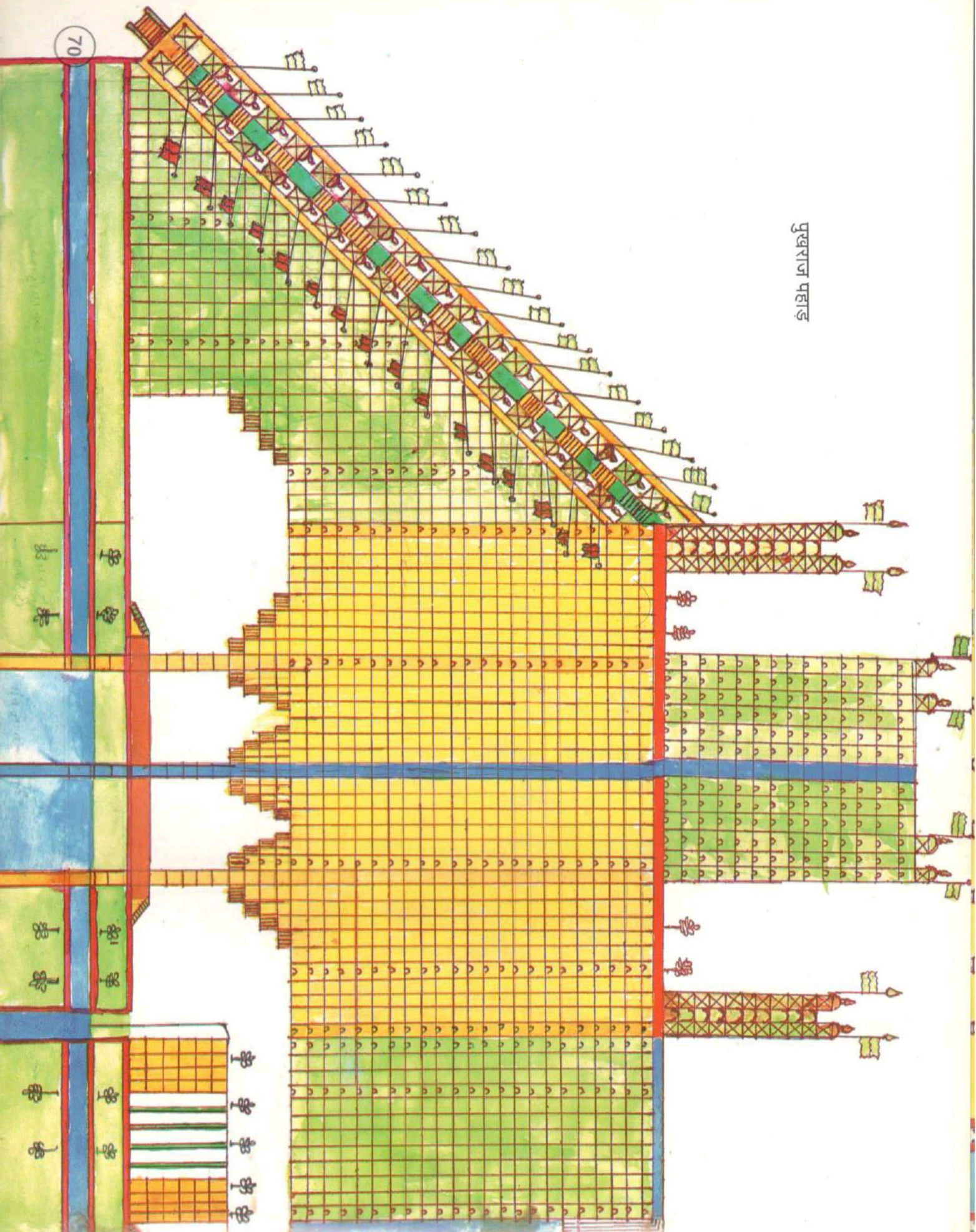
आकासी मोहल
की मध्य
की वरी हवे

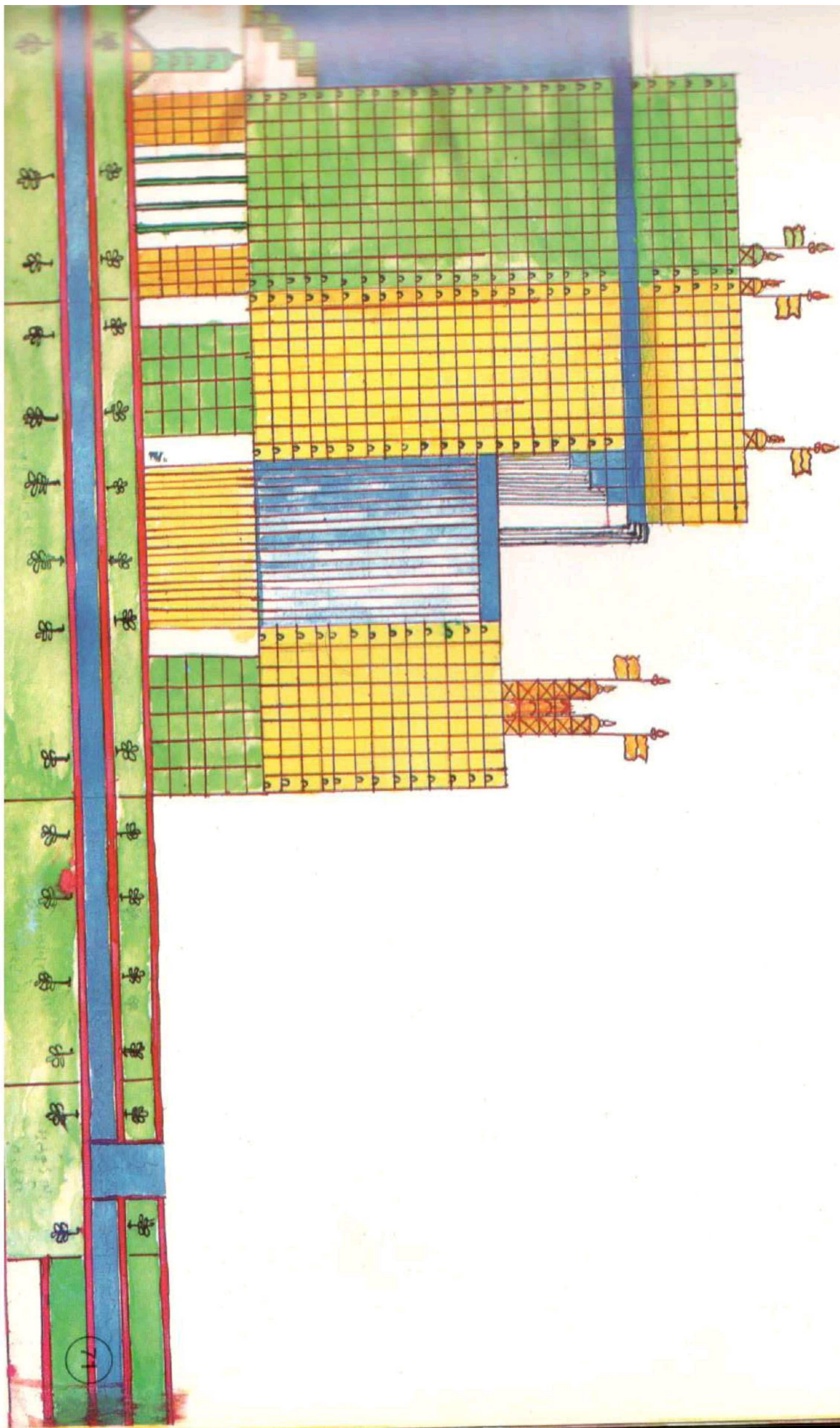
आकासी मोहल

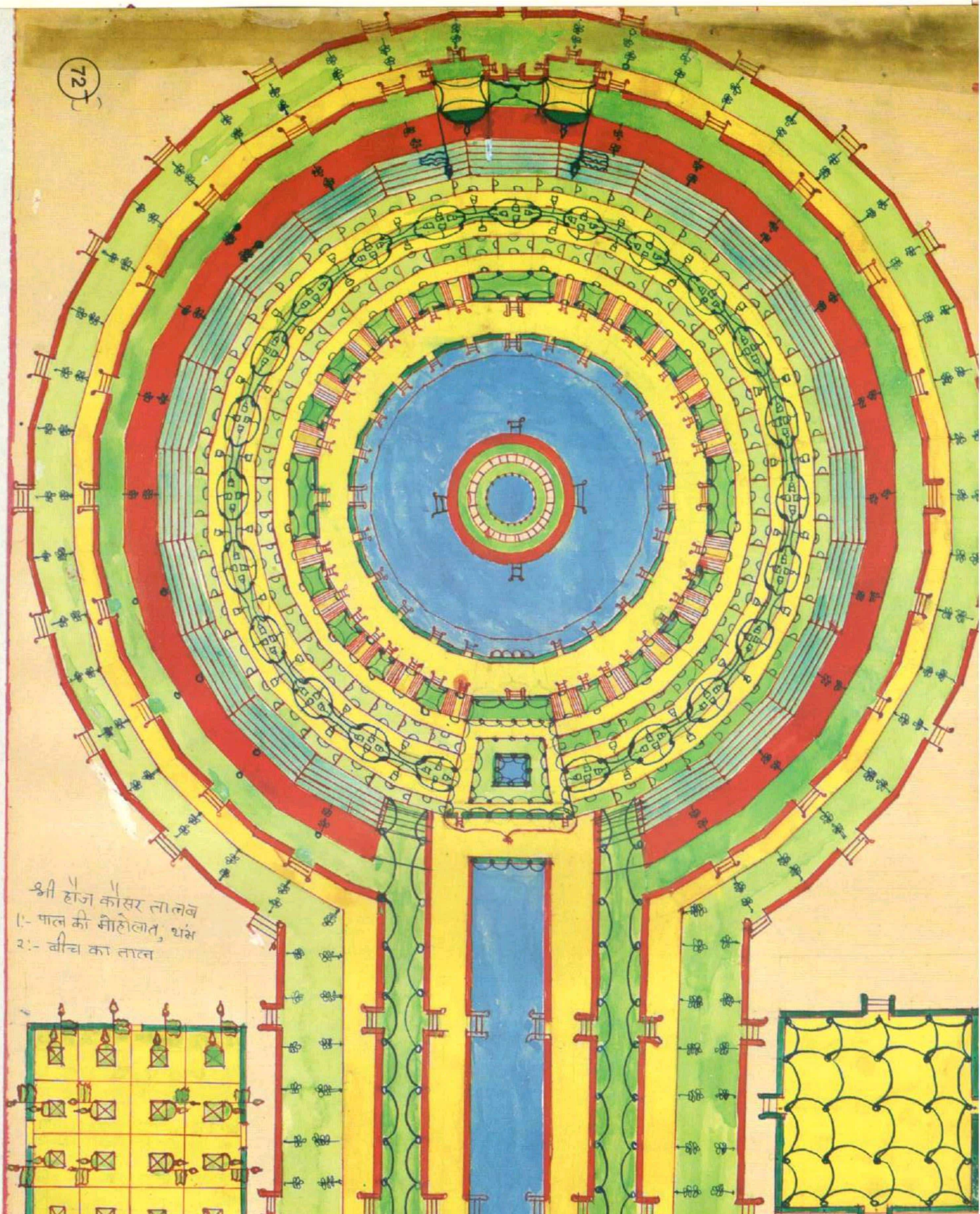


आकासी मोहोल की चांदनी

पुष्कराज पहाड

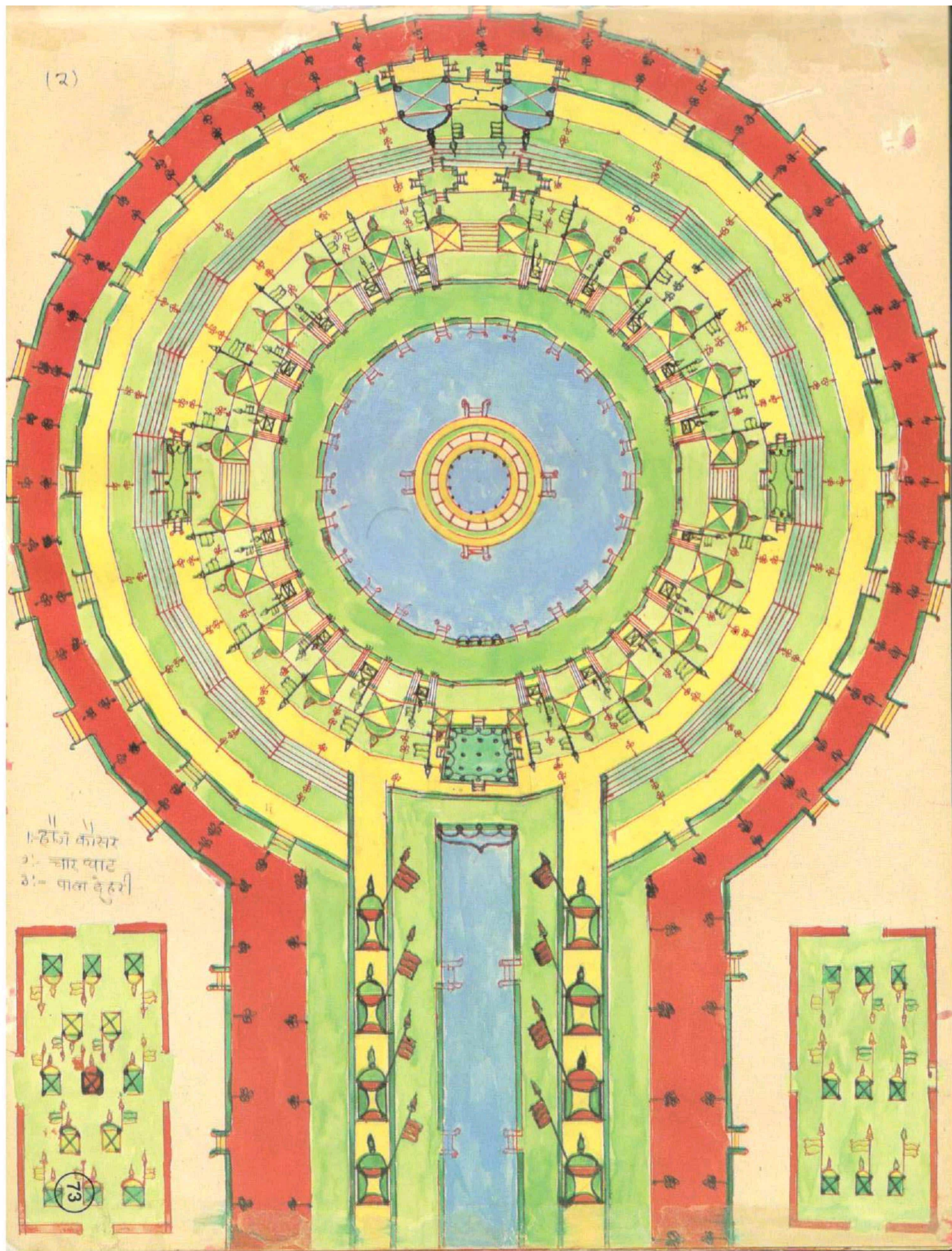






श्री हाज कासर तालव
 1:- पाल की भीहोलात, धंस
 2:- बीच का तालव

(2)

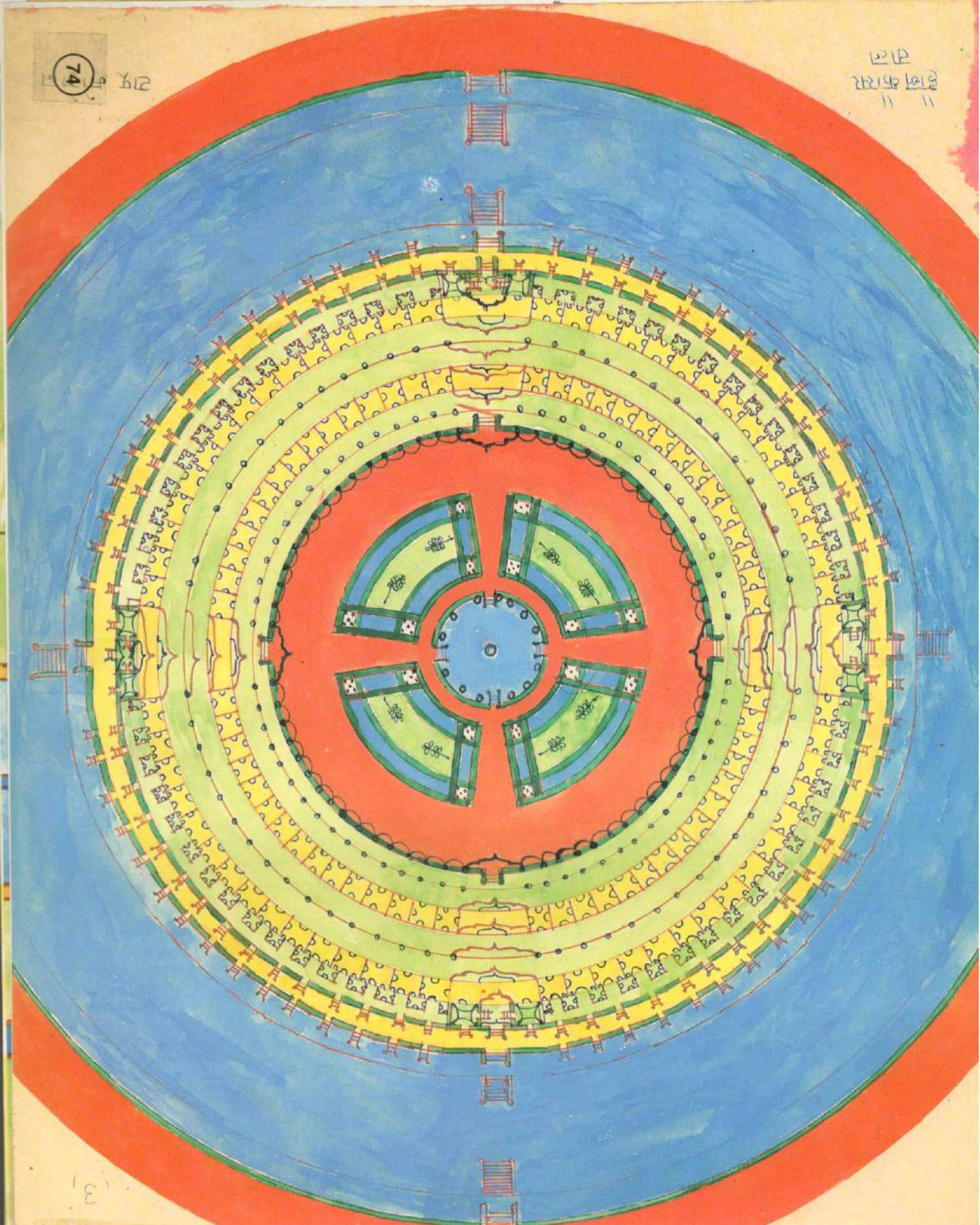


॥
१-होजे कोसर
२-चार प्यार
३-पाता देहरी

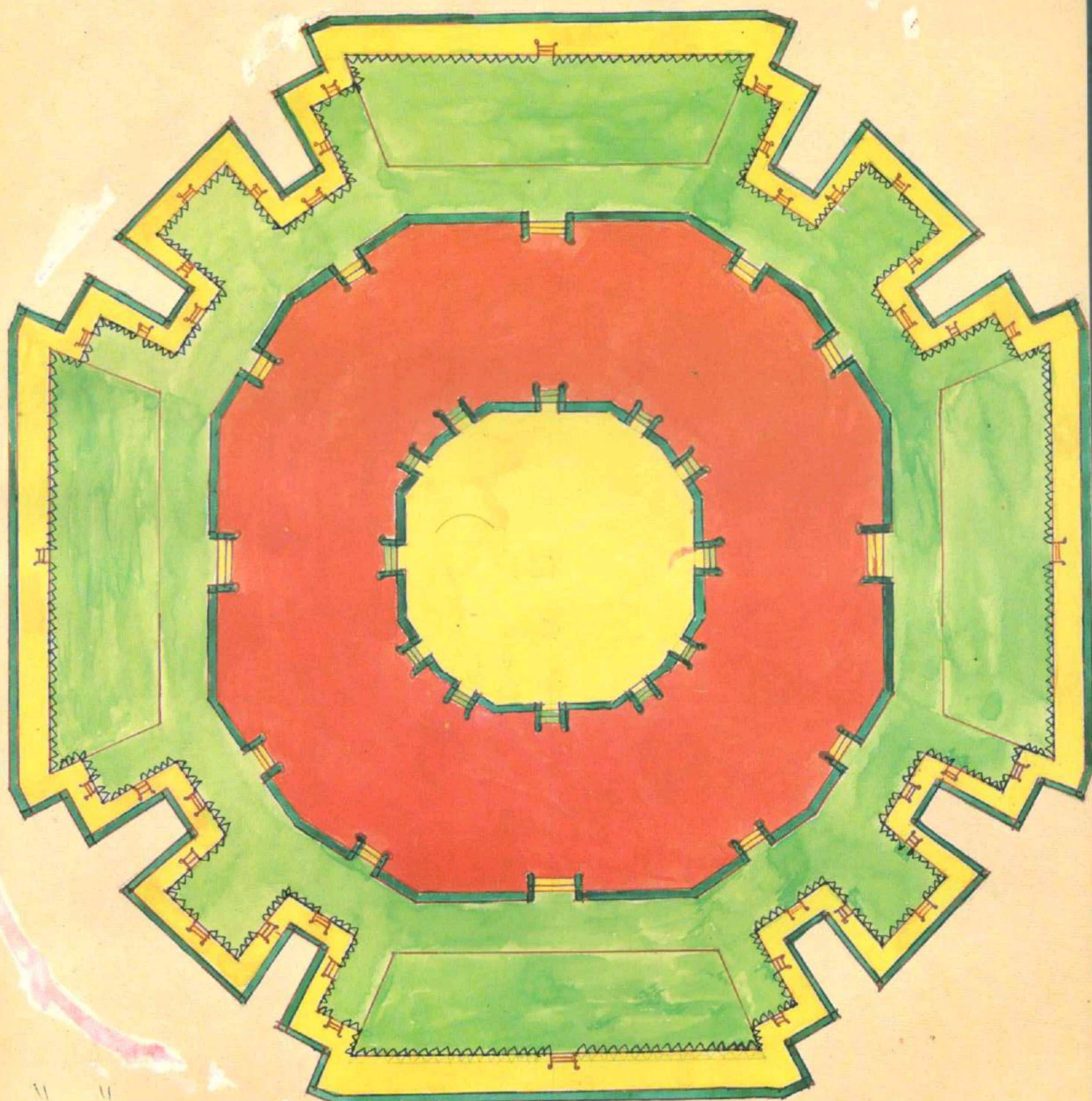
74

214

1212
214 1012
11 11

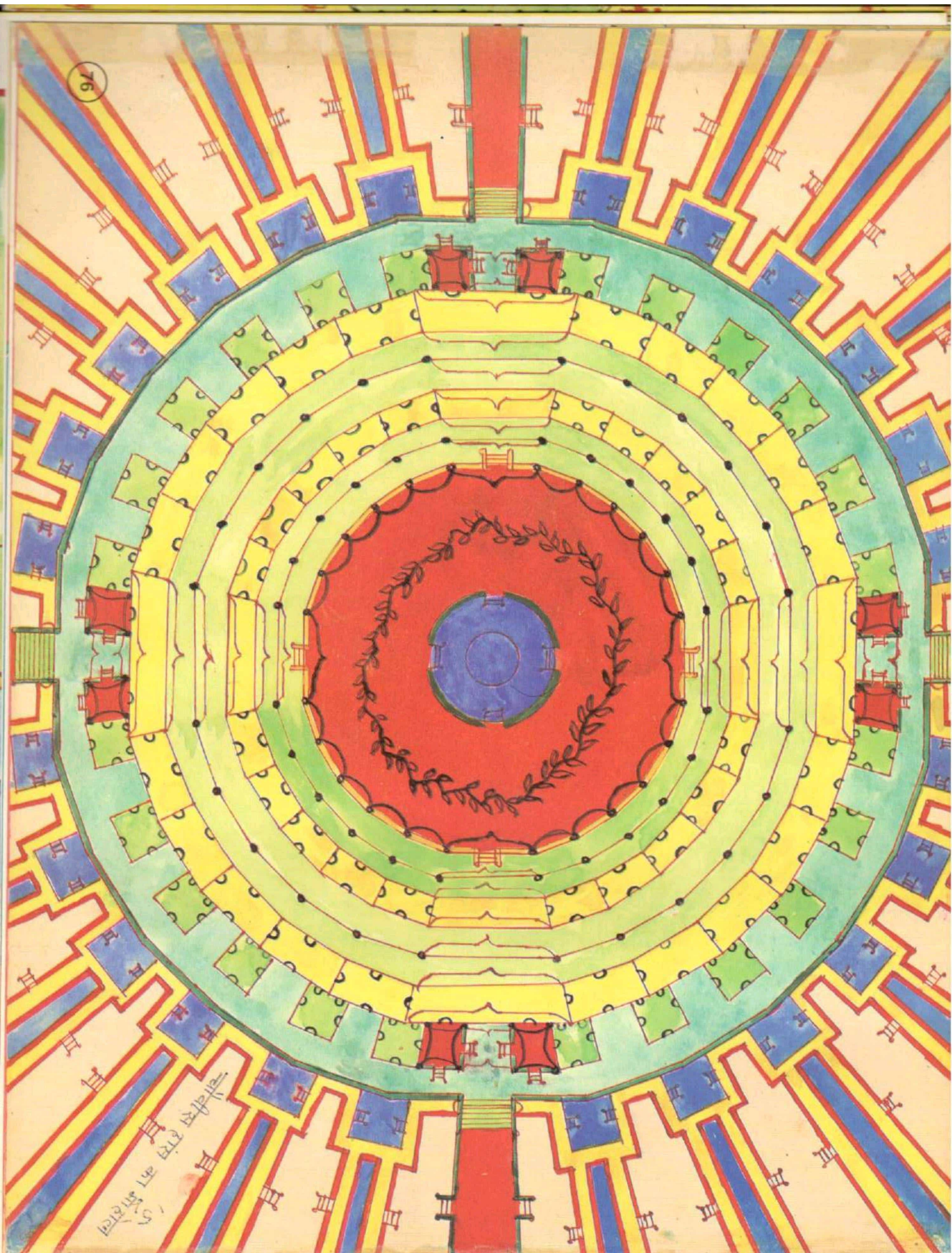


3



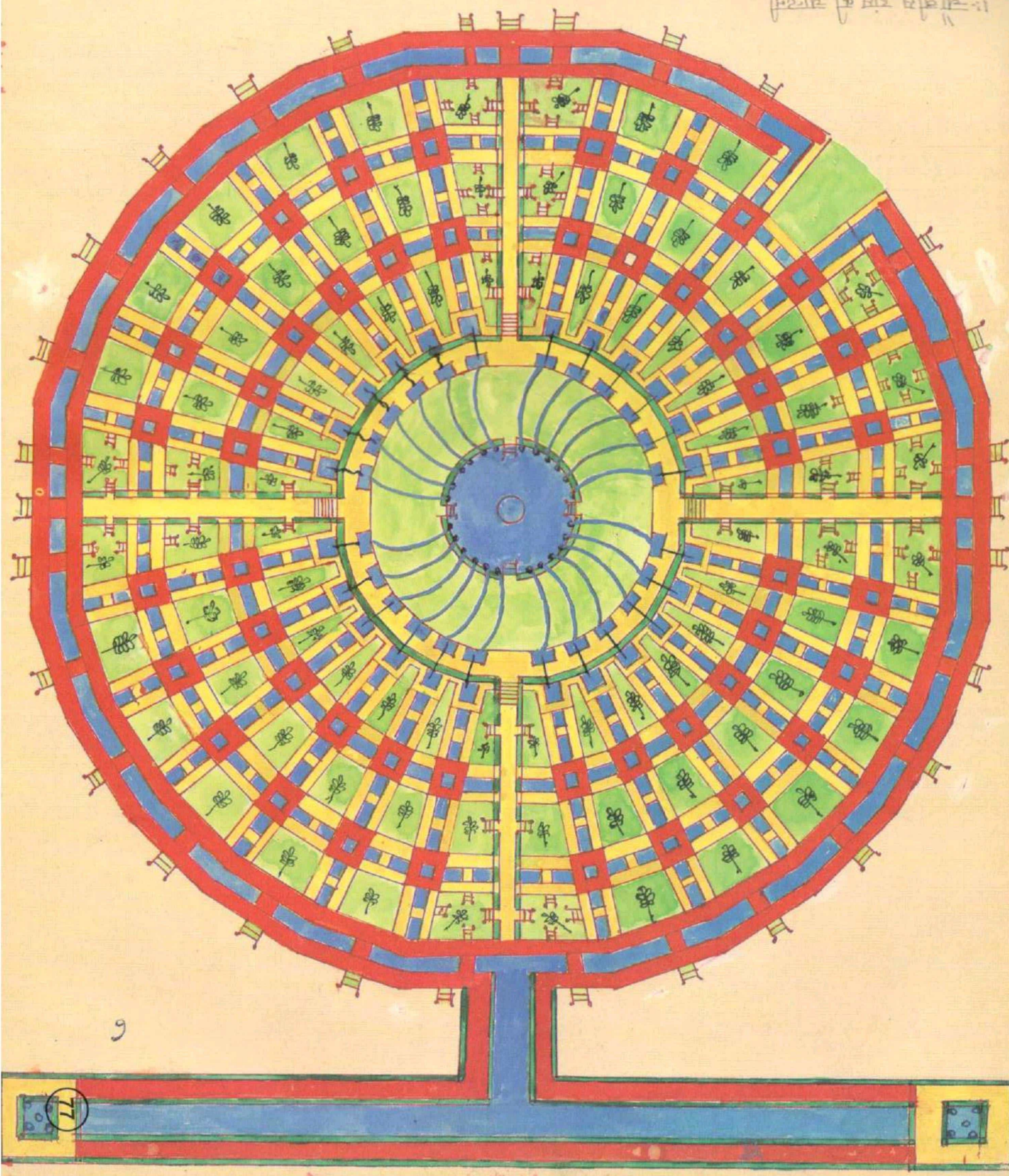
॥ ज कासर ॥

— टापुर मोहल की चान्दनी

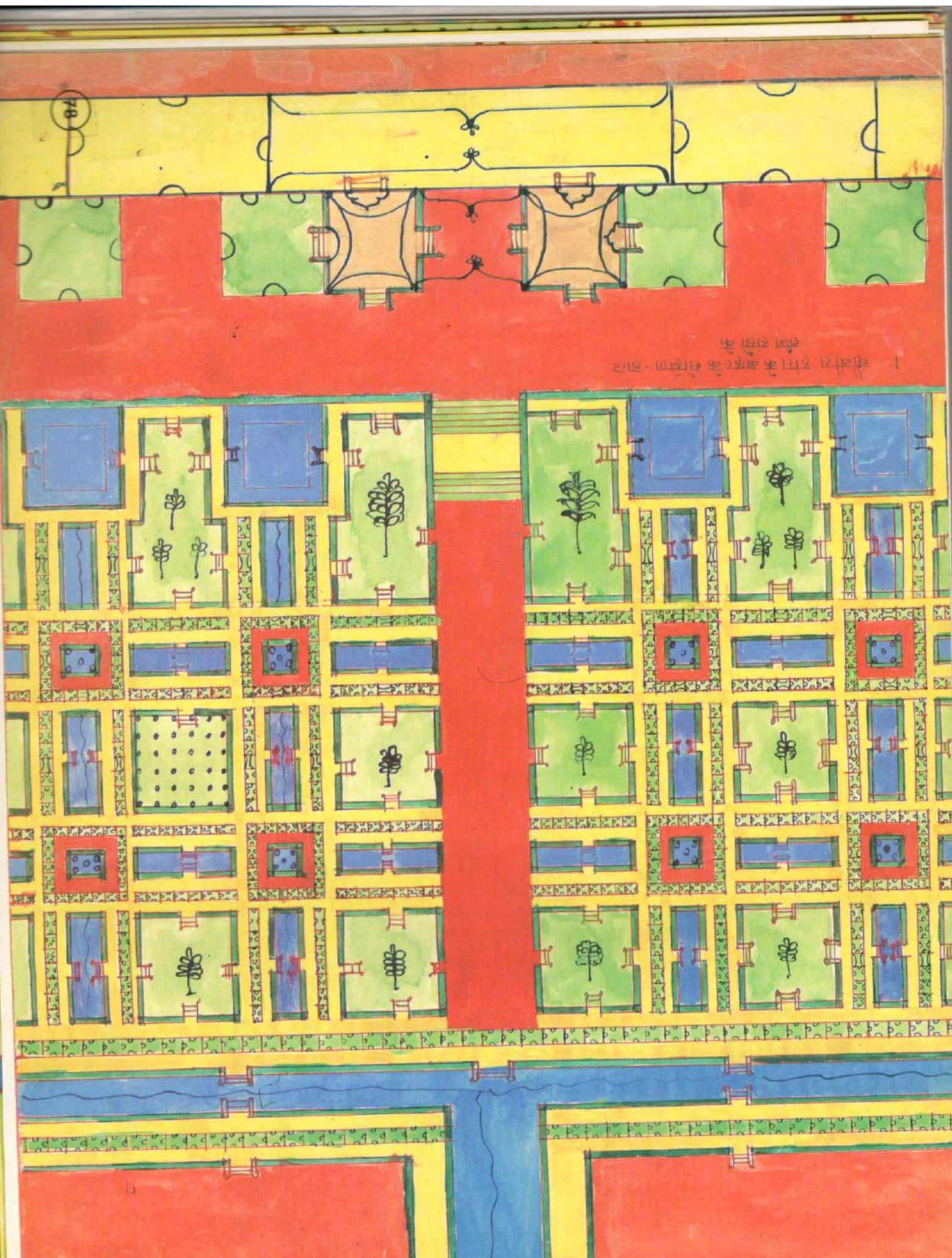


॥ वाणीय विंग की वादी ॥
॥ वादी की वादी ॥

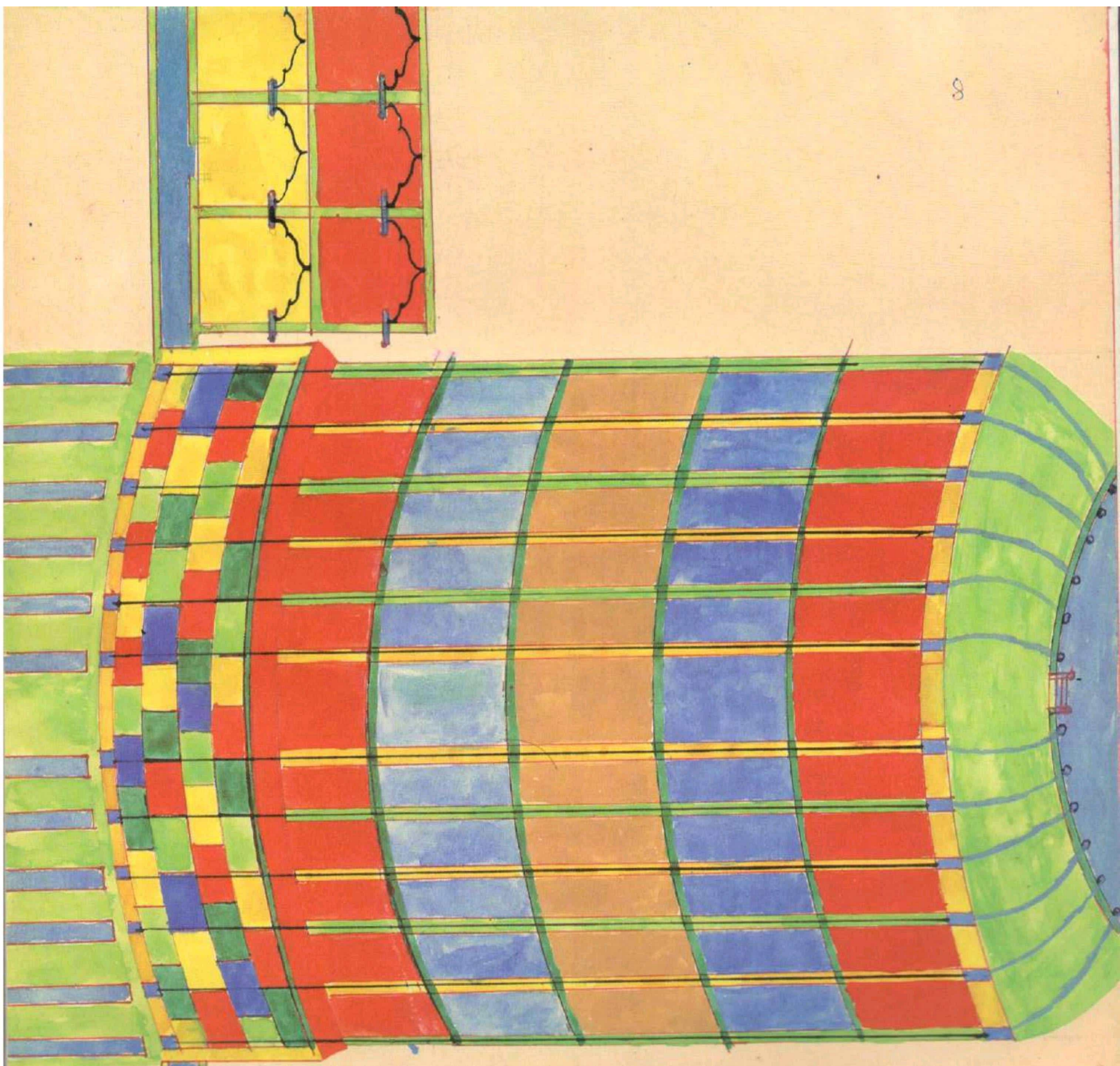
९



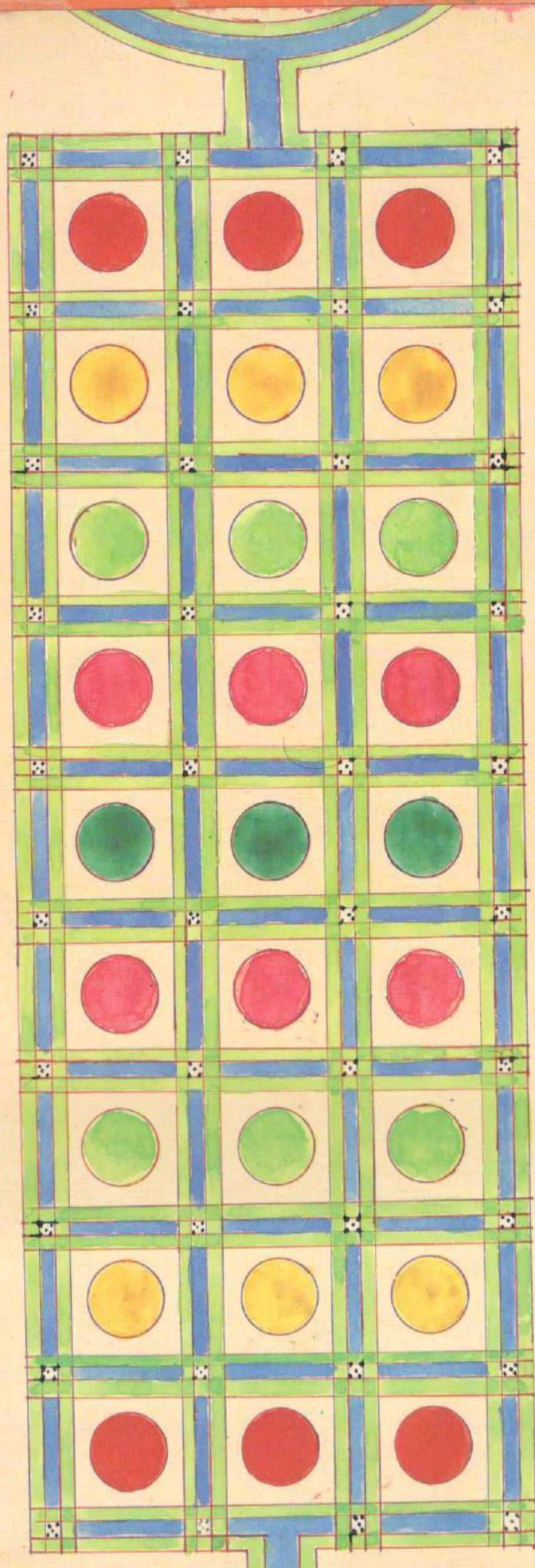
77



1. शरीर के अंगों के चित्रण - 2020
शरीर के अंगों के चित्रण

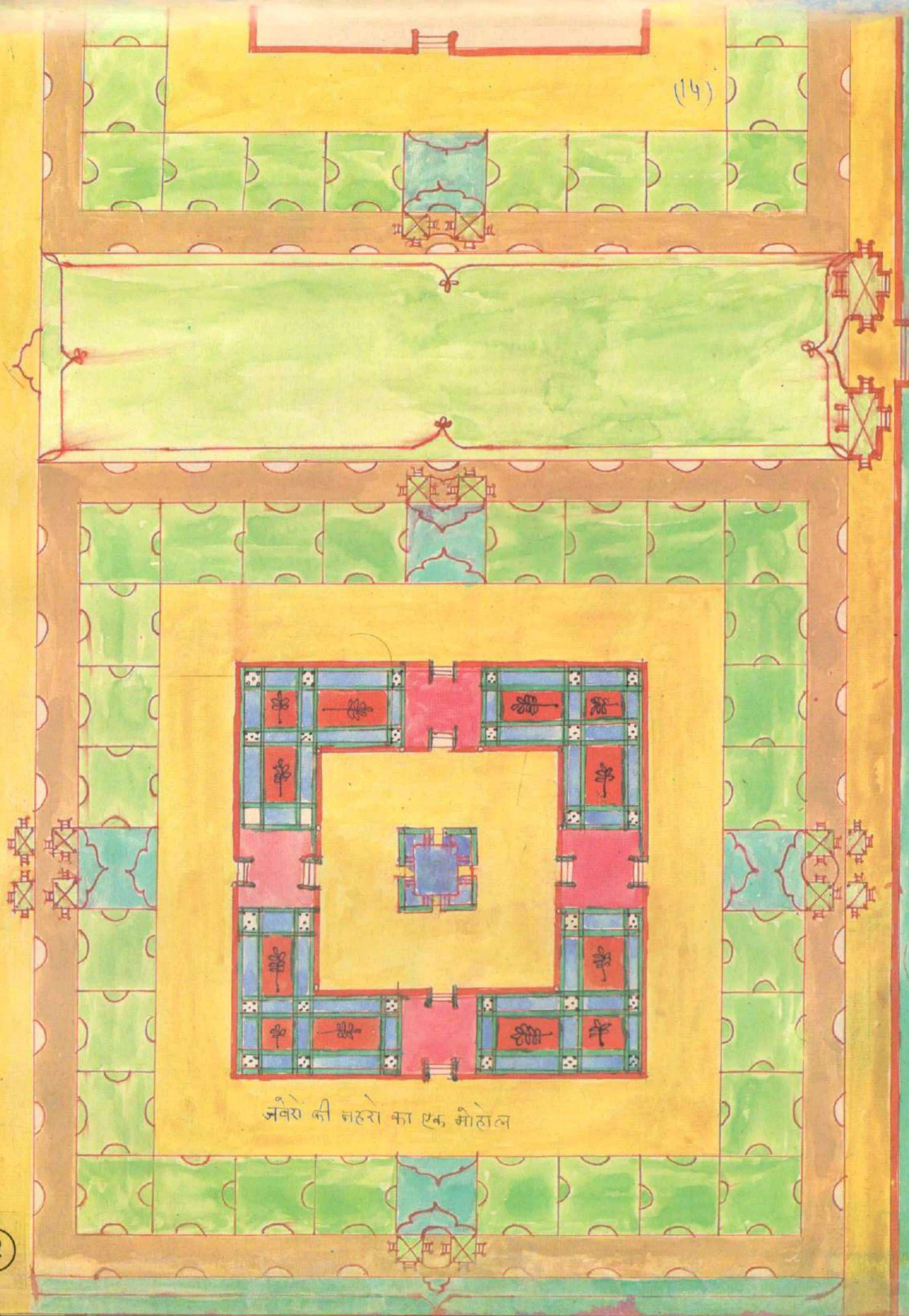


चौवीस हास का खडामौहल

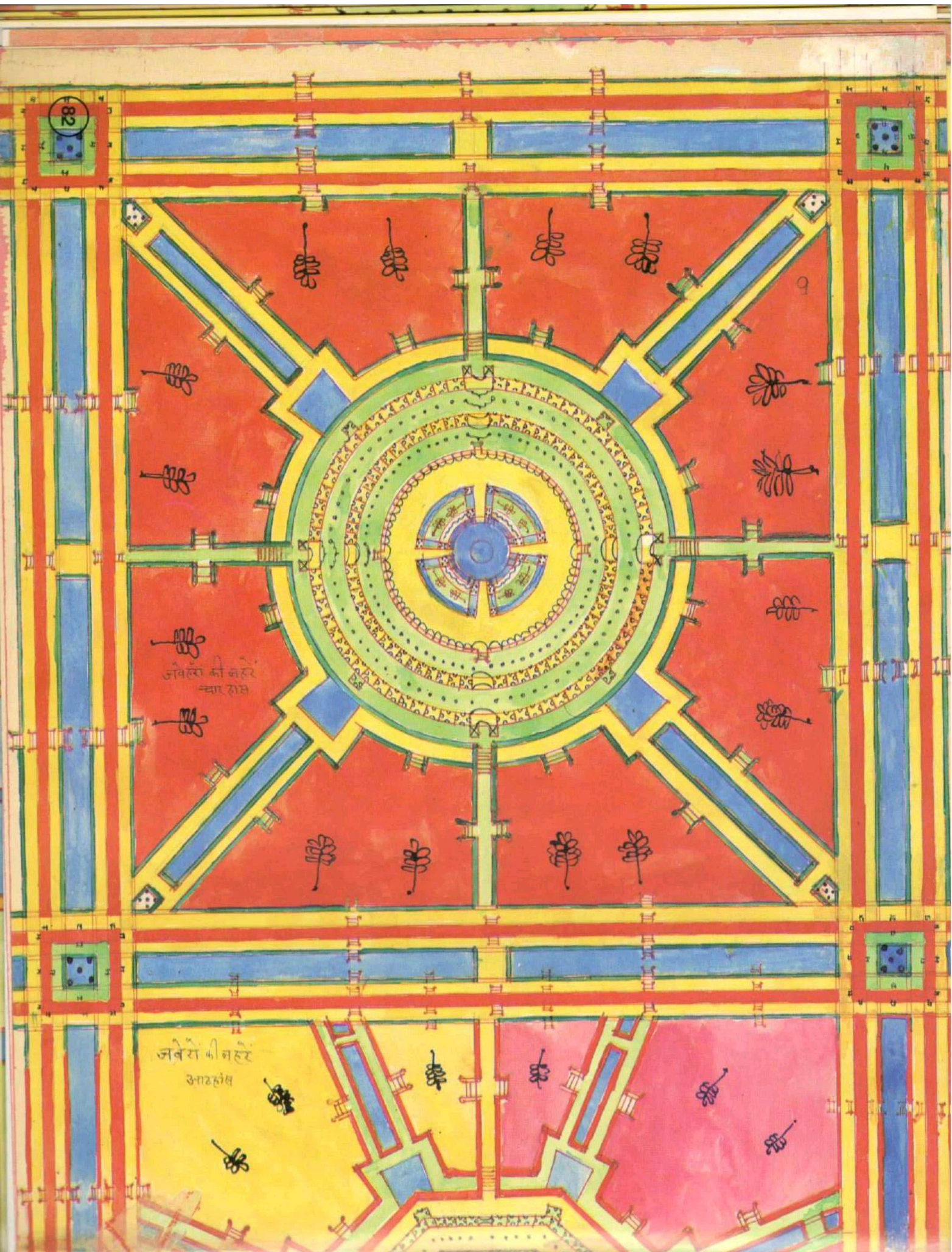


अद्वैत की लहरें सब फिराय

(14)

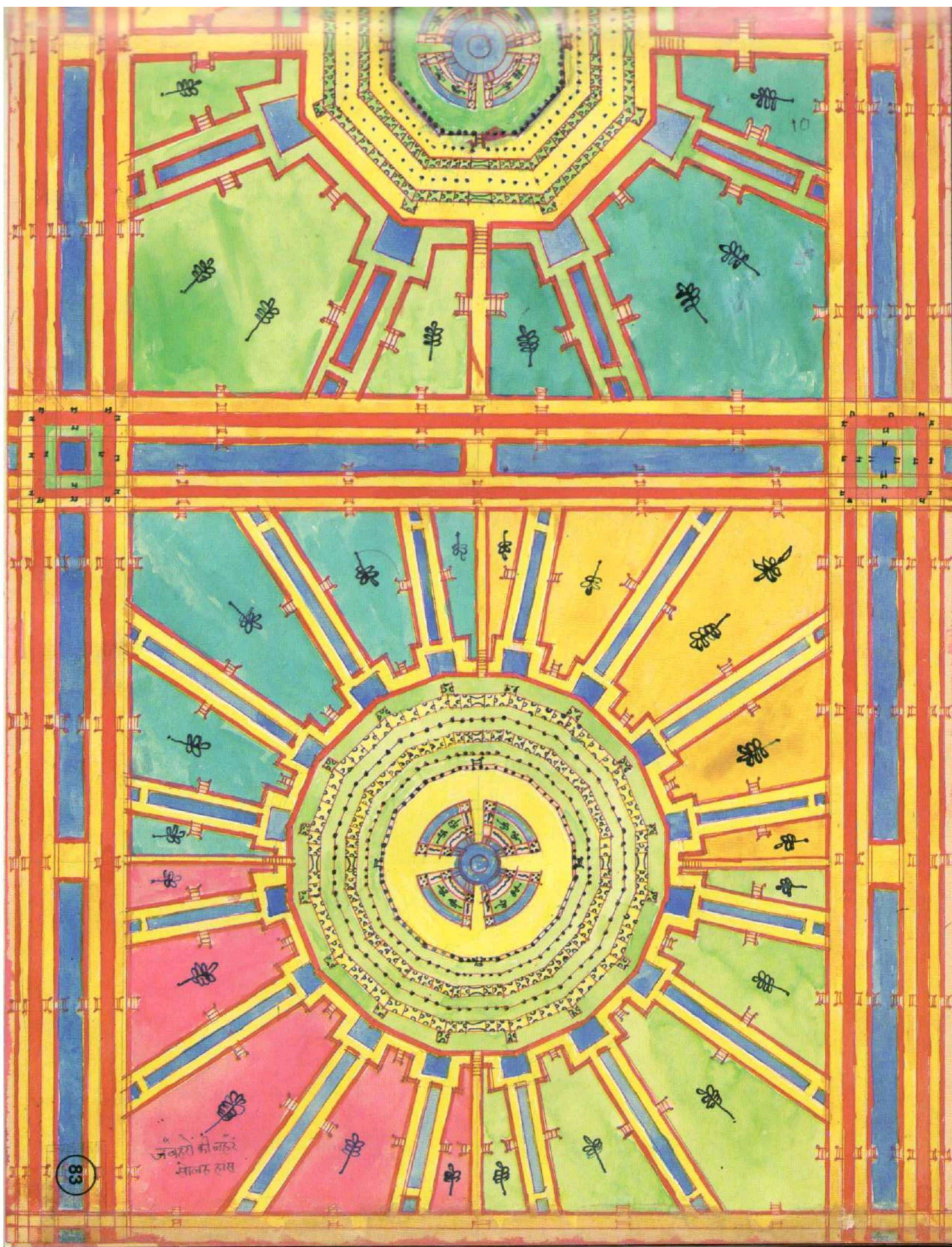


जंवरों की नहरों का एक भीहाल

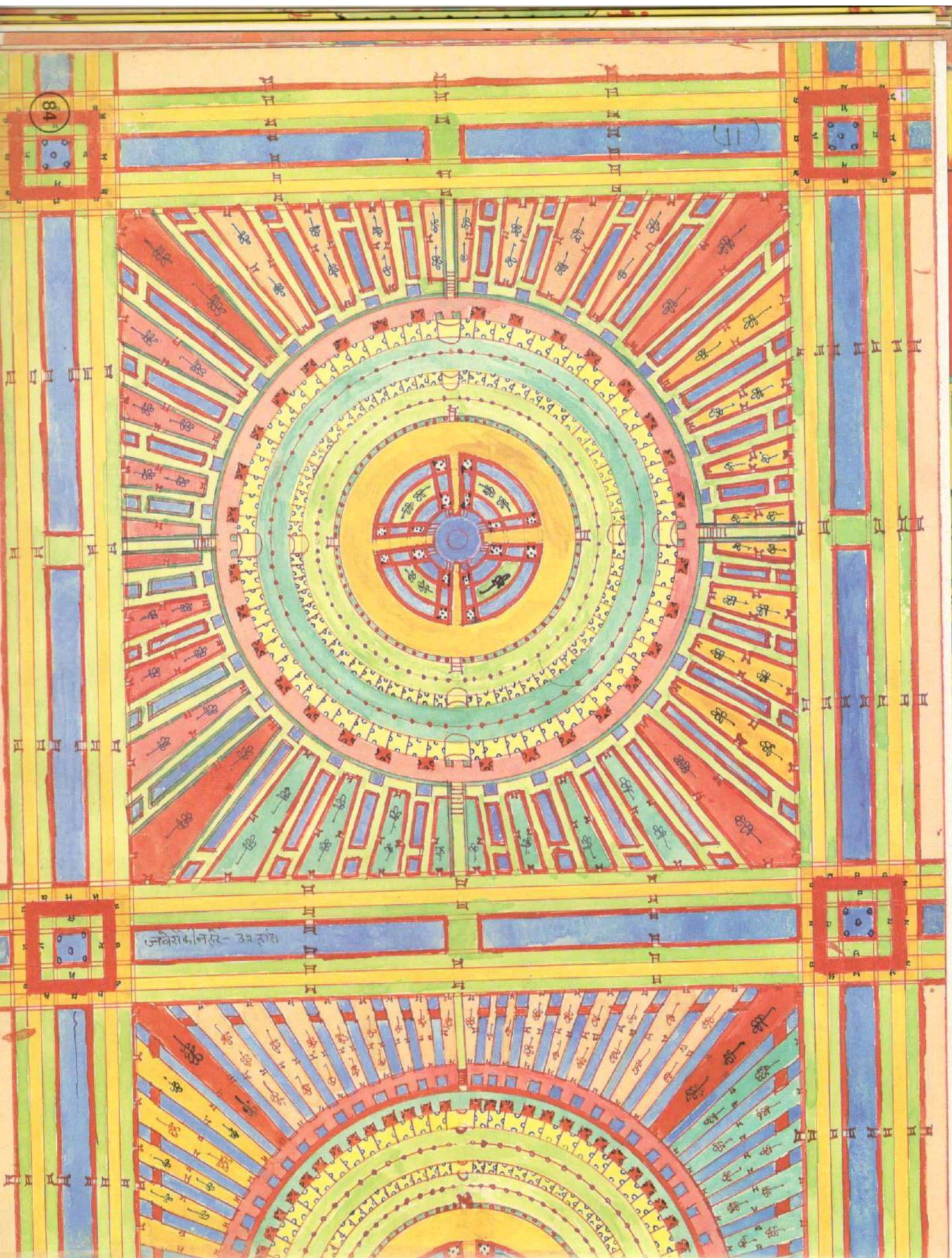


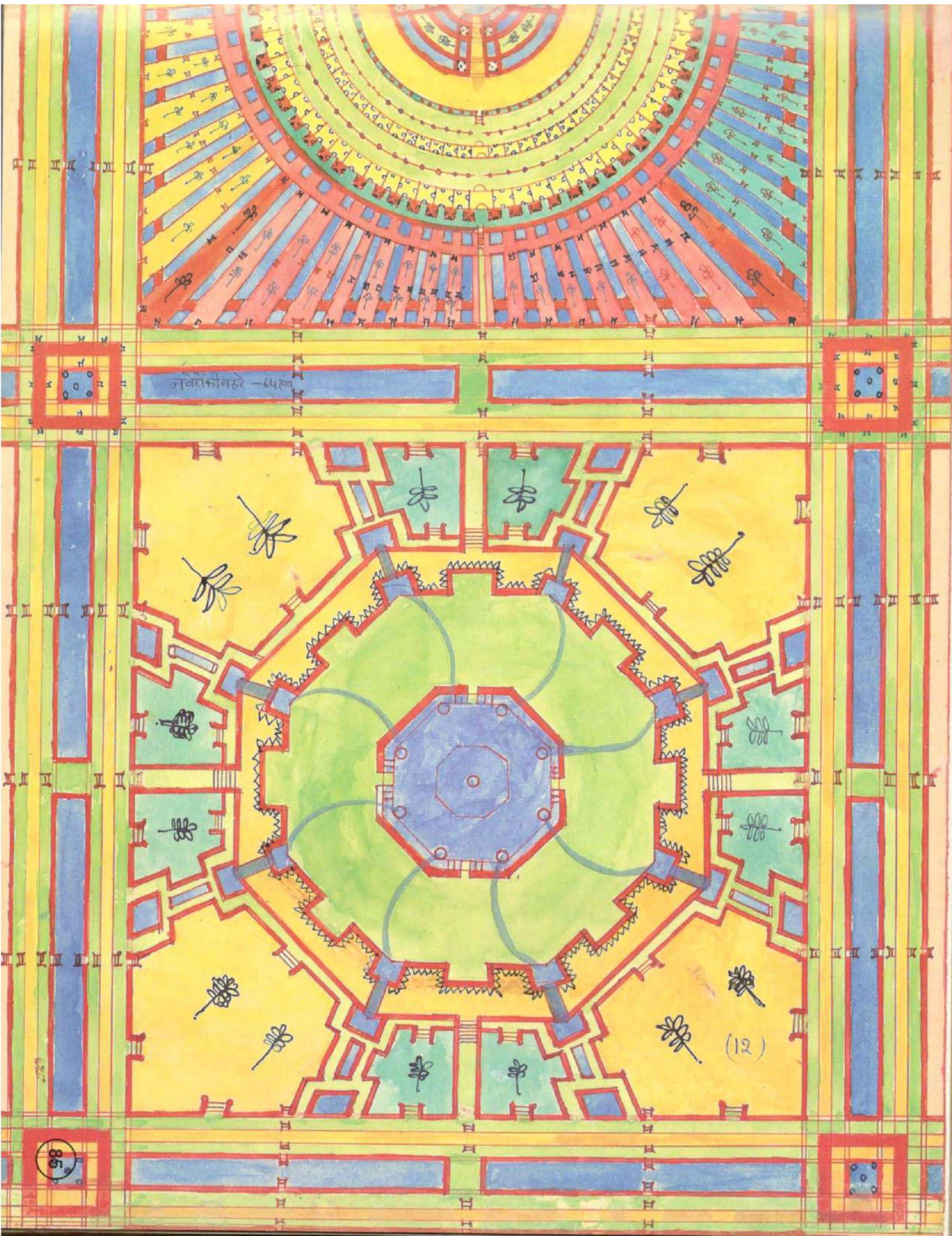
जबेरा की नहर
आठहास

जबेरा की नहर
आठहास

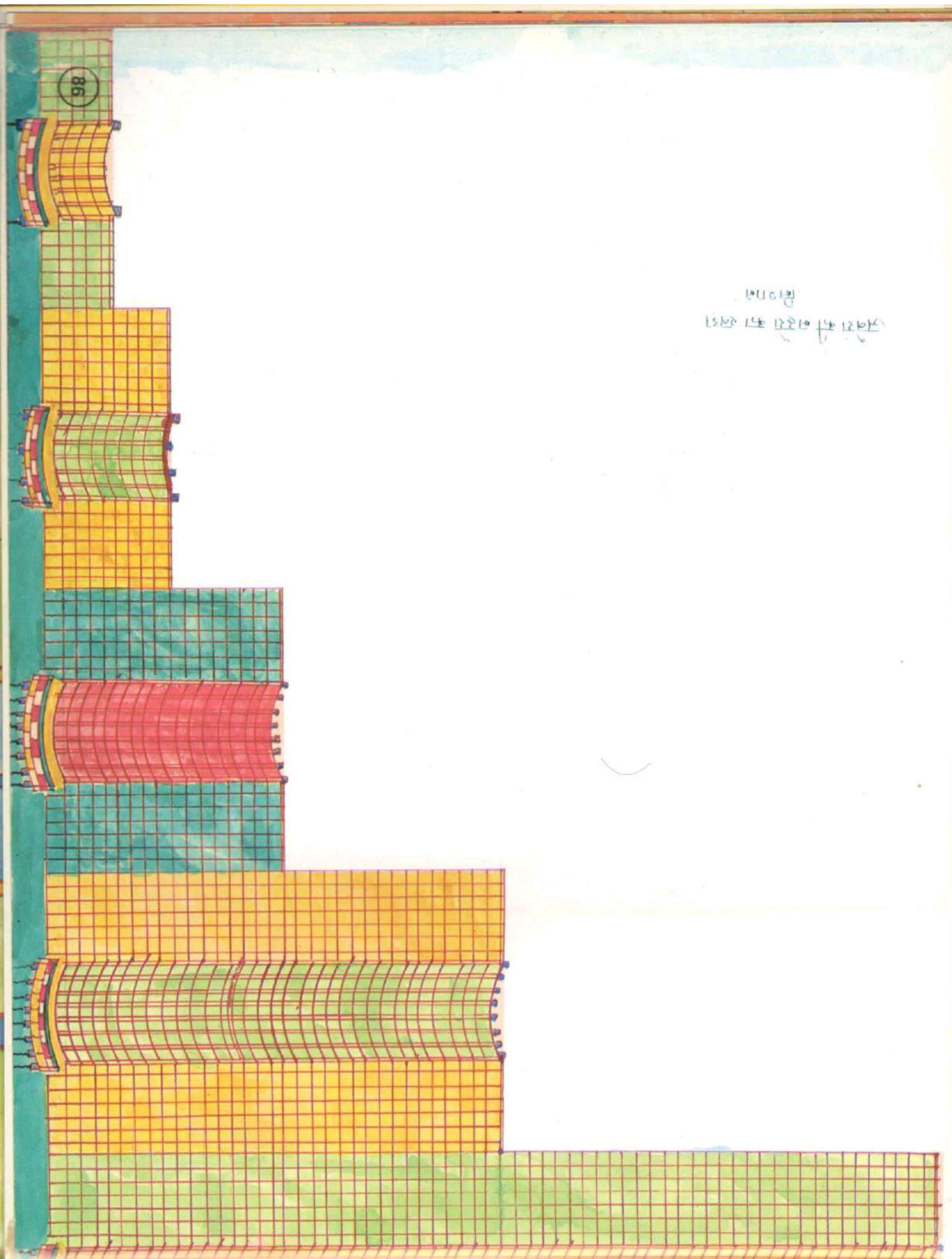


जबहरी की गहर
मालवा हाथ

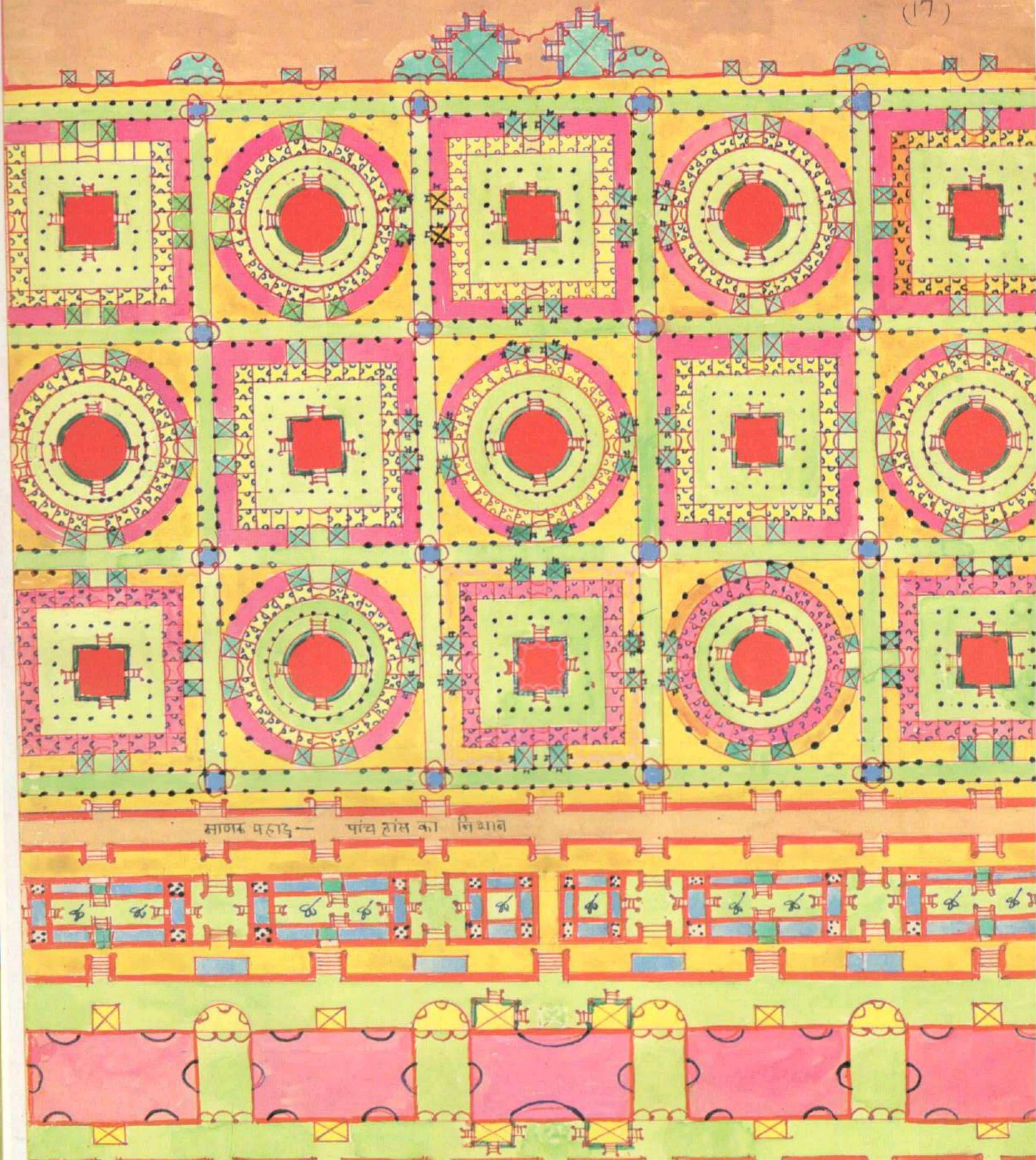


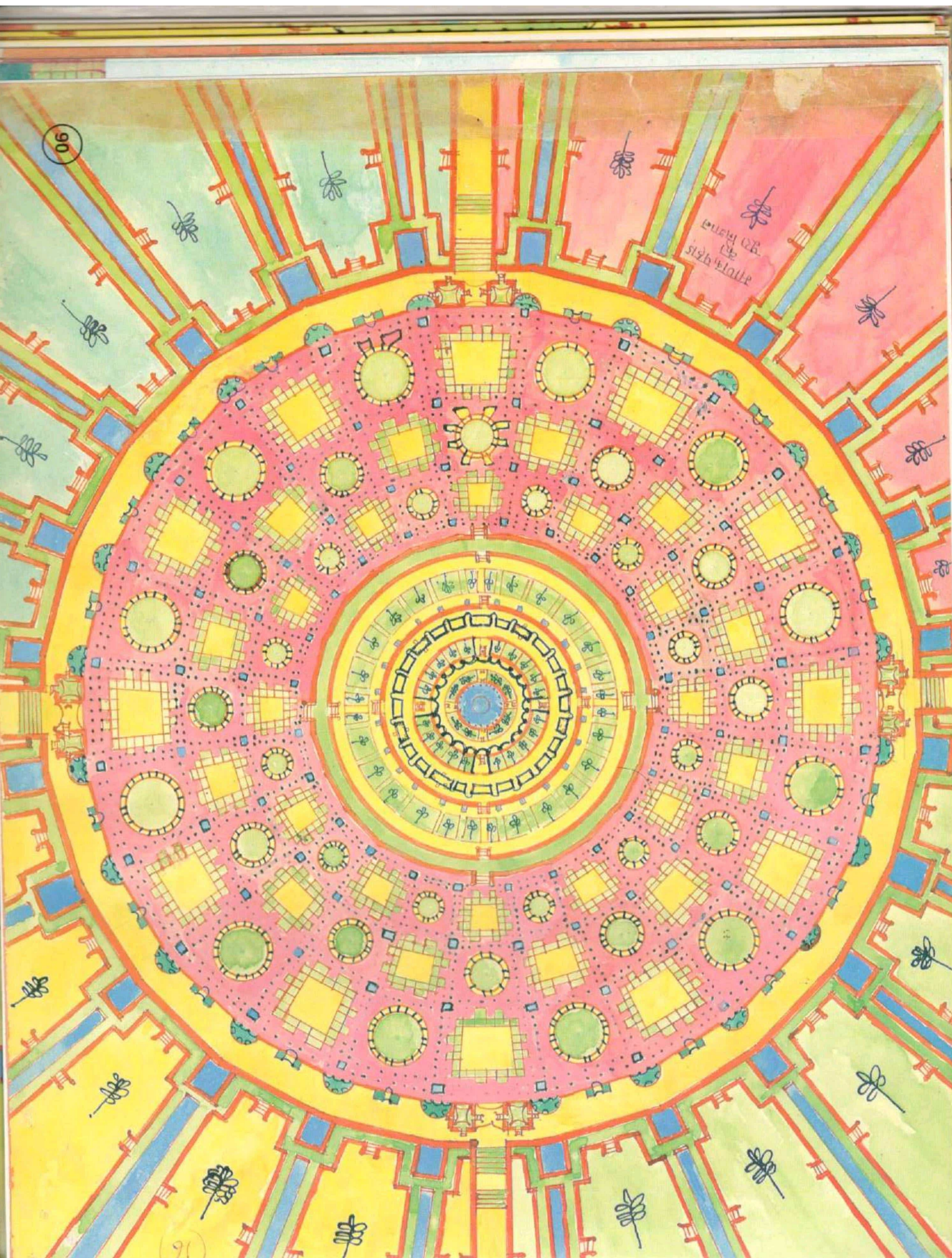


1010101
13100 14 12810 14 12614



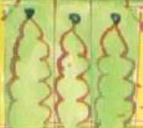
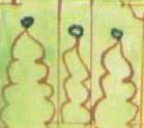
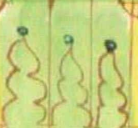
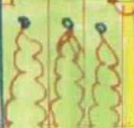
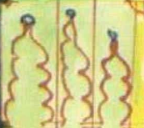
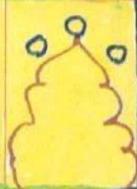
$$\frac{10110101}{10110101} \quad \frac{10110101}{10110101} \quad \frac{10110101}{10110101} \quad \frac{10110101}{10110101} \quad \frac{10110101}{10110101}$$







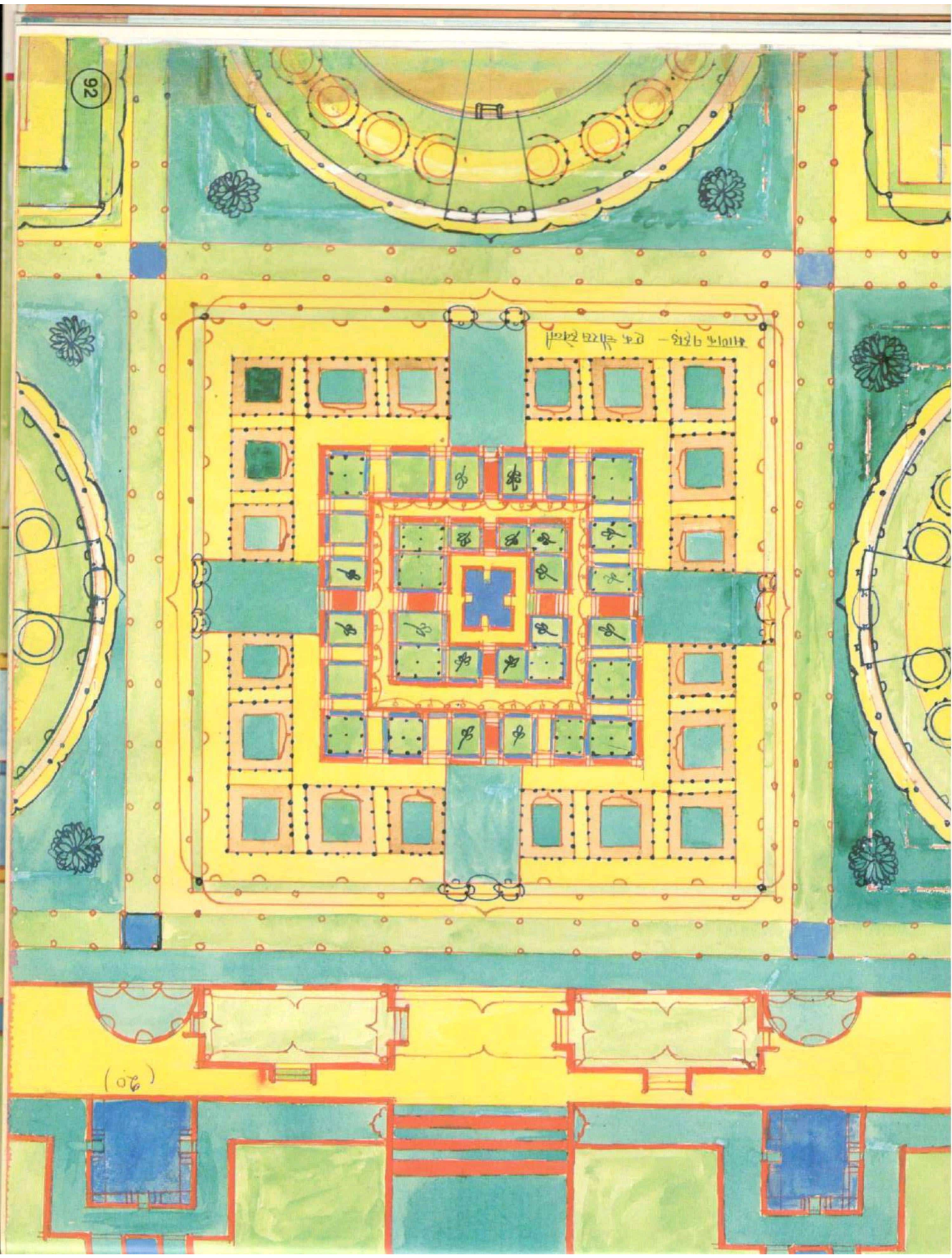
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ
ਪ੍ਰਸਾਦਿ ੧੬੬੭

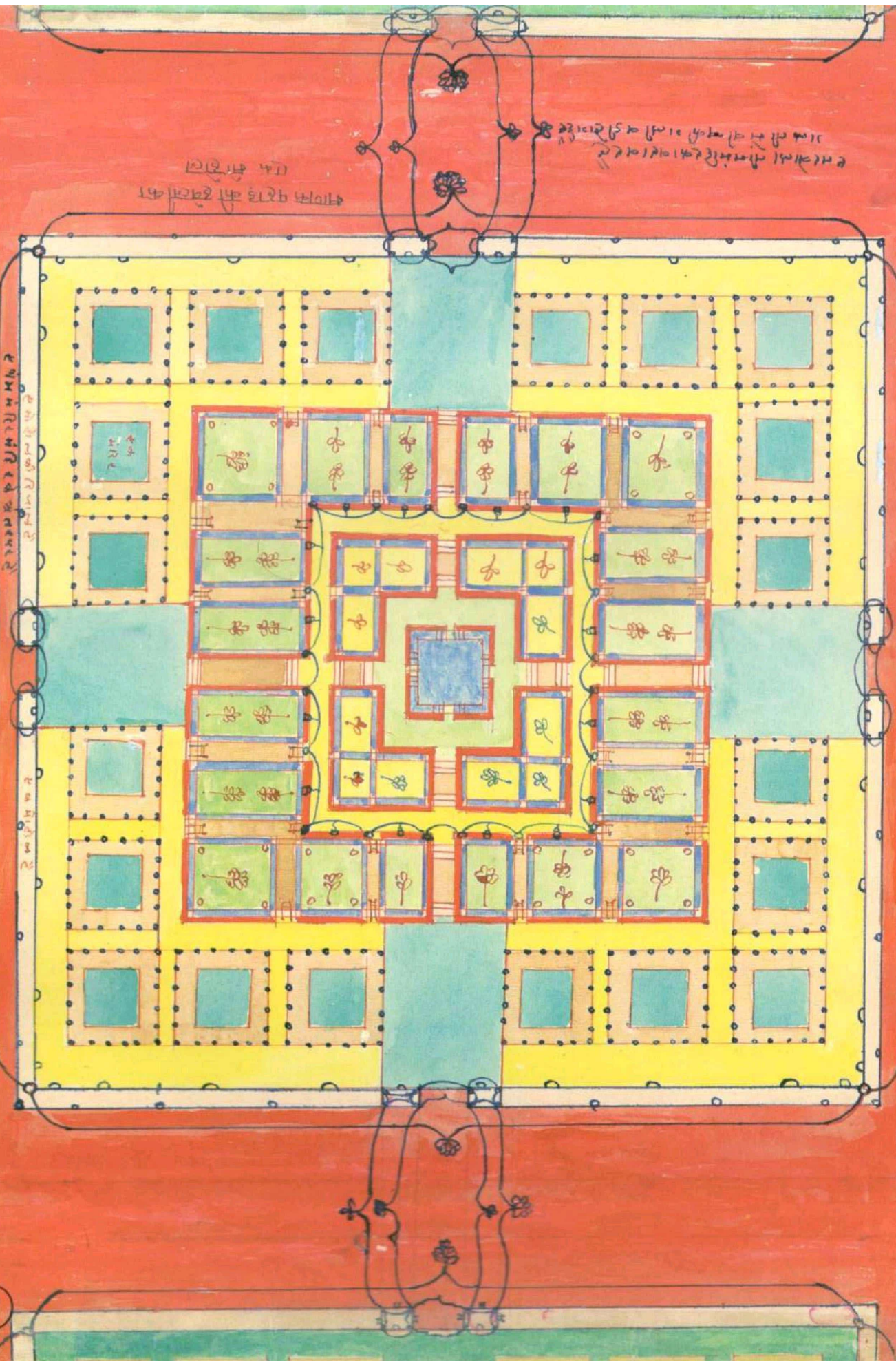


(b)



ಶ್ರೀ ಶಿವಲಿಂಗ - ಶಿವಲಿಂಗ



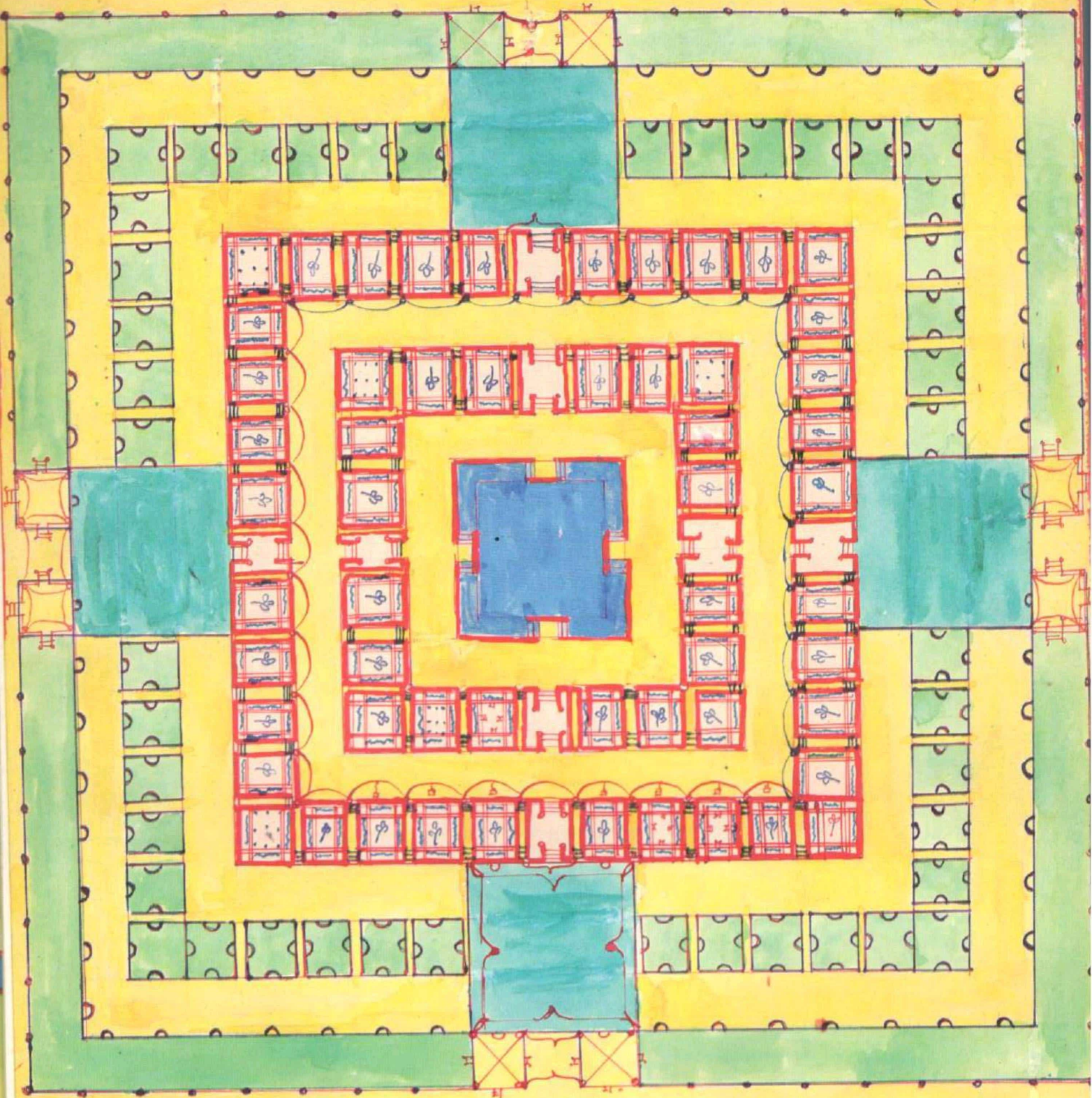


श्री गणेशाय नमः
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

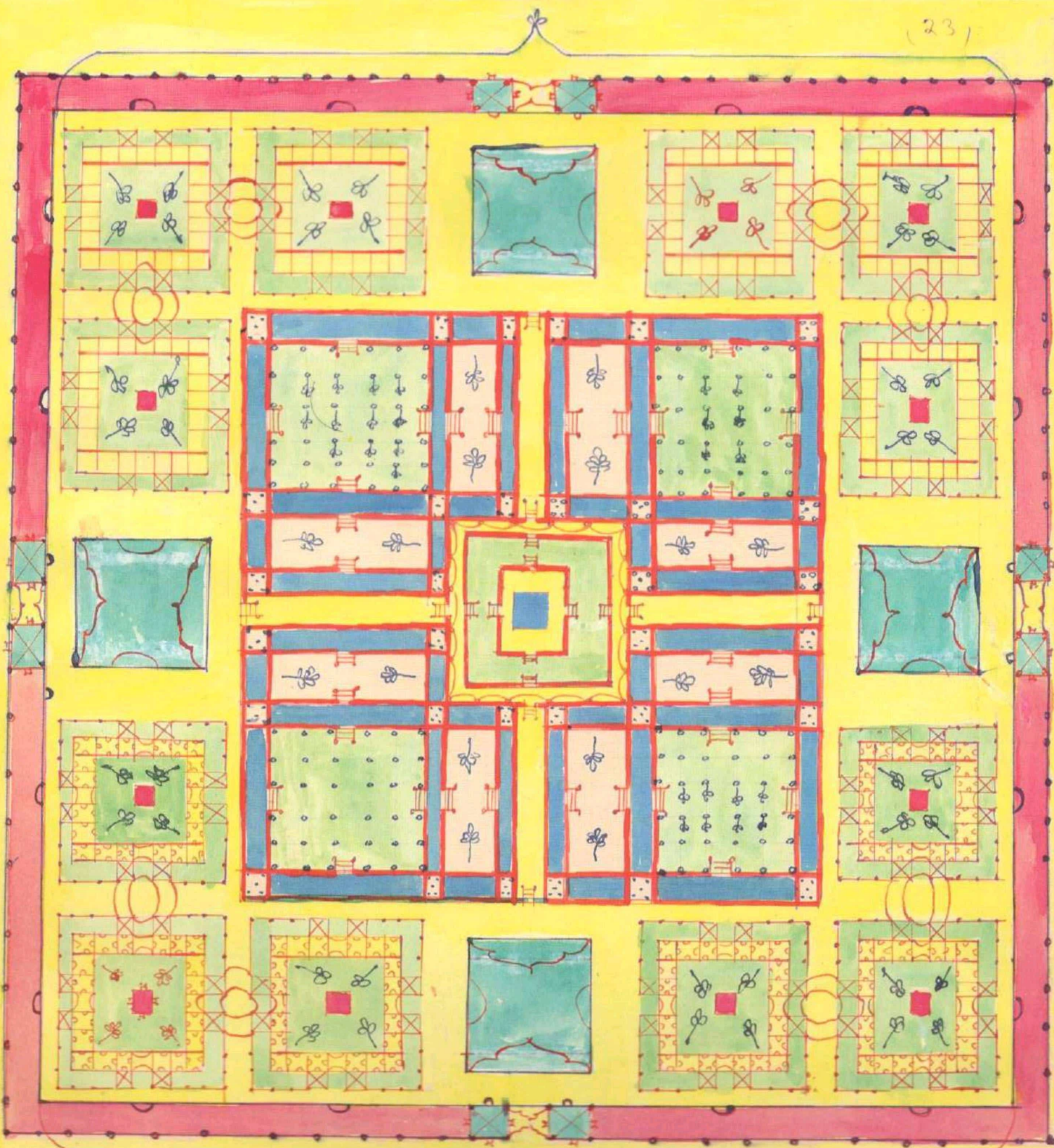
श्री गणेशाय नमः
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गणेशाय नमः
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

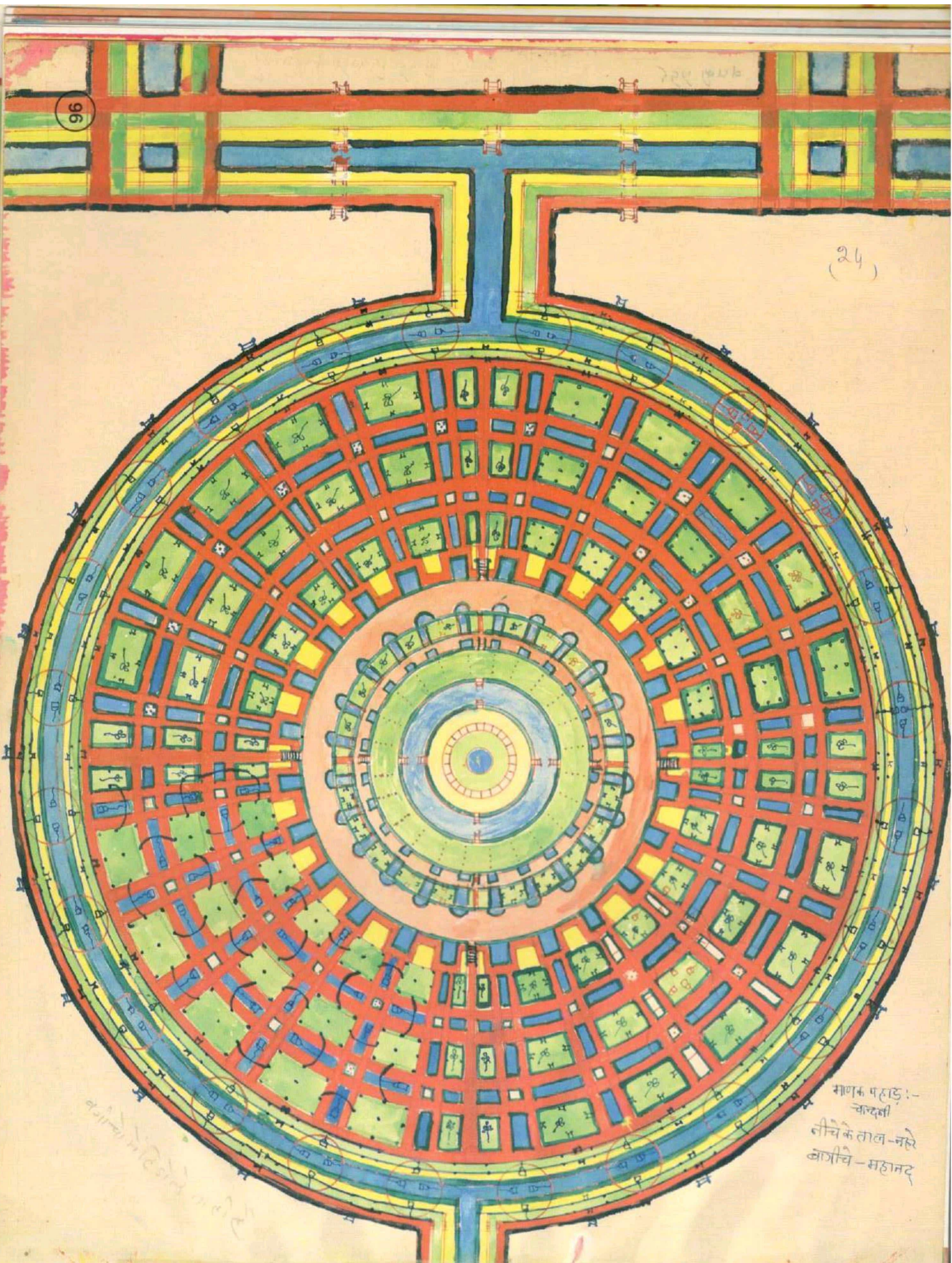
श्री गणेशाय नमः
॥ श्री गणेशाय नमः ॥



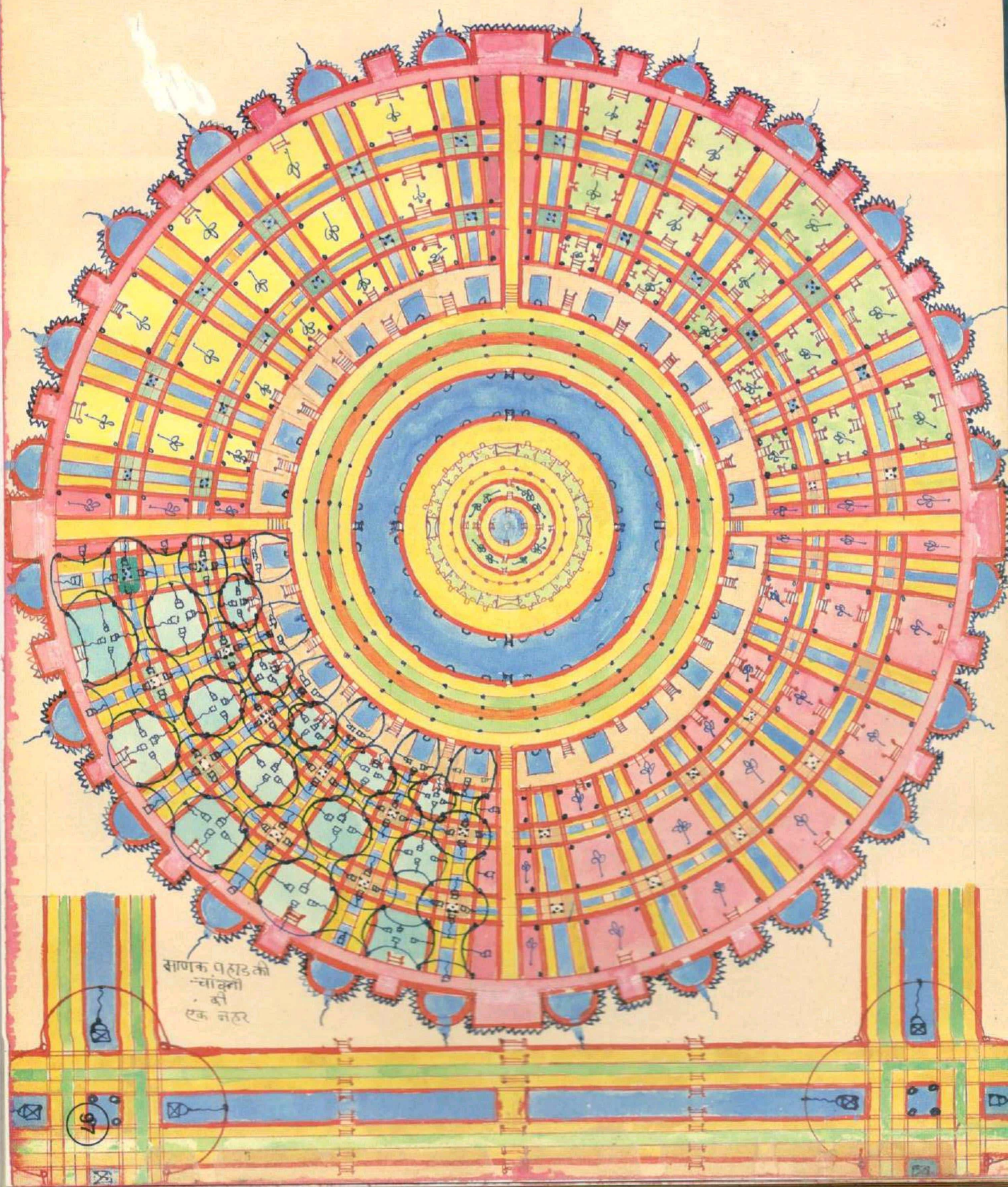
माणक पहाड़ के एक सीहोल में एक मादिर

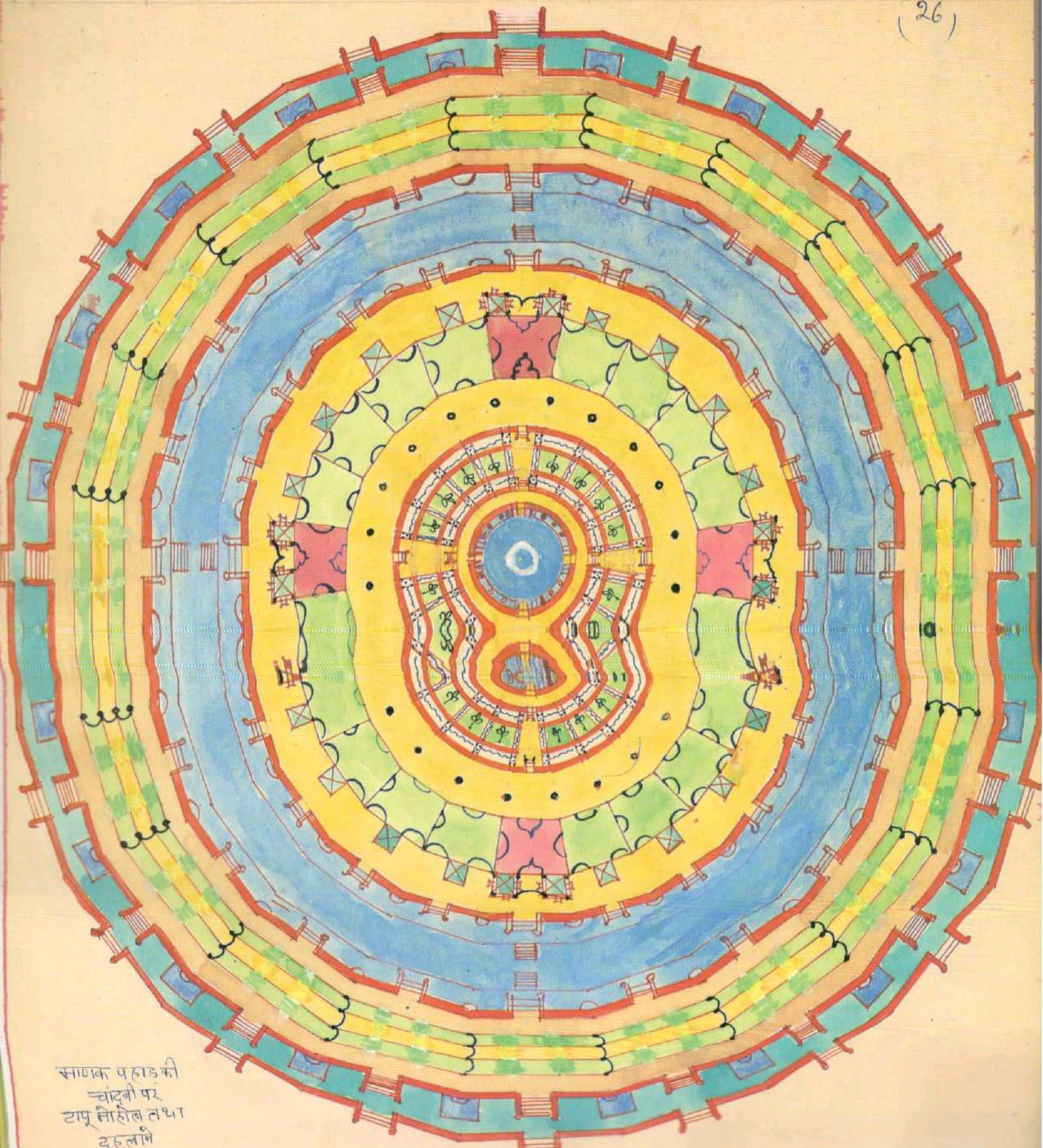


माणक पहाड़ :- एक खेती में एक मोहल



माणक पहाड :-
 कादली
 नीचे के ताल - नहर
 बागीचे - महानद





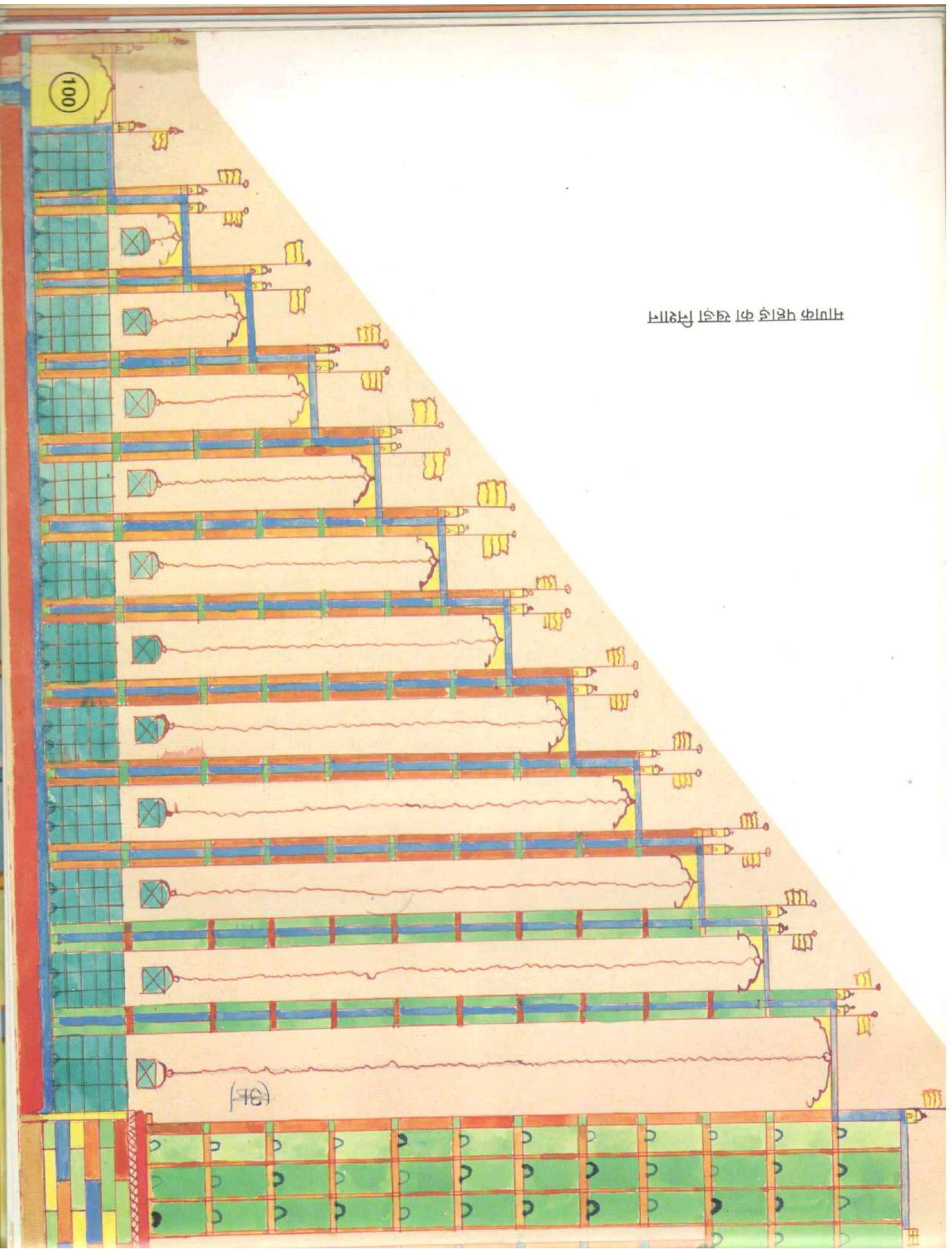
साणक पहाड की
चांदनी पर
टापू मोहल तथा
दहलाने

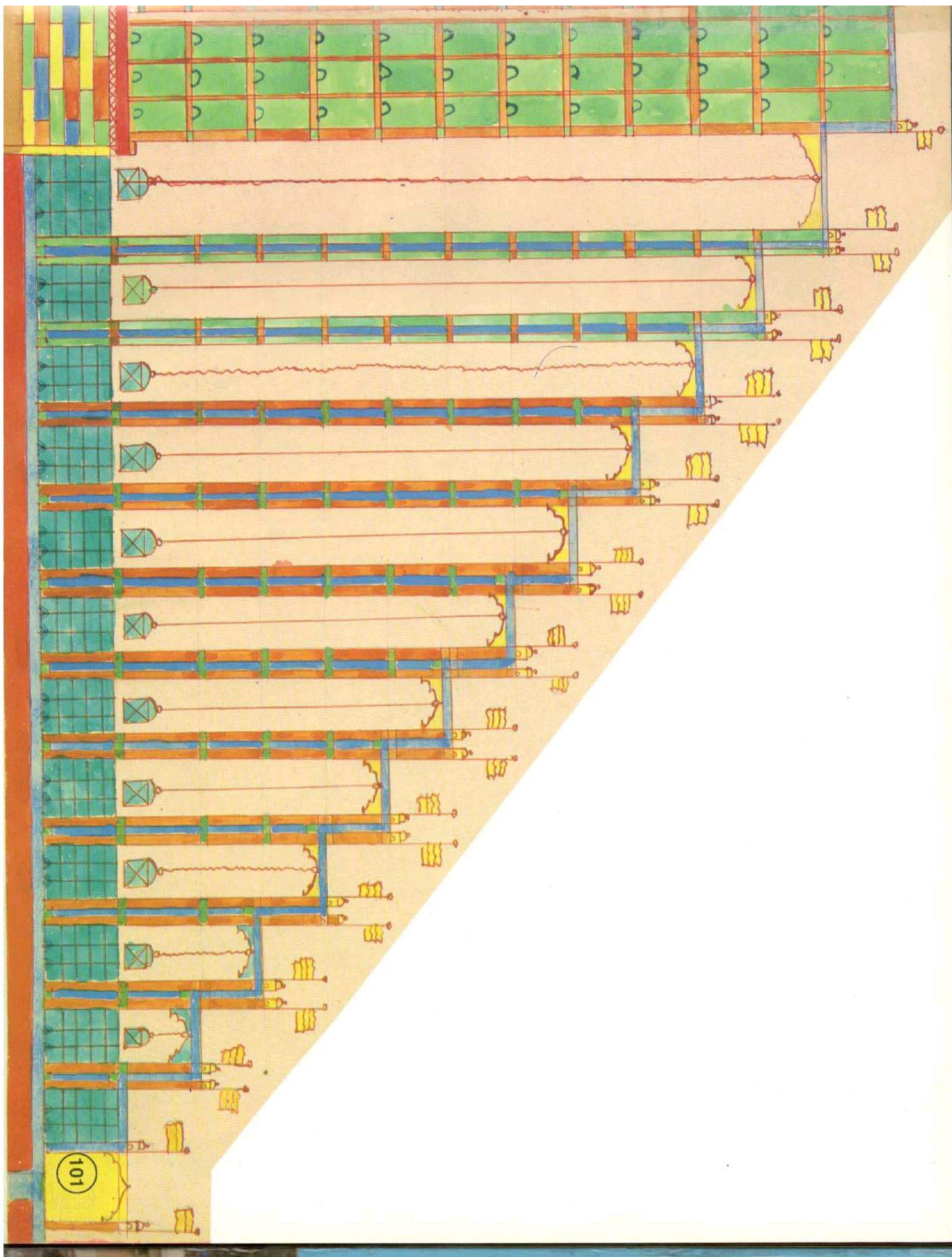


मामक पहाड़ का खंड निशान

(98)

100

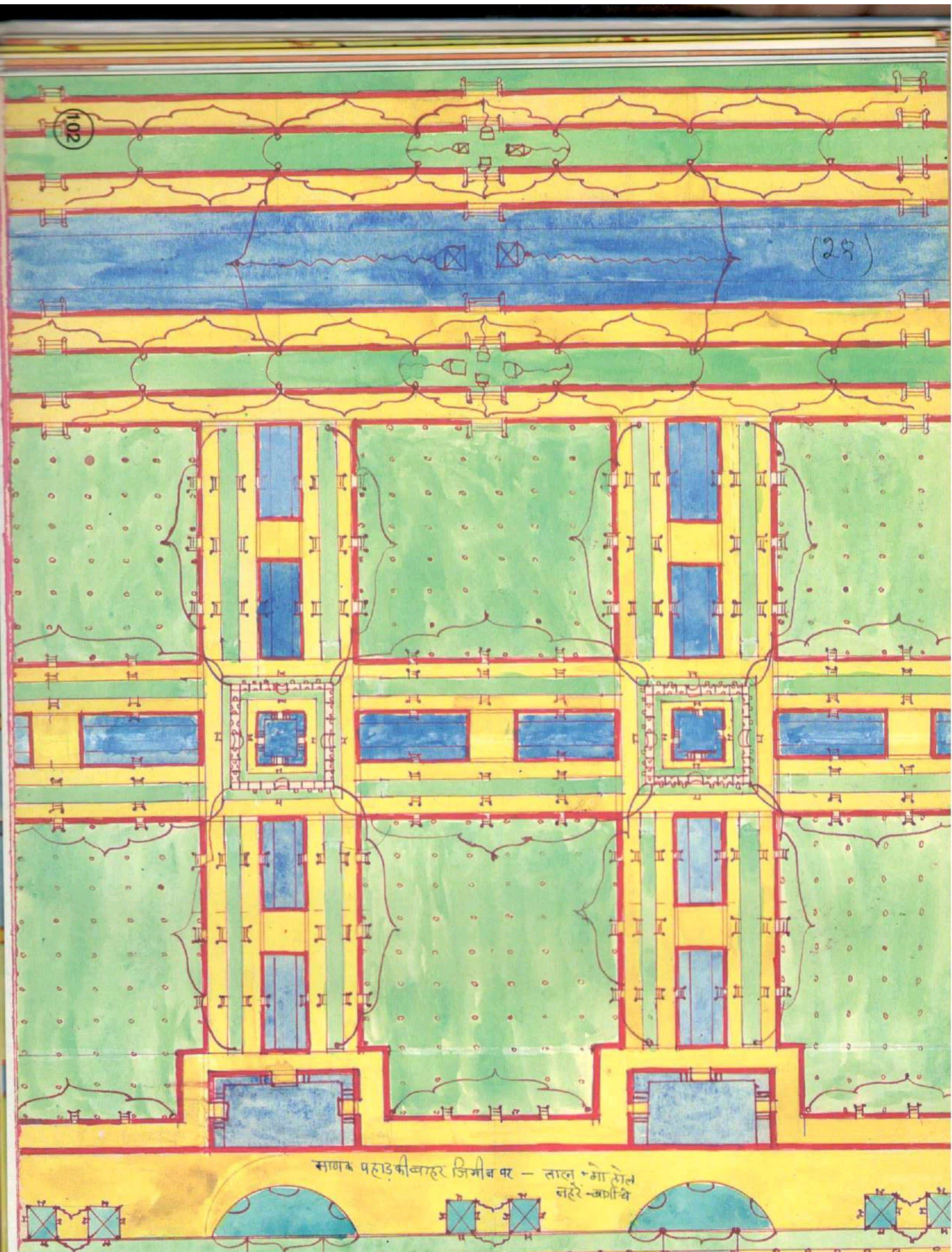


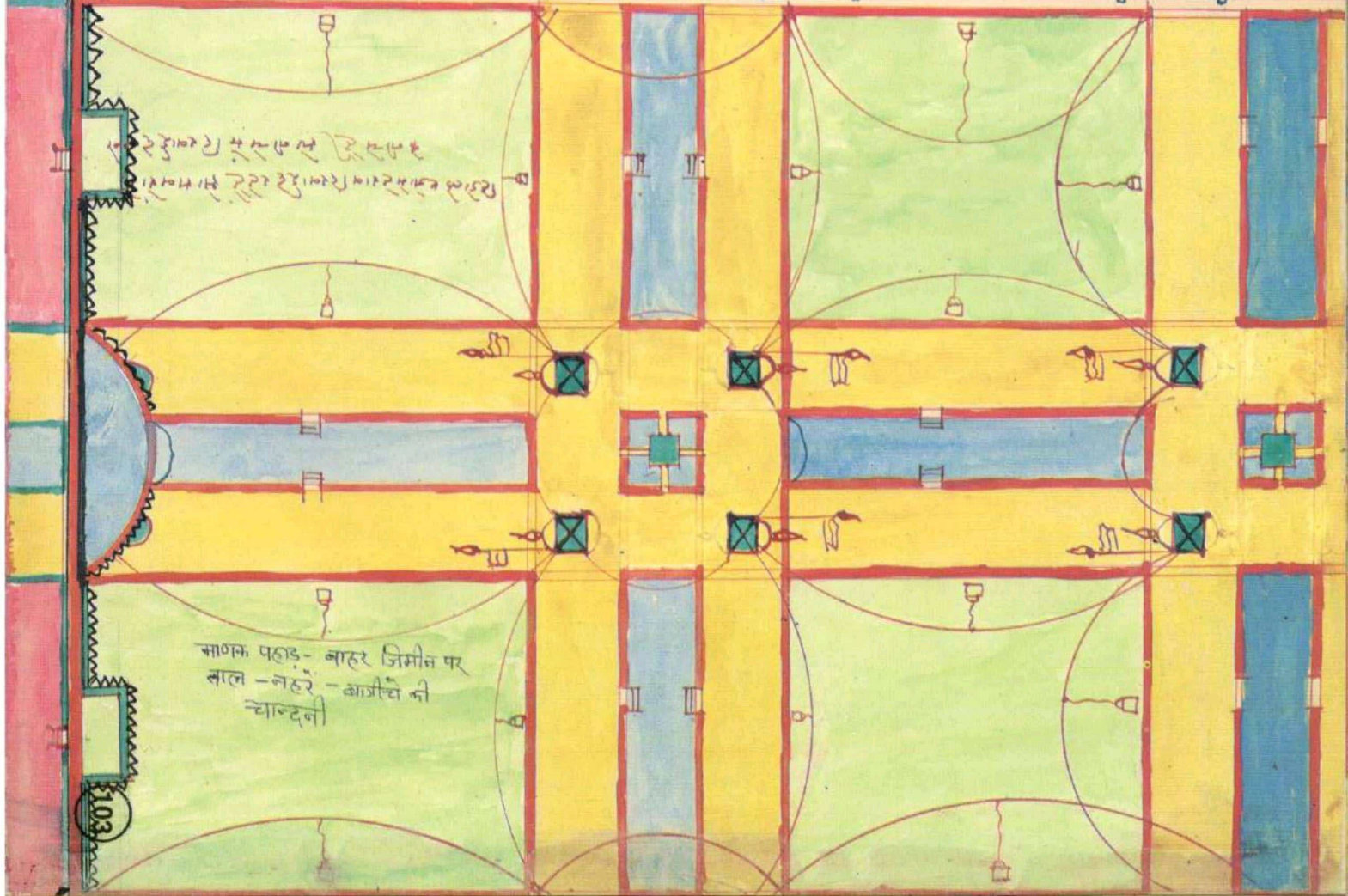
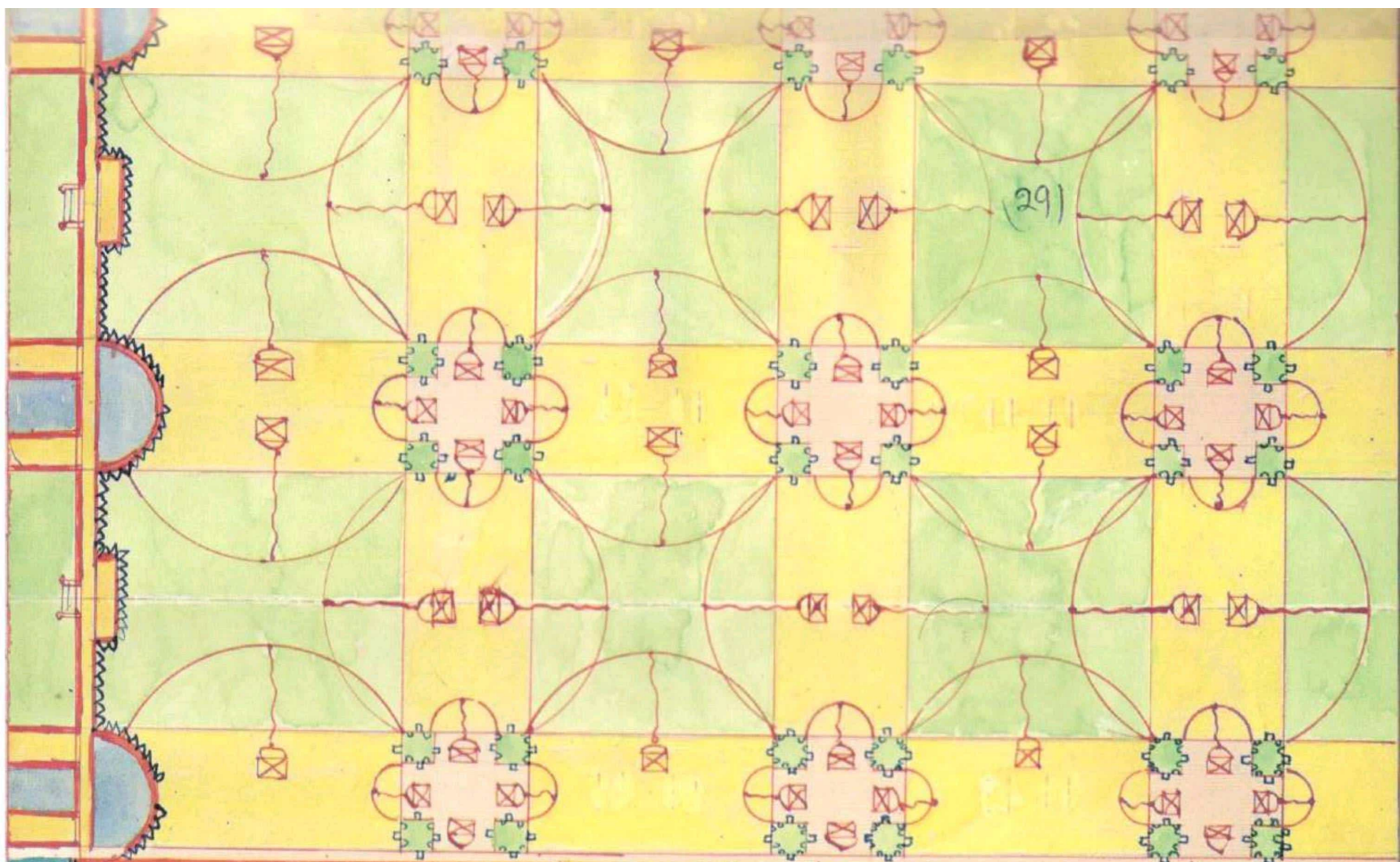


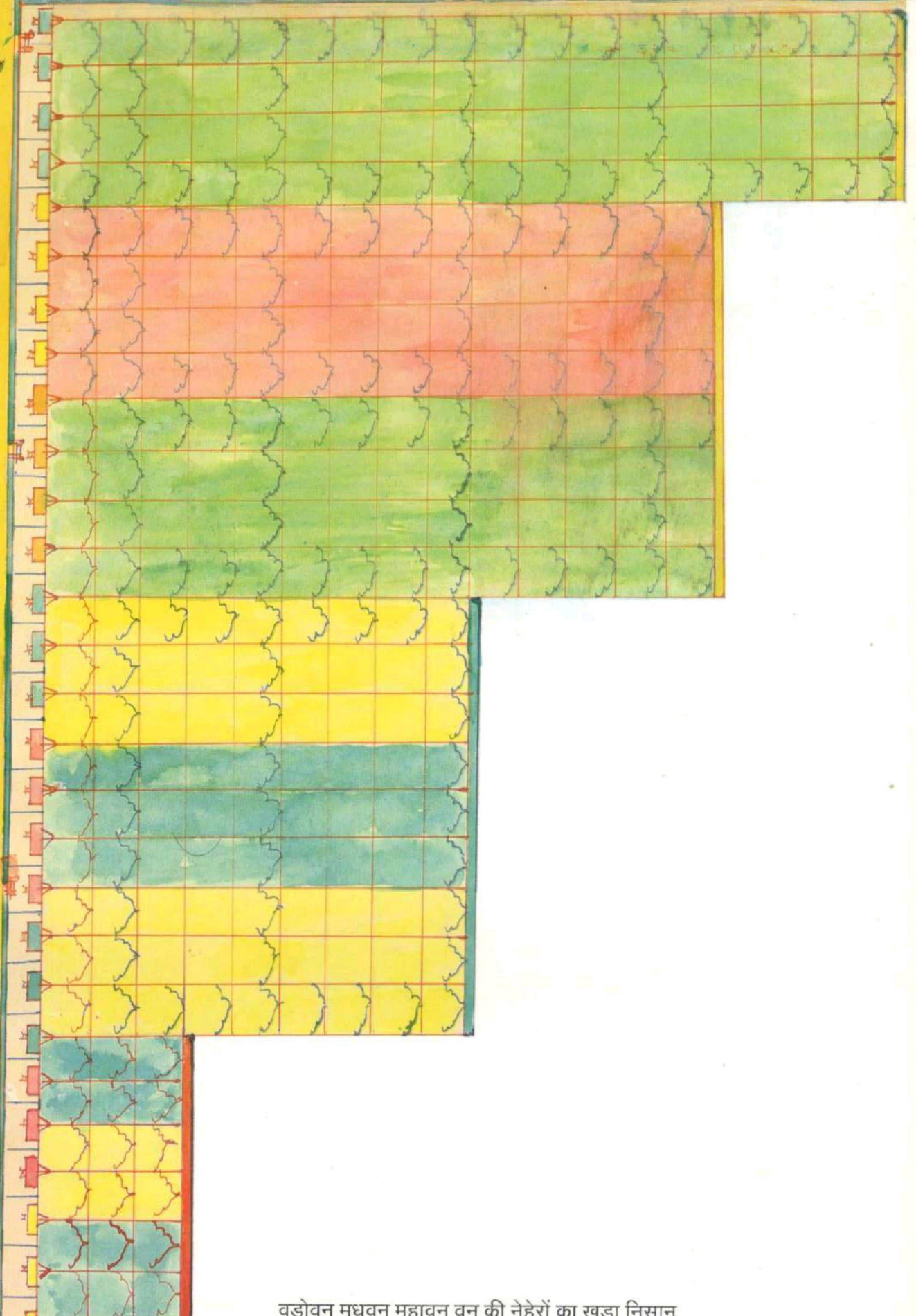
201

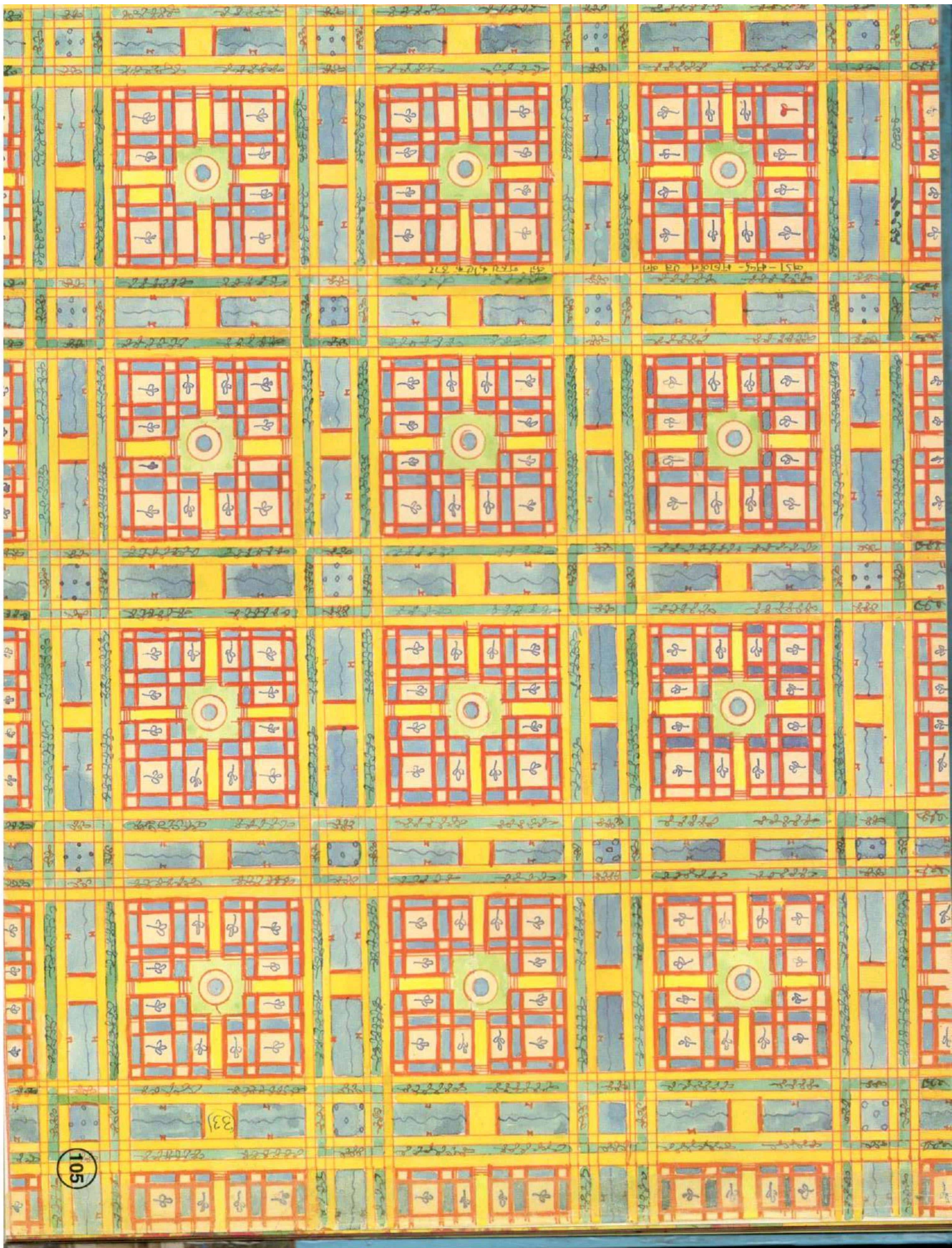
(28)

माणिक्य पहाड़ की बाहर जमीन पर - ताल - मोहल
सहर - जमीन





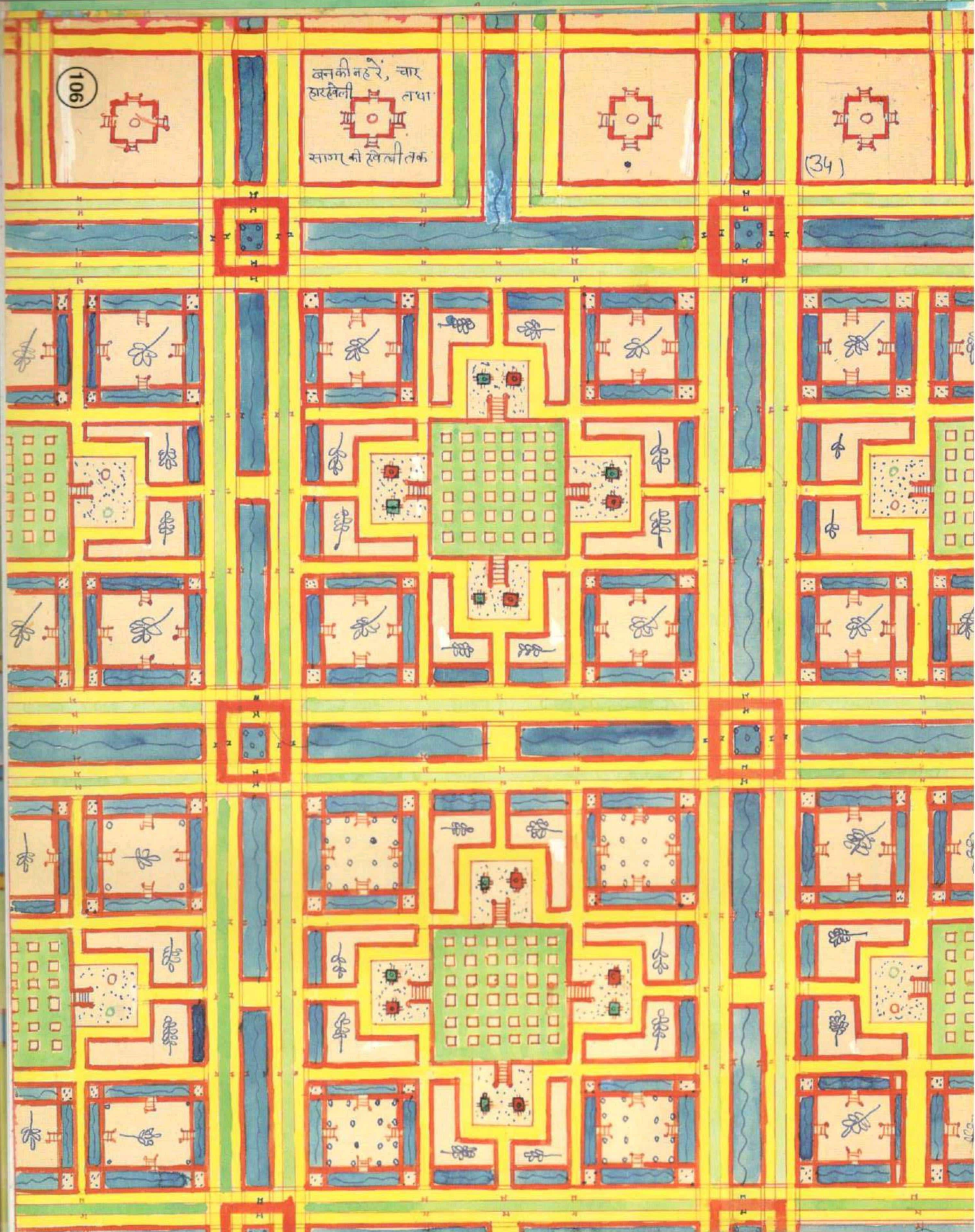


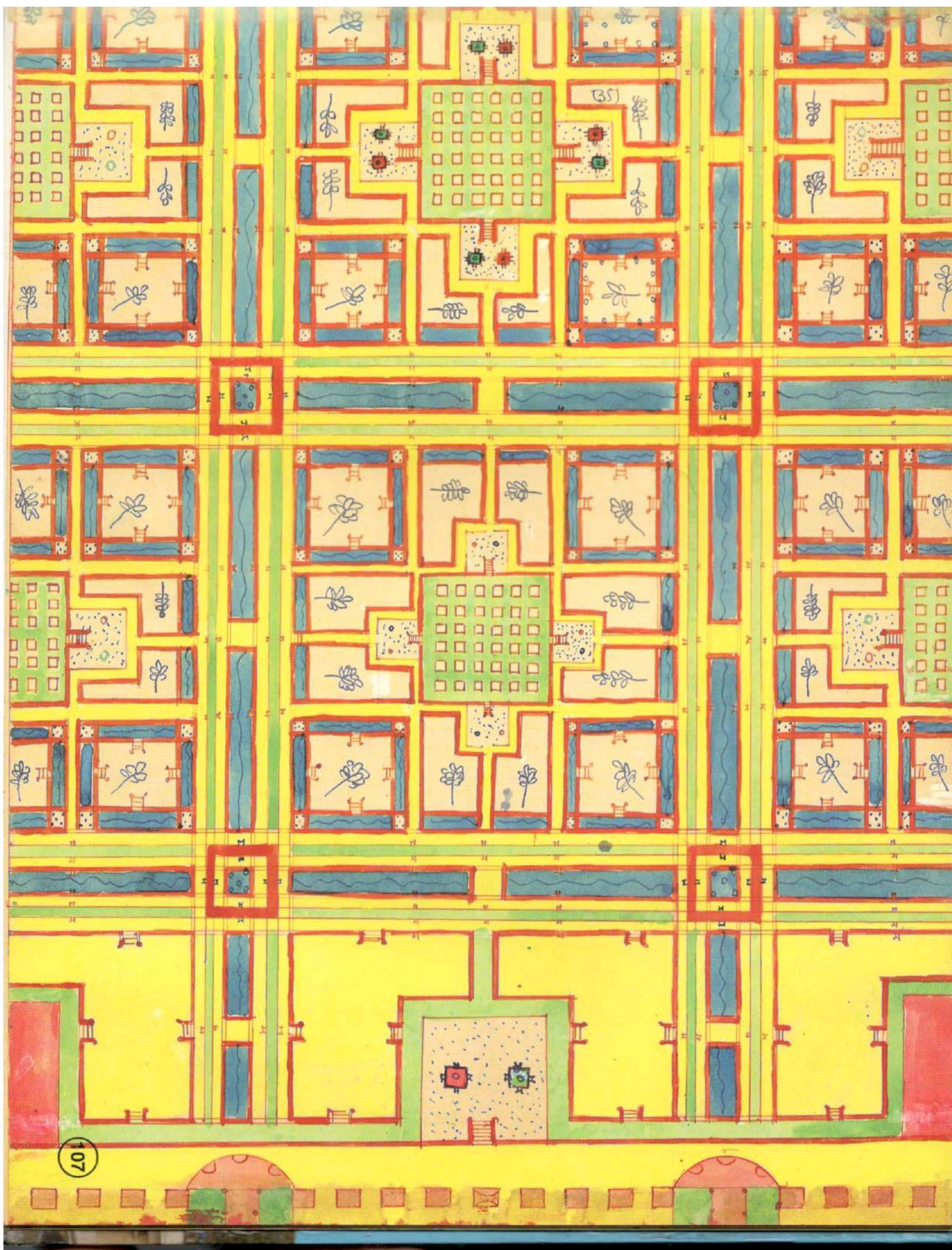


106

वनकी नहरें, चार
हरखेली तथा
सागर की खेती तक

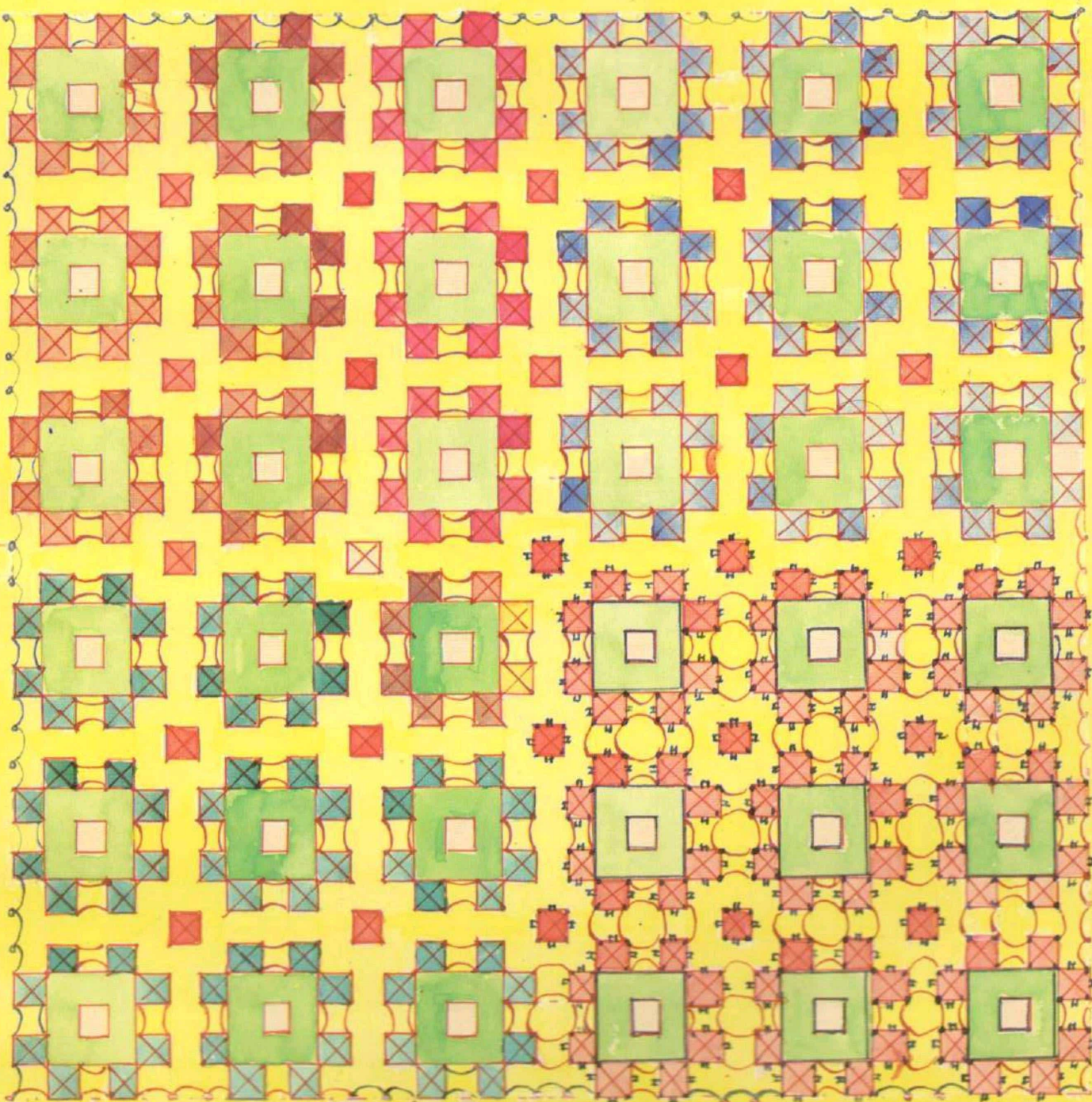
(34)





(36)

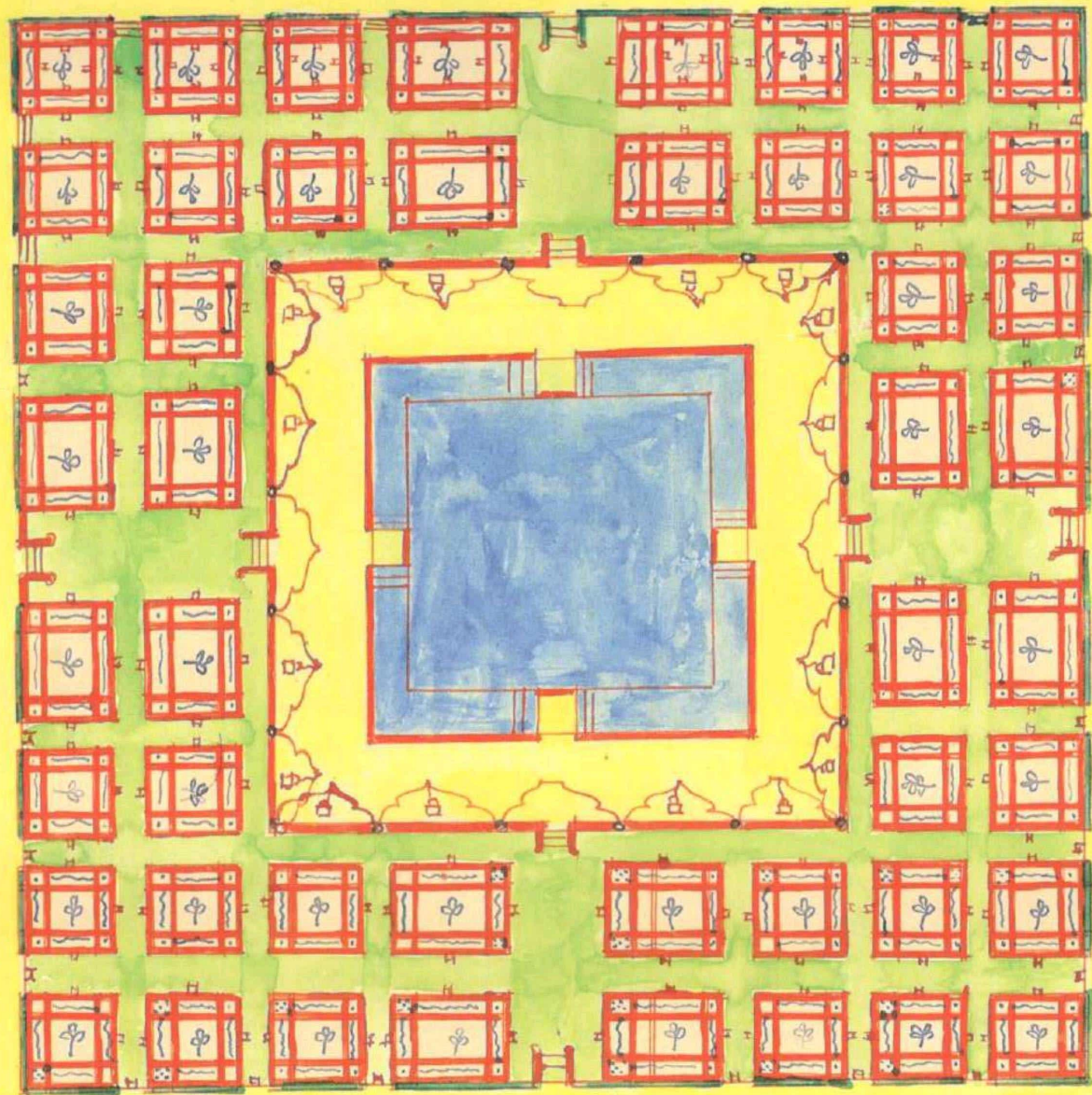
चार हवेली के
एक चबूतर पर अनेक
हवेलियों में से एक
हवेली



चार हाइवेली के एक हाइवेली के मीरग

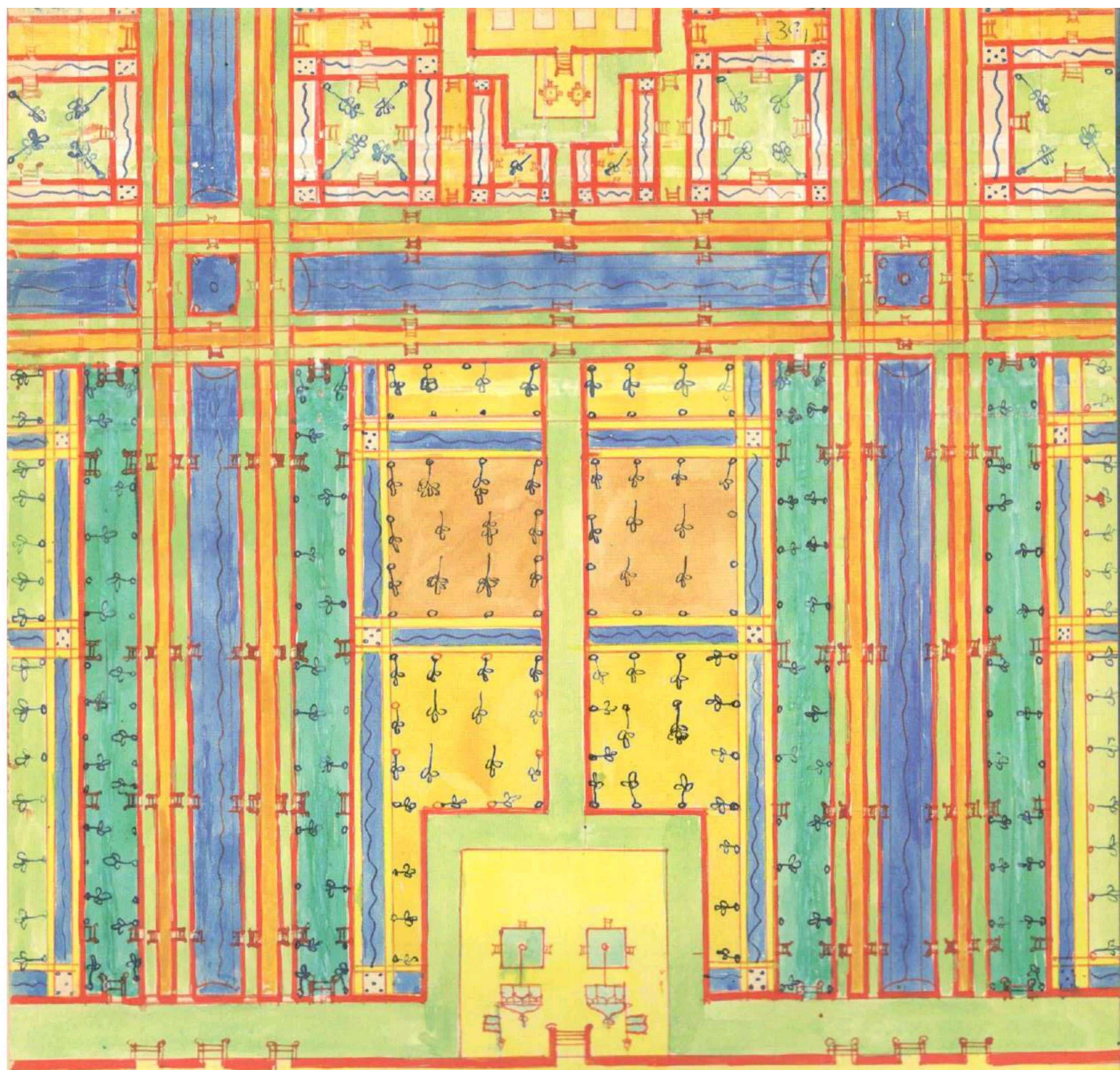
110

38

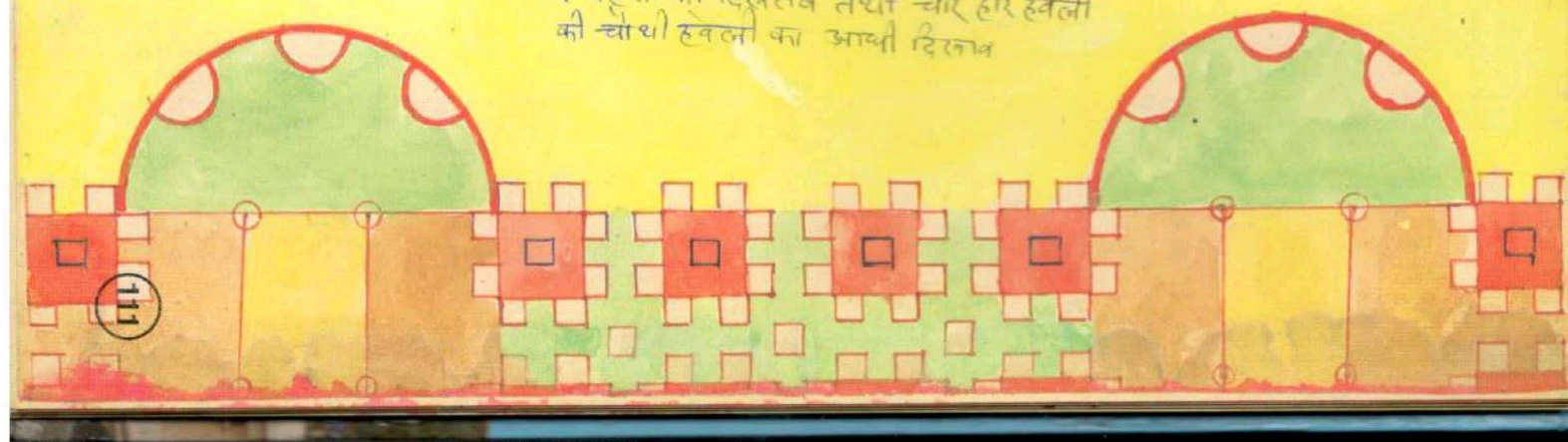


चारहा हवेली के एक
हवेली के एक मन्दिर
का निशान

चारहा हवेली का एक मन्दिर



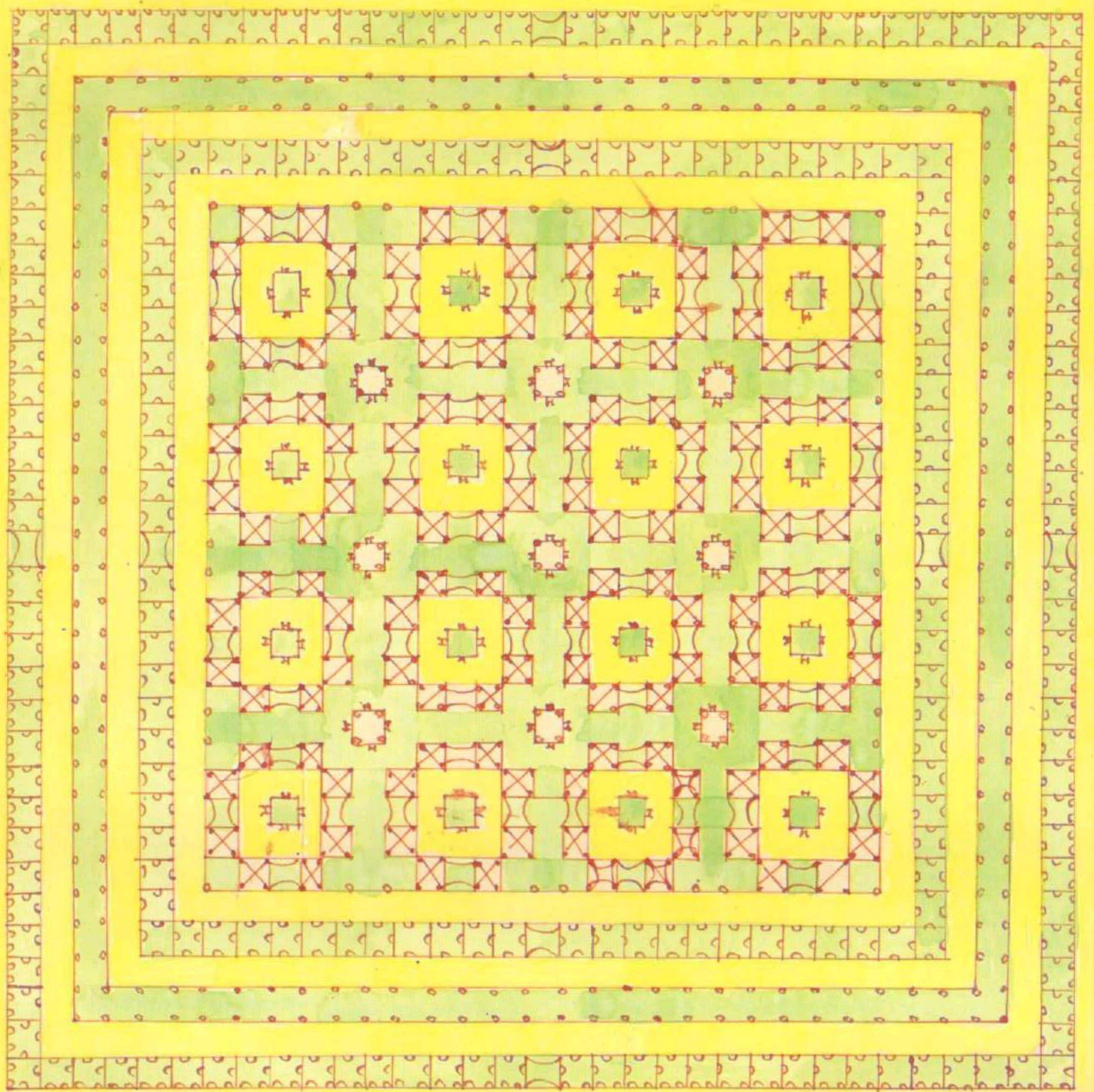
कही रांग के महा विलद हवेली के सामने
 तथा दायें बायें गोला गुर्ज तथा सामने
 दो नहरों का दिखराव तथा चार हार हवेली
 की चौथी हवेली का आधी दिखराव



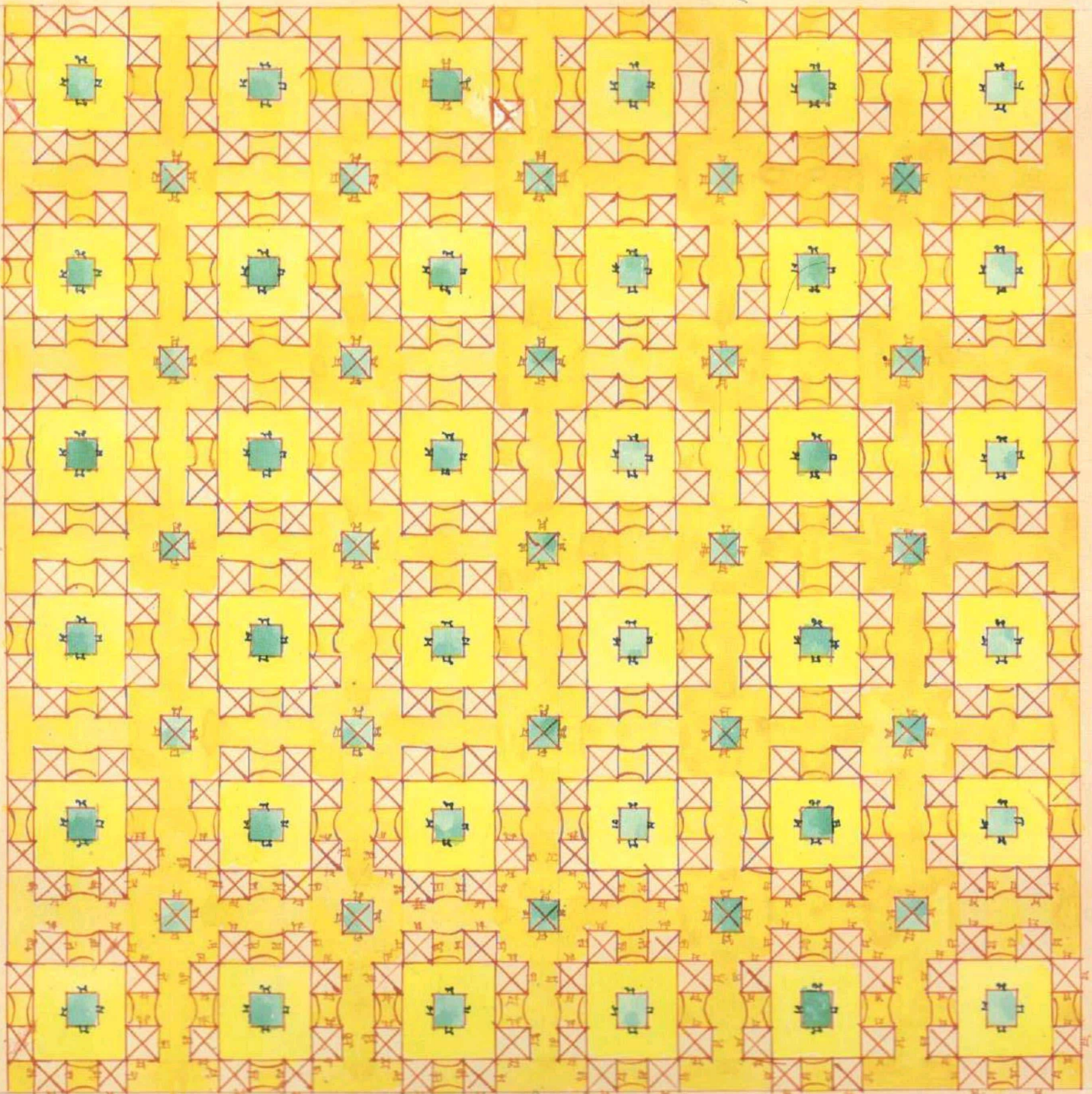
सिंह पद पाल

112

(44)



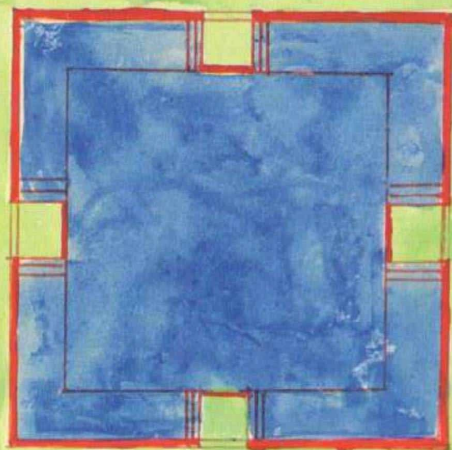
सिंह निलंद हवेलियो की
एक हवेली



राजा की एक हवेली का एक भोरोल

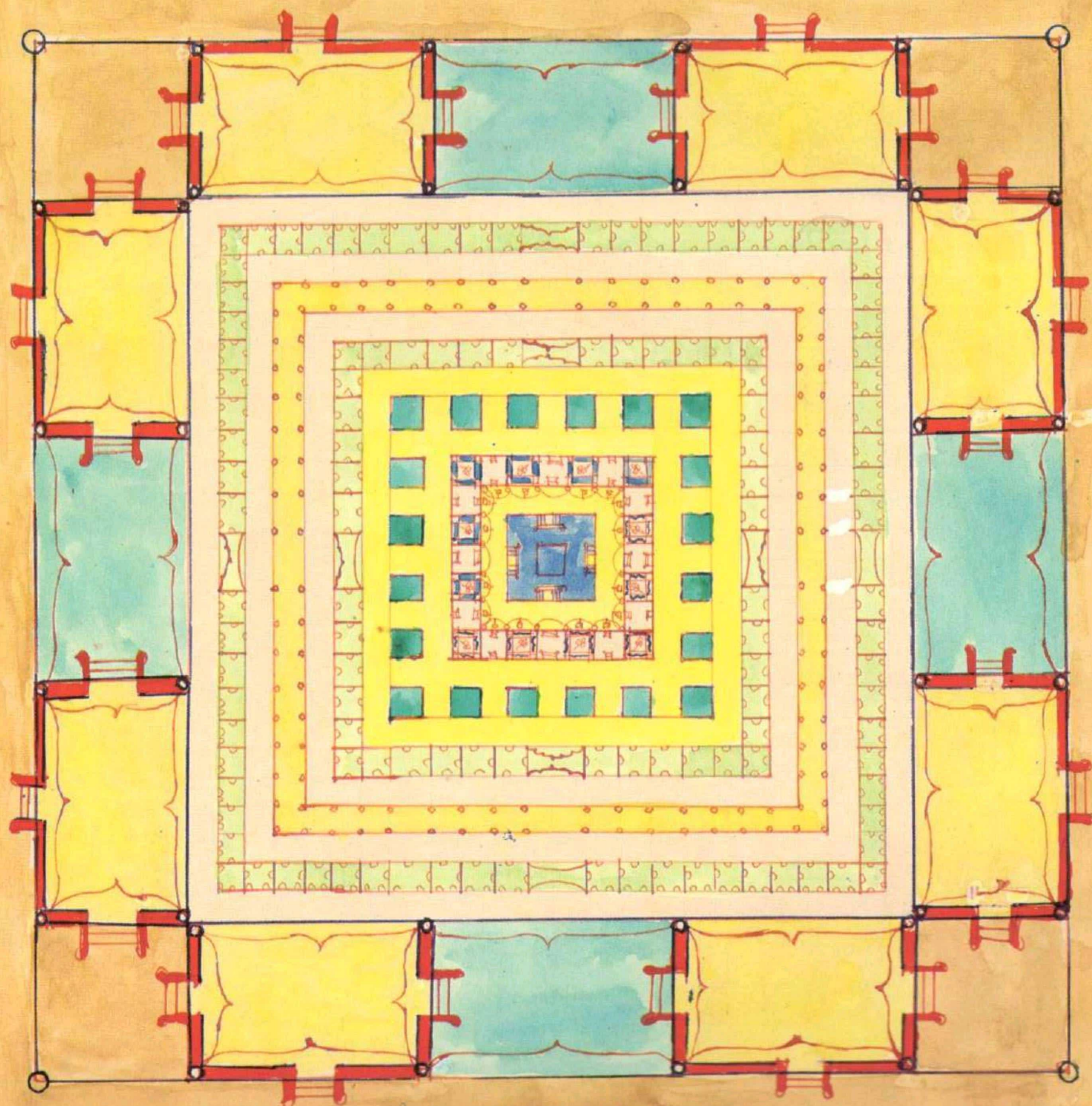
114

(46)

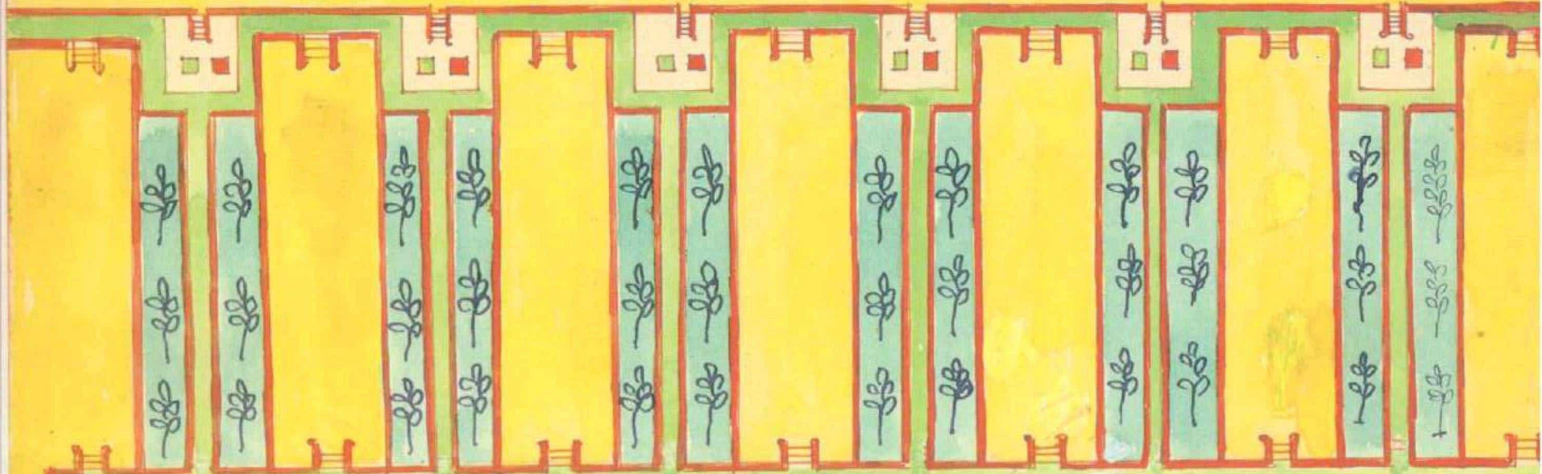
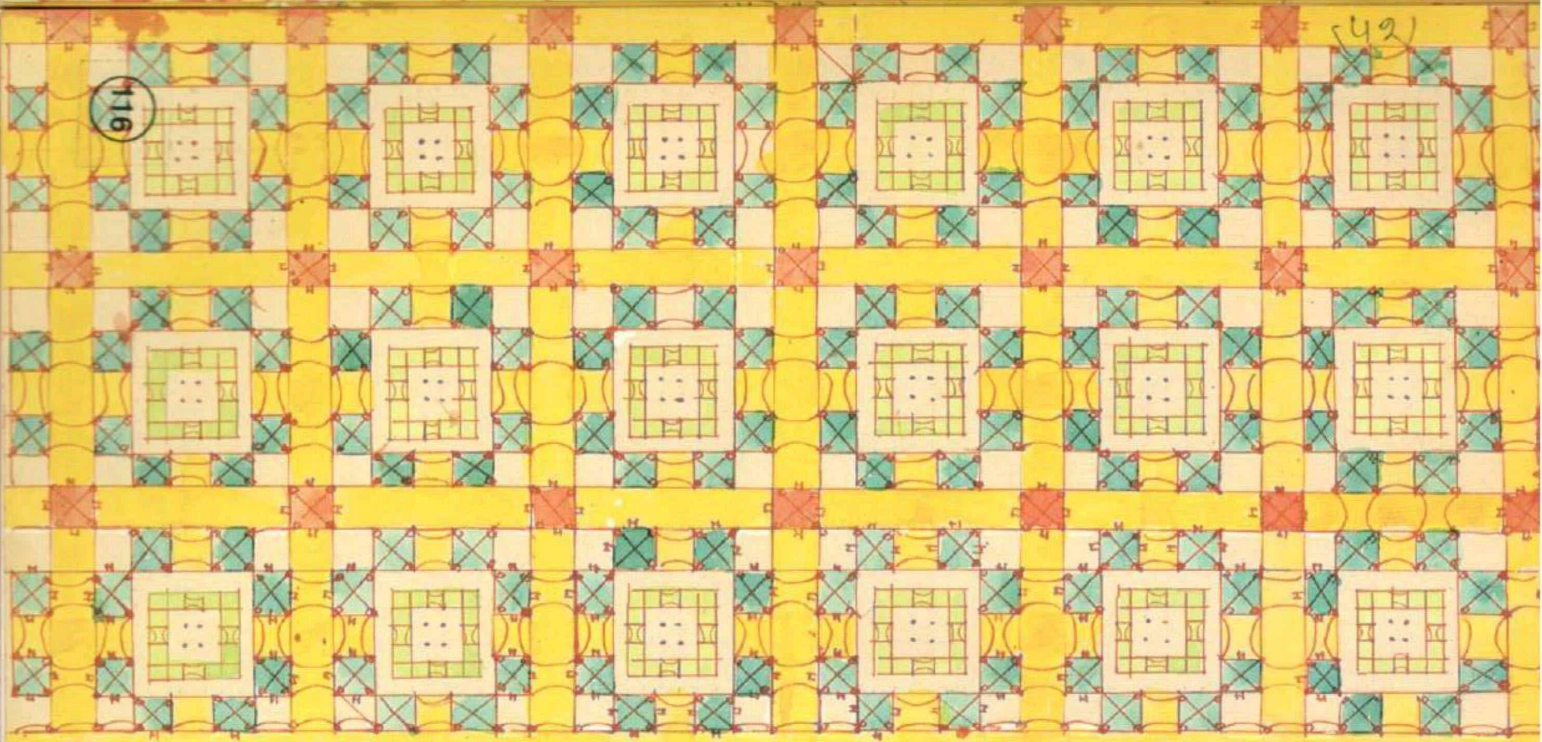


बड़ी रांग भी एक हवेली
के एक मन्दिर के बगीचे
में है

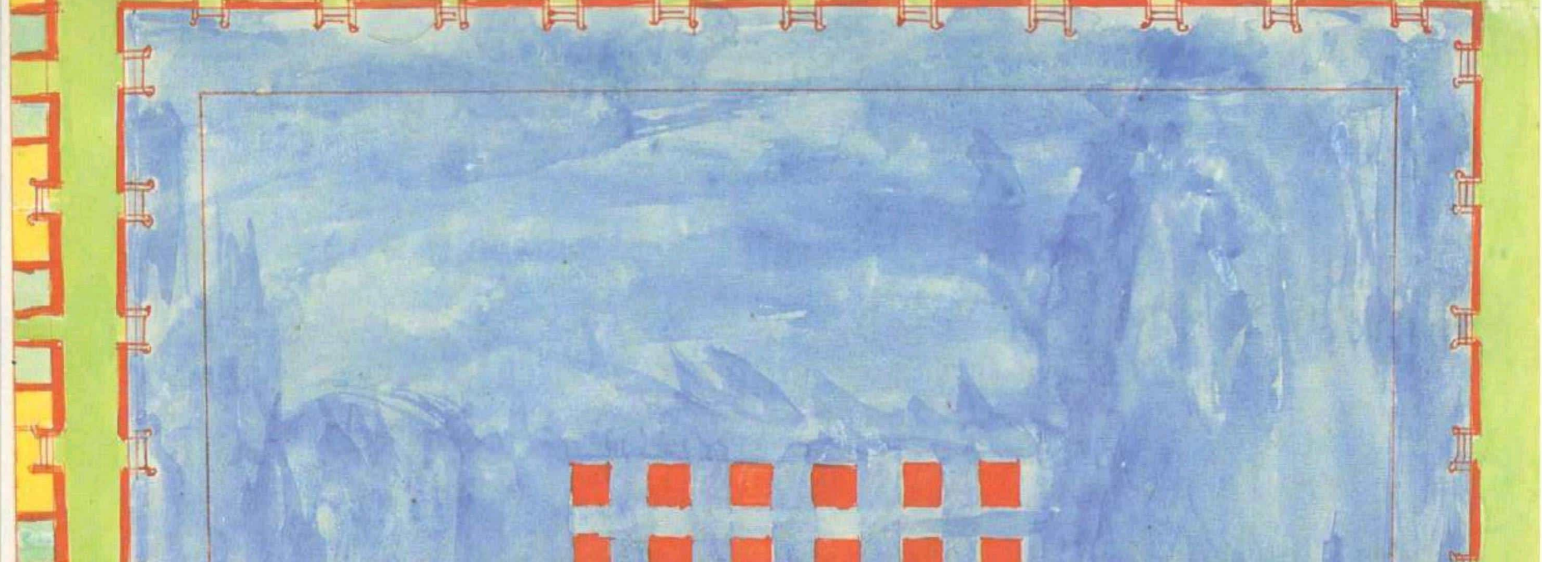
(47)

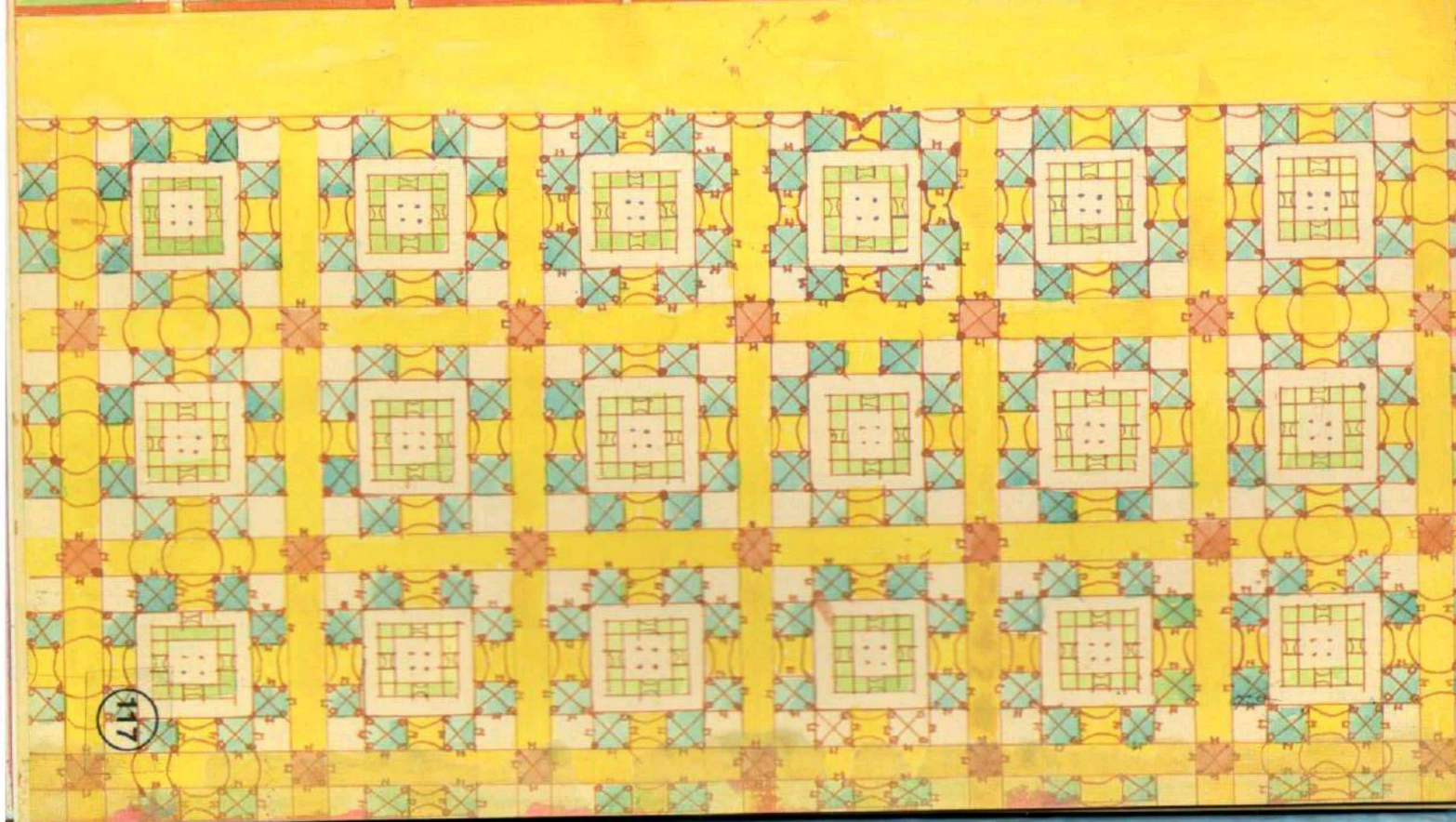
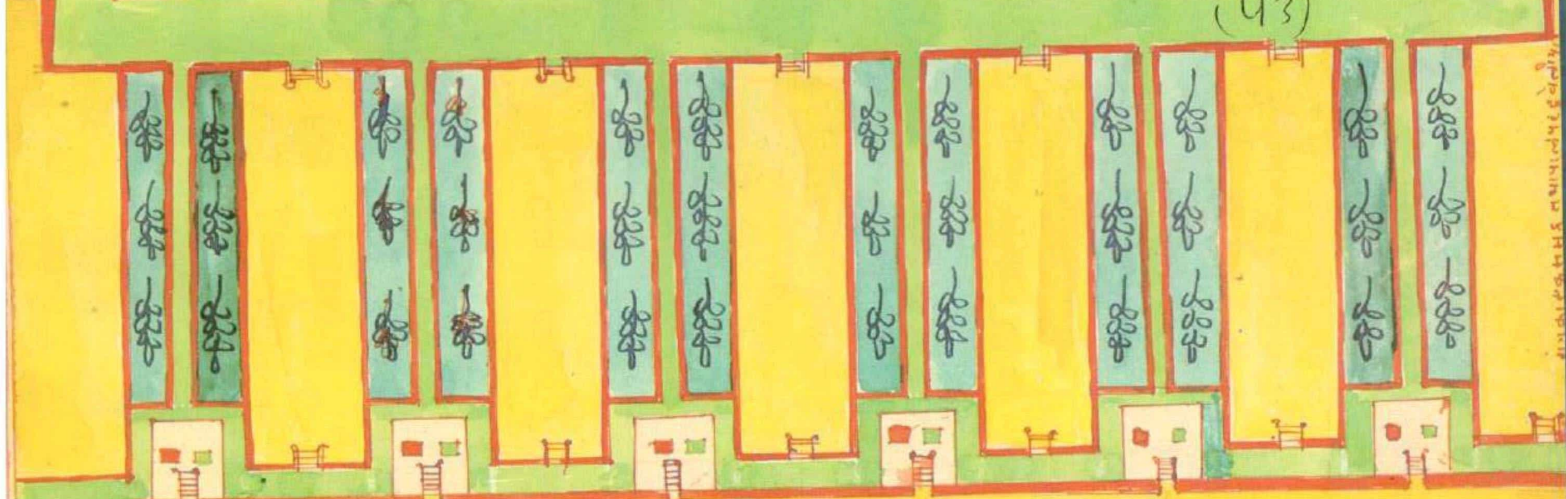


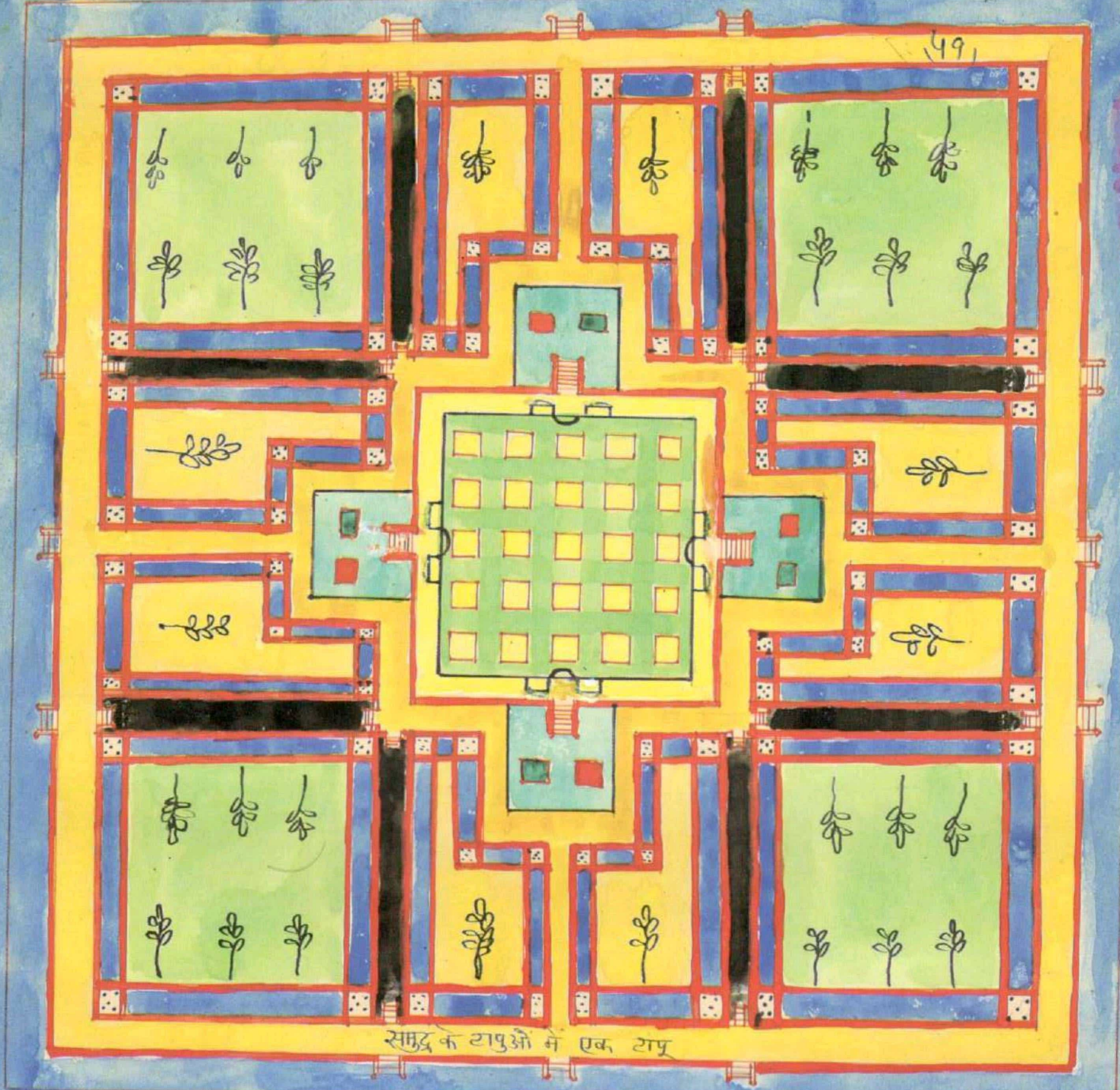
मडी राजा की महा विलन्द हेली
के प्रिपोलिया के मध्य एर
हने ली



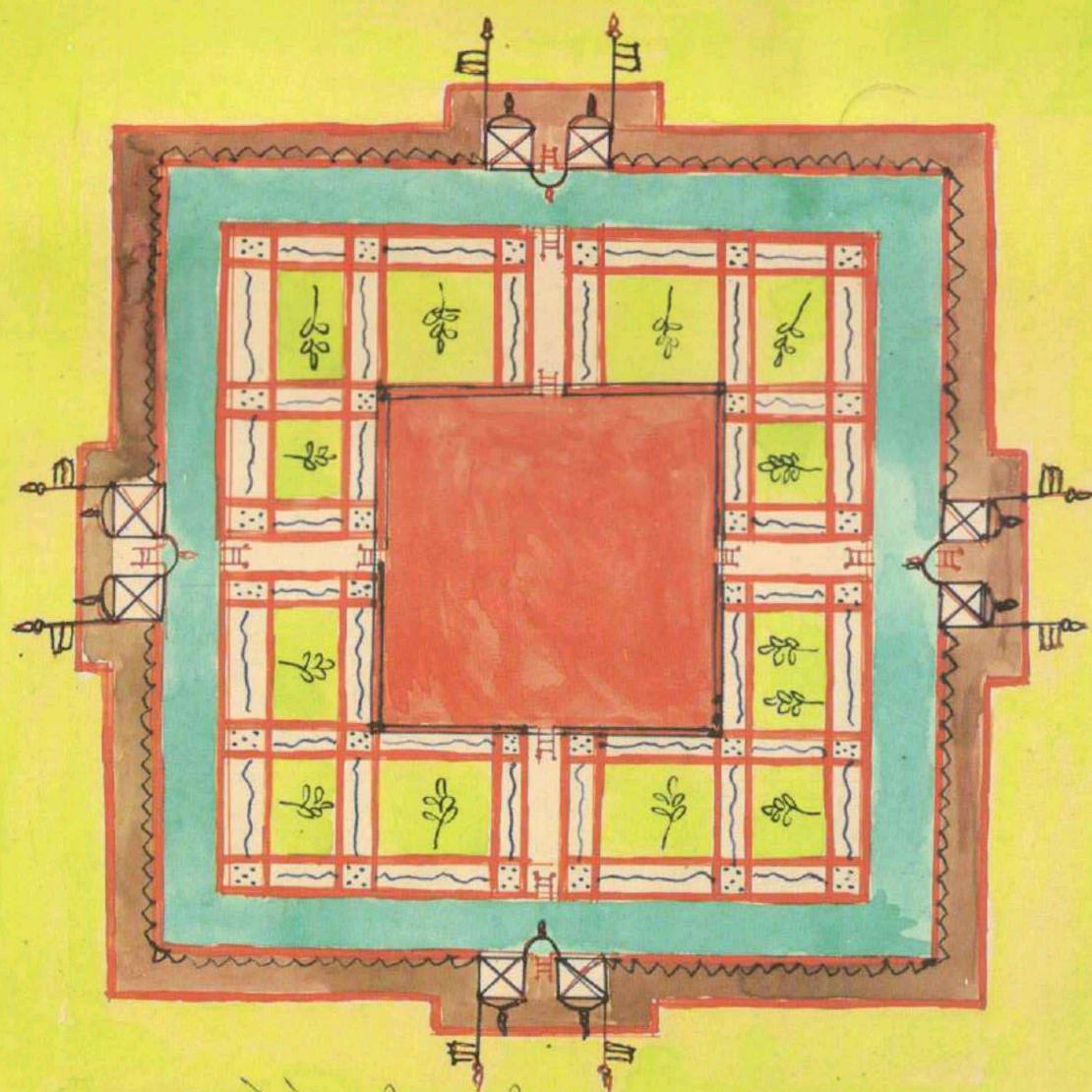
रंग का एक समुद्र तथा बाहर भीतर पाल पर हवेलियां



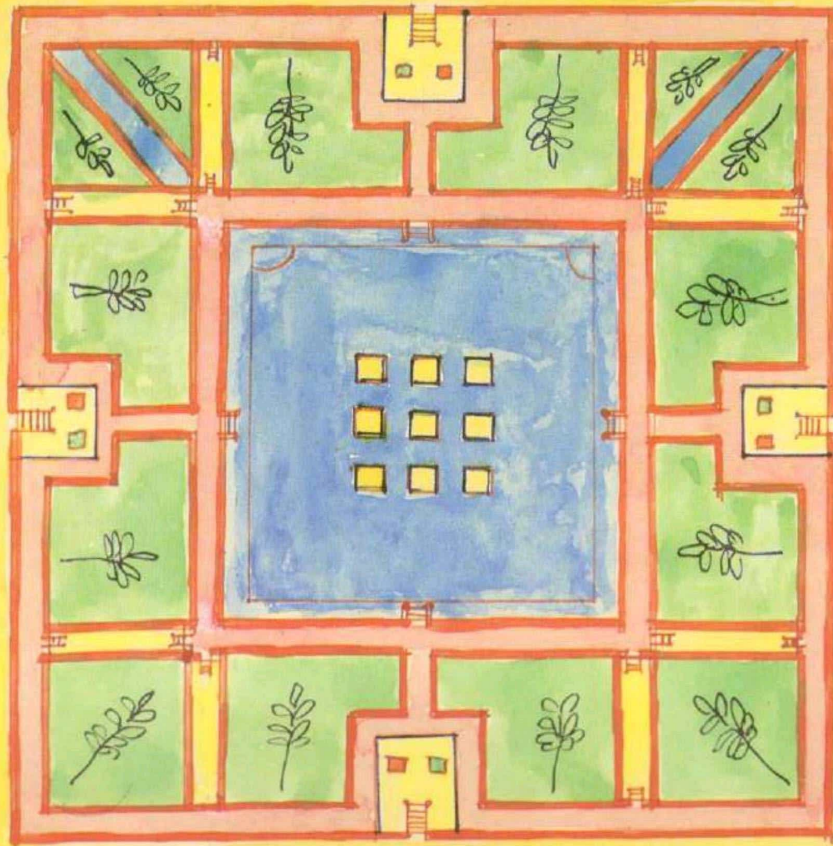




(50,

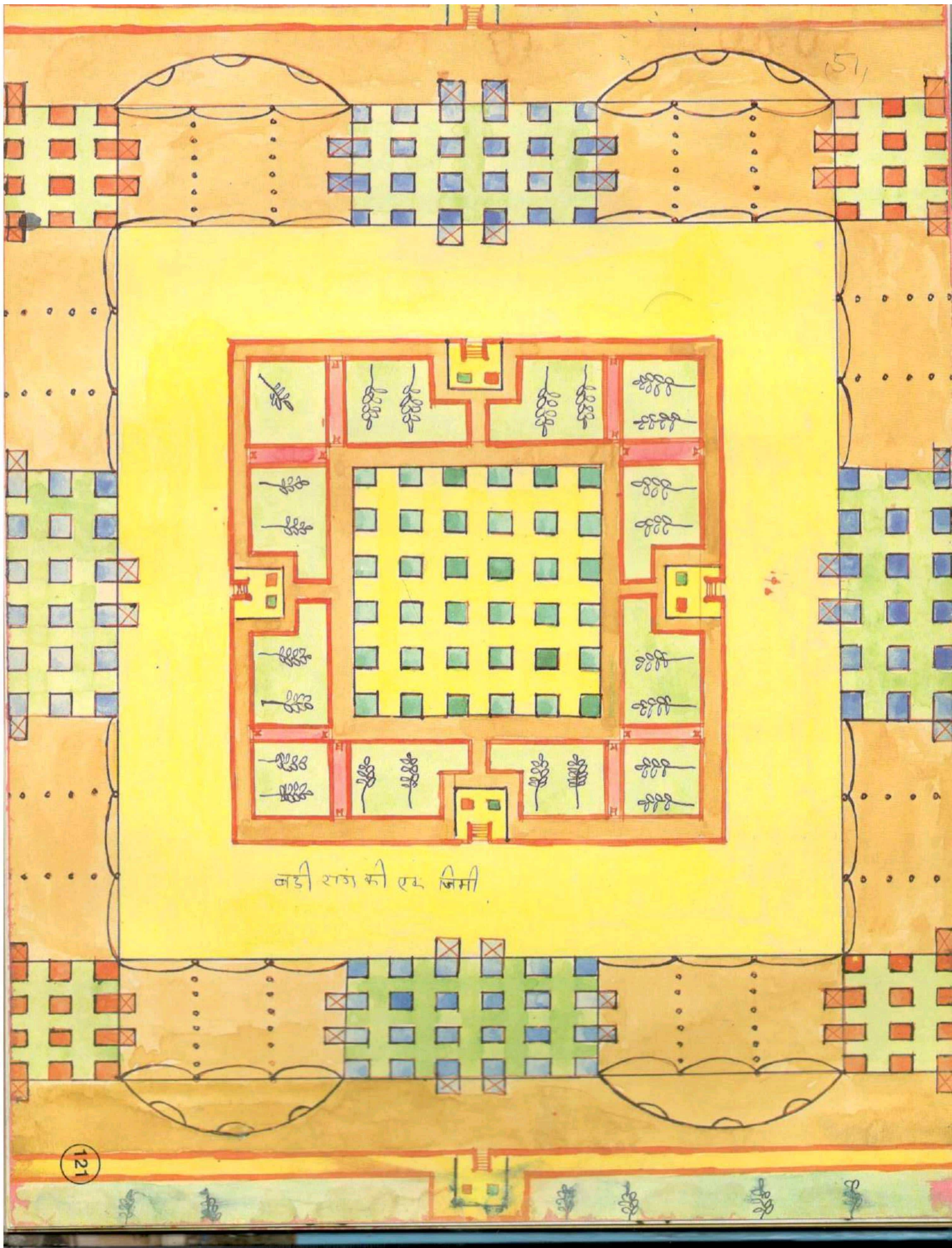


टापू मोहल की चावनी, तथा
चारों तरफों सभुद्ध

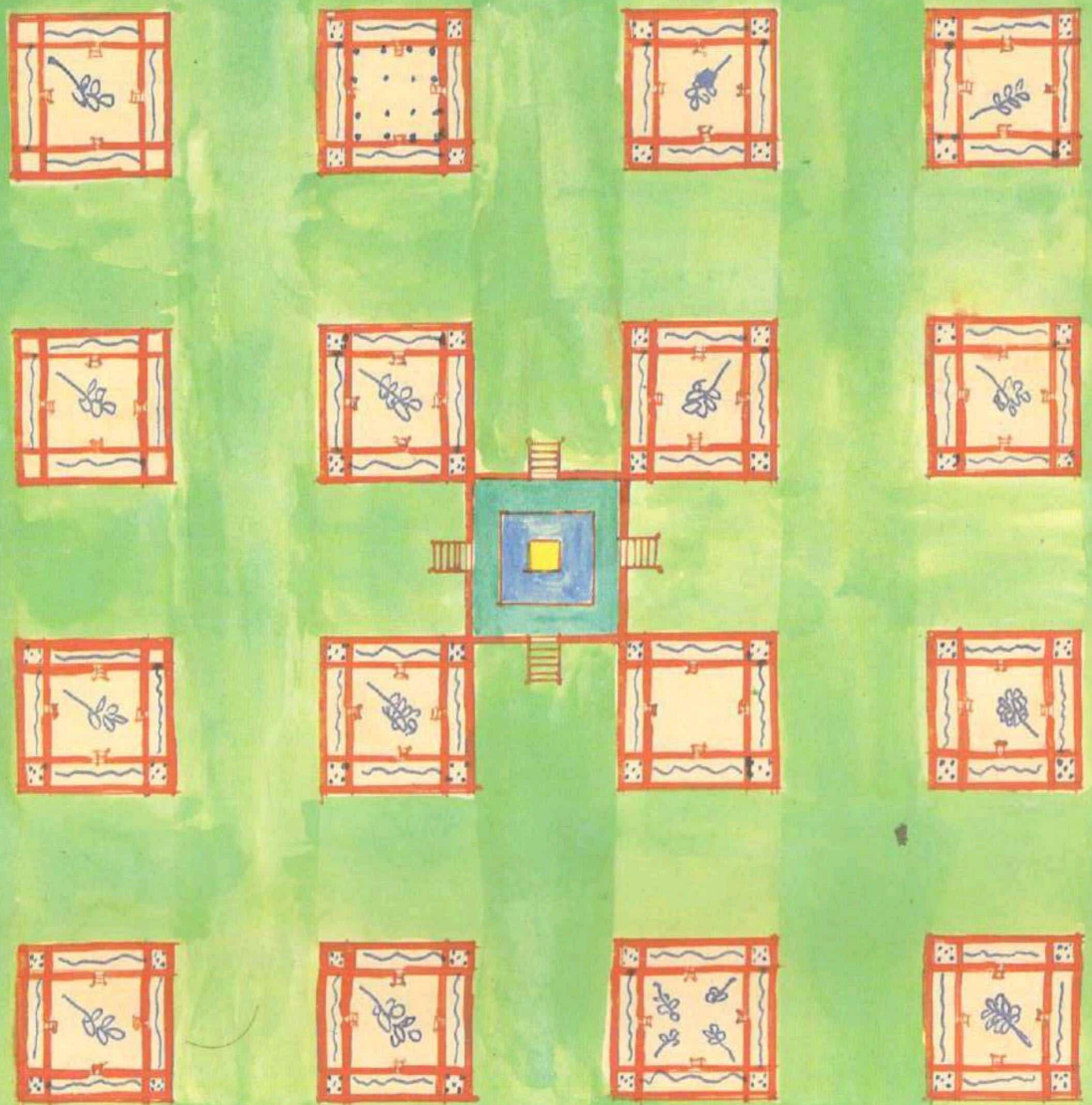


एक सागर के चारों तरफ बगीचा तथा
पालत पर आठ महा बिलन्द हेवे लिमों का दिखराव

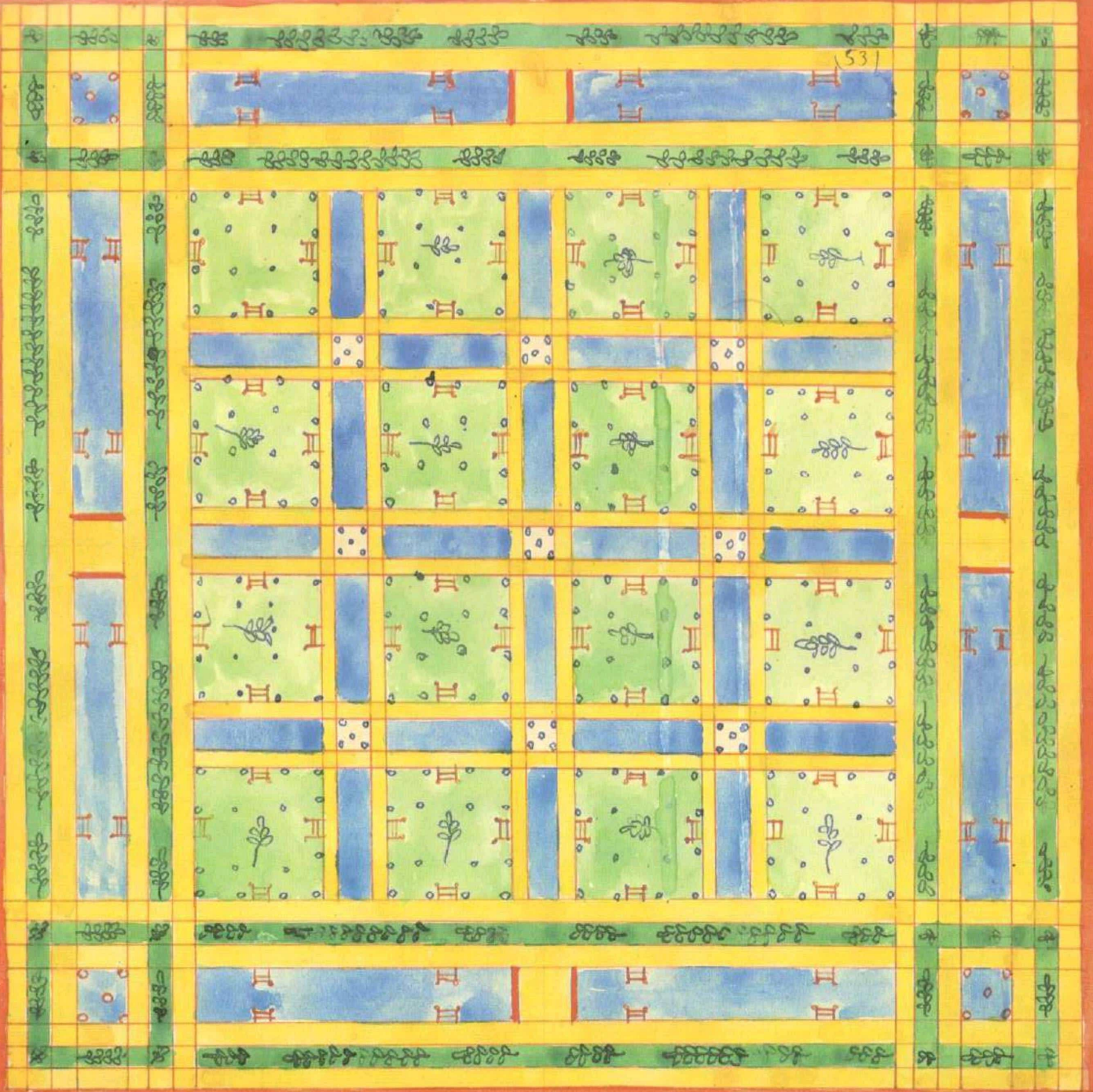
(57)



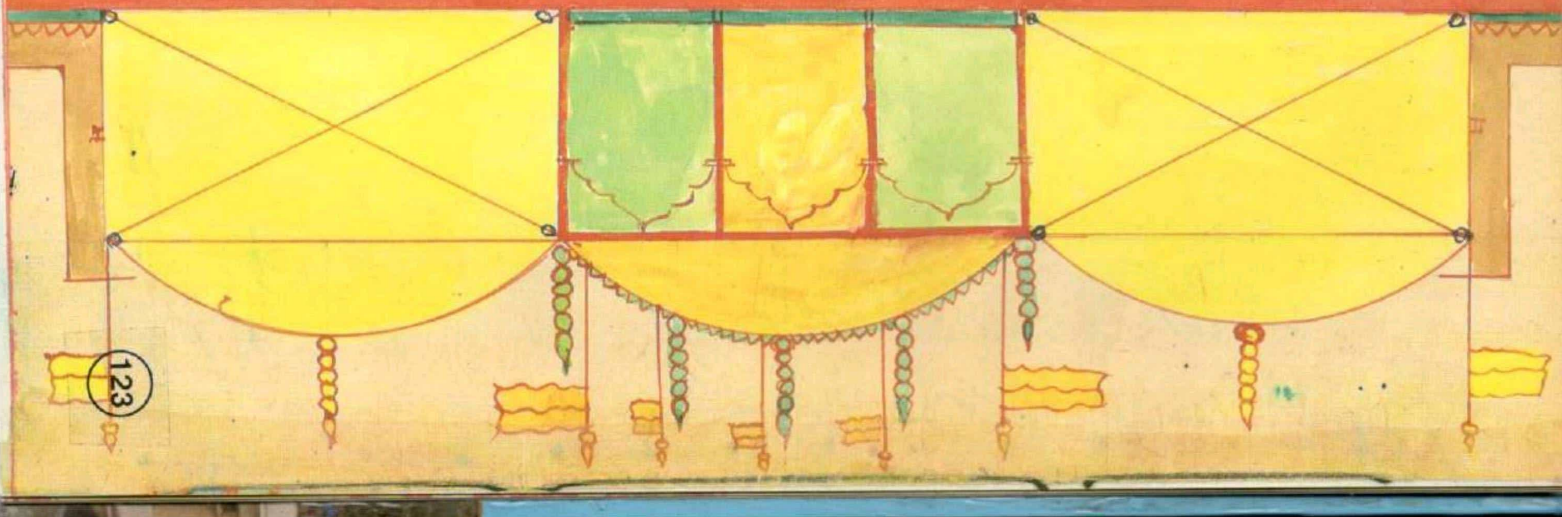
मडी राजा की एक जमी



महा बिलद हवेली की चान्दनी पर
लाता - बगीचा - गुम्बर

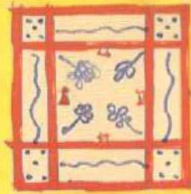


महा विजय एक हवेली में
चांदनी पर कंगीचों से एक लगीया

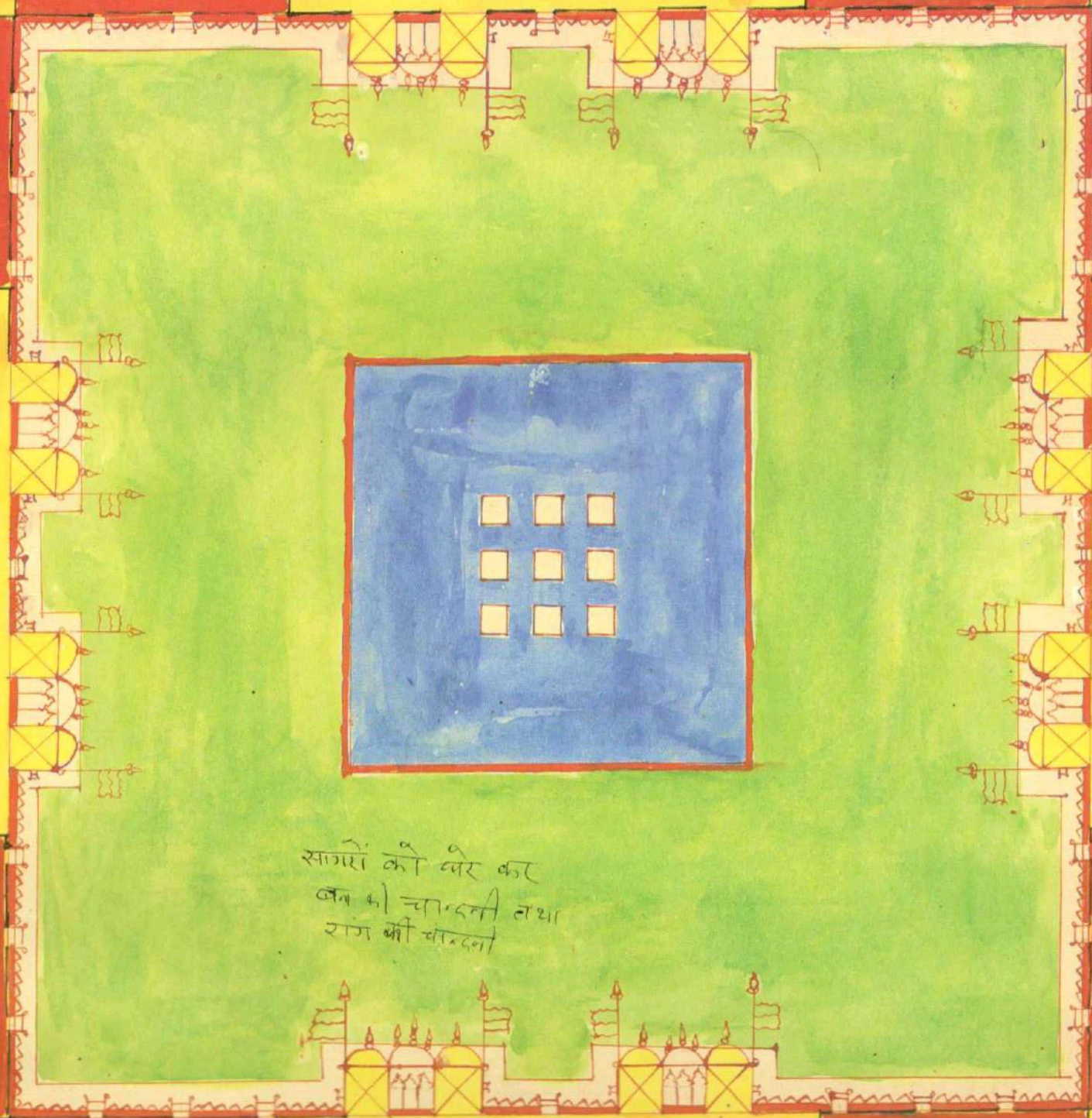


(54)

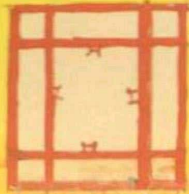
महामिलन्द की चांदनी पर
एक कजीया मे कउ कजीया

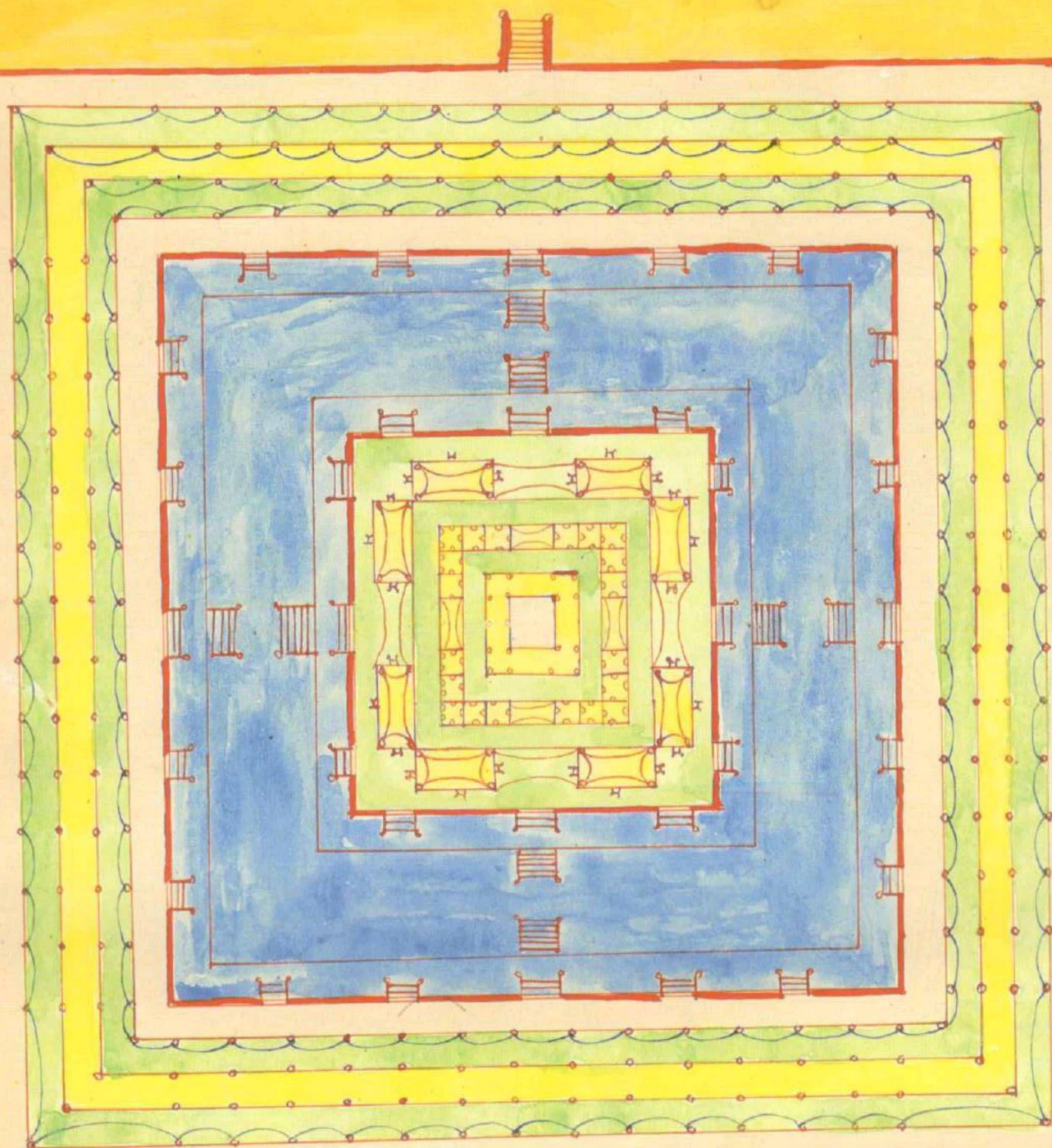


55,

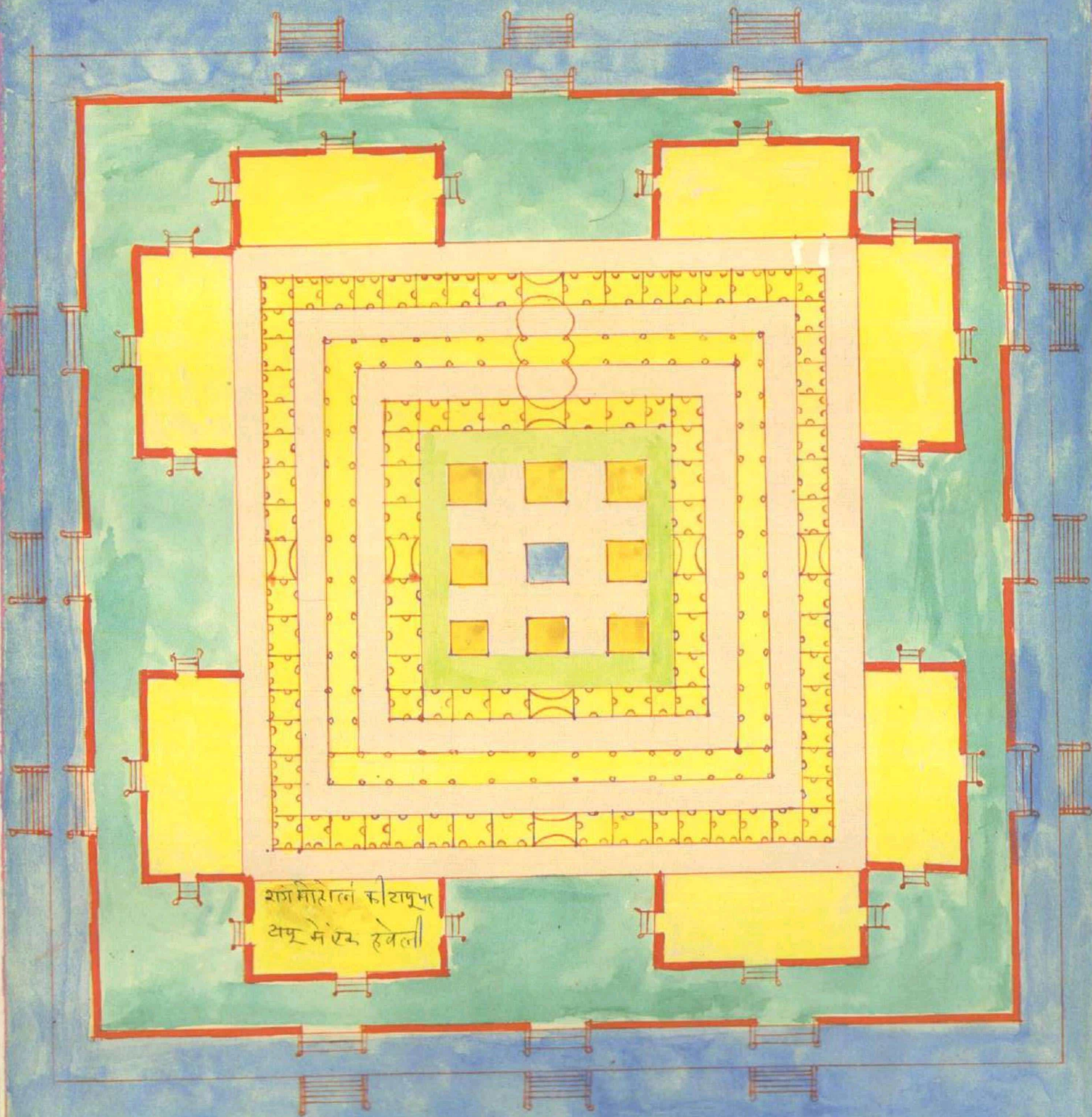


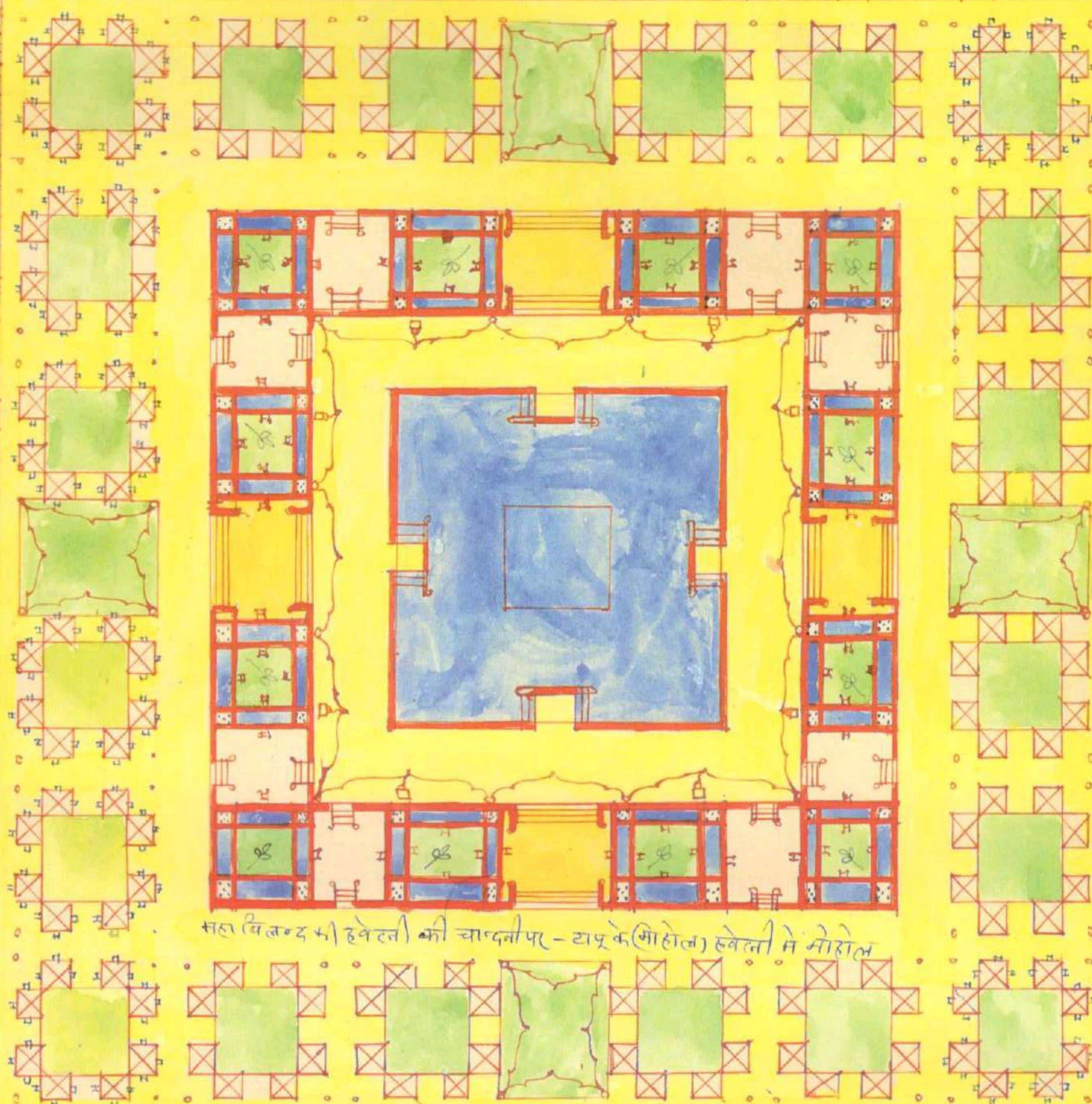
सागरों को घेर कर
जंगल की चामुन्दी तथा
राग की सौन्दर्य

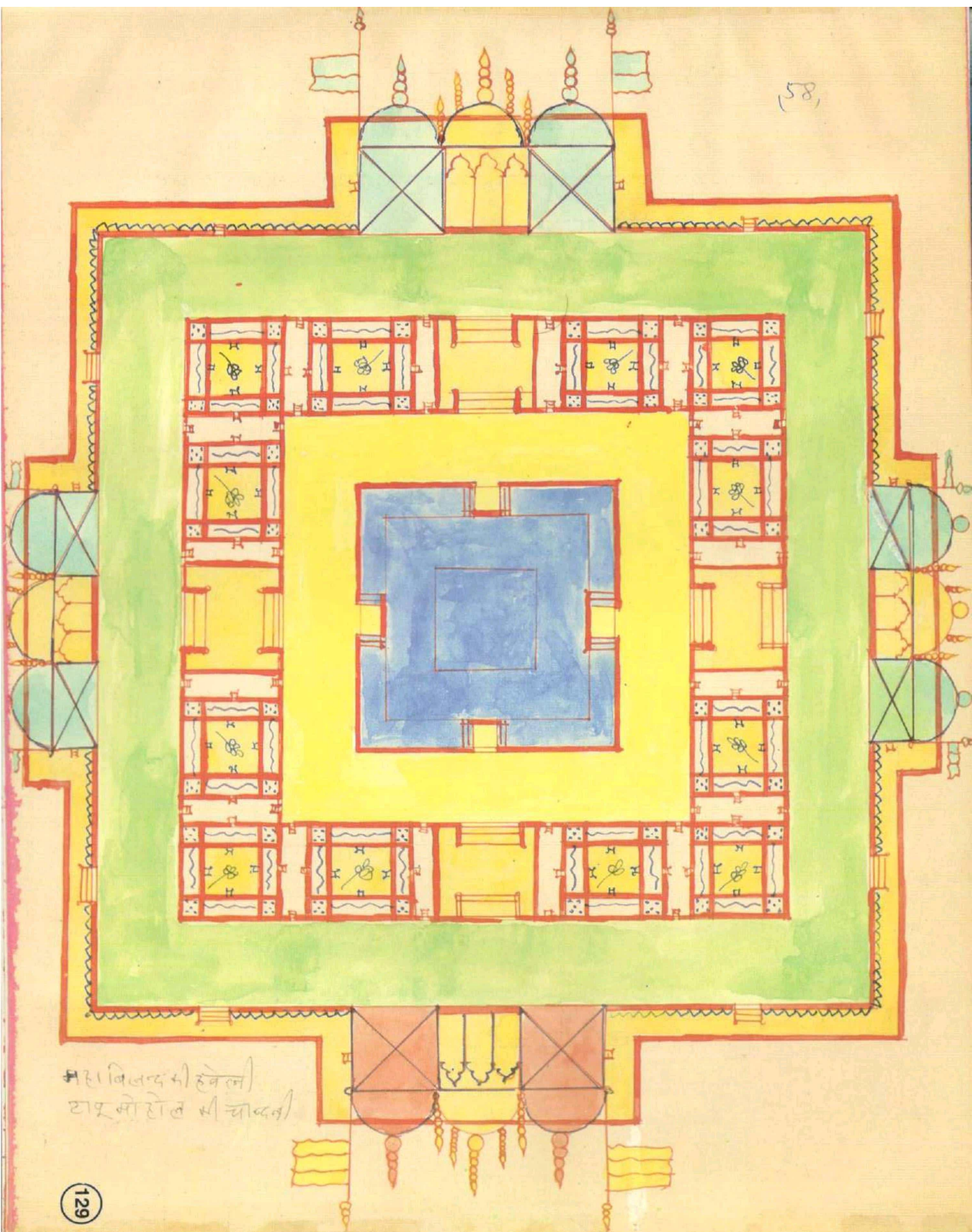




शंख की महराजि लन्द
 ह्वेली पर की चादनी वा
 बाप मोहो ल ता ल
 दह ल गि



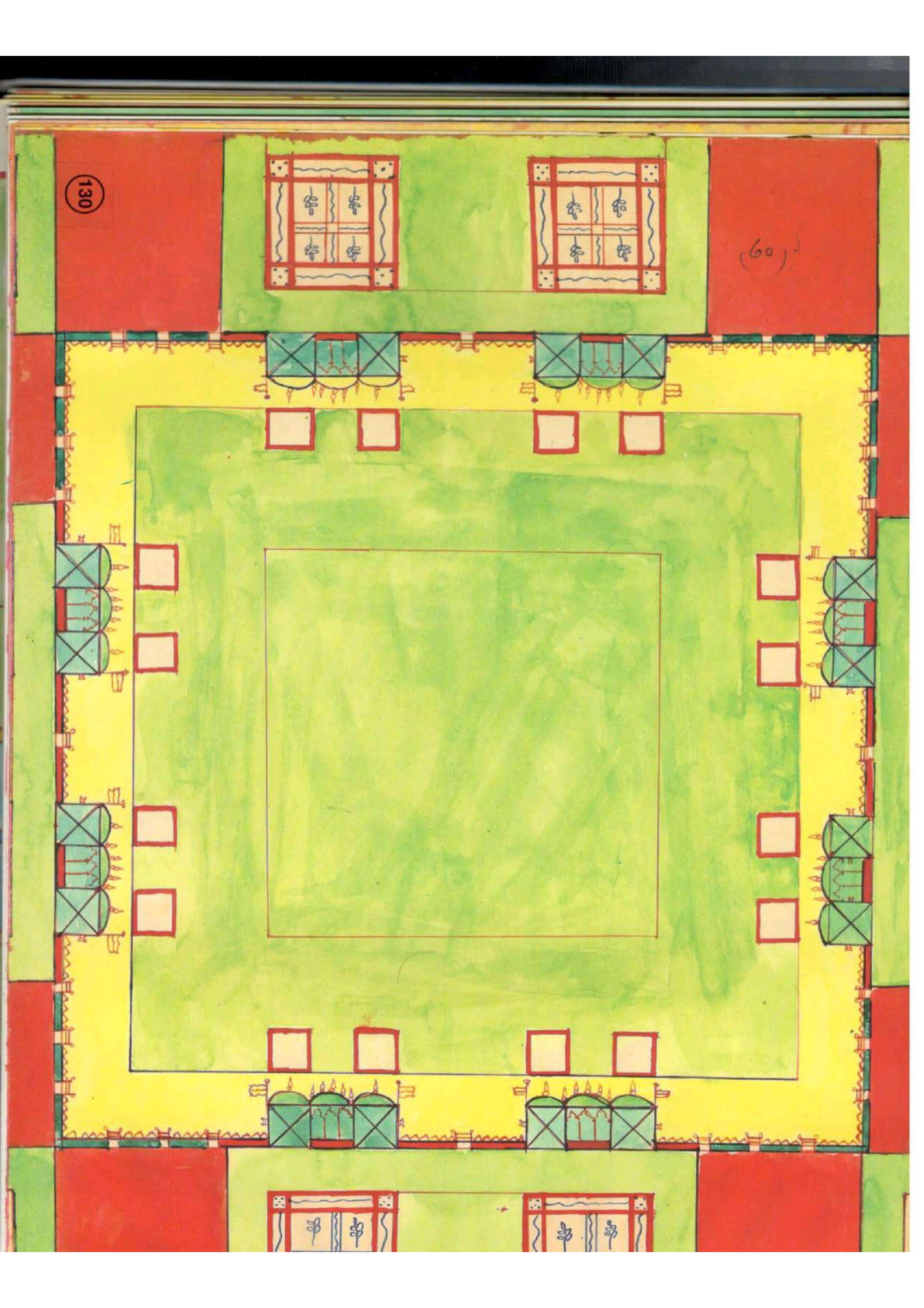




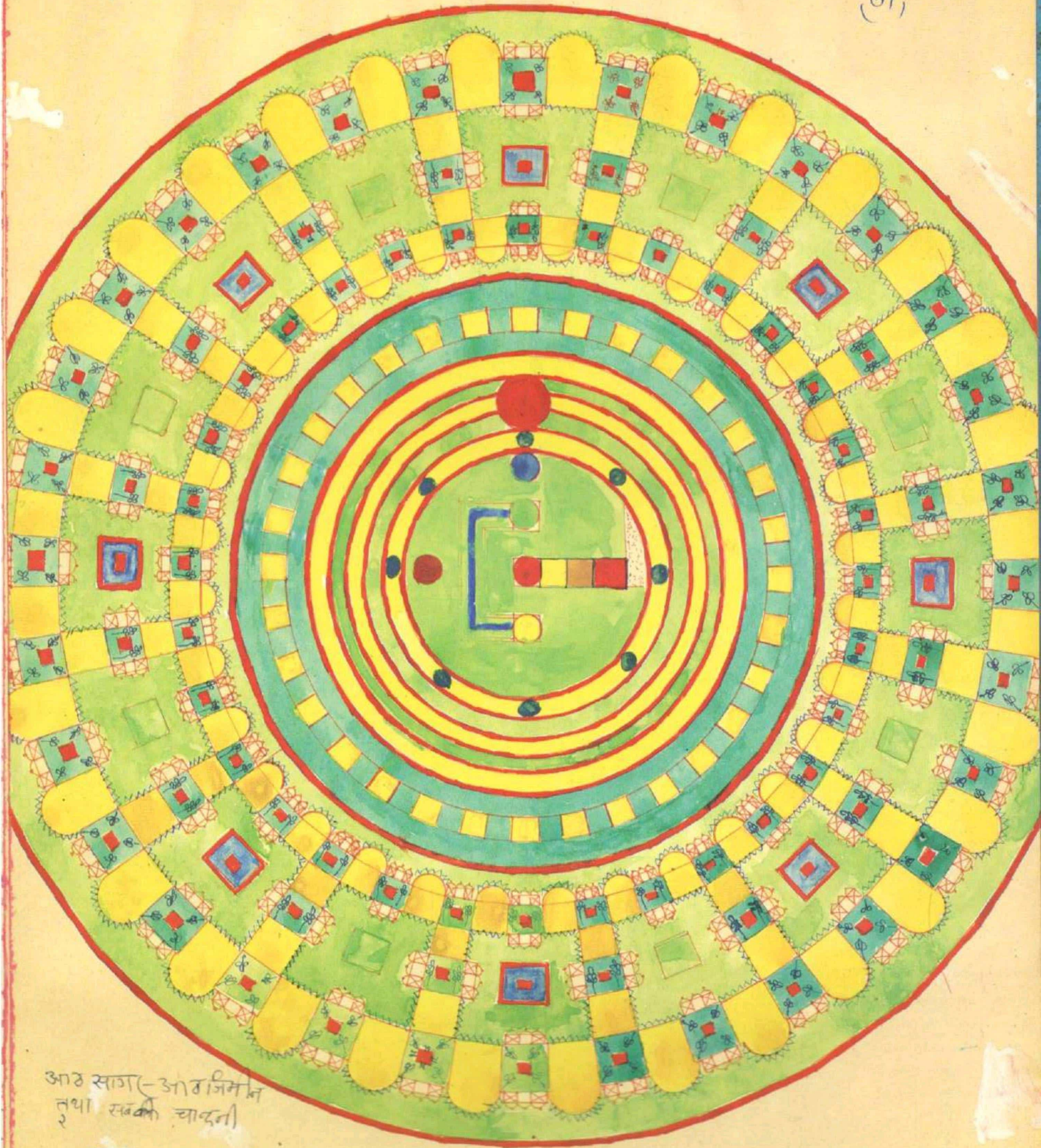
महाबिलन्दकी हवेली
राष्ट्रमोहल की चौक

130

(60)



(61)



आठ साग-आठ जिन
तथा सबकी चादनी

(132) अक्षरों को वेद में ओम्कार के द्वारा देखा जाय
देहा देह ही है। इसमें तीन सार्वभौमिक हैं
अक्षरात्म - अक्षिरेण - अक्षिमत्त
२४-२४ रत्ना के तीन गुण्डल

सुव्याकृत
का सुसप्तसु
नरंजसु
अरंजसु
कार्लनरंजसु

श्री गणेशाय नमः
॥ ॥

प्रव्याकृति के स्थूल में
तीन अने बड़े हैं -
१ शास्त्रमयी शास्त्री
२ रोचनीमयी
३ प्रणवमयी - (॥)

रोध नी
क ली ।

महर्षि ज्ञाना ३ के
सिद्ध पर महर्षि
महाजी ३

शेधनी सही आपार
सही या का सावल्ले
कर वे हद के चलन
हम जा पर चलरा
हरी है।

५ न व
३ अ
जीवांकी भित्त
६

प्रजनन प्रणाली के स्थूल मूख
का रस, महाका रस - गिरा
न पैतन | पांचो सरी रसे
पांचो रसे हैं | जै, रसि
मल पैतन में जी पांकी
आठवीं गिरा है

महा
भा.भा.
आदि.न

(निराकारों के सरोवरों के बीच के पर्वत)

(मर (प्रति 5 ति (कार)

महिलाओं के लिए
महामहामारी
आती है

श्रीदिनाराम

निशाकार म भी वृक्षां में
अमरलोक (सतलोक) में
बाराही पचार मुमई (मिथुन) में
पुष्करदीप है। अंश पर आद नारा
अन त वान् लक्ष्मी रत्नी है
त वान् कोट लक्ष्मी मा व नो
चारों की पंच नार अर व स र नोई
हरी सन का भूत
आद नारा भन

राजकीतीत।
आदुनारायनामे
होतीरतीह
इत्यादि
कादुनारायना
पुत्रादि

૧૪૫૧

आदना रायन में होती
रहती है। मरने पर
कैला का वमान पड़ता
है।

आदीना
रामनकी
नीपरआन
लीलीहै
महाकाएन
है।महाकाएन
नकुहीहै
हिमाहै।वाना
है।देवताप्रति
करकेहै

महासुन्य (निराकार रूपी ब्रह्मांड)
(यहां तक मिटने से या कृति परले कही जाती है)

इस इच्छा प्रत्यक्ष कारणों से त
 स्वरव्यंजनकों है।
 सात रंगों की जमीन है।
 जिसमें सात स्वर निकल करत हैं
 इस इच्छा से क्ली प्रत्यक्ष कारणों
 से निकलती है। जिसमें पाँच
 सक्तली मंडा परवल है।
 वास्तवी - आनंदव्यंजनी - तुच्छा - शिव

2 = 3 + 4

જોતીવ્રહ્મ મહા (પ્રહ)
સુંગસરોવર - અવધ

मैं पढ़ाई नहीं करता था।
 नारायण के कहने पर मैंने
 सरीर का रोग है।
 अन्न खाया तो पेट है।
 देन ता प्रान्त है।
 ना तो पसमं तो है।
 मलापर मिल गे लो क की ली ली।
 - हो ती है -

हमो हतत्व ब्रह्म का स्वस्व व सामुद्रते जे
मई है। अवस्था कि शेर है। मुंगल स
की रवास राती है। इनके साधन २४ हजार
सारिब सां ज्यैर है। इनके तीन सुभाव
है। अमृत ज उदर व। नीचे का सव
उत्तम नी इनसे दुई है। महां पर व ज
लीला इन्का कर ती है।

ਮਾਏ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਣਾਮ

महद्वल - महा ना दवल
अनुतपुल - १ मक
अनेको ना महे

हमो हतत्व प्रह्लादादि नारायण को
हिरदे स्वानामो रहता है।
मम शरीर है
अवस्था में सुख है
देवता राजा है
वानी मध्यमा है

21/21-21/21

हजो तीरुव सुव प्रह
वडा मुं द ले जो मई है
जि स के पां च मुख
१० मु जा
१५ न न है।
२ स के सा व ज्ञा पा
स क ती है पां च स

जे. ती. व. क. ५. व. ५.

जो तीव्र - शीघ्र प्रत्यक्ष
रमती रास - प्रेम प्रसार
शिव लिंगाकार ।
इसके अनेक नाम हैं

जो ती प्रह का राज एक वस्त्र प्रारव जो जग
का है। राज की वस्त्र शिवलिं गा का है।
पांच संकल्प - वास्तवी - अनरव - गुरु।
शिव कल्याणी - पुनमुनी -
ए जो ती प्रह आ नारायण के नामी में है
अव स्वा आ प्रत ।
दे वता विष्णु
दे वता विष्णु - न की जाती है

निवाकर कृषी प्रयोग

स्वर्ग लोक
स्वा स्वर्ग
आनंद

ओती
स्वर्गपुत्री
पुष्प स्वर्ग
पुष्प का
पुष्प

ओती बहन
का मंगल स्वर्ग
मंगल का आनंद

सिद्धि
(पुष्प का)
(पुष्प का)
(पुष्प का)
(पुष्प का आनंद)

बलपुत्री
(पुष्प का)

(वैकुण्ठ धाम)
विष्णु भगवान

(कैलास)
महादेव

(निष्कर्म भूतपुत्र के लिये)

(सप्तलोक)

(साधन का दिव्य)

(अनलोक)

प्रभाजी की मातली मुहूर्ति

राजशब्द - तत्वावली मंगल देवता

(स्वर्गलोक)

मिमांसा प्रलम्ब सहित

वितरलोक (भूतप्रेत आदि)

(भवरलोक)

(भूतलोक)

प्रयोग

इलाहाद

मधुरा पुरी

काशी

वतारम

मूरलोक

मे सात की पसात ममुद्धा लहे
मध्यमे ममुद्धा लहे
नवम ममुद्धा लहे

प्रयोग

इलाहाद

मधुरा पुरी

काशी

वतारम

मूरलोक

(राक्षसलोक गारततेहे)

(त्रैलोक्य)

(मनियों का प्रकाश)

(राक्षसलोक गारततेहे)

(वितल)

(मनियों का प्रकाश)

(राक्षसलोक)

(भूतल)

(मनियों का प्रकाश)

(राजावली राक्षसलोक)

(तलातल)

(म. प्रकाश)

(नागपुत्र नाग के लिये)

(महातल)

(म. प्र.)

(नाग-कन्या)

(रसातल)

(म. प्र.)

(वासुके नाग)

(पताल)

मनियों का प्रकाश

रक्ष

पुत्र

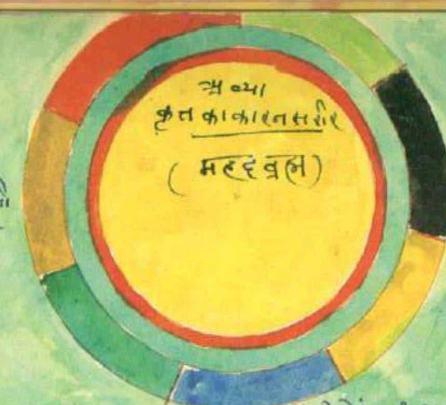
नरक

अरु भोदिक मंगल

(शिशु नारायण)

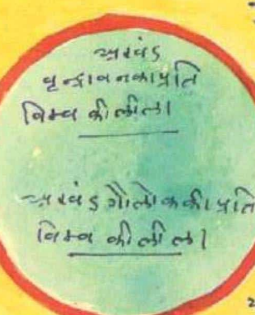
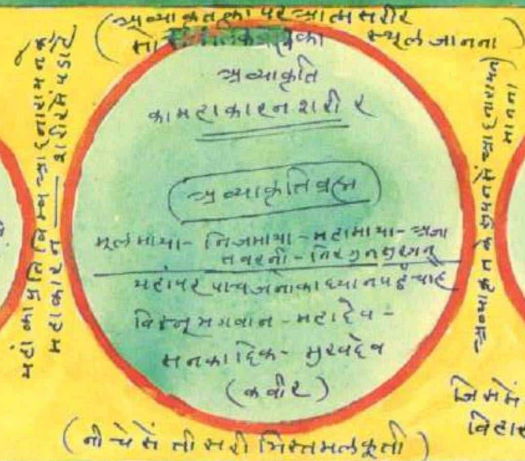
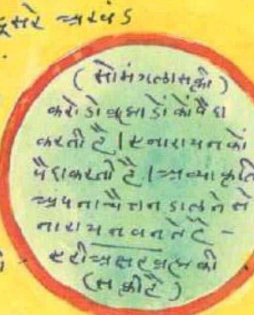
शिशु नाग

इस प्रकार मंदब्रह्मनिवास करते हैं
 सातों सत्त्वों में है जिसमें योग्य
 महापुरुष है।
 वास्तविक - अमरत्व - शुद्धता - शिवकल आनी
 (धनमुनी -
 महापुरुष गोलों का प्रतिविम्ब
 कीलीला हर हर शरीर होती है।
 महाका प्रति। आदारा मन्त्र के कारण शरीर
 शुद्ध शरीर में है। वहनकल है
 मंदब्रह्म है।

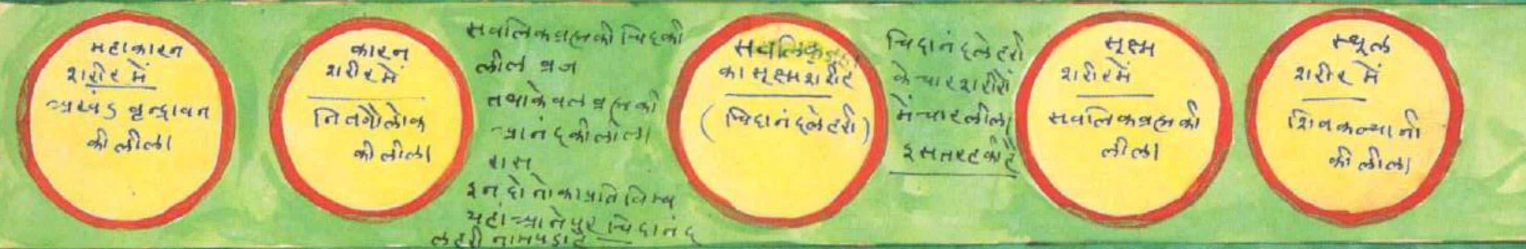


64 मंदब्रह्मका राज सातवर्षका है
 सातवर्ष की जमीन है। हर जमीन का एक
 वर्ष का विस्तार है। माना सात वर्ष
 सात जमीन में है। कैयक की आनी
 मंदलीला होती रहती है। और मोहो लो मंदि
 वागवगी का कला रावा रहती है।
 पैमानों की दूसरी विस्तार जो नेकरता पर
 चलनेवाले है। सा महापुरुष आका आवगी

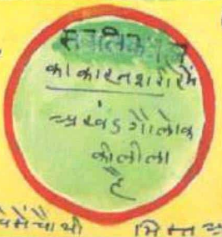
महापुरुष नर शरीर कीलीला होती रहती है।
 एक तो अव्याकृत की। दूसरे अव्यं
 गोलों का प्रतिविम्ब की।
 तीसरा अव्यं वृन्दावन
 का प्रतिविम्ब की।
 हर शास्त्र वाले महापुरुष
 है। प्रतिविम्ब की सावि
 मा सब इस शरीर में पड़े
 है। इसको वागो में मल्लूनी
 भिन्न करके कहते हैं -
 अव्याकृत का महाकारण शरीर कीलीला
 तथा पदार्थ मशरीर कीलीला एक जैसी है।



अव्याकृत का स्व रूप वृन्दावन में
 तेजोमई किशोर अवस्था का
 साधने चार अवस्थाओं में
 जिसमें शिरसा सांगल
 सत्की लक्ष्मी जी है
 कवीर जी ने इन साधनों
 को संकलित करके
 इसके आनंदों सतल
 तथा अव्यं वृन्दावन
 महापुरुष मंदब्रह्म की
 मध्य में पुरुष ही है
 जिसे अव्याकृत वृत्त - सोमगला सत्की तथा सावित्रा का
 विस्तार करते हैं। सब जो गवई मोहो लो मंदि तेजोमई है



निजगोलों कीलीला हर हर महापुरुष होती रहती है। जब सार
 वृत्त में डल में जोलीला दुही सो सब नीजे श्री कृष्ण - राधा का - सावि
 या - जमुना - २४ वत) ने ६ मशरीरों के - गोपबधन पडा
 सबलीला महापुरुष की। श्री कृष्ण में - अशरीर आत्म - श्री राज
 जो का जो सा। श्री राधा जी में श्री आमाजी की। सावि या में श्री
 परमप्राप्त की सावि या की मरता आदी है। श्री साधारण
 वापत निज के वा ६ रास में गड। तब सार महापुरुष करदीया।



(१) रासों के वृत्त कर सब को इअपने पा म में गड। अक्षर वृत्त
 जात होने पर रासलीला को अव्यं डकी या। वाद में श्री आदी
 तब वृत्तलीला की संघर्षों में मा हो गडी तब अक्षर वृत्त ने
 ११ वर्ष पुरातन कीलीला का निजो सबलिक वृत्त है। एतके
 शरीर में सबलीला का मम करदी। अकीत वृत्त में डल के सब
 जीवों को महापुरुष का मम करदीया। सो महापुरुष हर हर
 लीला होती रहती है

अक्षर वृत्त ने रासलीला को गुप्य जो केवल वृत्त है।
 धर्म में काम की मा है। परन्तु सबलिक वृत्त के महाकारण
 शरीर में इसलीला को काम मम करलीया है। अकीत इस
 लीला का ध्यान चित्त बन कर रहा रहता है
 इत्यादि महापुरुष लीला अव्यं वृत्त भाव है



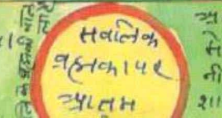
सबलिक वृत्त का निरमल
 महाकारण शरीर त्रिकुटी में होता है

सा मंद भिन्न गोच से पांचों में तमवर पर है
 और ऊपर से तीसरे तमवर पर है -
 निरमल चैतन्य का शरीर वृत्त के ठिकाने रहता है
 (महंमदी भिन्न)



सबलिक वृत्त का निरमल चैतन का स्व रूप वृन्दावन में
 तेजोमई है। महापुरुष ने कोलीला होती रहती है -
 सो महापुरुष मंदब्रह्म का तथा मारों का तथा मान
 वालों का सब का अक संधे उगा। अरवा तन व सब
 जीव महापुरुष का मम होंगे। श्रीमई तन होंगे -

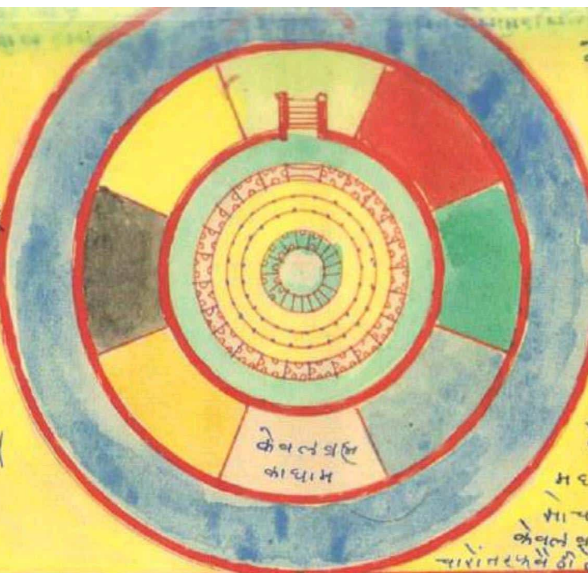
केवल वृत्त का धाम जमना जी के पा है। केवल वृत्त तथा
 सबलिक वृत्त दोनो एक ही वृत्त में रहते हैं -
 सबलिक वृत्त पर तन को जम जाते हैं। श्रीमई तन



अक्षर वृत्त के चित्त तन के तन को सबलिक वृत्त कहते हैं।
 सो सबलिक वृत्त का मशरीर तन वृत्त का स्व रूप है। श्री लक्ष्मी जी अव
 नी है। अनेक सावि या साधने है। एव वृत्त लीला को वा रा बा रहती है
 शास्त्र पुराण गडी को अक्षर वृत्त भाव है। अक्षर वृत्त वृत्त डका

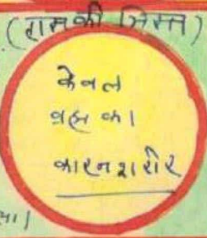
केवल
ब्रह्म का स्थिति

अक्षरब्रह्म के
केवलब्रह्म के
कहा। सोइसकी
किशोरलीला है -
और अक्षरब्रह्म की नाम आनंदमई जोगमाया है
सोइसजोगमाया की १२ रज्जुएं सखियां हैं।
हर एक सखी के करोड़ों रज्जुएं सुखाली हैं।
मूल अक्षरब्रह्म की जो लीला है सो कल्लूक
केवलब्रह्म में पाई जाती है।
वेदों में जो अक्षरब्रह्म की लीलाओं का व्यान
कीया है। सोइसी केवलब्रह्म का जानना।
यहां कुरुव आनंद और लीला हर श्री परम
धाम की जैसी भावों



केवलब्रह्म की भाँति में एक करोड़ों जोगन का
एक अक्षरब्रह्म का समुद्र है। (65)
सोइससमूह के मध्य भाग में पूरों रज्जुओं का
एक लीला है।
सोइसलीला में गुरुवंद है। आठों चारों दि
सामें और एक मध्य भाग में -
सो मध्य भाग में एक मली का अंश चतुर्दश
आया है सो भोग करके खाई है -
उत्तम चतुर्दश परगन में मली अंश सुंदर था
मनवानुसार है। होइ हर मंदिरों की चिन्ता में
होइ हर मंदिरों की आर्ति है। भागिंदर मध्याह्न
मध्य भाग में दस मंदिरों का मंदिर का अंश चतुर्दश
माचन चतुर्दश मध्य भाग में सिंधा सुंदर है। जिस पर
केवलब्रह्म तथा आनंदमई जोगमाया ने होइ सखियों
चारों तरफ से होइ - भागिंदर मध्याह्न

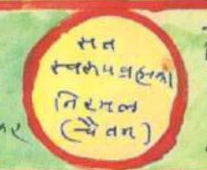
श्री कृष्ण परमात्मा ने आशम के अक्षरब्रह्म केवल की आनंदमई जोग
माया में बनाया स्वरूप का रा। सो रास में वेसी बनाकर सखियां
का नुली करे अक्षरब्रह्म का सखी। जिसका पारावा रन होइ हो
रास लीला का आनंद सुख को ले कर। और अक्षरब्रह्म तथा सखी
सखियां अपने परमेश्वर परमेश्वर में पड़ेंगी। अक्षरब्रह्म की आत्मा
अपने परमात्मा में पड़ेंगी। तब जोगमाया भी मंडल परने लगेगी।



अक्षरब्रह्म का प्रतीक कर सुपन के सुख रास लीला को आकर
अपना सुख स्वरूप जो केवलब्रह्म है। उसका कारण शरीर में
कायम करेगी। जोगमाया के मंडल के जीवों को।
रसतरंग से रास लीला। सदा सर्वदा अक्षरब्रह्म की रसतरंग
अक्षरब्रह्म की लीला में रास की भाँति जानी है। और लीला से
होइ मिरत रास की लीला ली है।

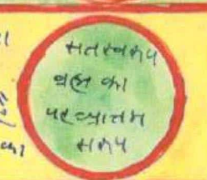
सतस्वरूप के रूप में केवलब्रह्म - तथा स बालिक ब्रह्म रसतरंग होइ ब्रह्मों का काम सबालिक को देखवा है	सतस्वरूप ब्रह्म का रूप शरीर	सो सबालिक में ब्रह्मों ओं का बनाने मिला ने का काम अक्षरब्रह्म को देखवा है। तथा सुमंली सखियां को	सत स्वरूप का शरीर	सतस्वरूप के रूप में सरीर में धाम परमधाम की ली ला होती रहती है	सत स्वरूप का कारण शरीर	सतस्वरूप के कारण शरीर में धाम परमधाम की लीला होती रहती है	सतस्वरूप धाम का महाका रण शरीर	अक्षरब्रह्म ने मिला लकों देखने पर १२ रज्जुएं सखियां नकोइ। सुमंली तथा देखने लगी। सो सब जोगमाया परमेश्वर का मध्याह्न (२) (रसमिरत) (६)
---	--------------------------------------	--	-------------------------	--	------------------------------	---	--	--

श्री परमधाम की सखियां इस संसार में भूतम जीवों पर आकर बैठी।
तथा जिव जीवों को श्री प्राननायजी। तथा सुंदर सायको सखे आत्म
से मेवा करी है। श्री प्राननायजी (और धरि जी राज) तथा सुंदर साय
सख परमधाम में सुखता का पस जावेगी। सो बल जी वसंधी सख होकर
इस ठिकाने में आकर अक्षरब्रह्म सुख को प्राप्त करेगी।

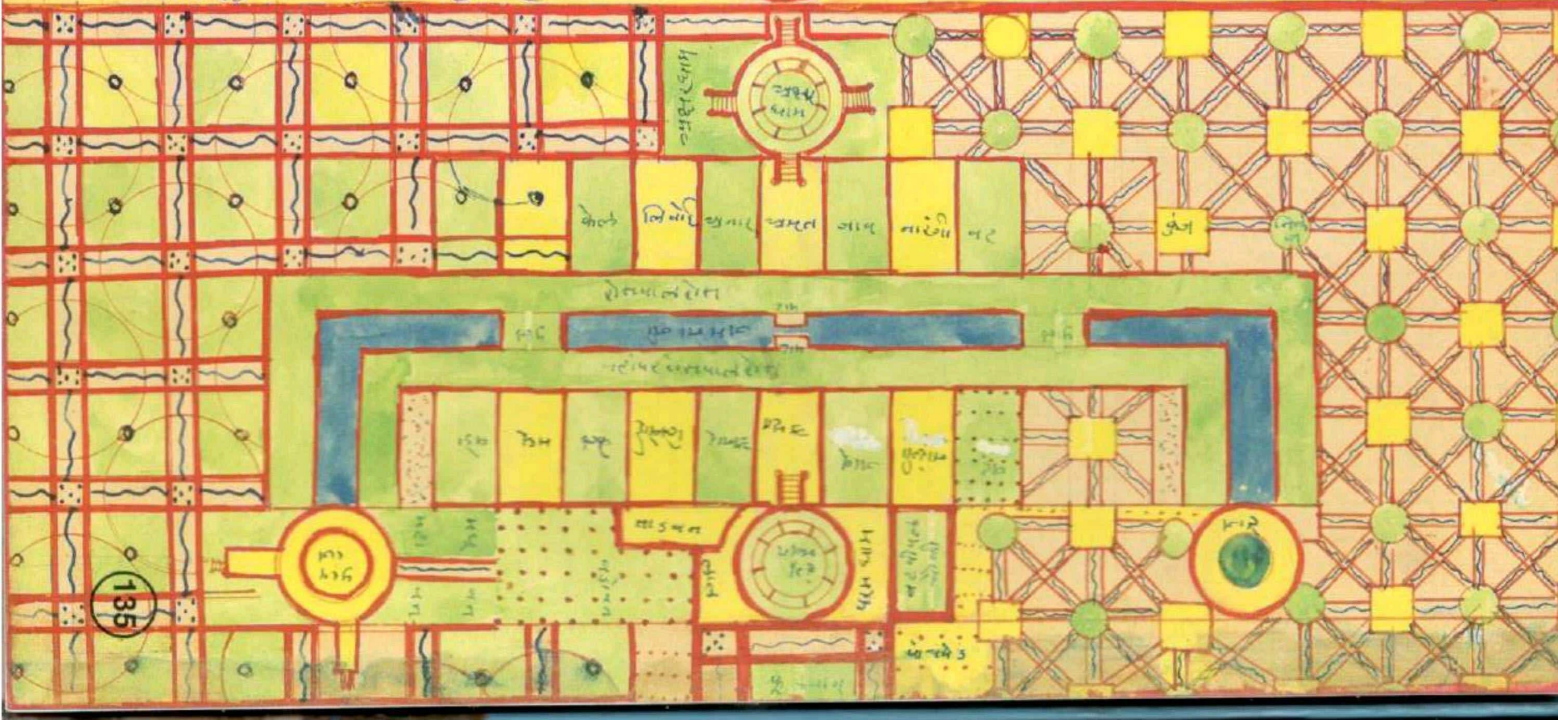


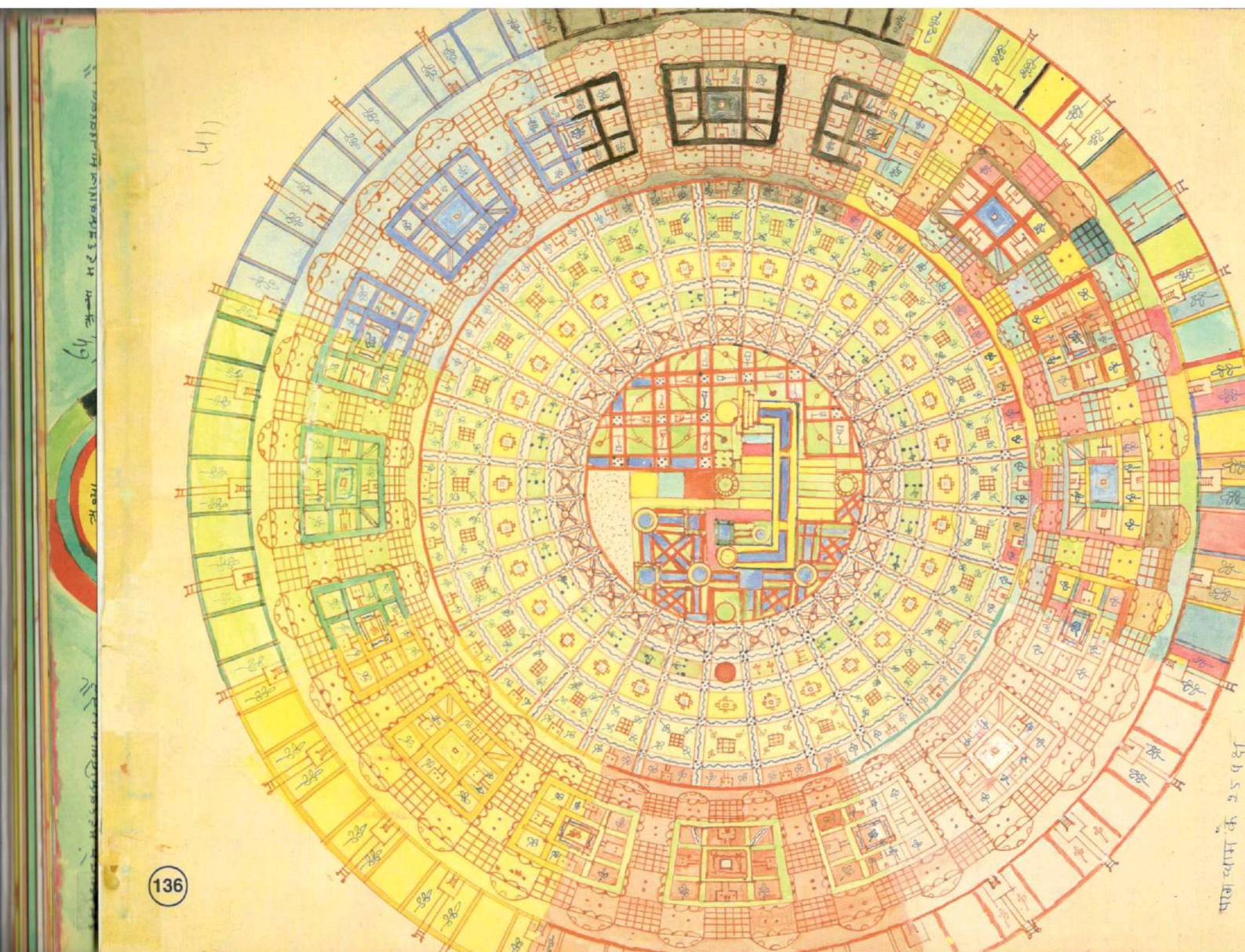
श्री प्राननायजी के होइ वाला जीव यहाँ प्राननायजी मंडल पर आने आठों
मिरत के मालिक बननेगे। श्री वाईजी राजका जीव सो श्री प्राननायजी व
नेगी। सखियां के जीव सखों रूप बननेगे -
यहां पर धाम परमधाम में सा सुख आनंद हो गा। आठों मिरत
गमवर व (मोमनों की अक्षरब्रह्म मिरत) नीचे से नमवर होइगी।

हस्तस्वरूप ब्रह्म अक्षरब्रह्म का मन शरीर है। रहने का ठिकाना
मिल बैठे में है -
इसका अक्षरब्रह्म की नाम लक्ष्मीजी है। इसके भी १२ रज्जुएं सखी हैं
और रज्जुएं सुखाली का पारावा रन लीला है। यहाँ पर सतस्वरूप का
आनंद सुख अक्षरब्रह्म पर वे आया रहे



सो अक्षरब्रह्म ने अपने को ब्रह्मों का बनाने मिला ने का काम
इसी सतस्वरूप ब्रह्मों देखवा है। हरी सख का मूल ज
नीचे का सव मालिक है। यहाँ पर सख जोगमाया
परमई आनंदमई है





तृतीय ब्रह्मांड जागनी रास का मूल मिलावा श्री गुम्मत साहेब

